इस मतबे में जितने प्रकार की रामायण छपी हैं उः से कुछ इस में लिखी हैं ॥

यह प्रसिद्ध पुस्तक गोस्वामि तुलसीदासजीकी काव्य भारतवर्ष में है जिसके पढ़ने पढ़ाने से मनुष्य इस लोक में जीवन्मुक्त होकर अन्त में मुक्ति पाता है और इसके काण्ड पाठशालाओं में भी पढ़ाये जातेहैं और यह पुस्तक हरएक के घरमें होनी चाहिये और बहुत से छापेखानोंमें यह पुस्तक लाखों प्रति छपी है इस छापेखानेमें बहुत से रूपोंमें यह पुस्तक छपी है सो नीचे लिखे के अनुसार यह पुस्तक मिलेगी ॥

रामायण मूल तुलसीकृत बहुत मोटे अक्षरों की

बहुत मोटे अक्षरोंमें है जिसको बालक और वृद्ध सुगमता से पढ़सक्ते हैं ऐसे मोटे अक्षरों की आजतक कहीं नहीं छपी तसवीरों और क्षेपकंसमेतहै॥

रामायण मूल तुलसीकृत

जो बहुतसी प्रतियोंसे शुद्ध कीगई कोई दोहा चौपाई रहने नहीं पाया और इसके काण्ड अलग,२ भी मिलते हैं ॥

रामायण तुलसीकृत मूल; छोटी

इसमें नवीन रीतिसे सूचीपत्र सहित चित्रोंका रूपक बांधकर आदिमें सम्पूर्ण रामायण का सारांश दिखलाया गयाहै वह आदिमें युद्धकी ऐसी रचना आजतक किसी दूसरी रामायणों में नहीं देखी गई अवलोकन कर्त्ता पुरुष हाथमें लेतेही आनन्द में डूबजावेंगे ॥

तथा मोटे और चिकने कागज़ की

और इसके काण्डभी अलग २ मिलते हैं ॥

रामायण टीका रामचरणदासकृत किताबनुमा व पत्रानुमा

इस बिस्तृत टीकाको अयोध्यानिवासि रामचरणदासजी टीकाकार ने निज देश भाषामें करके रामायणको ऐसा सुगम करदिया कि जो थोडी भी विद्या रखतेहों वे रामायणका पूर्ण आशय समझजावें और गूढाशयों



अथ कुण्डलिया रामायण सटीक ॥

श्रीजानकीवल्लभोजयति ॥ श्लोक ॥ जलधरद्युतिगात्रं पूर्णचन्द्राभवक्त्रं अमलकनकवर्णंपीतवस्त्रंदधानं ॥ तडितनिकरभासंजानकीवामभागं गुणनिधिपररूपंरामचन्द्रंभजेहं १ ॥कुण्डलिका॥ दासातिसृष्टिगोतियंसनलभतेचयदन्तु । सुरनरमुनयःशारदानिगमागमाःवदन्तु ॥ निगमागमाःवदन्तुशम्भुविधिहरिभिःवन्दित । कृपयाभोभूपालसुलभक्तजीवअनन्दित ॥ नन्दतिअधमअनाथपाथनिधियस्यअगमगति । वर्णयामिविधिकेनवैद्यनाथोस्मिमन्दमति २ वल्लभसबसंसारकोसेवतसुलभउदार । परब्रह्मपरमात्मारघुकुलमणिअवतार ॥ रघुकुलमणिअवतारकृपाकरिसबजगपालत । महिसुरमुनिदुखदेखिदयाकरिखलदलघालत ॥ घालतदोपदरिद्रशरणकछुनाहिंनदुर्ल्लभ । बैजनाथछलछांड़िनमतपदसीतावल्लभ ३ सीतावल्लभनामकहिसुखीहोतजनदीन । रामवल्लभानामलियरघुवरहोतअधीन ॥ रघुवरहोतअधीनपीनबलजीमेंआवत । त्यागशांतिसंतोपज्ञानसज्जनतापावत ॥ पावतपदपरमात्मसहजमिटिहैभवभीता । बैजनाथदृगकोरदयाकरिहेरतसीता ४ देवहिज्ञानसुभक्तिबुधिविद्यातोषविचार । धर्म्मकर्म्मदमतासुधृतिसमताशीलअचार ॥ समताशीलअचारमाराविपयादिकधावत । क्रोधलोभमदमोहतमहिरविवचनदुरावत ॥ आवतसहजअनंदजासुकरुणाहरि सेवहि । बैजनाथशिरनायचरणवन्दतगुरुदेवहि ५ कृपावारिधरस्वामिमनविदितफकीरेराम । अवधजन्मभूपासवासिदक्षिणमुखकोधाम॥ दक्षिणमुखकोधामरामरसरासिकरँगीले । मन्त्रमहाउपदेशिविपयविपधरकोकीले ॥ कीलोमनकामादिज्याहिधरेशीशत्याहिचरणपर । बैजनाथकृतअर्थकृपावलकृपावारिधर ६ तुलसीदासपवित्रमनप्रभुचरणनलौलीन । दोहारोलायुक्तकरिकुण्ड

लिकारचिदीन ॥ कुण्डलिकारचिदीनरामयशजलभरिपावन । सुनतहरत त्रयतापकहतभवशोकनशावन ॥ सावनघनसमवृष्टिशालिसज्जनमनहुलसी । वैजनाथकरजोरिनायशिरवन्दततुलसी ७ सम्बतनगश्रुतिअंकशशिरवि वासरअसुनीप । कार्तिकशुक्लत्रयोदशीकुण्डलिकासुप्रदीप ॥ कुण्डलिका सुप्रदीपजिलावारहबंकीघर । डेहवासहितसुग्राममानपुरहैममनम्बर ॥ नम्बरनववांतिलकग्रन्थकरताकोयहमत । वैजनाथमतिसरिसकहतसन्तन लयसंमत ८ ॥

मू० । दहनअमंगलसकलदुखगजमुखसबसुखदानि । मतिगतिरतिरघुपतिचरणविघ्नहरणकीबानि १ विघ्नहरणकीबानिजानिसज्जनसबगावत । भक्तिमुक्तिवरदेशशेषशंकरसुरध्यावत २ शंकरध्यावतशेषसुररिपुगणखलजनगहन । कहतुलसिदासशंकरसुवन भंजतभक्तभवभय दहन ३ । १ ॥

टी० । सिद्धदायक देव वन्दनात्मक मंगलाचरण है अर्थात् रामनाम के प्रभावते मंगलकर्त्ताजानि प्रथम गणेशजी को वन्दना करते हैं कैसे हैं गणेश सकल अमंगल तथा दुःखके दहन भस्मकर्त्ता हैं पुनः गजमुख सब सुखके दानिहैं अर्थात् हानि वियोग राजकोपादि अमंगल तथा रुज पीड़ा दरिद्रतादि दुःख इनसबनको भस्म करिदेते हैं पुनः गज हाथीकैसो मुख अर्थात् पशुको मुख तौ अविवेकी चाहिये सो नहीं सुखके दानीहैं काहेते सुखदानि हैं कि विघ्नहरणकी बानिहैं सहजसुभावते विघ्न मिटाइदेतेहैं कौनकारणते ऐसा स्वभाव है कि मति गति रति रामपद मति जो बुद्धि ताकीगति रति प्रीति रघुनाथजी के चरणारविन्दन में लागि है अर्थात हरिभक्त हैं यथा सत्योपाख्याने ॥ रामभक्तोगणाधीशोहस्तेपरशुधारकः ॥ आषुपृष्ठसमासीनोगजपृष्ठेयथाहरिः १ रामभक्तिते दयावन्त स्वभाव ताते विघ्नहरिबेकी बानि सहजस्वभाव सोईजानि सबसज्जन गणेशको यश गावते हैं क्या यशगावते हैं यथा भक्ति मुक्ति वरदेश वरदायकन के ईश श्रेष्ठहैं अर्थात् अकामनको भक्ति मुक्तिदेत सकामनको मनभावत वरदेत इसीते शेष शंकर सुर इन्द्रादि देवता इत्यादि सब ध्यावत पूजते हैं २ शंकर शेष सबदेवता काहेसे ध्यावते हैं कि खल रिपुगण दुष्ट विघ्नकर्त्ता समूह तेई गहनवनकी समान जीवको भटकावत तथा भव जो संसार

ताकीभय डर जन्म मरणादि इत्यादि हेतु कैसे हैं गोसाईंजी कहत जो भक्त भजत सेवाकरत ताकी भवभय तथा खल रिपुमन तिनको शंकर सुवन दहन शिवपुत्र गणेशजी भस्मकरिदेते हैं तिन गणेशको नामले में प्रारम्भ करतहौं निर्विघ्नहेतु ३ । १ ॥

मू० । दीनदयालदयाकरौदीनजानिशिवमोहिं । सीतारामसनेहउरसहजसन्तगुणहोहिं १ सहजसन्तगुणहोहिंयथाप्रद लाभदुःखसुख । कर्मविवशजहँजाउँतहाँसियरामकृपारुख २ रामकृपारुखनितरहौंजगतजानितसंशयहरौ । कहतुलसिदासशंकरउमादीनदयालदयाकरौ ३ । २ ॥

टी० । हे शिव दीनदयाल मोहिं दीनजानि दयाकरौ अर्थात् विनस्वार्थ जीवनको दुःखमिटावना सो दयागुणहै भगवद्गुणदर्पणे ॥ दयादयावतां ज्ञेया स्वार्थस्तत्रनकारणं । दीन जो पौरुषहीन दुखित हैं तिनके दुःख मिटाइबेहेतु आप दयागुणभरे मन्दिरैहौ ऐसाजानि प्रार्थना करताहौं ज्ञान विरागादि बलहीन ताते दीन पुनः कामादिकनकी प्रबलताते दुःखितहौं ऐसाजानि मोपर भी दयाकरौ दुःखहरौ जाते उरमें सीताराम सनेह पुनः सहज सन्तगुणहोइ अर्थात् अन्तःकर्ण शुद्धमें श्रीरघुनन्दन जनकनन्दिनी के पदकमलकी प्रीति दृढ़बनीरहै तथा वचन मन कर्मते सहजस्वभाव विनउपाय कीन्हे सन्तनकेगुण उत्पन्नहोहिं १ कैसे सहज स्वभावते संत गुणहोहिं यथाप्रद आपनी बस्तु औरको देना तथा लाभ आपुपावना अर्थात् देनेमें विषाद नहीं पावनेमें हर्षनहीं तथा दुःखमें विषाद नहीं सुख में हर्षनहीं भाव हानि लाभ सुख दुःख बराबरही मानौं पुनः कर्मविवश जहाँजाउँ शुभाशुभ कर्मनको फल भोगहेतु जहाँजाय जन्मपावौं तहाँ सिय रामकृपा रुख अन्य सब आश भरोसात्यागि केवल श्रीराम जानकी की कृपाको भरोसाराखे मन सन्मुख बनारहै २ इति रामकृपा रुखरहौं पुनः जगत्‌ते जनित उत्पन्न जो संशय देहव्यवहारकी सचाई ताको हरौ देहाभिमानको ममत्व छुड़ाय राम सनेह दृढ़करि दीजिये इत्यादि गोसाईंजीकहत हे दीनदयाल शिव पार्वती दीनजानि मोपरदयाकरौ ३।२ ॥

मू० । रामचरितशतकोटिशेषशारदाशिवभाखे । नारदशुकसनकादिवेदकहिबीचहिराखे १ बीचहिराखेचरितपारकहि

पावतनाहिन । कहिकहिहारेसकलरामयशकहतसिराहि
न २ नहिंसिराहिंरघुबीरगुणसोतुलसीमनमेंडरत । भज
नभाववेदनकहाकहेचरितभवनिधितरत ३ । ३ ॥

टी० । शतकोटि सौकरोरि श्लोक रामचरित अकेले वाल्मीकिजी कहे तथा शेष शारदा शिव स्वइच्छित रामचरित भाषे वर्णनकीन्हे तथा नारद शुकदेव सनकादिभी निजमति अनुसार कहे पुनः वेद रामचरित कहि बीचहिराखे इति नहींकिये १ सब आचार्य वर्णन कीन्हे परंतु रामचरित कहिकै पार कोऊंनहीं पावत सबै बीचहींराखे अंतकोऊनहीं पावा काहेते शंकर शेष शारदादि समर्थ यावत् आचार्यंते सकल कहिकहि हारिगये कहतमें रामयश सिराहिन किसीके कहे चुकिनहींजाता इसीते सबबीचही राखे २ रघुबीर गुणनाहिं सिराहिं अर्थात् चरितनके अंतर्गत कृपा दया शील करुणा वात्सल्यता सुलभ उदारतादि श्रीरघुनाथजीके गुणानुवाद नहीं कहतमें चुकते हैं सोई विचारि श्री तुलसीदासभी वर्णन करतसंते मनमें डरत कहि नहीं सकत परंतु तामें एककारण है कि वेदनभजन करनेके भाव कहाहै यथा सेवक सेव्यभाव पिता पुत्र पति पत्नी प्रकाश प्रकाशी शेष शेषी अंश अंशी जीव ईश इत्यादि भाव अनुकूल प्रीति पूर्वक श्रीरामचरित कहेते जीव भवनिधि भवसागर तरतभाव रामचरित पार जानेको प्रयोजन नहींहै केवल अपने जीवके कल्याण हेतु श्रीरामचरित वर्णन करतहौं ३ । ३ ॥

मू० । पुत्रयज्ञनृपकीनजोरिमुनिगणद्विजकुलवर । कहवशिष्ठभै
सिद्धदीनहविलैप्रसादकर १ लैप्रसादकरदीनदेहुभामि
निनृपजाई । सुनिदशरथमनहर्षसकलप्रियनारिबुलाई २
नारिबुलाईकौशलाकैकेयीयुगभागकर । मनअनंदरानी
नृपतिदीन्हसुमित्राहिहाथधर ३ । ४ ॥

टी० । नृपदशरथ महाराज पुत्रहेतु यज्ञकीन्हे कौनभांति वशिष्ठ शृंगीऋषि इत्यादि मुनिगण तथा द्विजपुरके अपर ब्राह्मण तथा रघुकुलमें वर जे श्रेष्ठवृद्ध रहे इत्यादिको जोरिबटोरि यज्ञपूर्णभये पर वशिष्ठजी कहे कि हे महाराज अब तुम्हाराकार्य सिद्धभया भाव अग्नि प्रसिद्धह्वै हव्यदिये सोई लैकै प्रसाद महाराजके कर हाथमेंदीन १ प्रसाद करमेंदीन पुनः

वशिष्ठजी आज्ञा दीन्हे हे नृपदशरथजी जाइ भामिनिदेहु यह हव्य कौश-ल्यादि रानिनको यथायोग्य भागकरि खवाइ देहुजाइ सो वशिष्ठजी के वचनसुनि दशरथ महाराजके मनमें हर्ष आनंदभयो तब राजमंदिरमें जाइ प्रियनारि कौशल्यादिको बुलाई २ नारि बुलाइ रानीसमीप आई तब महाराज अर्द्धभाग कौशल्याजीको दीन्हे चतुर्थांश कैकेयीको दीन्हे जो चतुर्थांशरहा ताके युगभागकर द्वै भाग करिके एक कौशल्याके हाथ धरे एक कैकेयीके हाथधरे पुनः दोऊरानी अरु नृपति दशरथ मनमें आ-नंद ह्वैकै दोऊभाग सुमित्राको दीन्हे रानीतौ बहुतीहैं तामें ये तीनिउमें मुख्यताहैं काहेते कौशल्याकी लग्नचढ़ी तेलचढ़ा मातृपूजन ह्वै गया विवाहकेदिन रावणहरिलैगया इसहेतु कौशल्याकी छोटीबहिनी सुमित्रा को विवाह करिदीन्हे इति दैवयोग सुमित्रौमें उत्तमता आयगई जब कौशल्यामिलीं तब विधिवत् विवाहभया सो पाटमहिषी येई बडी मानी गईं अरु कैकेयीके पिताने दशरथजीते समयपत्र लिखायलिया कि राज्या-भिषेक कैकेयीके पुत्रकोहोवै ताते कैकेयी श्रेष्ठभई इसकारण तीनिहूंउत्तम हैं इनमें जो विरोध होतातौ भागदेतही उपद्रव उठता परंतु शील स्व-भावते उत्तम पतिव्रता सबैरहीं ताते विरोध रहित परस्पर सुमतिरहे ताते पतिआज्ञा सब अंगीकार करिलीन्ही उपद्रव कछुनहींभया ३ । ४ ॥

मू०।मंगलमयीविचित्रद्युतिप्रकटभईगृहआनि। ब्रह्मसच्चिदानंदउरप्रकटभयेसुखखानि १ प्रकटभयेसुखखानिहानि दारिददुखनाश्यो । देवनलह्योअनंदमहीमनमोदप्रकाश्यो२ महीमोदद्विजसकलसंतसज्जनयशगावत। ब्रह्मादिकसबदेवअवधनृपघरचलिआवत ३ आवतवर्षतसुमनघनतुलसीकहिजयजयजई। नाकनगरअहिपुरभुवनप्रकटभईमंगलमई ४ । ५ ॥

टी०।इस कुंडलिकामें द्वैचरण अधिक सो कविकीइच्छा वा प्रीतिहर्षते विह्वल दशामें नहीं बिचारकीन्हे ब्रह्म सच्चिदानंद सुखखानि उरमें प्र-कटभये ताते मंगलमयी विचित्र द्युति आइ गृहमें प्रकटभई अर्थात् जो आदि मध्यांत जो सदा एकरस शुद्धरहै ताको सत्कही जामें एकरस ज्ञान ताको चित्कही सदा अखंडसुख ताको आनंदकही इति सच्चिदानंद ब्रह्म

जाको अंश सबमें व्यापक ऐसे साकेतबिहारी जिनते लौकिकपारलौकिक सबसुख उत्पन्नहोते हैं ते सुखके खानि सोई सुलभ लोकोद्धार हेतु आय कौशल्याजीके उर अंतरमें प्रकटभये ताते दशरथजीके मंदिरमें मंगलमयी उत्सवभरी पुनः बिचित्र जो किसीकी समुझमें न आवै ऐसी द्युति प्रकाश आनि प्रकटभई १ सुखके खानिप्रभु जबते प्रकटभये तबते लोगनकी हानि दरिद्र रुज वियोगादि दुःख इत्यादि नाशह्वैगयो तथा देवन आनंदलह्यो इंद्रादि देवतन परम आनंदपाये भाव अब हमारा दुःख छूटैगो तथा मही मन मोदप्रकाश्यो पृथ्वी के मनमें आनंद प्रकाश भयो अर्थात् अन्नादि उत्तम पदार्थ अधिक होनेलगे भाव अब हमारा भारउतरैगो २ अथवा महीमें मोद यह प्रकाशभया कि द्विज जो ब्राह्मण सकल तथा आत्मदर्शीसंत पुनः सज्जन हरिसनेही इत्यादि प्रभुको यश गावतेहैं पुनः शिव ब्रह्मादि जे देवता ते अवधमें नृपदशरथ महाराजके घरकोचलि आवतेहैं ३ गोसांईजी कहत कि ब्रह्मादिक सबदेवता आवते हैं अरु प्रभुकी जयजयकार कहि पुनः सघन सुमन फूल बर्षतेहैं इति अयोध्याजीमें आनंद सो पृथ्वीभरेपर विदित तथा नाक नगर जो इंद्रपुरी पुनः अहिपुर नागलोक इत्यादि भुवनभरेमें मंगलमयी आनंदभरी द्युति प्रकटभई अर्थात् सर्वत्र उत्सव देखाताहै ४ । ५ ॥

मू० । मासभयोशुभबारयोगबरनखतविराजत । तिथिनभजलमहिविमलदिशाविदिशासबभ्राजत १ भ्राजतसरयूअवध देवगणजयउच्चारत । बर्षतसुमनप्रशंसहंसनिजबंसनिहारत २ हारतखलगणमनमलिनप्रकटभयेसुखदुखगयो । तुलसीरघुबरप्रकटभेमासएककोदिनभयो ३ । ६ ॥

टी० । मासचैत शुभ शुक्लपक्षभयो वार भौम योग सुकर्म नखत पुनर्वसु इत्यादि वर श्रेष्ठ विराजत पुनः तिथि नौमी इति प्रभुके उत्पन्न को समय जब आयो तब नभ जो आकाश तथा जल महि जो भूमिइत्यादि पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तरादि दिशा पुनः ईशान अग्नेय नैर्ऋत्य वायव्य इति विदिशा इति सर्वत्र विमल भ्राजत अर्थात् आठौदिशि भूमि जल आकाश अमल देखात १ जल सरयूजीमें विशेषि अमल तथा भूमि अयोध्याजीमें अमल भ्राजत काहेते जहां इंद्रादि देवगण समूह जयजयकार करिरहे हैं पुनः सुमन फूल बर्षत प्रभुकी प्रशंसा स्तुति करतेहैं पुनः हंस निज बंश

निहारत सूर्य अपने वंशकी उन्नता देखतेहैं २ खलगण गवणादि दुष्टन- मूह ते हारत अपनी नाशजानि मनते मलिन उदासीन भये ताते सब संसारको दुःखगयो अरु सुख प्रकटभयो इत्यादि लोक आनंदसहित रघु- वर प्रकटभये तासमय एक महीनाभरेको दिनभयो ३।६ ॥

मू०। सुनिभूपतिसुतजन्ममगननाहिंदेहसँभारत । उठेभवनक- हँदौरिबोलितबगुरुहिप्रचारत १ गुरुहिप्रचारनचलेविप्र सँगलैमुनिनायक। भूतभविष्यवर्त्तमानज्ञानसबजाननला- यक २ लायकसुतमुनिसमुझिकैजातकर्मसबविधिकियो । हेमहीरनीरजसुपटमहिहयगयभूपतिदियो ३। ७ ॥

टी०। सुतपुत्रको जन्महोना सुनि भूपति दशरथमहाराज प्रेमानंदमें मगनभये ताते देहनहीं सँभारत अधिकप्रेम उमंगते देहकीसुधि भूलिगई तासेहर्षवश उठिकै भवनकहँ दौरिचले जब घरमेंजाय अनूप बालक देखे तबप्रचारत गुरुहिबोलि ललकार सहित गुरुको बुलाये अर्थात् सेवकनते कहे शीघ्रजाइ वशिष्ठजीको बुलाइलावो १ गुरुहि प्रचारत अर्थात् शीघ्र बुलावन सुनतही मुनिनायक वशिष्ठजी अपर विप्रनको संगलेचले कैसे हैं मुनिनायक यथाभूत जोकाल बीतिगया है तथा भविष्य जो आगेआवै गो वर्तमान जो बीतताहै इत्यादि तीनिहुकालकी सबबात जाननलायक ज्ञानहै जिनके २ ऐसे त्रिकालज्ञ मुनि वशिष्ठजी आयकै लायकसुत समु- झि अर्थात् महाराजके जोपुत्रभया सो सबभाँतिते समर्थ है भाव परब्रह्म अवतीर्णभये ऐसासमुझिकै अभ्युदयिकश्राद्ध जातकर्मादि के सब आचार वेदविधिते किये अर्थात् जीवके शुद्धता हेतु गर्भाधानादि दशकर्म होते हैं तिनमें जातकर्म बालकके जन्मसमय होता है ताके पूर्व अभ्युदयिक अर्थात् नंदीमुखश्राद्ध होती है ताकी विधि गीतावली तथा रामायणके तिलकमें हम लिखाहै इहांवाकोनामै नहीं ताते विधिनहीं लिखा जात- कर्म यथा प्रथमसूतिका गृह विषे पिता अरु आचार्यजात पुनः स्वर्णेन मधुघृतचतुःवारंबालकंभोजयाति अर्थात् सोनेकी अँगूठी वा अशर्फीते घृत सहत मिलाय भूय इतिमंत्र पढ़ि चारिबार बालकके मुखमें लगावन पुनःकुशोदकैःबालंप्रोक्षयन्ति कुशते जल बालकपर छिरकत पुनः अग्नि इतिमंत्र तथा आठकंडिका बालकके दहिने कानकेलग आचार्य पठत पुनः

पंचविप्रस्थापयतिश्रित इतिमंत्रसोदेश अभिमंत्रयतिबालं अभिमंत्रयति मातांअभिमंत्रयति पुनः माता दोनीमें जललेकर आपन दक्षिण स्तन धोकर बालककी नालपर डारतआपो इतिमंत्र आचार्य पढ़त पुनः वर्ण दक्षिणादैभूमि पंचसंस्कारकरि वेदीबनाय तापरदोनीमें अग्निधरत गणेश गौरी वरुण पूजि पीपरि सरसों घृतमिलाय सांडा इतिमंत्रसो सात आहुतीदेत पुनः शतमूठी अन्नभरि द्रव्यसहित पूर्णपात्र विप्रकोदेत पुत्र पिता अभिषेक तिलदान पुनः शिवमंत्रसो छूरासूतकी पूजाकरि सूतते बांधि नाल छूराते छीनत तब प्रजनको दानदेत इत्यादि करि पुनः दशरथ महाराज हेमजो सोना अशर्फी आदि हीरादि मणि नीरजमोती आदि सुपट सुंदरिवस्त्र दुशालादि महि भूमि ग्राम क्षेत्रादि हय घोड़ा गय हाथी इत्यादि भूपतिदान सबनको दीन्हे ३ । ७ ॥

मू० । याचकजोज्यहिकाजताहिनृपपूछिदिवावत । बृंदबृंदबर नारिविमलस्वरसोहिलगावत १ गावतसोहिलसुनतभूप हँसिहेरिबुलावत । पटभूषणमणिमाललालसुखत्यहिं पहिरावत २ पहिरावतगजतुरगरथसर्वसदैदैछाँड़िछल । पुनितुलसीजहँतहँभरोरामकृपासबवाहिथल ३ । ८ ॥

टी० । याचकजन जो ज्यहिकाजकी आशाकरिआवाहै सोई मनोरथ पूछि जोमांगत सोई नृपदशरथ महाराज देवावत तथा वृंदवृंद वरनारि झुंडझुंड उत्तम सौभागिनी स्त्रीते विमल सुंदरस्वरते सोहिल सोहरगावती हैं १ सोहिलगावत सुनतही गावनहारिनकी दिशि हेरिदेखि हँसिकै भूपदशरथजी सबको बुलावते हैं हँसि हेरिबेको भाव ऐश्वर्य दुराय सौलभ्यता दर्शाये जामें महाराज जानि निकट आवबेमें कोई स्त्री डर न मानै निर्भय बोलाय तिनको लहँगा सारी आदि उत्तम पट टीका बंदी ताटंकादि भूपण लालमणिनके माला इत्यादि सुखपूर्वक त्यहि स्त्रीनको पहिरावते भये २ यथा स्त्रीनको पहिरावनदिये तथा ब्राह्मण बंदीजन मागध सूत नाऊ बारी नट ढाढ़ी बारमुखी कलाँउत डोम इत्यादि यावत् याचक प्रजादि सन्मुख आये तिनकीभी रुचिबूझिकै गज जो हाथी तुरंग जोघोड़े रथादि यावत् बाहन पुनः मणि सोना वसनादि देनेमें छलछाँड़ि सर्वसधन दैदै सबको पूर्ण कामकरि दीन्हे गोसाईंजी कहत कि देतेमें महाराज किसी भंडारादिमें कछुनहींराखे परंतु रघुनाथजीकी कृपाते पुनः

जहाँकी तहाँ सबत्राही थलमें भरो देखात खाली कछु न भयो ३ । ८ ॥

मू० । पुरींमगननरनारिवर्णचारउप्रसन्नसवि । प्रतिगृहगावत गीतकलशमणिचौकभरीछवि १ भरीचौकगजमुक्तअगर कुमकुममृगमदघन । कुसुमसुगन्धअबीररहेउभरिदिशा विदिशितन २ दिशाविदिशिसुखभरिरह्योभामिनिबहुप्र कटीदुरी । अहिनाकभूमितलसुखभरयो जिमिसुखभोरघु पतिपुरी ३ । ९ ॥

टी० । श्रीरघुनाथजी को जन्मभयेते अयोध्यापुरी आनन्दमें मग्न है काहेते जानिये कि ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्रादि चारिहूवर्ण नारी नगरि सबी प्रसन्न हैं काहेते नारी तौ गृहप्रति घरघरमें सोहिलगीत गावती हैं तथा पुरुष ठौर ठौर सपल्लव धान्य दीप कनक कलश स्थापित करते हैं पुनः छविकीभरी मणिनकी चौकैं पुरायरहे हैं १ कौनी मणिनकी चौक गजमुक्तनसों भरी पुनः अगर कुमकुम केसरि मृगमद जो कस्तूरी घन कपूर इत्यादि चन्दनमें घसि अरगजा तथा कुसुम जो फूल ताको सुगन्ध जल केवड़ा गुलाबादि तथा गुलाल अबीर सो पूर्वादिदिशि ईशानादि विदिशि इति आठौदिशन में भरिरहेउ है तन सबकी देहनमें लाग है २ दिशा विदिशि सर्वत्र अयोध्याजी में सुखभरिरहेउ है समुद्र जलसम पुनः भामिनी युवती बहुत प्रकटहोती हैं पुनः दुरी मन्दिरन में छिपिजाती हैं सो तरंगसी देखाती जिमि जाभाँति रघुपतिकीपुरी अयोध्याजी में सुख भयो ताहीभाँति अहि पाताललोक में नाक इन्द्रपुरी में भूमितल पृथ्वी भरेमें तैसेही सुखभयो सो भरिपूरिरह्यो है ३ । ९ ॥

मू० । भूपभामिनीदोउसुखदसुतसुन्दरजाये । कर्मक्रियासोकरे तोषियाचकपहिराये १ पहिरायेमनमोदचारिसुतलखि सुखराजा । रानीपरमहुलासदासदासीसबसाजा २ सा जाशहरअनन्दबड़बाजाबहुबाजनलगे । सबकोउकहत सराहिकैभागभालसुखकेजगे ३ । १० ॥

टी० । भूपभामिनी दशरथमहाराज की दोऊरानी सुमित्रा लषण शत्रुहन तथा कैकेयी भरतको इत्यादि लोकनको सुखदेनहारे सुन्दर सुतजाये पुत्र उत्पन्न कीन्हे तिनके जातकर्मादिकी क्रिया सबकर्तव्यता कीन्हे पुनः

तोषि याचक पहिराये याचकनको भूषण बसनादि पहिराये मणि सोना मुद्रादिदै संतोषकरि अयाचक करिदीन्हे १ याचकनको दानदै पहिराये ताते सबके मनमें मोद आनन्दभयो क्यों सबको पहिराये चारिसुतलखि सुखराजा अर्थात् अबतक एकहूपुत्र न भया अब बड़ी बयसमें सुन्दर परमोत्तम चारिपुत्र साथहीपाये ताते दशरथमहाराज के मनमें परमसुख भये ताते सबको मनभावत दानदीन्हे तथा कौशल्यादि सबरानी परम हुलास आनन्दितभई पुनः दास दासीभी परमआनन्दहै सबमंगलसाज ध्वजा पताका बन्दनवार चित्रामादि साजते हैं २ अयोध्या सब शहरभरि मंगलसाजते सजाहै पुनः ढोल तासा झाँझ मृदंग वीणा रबाब तबला सारंगी मँजीराइत्यादि बहुतभाँति के बाजा बाजनेलगे तासमय सबकोऊ महाराजकी सराहना प्रशंसाकरि कहते हैं कि दशरथजी के भाल माथेमें परिपूर्ण सुखकेभागजगे उदयभे ३ । १० ॥

मू० । भूसुरसुरगोधरनिसन्तसज्जनकेकाजे । प्रभुधारयोतनम
नुजदनुजसुनिविकलसुलाजे १ लाजेखलगणमलिनन
लिनद्विजउदयभानुकर । अघउलूकछपिगयेतेजअहिपुर
सुरपुरधर २ सुरपुरधुनिकुसुमावलीजयतिरामरघुवंशज
याजयदशरथकुलकलशअवधनरनारिकहतभय३।११॥

टी० । भूसुर ब्राह्मण सुर देवता गो गौवैं धरणि पृथ्वी संत आत्मदर्शी सज्जन हरिभक्त इत्यादिके सुखके काजे प्रभु श्रीरघुनाथजी मनुजतनुधारे बालकुमारादि अवस्था ग्रहणकीन्हे सो सुनि दनुजलाजे बिकलभये दैत्य राक्षसादि अपनी पराजयको लजाने पुनः नाशहोनो जानि व्याकुलभये भाव अबनहीं बचिसक्तेहैं १ खलगण रावणादि दुष्टसमूह लजानेताते दिग्विजयी उत्साह मिटिगई मनते मलीन अर्थात् भानुउदय कोकीबन संपुटितभये तथा सुधर्म नीतिप्रकाश भयो काहेते भानुकर सूर्यरूप रघुनाथजी उदयभये तिनके प्रताप किरणिनकोपाइ नलिन द्विजकमलसम ब्राह्मण प्रफुल्लितभये पुनः अघउलूकपापकर्म घुघुवासमछिपरहे पापकर्म कहूं नहीं सुनिपरताहै काहेते अहिपुर जो नागलोक पाताल सुरपुर जो देवलोक धर जो पृथ्वी इत्यादि सर्वत्र प्रभुको तेज व्यापिगया २ जामें प्रभु अवतीर्णभये त्याहि रघुबंशकी जयहोय श्री रघुबंशशिरोमणि रघुनाथ जीकी जयहोय इत्यादिधुनि सुरपुर देवलोकमें ह्वैरही है पुनः रघुकुलरूप

मंदिरके कलश सबमें उत्तम दशरथ महाराजकी जयहोय ऐसा शब्द अयोध्याजीके नारी नर सब लोग कहिरहे हैं ३ । ११ ॥

मू० । गृहगृहबजतबधावनारिनरअवधअनंदित । चौकक्लश प्रतिद्वारलसतसुरतियगणबंदित १ वंदतसुरगणसुमुख बंदिगणबिप्रवेदधुनि । भरिभरिमुक्ताथारदेखिसुनभाग अधिकगुनि २ अधिकगानसोहतभवन रामजन्ममंगलसजत । नरनारिवारितनधनसबै सुरपुरजयदुंदुभिबजत ३ । १२ ॥

टी० । अवधपुर वासी नारि नर सबै अनंदित आनंदमें मग्न हैं ताही हर्षते गृह घरघरमें बधावन बाजतेहैं तथा मुक्ता मणिनकी चौकें कंचनादिके कलश सजे मंदिरनके द्वार द्वारनपर लसत शोभा देरहेहैं सुर तिय गण बंदित देवनकी स्त्री शारदा शची आदि समूह अवधपुरीकी वंदना करिरहीहैं ताकी शोभा महिमा कौन कहिसकै १ काहेते महिमा नहीं कहिजात सुरगण सुमुख बंदन ब्रह्मा इंद्रादि देवता समूह मन सन्मुख किहे पुरको वंदना दंडप्रणाम करते हैं पुनः बंदीगण बिरदावली कहिरहे तथा बिप्र वेदधुनि करिरहेहैं सुत रघुनाथजी आदि पुत्रनको परम अनूप रूप देखि कौशल्यादि रानी अपनी भाग्यको अधिक गनतीहैं भाव हमारे कुलमें हमारीऐसी भाग्य किसी रानीकी नहींभई इसी हर्षते कंचनथारनमें मुक्ता भरिभरि निवछावरि करती हैं २ भवन मंदिरमें गान मंगल गीत सब साजते अधिक सोहत श्रीरघुनाथजीको जन्मभयो ताते मंगलके साज सबै सजतेहैं अवधबासी नारी नर हर्षवश सबै तन धन वारन करतेहैं अर्थात् तन प्रभुको अर्पणकरते हैं धन निवछावरिकरि याचकनको देतेहैं तथा सुरपुर जोहै देवलोक तामें प्रभुकी जयजयकार अरु दुन्दुभी बाजत हैं ३ । १२ ॥

मू० । नामधरयोमुनिहोरिरामपुनिभरतलषणवर । शत्रुशमन शुभनामदीनमुनिलिखिभूपतिकर १ भूपतिरानिनदीनमगनतनुलहेउसकलसुख । गानानिशानसमानधरणिआकाशएकरुख२यकटकनिरखतसुमनगणमनमलीनखलगण भये । चारिचारुसुंदरसुवनसुकृतभूपतरुफलनये ३ । १३ ॥

टी० । बैशाखकृष्ण पंचमी शुक्रबार अनुराधानक्षत्र जन्मके बारहेंदिन नामकरणको उत्सवकीन्हे ताकी बिधि नामकरण बिधाने यथा अभ्युदयिकादि कृत्वा नंदीमुख प्रतिज्ञावर्णन संकल्प स्वस्त्ययनं शांति गणेश बरुण गौरी पूजनं चतुर्दश मातृपूजनं ब्राह्मणभोजयति घृतेन हवनंकुर्यात् अश्वत्थपात्रे नामंलिखित्वा पूजनं बालस्य दक्षिणकर्णे अमुकवर्मासीति त्रिबारं श्रावयति अर्थात् सबरानी स्नानकरि नवीन भूषण बसन धारण कीन्हे तथा बालकनको स्नानकराय भूषणबसन पहिराय चौकनपर पूर्वमुख बैठीं तब वेदबिधान सब आचारकरि मुनिबशिष्ठजी वेदतत्त्वमें हेरिकै भाव राशिके नामनहीं जो स्वरूपनमें गुणहै ताकीअनुकूल नामधरयो क्या नामधरयो कौशल्यानंदनको रामचंद्र ऐसा नामधरे तथा कैकेयीनंदनको भरत ऐसानाम धरे पुनः सुमित्राके प्रथम पुत्रको लक्ष्मण ऐसा नामधरे छोटेको शत्रुहन ऐसानाम धरयो अर्थात् चारौनाम केशरि चंदनादिते पीपरके पत्तनपर लिखि पूजनकरि बालकनके दक्षिण कानन में तीनि तीनिबार सुनायदीन्हे पुनः शुभकल्याणकर्त्ता नामजो पत्तनपरलिखे रहैं सो भूपतिकर महाराज दशरथजीकेहाथमेंदैदिये आपुनामबांचिआनंदभये १ पुनः भूपदशरथ महाराजनामलिखेपत्तारानिनकोदैदीन्हे तिनको बांचि तनते प्रेमानंदमें मगनभईं मनते सकलसुख लहे उपाय उ भाव परिपूर्ण मनोरथ पाय तनमें प्रेमकी पुलकावली भरिगई ग्राम स्त्री बारमुख्याढाढी कलाँउत इत्यादि को पुरमें गान तथा देवलोकके गंधर्व अप्सरा आकाशमें विमाननपर गाइरहीं पुरमें निशान बाजा ढोल तासा झाँझ मृदंगादि बाजिरहे तथा देवता दुंदुभी आदि बजायरहे इत्यादि गान निशान धरणि पृथ्वी में तथा आकाशमें दोऊ ठिकाने समान बराबरिही एकरुख परस्पर ताल शब्द एकही में मिले सुनात २ सुमन जो देवता तिनके गण समूह ते तौ प्रेमानंद वश चकटक पलरहित प्रभुको निरखि रहे हैं पुनः खलगण दुष्ट राक्षसादि समूह ते मनते मलीन आपनी हानि जानि दुःखितहैं ताते उनके मुख धूमिल परिगये भूप दशरथ महाराजके सुकृत तरु वृक्ष नये फलफले भाव ऐसा फल और किसी की सुकृतमें नहीं फले काहेते चारु नाम सुंदरताहूमें सुंदर चारि सुवन पुत्रसाथही पाये ताते सुकृत वृक्ष नये फलफले ३ । १३ ॥

मू० । सुंदरसुतवरगोदमोदभरिमातुदुलारत निरखिदनबछबि

सिंधुसकलतनमनधनवारित १ वारतनमनदेवभूपकेभाग सराहत। शिवसनकादिकब्रह्मक्षणहिक्षणमनसुखचाहत२ चाहतनितआवतअवधमंगलमयमूरतिलखत। रामजन्म सुखरसरसिकतुलसिदासनयननिचखत ३। १४॥

टी०। सुंदर सर्वांग सुठौर बने ऐसे वर सुत उत्तम पुत्रनको मोद आनंद भरी माता कौशल्या आदि गोदमें लिहे दुलारती हैं पुनः छवि सिंधु शोभारूप जलभरा समुद्रसम मुखको निरखत नेत्रनभरि देखत आनंद है तन मन धनादि सकल सुतपर वारन करत भाव मनलगाये तनतें लालन पालन करती हैं धन निवछावरिकरि याचकनको देत १ माता तन मन वारत तथा इंद्रादि देवता भूप दशरथ महाराज की भाग्य को सराहत भाव ऐसी भाग्य अवर किसी की नहीं है दशरथ महाराज की धन्यभाग्य है जिन परब्रह्मको पुत्रकरि पाये पुनः शिव सनकादि मुनि ब्रह्मा इत्यादि को मन क्षण क्षण प्रति प्रभु दर्शन के सुखको चाहत २ दर्शनको सुख चाहत ताते ब्रह्मा शिव सनकादि नित्यही अयोध्याजी को आवत अरु मंगलमयमूरति लखत कल्याणकर्ता स्वरूप श्रीरघुनाथजी को नेत्रनभरि देखत आनंद पाय देखतसंते तृप्त नहीं होत ताते क्षणक्षण प्रति चाहत इसीभांति गोसाईंजी कहत कि राम जन्म रघुनाथजी के बालरूपको जो सुखरूप रसहै ताके जे रसिक वात्सल्यरसवाले ते नयन निचखत नेत्रनद्वारा बालरूपकी माधुरी सदा पान करते हैं तृप्त नहीं होते हैं ३। १४॥

मू०। माईबालकअनरस्योदूधपियतनहिंआजु। रोवतसोवत नेकुनहिंदुष्टनजरिकीसाजु १ दुष्टनजरिकीसाजुरहैंनाहिंबैठे ठाढ़े। बड़ोशोचउरभयोनीरनयननतेबाढ़े २ बाढ़ेकरुणा कौशल्यहिहाथदिवावतधायकै। पालनगोदपिआयपय रामसोवावतआयकै ३। १५॥

टी०। कौशल्याजी कहती हैं अपर वृद्ध स्त्रीनसों हे माई आजु मेरा बालक अनरस्यो कछु रुज पीडित है ताते दूध नहीं पियत पुनः रोवत तौ अत्यंत परंतु नेकु थोरहू नहीं सोवत ताते यह दुष्ट नजरिको साजु है

भाव किसी दुष्टा स्त्री की नजरि लागिगई ताही के सब ढैना हैं १ दुष्टा की नजरि की यह सब साजु है ताते ऐसा रोवत हैं कि न बैठेरहैं न ठाढ़े रहैं कवि की उक्ति रघुनंदनको अनरसे जानि कौशल्याजी के उरमें बड़ो शोचु दुःखकी तर्कणा भयो ताते नयननते नीरबाढ़े आँसु प्रवाह बहे २ कौशल्याजी के करुणा दुःख बाढ़ेउ ताते वशिष्ठजी को बुलाये मुनि को आवत देखि रघुनन्दन को गोदले कौशल्याजी धाय पाँयनमें डारि पुनः रघुनन्दनके माथपर मुनिको हाथदिवाये नृसिंहमंत्रपढ़ि रक्षाकीन्हे प्रसन्न ह्वैगयेतब गोदलैपयदूधपियाय रघुनन्दनको पलनापरआय सोवाये ३। १५॥

मू० । शंभूधास्योअवधपगअंगहिभस्मलगाय । रामचंद्रमुखसुधाकरचितचकोरललचाय १ चितचकोरललचायनाद भृंगीकीकीन्हे। घरघरआगमकहतबोलिकौशल्यालीन्हे २ कौशल्यागृहबोलिकैशुभआसनआदरकस्यो । सुतपाँयनतरलायमाथहाथशंभूधरयो ३। १६॥

टी० । सर्वांगमें भस्म लगाये शंभू अवधपग धरयो अवधूत वेष किहे शिवजी अयोध्याजीको आये कौनहेतु सुधाकर रामचन्द्र मुखको चकोर चित ललचाय सुधा अमृतमय किरणैहैं जाकी ताको कही सुधाकर अर्थात् शरद पूर्णचन्द्रसम श्रीरघुनाथजीकोमुख ताके अवलोकनहेतु चकोर सम चितललचातरहा त्यहि अभिलाषते अयोध्याजीको आये १ शिवजी को चित चकोरसम ललचातारहा ताते अयोध्याजीमेंआयके भृंगीजोबाजा ताको नादशब्द कीन्हे बजावत पुरमें फिरनेलगे घरघर आगम आगे को होनहारी कहतसंते राजद्वारपर आये तिनको हालसुनि अर्थात् एक आगमी आयाहै सो जानि कौशल्याजी राजमंदिरको बुलायलीन्हे २ गृहबोलि घरको बुलाय कौशल्याजी शुभमंगलमय सिंहासन आसनपर बैठाय शिवजी को आदर करयो भोजनादि कराय पुनः सुतपुत्र पाँयनतरलाय रघुनन्दनको लाय पाँयनको प्रणाम कराये तब रघुनन्दनके माथेपर शिवजी हाथधरे आशिष दये ३ । १६ ॥

मू० । साँईआछेगुणकहौजोकछुयामेंहोय।सबगतिजानतसबहिकीतुमाहिंकहतसबकोय १ सबकोइपरचौकहतबड़ेयोगनिधियोगी। जोमाँगिहौंदेहौंसोइताको करौंसुधाकोभोगी२

करौसुधाकोभोगजन्मभरिरामलषणकेपाछे। मुनिसुनिवच
नहँसतमनशंकरमातुवचनसुनिआछे ३ । १७॥

टी० । साईं हेस्वामी जो या बालकमेंहोइ आछेगुण सोकहो काहेते सब कोई तुमको कहत कि सबही की सब गति भूत भविष्य वर्तमानकी सब बात जानतेहौ १ आपुके आगम कहेको परिचौ पाइकै सबकोऊ कहत बड़ेयोगनिधि योगक्रियाभरे समुद्रसम योगीहौ पुनः जो मँगिहौ सो देहौ तोको सुधाको भोगीकरिहौं २ राम लषणके पाछे जन्मभरि सुधाको भोग करौ अर्थात् मेरे पुत्रनके गुणकहौ तौ ऐसा अधिकथन देहौं त्यहि करिकै जन्मभरि सुधास्वादमें अशन जन्मभरिखाउ माता कौशल्याके कहे वचन सुनिसुनि आछेउत्तम वचननको सुनि मनहिंमन शिवजीहँसतेहैं ३।१७॥

मू० । माईबालकतोरयहवड़ोभागकोमूल। याकेदर्शनजातहैसब
अंतरकोशूल १ सबअंतरकोशूलहरीयातेसुखपैहौ। कछु
दिनबीतेसुनौएकमुनिसँगकरिदैहौ २ देहौमुनिसँगलाय
व्याहपुनिपातीआई । दशरथसुवनविवाहसहितघरऐहैं
माई ३ । १८ ॥

टी० । शिवजीबोले हेमाई कौशल्या यह तोरबालक बड़ेभागको मूल भाग्य बेलि बढ़ावबेकीजरहै पुनः याके दर्शन करतसंते अन्तरको सबशूल मानसी व्यथा सबमिटिजातीहै १ अंतरको सब शूलहरी पुनः या बालक ते सबभाँतिको सुखपैहौ पुनः और होनहारी सुनौ कछुदिन बीते अर्थात् किशोर अवस्था जब हैहै तब इन दोऊ बालकनको एक मुनिके माँगते उनकेसंग करिदेहौ २ जब मुनिकेसंग लायदेहौ तिनकोकार्यकरि पुनः जनकपुरमेंजाय प्रणस्वयंबरमें धनुषतोरिहैं तहांते इनकेब्याहकी पातीआई बरातसहित महाराजको बुलावबे हेतु तब दशरथ महाराज बरात सजि जैहैं सुवन बिवाह सहित भाव चारिहु पुत्रनको विवाहि पुत्र बधुन सहित हेमाई कुशलपूर्वक घरको लौटि आइहैं ३ । १८ ॥

मू० । अद्भुतकर्मनकरीसकलखलगणसंहारन। महिद्विजपालहि
संतशोचसुरकरहिनिवारन १ करहिनिवारणदोषमातुपि
तुआज्ञाकारी । तोरहिशिवकोधनुषसुयशातिहुँपुरविस्तारी

री २ बिस्तारिसुखसंपदासुनुकौशल्यातोरसुत। बचनमृषाबोलतनहींमानुप्रतीतिसनेहयुत ३। १९॥

टी०। जोमनुष्यनमें संभवनहीं देवनकोआश्चर्यमय ऐसेसकलअद्भुतकर्म करी पुनः खलगण संहारन दैत्य राक्षसादि समूह दुष्टनको नाशकरिहैं पुनः महि जो पृथ्वी द्विज ब्राह्मण तथा संतनको पालन करिहैं तथा सुर देवतनके शोच निवारणकरिहैं अर्थात् जो राजऐश्वर्य छूटिगई ताको देवाय अभय अशोचकरिहैं १ पुनः संसारभरेके दोष निवारणकरिहैं भाव धर्मनीति स्थापन करिहैं अरु आपु ऐसे धर्मधुरीण कि माता पिता के आज्ञाकारी सदा रहिहैं पितुआज्ञाते मुनिसंगजाय जनकपुरमें प्रण स्वयं बरमें शिवको धनुषतोरि तिहुंपुर सुयश बिस्तारी अर्थात् जो किसी बली को हलावा नहालैगा त्यहि धनुषको कौतुकमात्र तोरि पुनः परशुरामको मान मर्दनकरहिंगे इति बाहुबलकी प्रशंसा सुंदरयश तीनिहूं लोकन में फैलावहिंगे २ हेकौशल्या तोरसुत पुत्र सबप्रकारको सुख पुनः संपदा ऐश्वर्यबिस्तारी अधिकबढ़ाई इत्यादि मेरबचन सनेहयुत प्रीतिपूर्बक प्रतीति मानु मैं मृषा झूठ नहीं बोलतहौं ३। १९॥

मू०। कह्योकेकयीसुवनकोलक्षणसबकरदेखि। कौशल्यासुतभक्तयहमनक्रमबचनबिशेखि १ मनक्रमबचनबिशेषिरामपदप्रीतिसुहावनासोवतजागतध्याननामरसनारसपावन २पावनतिरहुतिव्याहिहैयातेसुखसंपतिलहौ।सुयशसिंधुसाँचौसुवनससुझिरेखआगमकहौ ३। २०॥

टी०। कर हाथके सबलक्षण देखि कैकेयी के सुवन पुत्र भरतजीको कह्यो यहबालक मन क्रम बचनते बिशेषकरिकै कौशल्यासुत भक्त है मन में प्रीति कर्मसों कैकयेता आज्ञापालन बचनते गुण गान इत्यादि अन्य भक्तनते बिशेष अधिककरी ऐसा उत्तम रामभक्त होई १ मन क्रम बचन सब आचरणते बिशेष सुहावनि शोभामय सबको देखिपरी ऐसी ललित प्रीति रामपद कमलनमेंकरी कैसी सुहावन प्रीतिकरी कि सोवत जागत सदा एकरस अंतरमें रामरूपको ध्यानराखी तथा पावन पवित्र रामनाम कोरस रसनाकरिकै अस्वादनकरी जिह्वाते सदा प्रीतिपूर्बक नामजपी २ पावन बिशेषि पवित्र तिरहुतिदेश जनकपुरमें ब्याहिहैं चारहु भाइन को बिवाहह्वैहै याते यहिबालकते सबप्रकार सुख सम्पदालहौ पाइहौ यहसु-

वन पुत्र सांचे सुयशरूप जलभरा समुद्र है इति रेख देखि ताको फल विचारि आगम होनहार कहतहौं ३ । २० ॥

मू० । सुनहुलषणकीमातुसुलक्षणसुवनतुम्हारे । निजभाइनसों प्रीतिप्रबलरणकेजितवारे १ जितवारेबलबाहुगुणनिपूरे सबभाई । रामसंगशुभपुरीतहाँसबहोहिंसगाई २ होहिं सगाईजनकपुरजनककन्यकाआनिकै । सत्यजानुरानीव चनभूँठनकहौंबखानिकै ३ । २१ ॥

टी० । हेलषणकी मातु सुमित्रा तुम्हारे सुवन सुलक्षण अर्थात् तुम्हारे दोऊ पुत्र उत्तम सुंदर लक्षणनते भरे हैं पुनः निज अपने भाइनसों प्रीति अर्थात् रघुनंदनते लषण प्रीतिरखि हैं तथा भरतते शत्रुहन प्रीति रखिहैं पुनः प्रबलरणके जितवारे मेघनाद लवणासुरादि जे प्रकर्षकरिकै बली राक्षस दैत्य इत्यादिको रणमें जीतनहारहैं १ बाहुबल करिकै बड़े बलिनको जीतनेवाले बली बीर पुनः धर्म नीति विद्या दया शील दीन पालता सुलभ उदारता क्षमा समता शांति धैर्य थिरतादि उत्तम गुणन करिकै सबभाई पूरे हैं पुनः शुभ मंगलमय पुरीमें रामसंग रघुनाथजी के विवाहकेसाथै तहां एकही माडवमें सबभाइनकी सगाईहोहिं विवाहहो २ सबंधु राजा जनककी चारिकन्यका तिनके संग जनकपुरमें सगाई चारि हु भाइनके विवाहहोइहैं तिनकोआनि विदाकराइ कुशलपूर्वक घरको ऐहैं इत्यादि मेरे वचन सत्यमानु हेरानी मैं भूँठ वखानकरि नहीं कहतहौं सत्य है ३ । २१ ॥

मू० । सुनतीमनरानीमगनमुक्काथारभराय । लेनकह्योहँसिकौ शलारामहिंदीनछुवाय १ रामहिंदीनछुवायहाथधरिदेउ अशीशा । बालकरहुकल्याणडीठिमूठिडारहुखीशा२ खी सकरहुप्रभुरोगसकलमन्त्रनपढ़िबानी । बोलीडारेसुवन हाथजोरेसबरानी ३ । २२ ॥

टी० । शिवजीके वचन सुनतसंते सबरानी आनंदमें मगनमनहै थार में मुक्ताभरायकै कौशल्या हँसिकै लेनकह्यो अर्थात् हे योगी भिक्षालेहु पुनः योगी के पांयनमें रघुनाथजीको छुवायदीन्हे १ रघुनाथजी को माथ

पांयन में छुवाय कहे कि हेयोगी बालके माथेपर हाथधरि आशीर्वाद देहु आशीर्बाददै बालकनको कल्याणकरहु पुनः डीठि जो नजरि मूठि टोना आदि तिनको खीस नाशकरिडारहु २ हेप्रभु योगिराज मंत्रपढ़ि रक्षा बाणीते बालकनके सकलरोग नजरिटोना पूतनादिको खीसकरहु इत्यादि सुवन पुत्रनको पांयनतरडारे हाथजोरे सबरानी बोलीं ३। २२॥

मू०। बोल्योयोगीयोगनिधिसुनहुकौशलामाय। डीठिमूठिअन खानिअनरसनिदेहौंसकलबहाय १ देहौंसकलबहायबा लकबहूंनहिंरोई।पलकागोदहिंडोरसुमुखसबथलशिशुसो ई २ सबथलशिशुसुखरहीहोयनहिंकबहूंरोगी। भृंगीश ब्दसुनायचल्योमनहँसिकरियोगी ३। २३॥

टी०।योगनिधि योगक्रिया सिद्धिनको भरा योगीबोल्यो हेमाय कौशल्या मेरेबचन सुनहुडीटि जो नजरिमूठि जो टोना अनखानि जो दुर्भाव ते हाहमारत ताकी नजरि तथा अनरसानि उदासीनता इत्यादि सकलनको वहायदेहौं १ सबबाधा बहायदेहौं आनंदबशरहेते बालक किसी समय कबहूं नरोई पुनः पलकापर तथा गोदमें पुनः हिंडोरा इत्यादि सब थलमें शिशु सुमुख सोई बालक प्रसन्नमुख सुखपूर्वक सोई २ सब थल में शिशु बालक सुखपूर्वकरही अवकबहूं रोगीनहोई सदा आनंदरहीइत्यादिकहिभृंगीशब्दसुनाय भृंगबाजाबजाय हँसिकैभाव जिनकीकृपातेलोकनकोपालनहोत तिनकोमातानजरिभरावतीहैं पुनःयोगीचल्यो ३। २३॥

मू०। भूपतिरानीमनमगनशिशुसबअतुलनिहारि। गोदमोद मनगावतीरामदुलारिदुलारि १ रामदुलारिदुलारिवारि तनमनसबडारैं। क्षौरकर्मकोसुदिनबैठिकुलगुरुहिहँका रैं २ गुरुहिहँकारिबिवेकसुफलकरिमंगलबानी। गावहिं गीतविचित्रमोदमयभूपतिरानी ३। २४॥

टी०। शिशु सब अतुल निहारि स्वरूपता स्वभाव तेज सुलक्षण इत्यादि अतुल संख्या तौलरहित देखिकै भूपति दशरथ महाराज तथा कौशल्या आदि रानी प्रेमानंदमें मनते मग्न हैं रघुनंदनको गोदमें लिहे मनमें मोद आनंदभरा रघुनंदनको दुलारि दुलारि मंगलमय गीतगावती

हैं १ रघुनाथजीको दुलारिमन तन सर्वसधन वारनकरि डारतीहैं अर्थात् मनलगाये तनसों लालन पालन करतीहैं धन न्यवछावरि करती हैं क्षौर कर्म मूड़नको सुदिन यथा तीसरे वर्ष जेठशुक्ल दशमी भृगुवार हस्तनक्षत्र कन्यालग्न इत्यादि सुंदरदिनको महाराज सभामें वैठि कुलगुरुहि हँकारें कुलकेगुरु वशिष्ठजीको बुलाय २ गुरुहि हँकारि विवेक विचार पूर्वक सफलकिये मूड़नकरि अपनामनोरथपूर्णकीन्हे बाजाबंदिनकी विरदावली ब्राह्मणकी वेद धुनि इत्यादि मंगलवाणी उच्चार ह्वैरहीं वारवधू ग्राम स्त्री विचित्रगीत गावत रानिन सहित भूपति दशरथमहाराज मोद आनन्द-मय हैं ३ । २४ ॥

मू० । सन्तोषेमाँगनसकलगुरुतियद्विजपहिराय।बालककोशल
पालकेचिरंजीवसबभाय १ चिरंजीवसबभायदेतआशि
षअनुकूले ।नृपरानीकेसुकृतसुतरुकरहेअरुफूले २ फू
लेअवधनारिनरतेअतिआनँदपोषे । नाकनगरअहिनग
रनारिनरमनवांछितसबतोषे ३ । २५ ॥

टी० । बंदी मागध सूत नटादि याचकनको संतोषे मन भावत दान दीन्हे पुनः गुरुवशिष्ठकी तिया तथा द्विज अपर ब्राह्मणकी स्त्री इत्यादि को भूषण बसन पहिरायेते सब आनन्दवश सबकहत कि कोशलपाल अयोध्याको पालनहारे दशरथ महाराजके बालक सबभाय चिरंजीव रहैं चिरनाम बहुतकाल जीवहिं १ राम भरत शत्रुहनादि सबभाय चिरंजीव रहैं ऐसा आशीर्वाद अनुकूले प्रसन्न ह्वैकै सबदेत तथा प्रशंसा करते हैं कि नृपदशरथ महाराज रानीकौशल्या कैकेयी सुमित्रा इत्यादिके सुकृत सुर-तरु करहे अरु फूले पूर्वपुण्याय रूपजो कल्पवृक्षहै सो करहे कलिआने अर्थात् उत्तमपुत्रको जन्मभया पुनः फूले अर्थात् नामकरण सूर्यावलो-कन भूम्युपवेशन मूड़नादि उत्सव होतेजातेहैं विवाहमें सफल होइँगे २ अत्यंत आनन्द करिकै पोषे ताते अयोध्याजीके नारि नर परमानंद के भरेफूले फिरते हैं नाकनगर जो इन्द्रलोक अहिनगर जो पाताललोक तहांकेवासी लोग सब वांछित मनकामना पाये ताते तोषे संतोष कीन्हे भावजो अवतारभयातौ कछुकालमेंहमारे दुःखदायकको मारहिंगे ३।२५॥

मू० । आँगनरानीचलनासिखावतचारयोसुतकरलाय । गिरत

परतउठिचलतहँसतपुनिरोवतरहतरिसाय १ रोवतरह
तरिसायभँगुलीटोपीडारैं । मुक्तनमालविदारिनयनभ
रिनीरनिहारैं २ नीरनिहारैंहँसतसुनतभतितोतरिवानी।
भजतभवनकोपैठिधरतलैआँगनरानी ३। २६ ॥

टी०। कौशल्यादि रानी रघुनंदनादि चारयोसुतन पुत्रनको करलाय हाथ पकराय आँगनमें चलन सिखावत चलतमें अरबरायकै गिरि गिरि परतपुनःउठि चलत प्रसन्नह्वै हँसत कबहूँ उदासीन ह्वै रोवत जब मन भावत न भयो तब रिसायरहत मातुके बुलाये कनियाँको नहीं आवत१ जब रिसायरहत मातनके बुलाये न आये तब माताजाय विलगबैठी तब अत्यन्त रिसाय भँगुलीटोपी उतारि भूमिमें डारिदेत तबहूँ माता नआईं तब मुक्तनमाल विदारत मोतिनके माला गरेते तूरिफेंकि देत तबहूं जो माता न लगआईं तब नयननमें आँसु नीर भरे मातनकी ओर निहारत २ नेत्रनमें नीरभरे निहारत देखि माता धायउठाय गोदमें लैलिये तब प्रसन्न ह्वै हँसतपुनः तोतरिबानी बोलत सो मातासुनत आनन्द होत पुनः भजत भवनमें पैठि भागिके अँधेरे मन्दिरमें पैठिजाइ लुकते हैं तहां ते उठायलाय रानी आँगनमें धरती हैं पुनः भागत ३। १६ ॥

मू०। भूपहर्षिकरवायोरुचिसोंकरणबेधउपवीत। छोटेधनुषबा
णकरलीन्हेसमुभनलागेनीत १ समुभनलागेनीतिवेद
विद्यागुरुदीन्ही। धर्मकर्मगतिअगतिस्मृतिश्रुतिमगज्य
हिकीन्ही २ श्रुतिमगज्यहिकीन्हीजगतजाहिसिखायेसब
सिख्यो।धर्मप्रकटजगकरनकोपरब्रह्मनृपघरबस्यो३। २७

टी०। गेरहेंवर्ष बैशाखशुक्ल दशमी गुरुवार उत्तराफाल्गुणी वृपलग्न में भूपदशरथ महाराज हर्षि रुचिसों आनन्द ह्वै चाह सहित कर्ण बेध कनछेदन पुनः यज्ञोपवीत करवाये अर्थात् मूंजी मेखला दंडादि धारण कराय वेदीपर बैठाय वेद विधानते चारिहु कुमारनको जनेऊदीन्हे पुनः छोटेधनुष तथा बाणकर हाथनमें भाव बाण चलावन सीखने लगे पुनः उचित अनुचित आचरण रक्षादंड प्रजापालादिनीति समुभन लगे १ नीतिसमुभनलगे पुनः गुरु वशिष्ठ बेदविद्यादीन्हे अर्थात् चारिहूवेद न्याया-यादिशास्त्र व्याकरणादि विद्या सब देशनकी भाषा सब जीवनकी बोली

इत्यादि सबपढ़ाये पुनः गतिअगति कर्मधर्म ज्याहि श्रुतिमगस्मृतिकीन्ही अर्थात् जो धर्मके कर्म करिकै स्वर्ग वैकुंठादि जीवनकी शुभगति होती है तथाजो अधर्मकर्मनकरिकै गर्भवासनीच योनिनमेंजन्म रुजनरक सांसति आदि यावत् जीवनकी अगति होतीहै इत्यादि जो वेद सुगम जानिवेहेतु स्मृतिमानवादि धर्मशास्त्र हैं सो पढ़े २ जौनेप्रभुने श्रुतिमगरचे वेद धर्म राह संसारमें प्रसिद्धकीन्हे पुनः जाहिसिखाये सब सिख्यो अर्थात् जाकी कृपाते वेदधर्म कहवेको आचार्य समर्थभये सोई परब्रह्म जगमें वेद धर्म प्रकट करने हेतु नृपघर बस्यो दशरथ महाराजके घरमें बालक ह्वै आइ वासकीन्हे ३ । २७ ॥

मू० । जाकेनामप्रभावतेजन्ममरणदुखजाय । वेदशेषशारदशिवाशिवकोअगमदिखाय १ शिवकोअगमदेखायभेदब्रह्महुनहिंपायो । भक्तनकेहितसोयकौशलाउरमहँआयो २ कौशल्याकेउरबसेदशरथसुतकहिगावते । कामक्रोधमदलोभदुखनाशैनामप्रभावते ३ । २८ ॥

टी० । जा प्रभुके नाम प्रभावते जन्म मरणादि भव दुःख जीवको छूटि जाता है यथा मरणकालयमनके मुखते हराम निसरिगया ताके प्रभावते हरिपुरवासपायो पुनः वेद शेषशारदा शिवाजो पार्वती तथा शिव इत्यादि को अगम देखाय जिनकी ऐश्वर्य महिमा नहीं जानिसकत १ शिवको अगम देखाय तथा जिनको भेद ब्रह्मौ नहीं जानिपायो सोई प्रभु भक्तन के हित कौशल्याजी के उरमें आयबसे सब के देखनमात्र गर्भवास में आये २ कौशल्याजी के उरमेंआये ताते वेद पुराणादि सब दशरथसुत कहि गावते जिनके नामप्रभावते रामनाम स्मरण करतसन्ते जीवनको काम क्रोध मद लोभादि समग्रदुःख नाशह्वै शुद्धहोत ३ । २८ ॥

मू० । विश्वामित्रमहाऋषयविपिनबसैंमुनिसंग । योगयज्ञहोमादिव्रतकरतदनुजखलभंग १ करतदनुजखलभंगहृदयमुनिमन्त्रविचारयो । हरिअवतरेसुअवधहरणमहिभारनभारयो २ भारयोसुखउपजायकैहरिहोइनयननिविषय । सरयूसरिस्नानकरिगेदरबारमहाऋषय ३ । २९ ॥

टी० । क्षत्रीते ब्राह्मणभये ब्रह्माको अनादरकरि दूसरी सृष्टिरचे तथा गायत्री जपविधानमें विश्वामित्रैऋषि लिखे ऐसे महान् ऋषि विश्वामित्र अनेकन मुनिनके संग विपिन बन गंगातट चरित वनमें वसतेरहैं जब रावण अधर्म प्रचारहेतु भूमण्डलमें राक्षस टिकाइदिया तथा चरित वन में सेनासहित ताडकासुबाहु रहतेरहैं ते ऐसा उपद्रवकरैं कि जब विश्वामित्र यमनियमादि योगक्रिया तथा व्रत होम यज्ञादि करनेलगैं तबखल दनुज दुष्ट राक्षस भंगकरिदेवै १ खल दनुजनको भंगकरतेदेखे तब मुनि विश्वामित्र हृदयमें मन्त्रविचारयो यह विचार दृढ़कियो कि महिभारयो भारनहरण हरि अवध अवतरे भूमिके भारी भारन रावणादिको हरण श्रीरघुनाथजी अयोध्याजी में अवतारधरे तहाँजाय महाराजते माँगिकै राम लषणको लावों ते रक्षाकरैं तब यज्ञकरौं २ पुनः हरिहोई नयनन विषय रघुनन्दनको सुन्दर स्वरूप नेत्रनभरि देखिहौं इति भारीसुख उरमें उपजायकै मनोरथ करतसन्ते चले अयोध्याजी में पहुँचि सरिनदी जो श्रीसरयूजी में स्नानकरि पुनः महाऋषय विश्वामित्रजी महाराज के दरबारके द्वारपैगये द्वारपाल के हाथ खबरि जनाये ३ । २९ ॥

मू० । सुनिराजासहसाउठेमिलेधायपरिपाँय । लैआयेभीतरभ
वनशुभआसनबैठाय १ शुभआसनबैठायनारियुतमुनि
वरपूजे । उदयभयोनिजभागमोहिंसमसुकृतनदूजे २ दू
जोआपुनजानियेपदरजकोसेवकसदा । कहियकृपाकरि
काजनिजकरहुंतुरतमंगलप्रदा ३ । ३० ॥

टी० । विश्वामित्रको आगमनसुनि राजादशरथजी सहसा शीघ्रही उठे धायकै मुनिके पाँयनपरि प्रणामकरि मिले भाव ऋषि उठाय हृदय में लगायलीन्हे पुनः राजमन्दिर के भीतरलाये तहाँ शुभआसन मंगलीक सिंहासनपर बैठाये १ शुभ आसनपर बैठारि पुनः नारियुत कौशल्यादि रानिनसहित मुनिवरपूजे मुनिनमें श्रेष्ठ जो विश्वामित्रजी तिनकी षोडशोपचार पूजाकीन्हे पुनः महाराजबोले हे मुनीश्वर आपुके दर्शनभयेते निज मेरी बड़ीभाग्य उदयभई मोहिंसम आजु सुकृत दूजे किसीकी नहीं है अर्थात् अहोभाग्य मेरी उदयभई तबतो आपु ऐसे महात्माआय दर्शन दीन्हेउ २ पुनः महाराज बोले हे मुनीश दूजो आपुनजानि दूसरा कोई भाव मेरेसें न आपुजानिये केवल आपुकी पदरज पाँयनकी धूरिको सेवक

सदाहौं अर्थात् लघुदासकरि सदा जानिये पुनः जिसहेतु आपुआयेहौ सो निज आपनाकाज कृपाकरि कहिये सो मंगलप्रदा प्रकर्ष करिके मंगलको देनहारा आपुको काज ताको सुनतसन्ते तुरतही परिपूर्ण करोंगो भाव नेकहु विलम्ब न करिहौं ३। ३० ॥

मू० । सुनिभूपतिद्विजमित्रगायमहिशोचनिवारन । ममआश्र
मखलदनुजकरतउतपातअपारन १ पारनपावहिंमुनिवि
कलरयनदिवससंकटपरै । धर्मजातश्रुतिसेतुसकलवल
खलहरै २ हरैविपतिदारुणजबैरामलषणजोदेहुमति । तु
मकहँयशइनकोसुफलगुणहुनमनसुनिभूमिपति ३ । ३१ ॥

टी० । द्विज ब्राह्मण तिनके मित्र सदा हितकर्त्ता तथा गाय अरु महि जो पृथ्वी इत्यादि के शोच दुःख तर्कणा ताके निवारण मिटायदेनहारे अर्थात् हे धर्मधुरीण भूपति महाराज दशरथजी मेरेवचन सुनिये मम मेरे आश्रमपर खल दनुज दुष्ट राक्षस अपारन जोकहेते पारनहीं पाइयत ऐसे अधिक उत्पात करतेहैं १ ऐसे राक्षस घेरेरहते हैं कि रैनि दिवस रातिउ दिन महासंकटमें परे सब मुनि विकलहैं ताते दुःख सिंधुते पार नहीं पावते हैं पुनः श्रुति सेतु वेदकी मर्यादा धर्म नाशहूनजात भाव धर्मआचरण कछु भी नहीं करनेदेत खल सकल वल हरैं अर्थात् मुनिनको वल योग जप तपस्या हवनादि सो दुष्ट राक्षस करने नहीं देत ताते मुनिनको सब वल हरेलेतेहैं २ इत्यादि दारुण विपत्ति सब मुनिनको है सो तब हरैं नाशहोइँ जब ऐसी दयामय मतिकरो राम लषणको हमैं माँगेदेहु येजाय राक्षसनको मारैं तब हमारी विपत्ति छूटी पुनः तुमको भी पावन यशहोई अरु इन बालकनको सब मनोरथ सफलहोई भाव इसवातमें सिवाय लाभ के हानि नेकहू किसी को नहीं है ऐसा विचारि हे भूपति मनमें गुणहुना हानि कछु न विचारहु हर्ष सहित देहु ३ । ३१ ॥

मू० । सुनतैराजासूखिगोकमलवदनकुम्हिलान । नाहकमुनि
दाहच्योहृदयमांगहिजीवनप्रान १ मांगहिजीवनप्राणराम
लक्ष्मणकिमिदेऊ । जाहिनिरखिरहै नयनपलकनिरखत
नहिंलेऊ २लेउअयशपातकसवैसुनिमुनिमनमेंगुणिकहै।
मांगहुतनधनधेनुमहिरामदियेकिमितनुरहै ३ । ३२ ॥

टी० । रघुनंदनको वियोगकारक अप्रियवचन मुनिके कहे सुनतैं राजा दशरथजी सूखिगयो कमलवदन कुम्हिलान अर्थात् यथा प्रफुल्लित कमलपालकी झारलागे मुरझाय जात तथा वचनपालपाय कमल सम मुख महाराज को सूखिगयो करुणावश शोचकरनेलगे मुनि नाहक हृदयदाहेउँ बेअपराधही विश्वामित्र हमारे हृदयमें विरहाग्नि दाह उपजाये काहेते मेरे प्राणन के जीवन जिआवनहारे माँगतेहैं १ मेरे प्राणन के जीवन राम लषणको माँगते हैं तिनको किमि कैसे देउँ काहेते जाहि निरखिरहै जिनको देखतसंते मेरे प्राण तनमें रहतेहैं पुनः निरखत नयनपलक नहिं लेउँ अर्थात् रघुनंदनके मुखचंद्रकी माधुरी अवलोकत संते चकोरवत् नेत्रनते पलक नहीं लगावताहौं २ सबै पातकअरु अयशलेउँ सबप्रकार के पाप अपयश सो सहिलेहौं रघुनंदनको न देहौं इति पूर्व मुनिके वचन सुनि महाराज मनमें गुणि विचारकरि प्रसिद्ध मुनिसों कहत कि तनु मेरी देह माँगौ धन मणि सोनादि धेनु गाईं महि पृथ्वी इत्यादि माँगउ सो हर्ष सहित देउँ अरु रामदिये किमि तनुरहै जो रघुनंदनको दैदेउँ तौ मेरे तनमें प्राण कैसे रहैं ३ । ३२ ॥

सू० । कहवशिष्ठराजासुनहुसुतमुनिपतिकहँदेहु । इनकीकृपाकृपालकीकुशलआयहैंगेहु १ कुशलआयहैंगेहदनुजसबकरहिंसंहारन। सिद्धशुद्धकरिहोमसुयशजगमोंविस्तारन२ विस्तारनमंगलसुवनआनभांतिनाहिंमनगुनहु । सौंपहु विश्वामित्रकोकहवशिष्ठभूपतिसुनहु ३ । ३३ ॥

टी० । विश्वामित्र के सन्मुख महाराज की दशा देखि अनेक विघ्न विचारे तिनके निवारण हेतु वशिष्ठजी कहे कि हे राजा दशरथजी सुनहु मुनिपति जो विश्वामित्रजी तिनको सुत पुत्रनको देहु यामें कछु हानि नहीं है काहेते इन विश्वामित्र कृपाल कृपागुण मंदिरकी कृपाते तुम्हारे पुत्र कुशल पूर्वक गेह घरको आइहैं १ कौन भांति कुशल गेह को आयहैं दनुज सब करहिं सँहारन दनुज राक्षसादि यावत् यज्ञ विघ्नकर्त्ता हैं तिन सबको रघुनंदन नाशकरिदेइँगे पुनः होम मुनिकी यज्ञ ताको शुद्ध सिद्ध करि विधिपूर्वक पूर्णकरि जगमें सुंदर यश विस्तारन करि हैं अर्थात् मुनिनके सुख हेतु यज्ञ रक्षाकरि दुष्टनको मारि हैं ताते इनको सुयश संसार में फैली सब जन गानकरि हैं २ हे महाराज तुम्हारे सुवन पुत्र मंगल

विस्तारन प्रसिद्ध उत्सव संसार में फैलावनेवाले हैं आनभांति नहिं मन गुनहु अर्थात् केवलमाधुर्य्यमें कोमल राजकुमारै न विचारहु ऐश्वर्य ते परब्रह्मको अवतार हैं लोकमें दुष्टनको नाशकरि भूभार उतारि वेदको धर्म स्थापन करहिंगे ऐसा विचारि हर्षसहित विश्वामित्र को पुत्र सौंपहु दैदेहु इत्यादि बशिष्ठजी कहे कि हे भूपति दशरथ मेरे वचन सुनहु मानहु ३ । ३३ ॥

मू० । गुरुबशिष्ठकेबचनकोकैसेतजैंनृपाल । रामलषणकोबोलि कैसौंपेमुनिहिकृपाल १ सौंपेमुनिहिकृपालशीशसबसभा नवायो । कौशिकदियोअशीषमनहुंजपतपफलपायो २ पयबहायबारिजनयनउठेमौनधरिभवनको । उत्तरकछुन मुखकढ्योगुरुबशिष्ठकेबचनको ३ । ३४ ॥

टी० । बशिष्ठजीगुरुहैं तिनकेबचननको नृपालकैसेतजैं दशरथमहाराज गुरुके बचननहीं त्यागिसक्तेहैं ताते रामलषणकोबोलि लषणलाल सहित रघुनन्दनको बुलाय कृपाल मुनिहिं सौंपे कृपागुण मन्दिर मुनि विश्वामित्रको दैदीन्हे १ कृपाल मुनिहि पुत्रसौंपि पुनः सबसभासहित महाराज शीश नवायो मुनिके प्रणामकीन्हे कौशिक विश्वामित्रजी महाराज को अशीश दीन्हे मनहुं जपतप फलपाये प्रभुको पायकैसे आनन्द भये मानहुं जन्मभरि जो कछु मंत्रजप तपस्यादि कीन्हे त्यहि सुकृतको फल पाये हर्षसहितचले २ इहांदशरथमहाराज पुत्रवियोगदुःखते बारिजकमल सम नयनते पय आँसु जल बहाय सभातेउठे भवन घरके भीतरको चले गये बशिष्ठजी के बचन को उत्तर कछु मुखते न कढ्यो गुरू को बचन अंगीकारकीन्हे ३ । ३४ ॥

मू० । बेदमंत्रदैसकलअंगशत्रुनकेमारण । नींदभूखअरुप्यास त्राससबअशुभनिवारण १ अशुभनिवारणपंथसुपथमंगलमयसुन्दर । बड़ोभागनिजसमुझिकरतआयसुप्रभुसादर २ सादरपूछतबेदगतिमृगतरुभूधरभूमितल । पाठ करावतगुणकहतबेदमंत्रदैदैसकल ३ । ३५ ॥

टी० । शत्रुनको मारन योग्य बाणविद्या बलाबलादि सकल अंग

ताकेमंत्र बिश्वामित्रजी प्रभुकोदै सबभाँति सबलकीन्हे कौनकौन सबलता नींद भूख प्यास अशुभ अमंगल कर्त्ता यावत् बिघ्न तिनसबको निवारण मिटाइ देने योग्य बाणबिद्या १ अशुभ पंथ निवारण अमंगलकर्त्ता पन्थ मिटाइ सुन्दर मंगलमयपंथदेनेवाली भावाबिद्याकेप्रभावते सबभांतितेआ-नन्दबनारहै सो बिद्यापायनिज आपनोबड़ोभाग्य समुझिप्रभु श्रीरघुनाथ जी सादर आदरसहित मुनिको आयसु करत श्रद्धासहित आज्ञापालन करत २ सादर वेदगति आदरसहित बेदतत्त्वको भेद पूछते हैं तथा बाल स्वभावते बनमें मृगनकी जाति तरु वृक्षनकेनाम भूधर पर्वत भूमितल पूछते हैं यथा यहकौन मृगा है यह काहेको वृक्ष है यहकौन पर्वत इस भूमिकाको क्यानामहै इत्यादि मुनिते पूछतजात सो बतावत पुनः मुनि बाणबिद्यामय बेद के सकल मंत्र दै दै प्रभुसों पाठ करावत पुनः उसी मंत्रके गुणकहत यथा यह अग्निबाण सबको भस्म करिसक्ता यहबायु बाण सबको उड़ाइ सक्ता इत्यादि ३ । ३५ ॥

मू० । मारयोबीचहिताड़काएकबाणश्रीराम । मुनिचितवतचकृ-
तखड़ेगईहर्षिसुरधाम १ गईहर्षिसुरधामरामकोमुनिमन
चीन्हे । आश्रमनिजप्रभुपूछियज्ञआरंभितकीन्हे २ कीन्हे
यज्ञअरंभप्रभुधनुधरिबाणसुधारिकै । खलसुबाहुमारीच
सँगधायोधूमनिहारिकै ३ । ३६ ॥

टी० । बीचराह में ताड़का मिली ताको एकहीबाणते श्रीरघुनाथजी मारें छाती में बाण लागतही देहत्यागि हर्षि के अर्थात् बिमान पर चढ़ि सुरलोक को गई ताकी गति मुनि चकितह्वै खड़े चितवतरहे एकबाणते वाको मरिजाना स्वर्गजाना आश्चर्य माने पुनः धीर्यकीन्हे १ क्याधीर्य कीन्हे अबतक मुनि माधुर्य रूपमें भूलेरहे जब ताड़का हर्षि सुरधाम गई तबमुनि मनते दृढ़ करि रघुनाथजी को चीन्हे ऐश्वर्य रूपको बोधभया पुनः आश्रममें आनि मुनि प्रभुसों पूछि यज्ञ आरंभ कीन्हे २ जबमुनि यज्ञ आरम्भ कीन्हे तब प्रभु धनुषपर बाण सुधारिकै रक्षाहेतु आगे खड़े भये यज्ञको जो धूम उठा ताको निहारि भंगकरिबे हेतु खल महादुष्टसु-बाहु मारीच सेनासंगलै क्रोधकरि मुनि आश्रम को धायो ३ ।३६ ॥

मू० । दलमारेसबलषणअनलशरजारिसुबाहै । प्रभुमारीचहि

उदधिपारकरिबाणचलाहै १ बाणचलाहैअफलसुफलक
रिहोमबिधानै । बर्षतसुरशुभकुसुमअशीशतकृपानिधा-
नै २ कृपानिधानहिजानिकैयज्ञभागदैअमियफल । धनु-
षयज्ञथलजनककेचलेरामऋषित्यागिथल ३ । ३७ ॥

टी० । राक्षसन को दल जो संगमें रहा ताको लक्ष्मणजी मारे पुनः अनल शर अर्थात् अग्निबाणते प्रभु सुबाहुजारे सुबाहुको भस्मकरि पुनः प्रभुको बाण ऐसा वेगतेचलाहै जो मारीचको उड़ाय उदधिसमुद्र के पार करिदियो १ कैसाबाण चलाहै अफल बिनागाँसीकोरहा सबबिघ्न निवारणकरि होमकी जो बिधि बिधानरहै ताको सुफलकरिदीन्हे यज्ञ पूर्णभई खलनाशभये ताते आनंद ह्वै सुर जो देवता ते कुसुम फूल बर्षते हैं पुनः कृपानिधानै कृपा गुणभरेमंदिर जो श्रीरघुनाथजी तिनको आशीशत देवतासब आशीर्वाद देतेहैं २ कृपानिधानको रक्षाकर्त्ता जानिकै यज्ञभागको अमियफल दै अर्थात् बहुत दिनपर स्वतंत्रह्वै यज्ञको भागपाये ताते देवता अत्यंत प्रसन्नह्वै अमृतकी समान नाशरहित उत्तम फलदीन्हे भावरामानुराग दृढ मुनिको करि दीन्हे ३ । ३७ ॥

मू० । गौतमऋषिकीभामिनीतनपषाणज्यहिठौर । गयेलषणरघु
बंशमणिमुनिकौशिकशिरमौर १ मुनिकौशिकशिरमौरपू-
छिबूझोसबकारण । दारुणदाहबिचारिपाँवधरिकीन्हनि-
वारण २ कीननिवारणपाँयकीजयकहिउठिद्युतिदामिनी ।
तुलसीबिनतीमृदुकरतगौतमऋषिकीभामिनी ३ । ३८ ॥

टी० । गौतमऋषिकी भामिनी स्त्री अहल्या पतिशापते वाकोतन पाषाण पत्थरह्वै ज्यहिठौरपरीरहै तहाँको लषणसहित रघुबंशमणि श्रीरघुनाथ जी तथा मुनिनके शिरमौर कौशिक बिश्वामित्रजी सहितगये १ मुनिन के शिरमौर कौशिकते पूछिकै सब कारणबूझो शापहोनेको सबहाल प्रभु जानिलिये तब दारुणदाह बिचारि भाव अहल्या के उरमें महा कठिन तापहै ऐसा विचारि पाँवधरि निवारण कीन्ह श्रीरघुनाथजी अहल्या को दुःखितजानि पदरज छुवाय पापशापते उद्धारकरि पावन नवीन दिव्यदेह करिदीन्ह २ जब प्रभु वाकोशोक निवारणकीन्हें तबपाँयकी जयकहि द्युति

दामिनिं उठी अर्थात् दामिनीकी ऐसी ज्योतिहै जाकेतनमें ऐसीदिव्यदेह अहल्या श्रीरघुनाथजीके पाँयनकी जयजयकारकरिउठी पुनः गोसाईंजी कहत्त कि गौतमऋषिकी भामिनी अहल्याउठि प्रभुको प्रणामकरि हाथ जोरि प्रेमपुलकावली सहित मृदुविनती करत कोमलबाणीते श्रीरघुनाथ जीकी स्तुतिकरनेलगी ज्ञानगम्यश्रीरघुनाथजीकीजयहोयइत्यादि ३।३८॥

मू० । जयजयजगदातारप्रभुहरणघोरमहिभार । दीनबन्धुदा-
नवदहनसबगुणरूपउदार १ सबगुणरूपउदारभजत
शिवशुकसनकादी । पावतथाहनचरितमध्यअन्तहुनहिं
आदी २ आदिजन्मजड़कुकृतकरिभईशापपापनमई ।
आजुपरसिपदपद्मरजरामसुकृतमंदिरभई ३ । ३९ ॥

टी० । अहल्या बोली हे प्रभु जगदातार जगको सबफल देनेके दानी तथा महि घोर भारपृथ्वीपर रावणादि महाभयंकरभारहैं तिनके हरणहार आपुकी जयहोय जयहोय हेदीनबन्धु दानव दहनपौरुषहीन दीनजन के बन्धु समान हितकर्त्ता तथा दुष्टदैत्य राक्षसादि बनको भस्मकर्त्ता सब गुणरूप उदार कृपा दया क्षमा शील वात्सल्य सौहार्द करुणादि अनन्त कल्याण गुण सहित उदाररूप याचकमात्र को परिपूर्ण दान देनहारहौ १ सबगुणको भरा जोउदाररूपहै ताको शिव शुकदेवसनकादि इत्यादि सब भजत मनेंद्री लगाये आपुको सेवन करते हैं पुनः आपुके चरित आदि मध्य अन्त अर्थात् पूर्वकैसा चरित कीन्हेउ अब क्या करते हौ आगे क्या कबतक करौगे इत्यादि की थाह कोऊनहीं पावत भाव आपुको चरित अपार अगाध समुद्रसमहै तामें सबआचार्य पिपीलिका सम हैं २ आदि जन्मजड़ अर्थात् जाको आपनी हानि लाभ तथा दुःख सुख मोहते न सूझै ताको जड़कही यथा जडः अज्ञः द्वे अत्यन्त मूढस्य यदुक्तं इष्टंवा निष्टंवा सुखदुःखेवान चेहयोमोहात्विन्दतिपरवशगः सभवेदिहजड़संज्ञकः पुरुष इत्यादि जड़स्वभाव जन्म के पूर्वअवस्था में कुकृत करि कुकर्म करि अर्थात् बिना बिचार करिलीन्हे परपाति में रतभई भावजब हमारे पति स्नानहेतु गंगातट गये तबमुनि को रूपधरि इन्द्रआया तब बिचार करनाहै कि स्नानको चलिकै रतिके हेतु मुनि क्योंआये जो मुनिहौ तौ बतावो पूर्वहमते आपुते क्याबात्तभई इत्यादि बिबेक कीन्हे छलप्रसिद्ध

है जाता सो विचार नहींकीन्हेउ वाकेसंग रतिकरि पापमयी शापितभई सो महादुःख रहै सो आजु रामपद पद्मरज परसि सुकृत मन्दिर भई अर्थात् हे श्री रघुनाथजी आपुके पदकमलनकी धूरि लागेते पुण्य मय मन्दिर पावन भई २ । ३९ ॥

मू० । शापपापकोदुर्गकठिनरचिकर्मनराख्यो । मनबुधिचितअहम
शृंगभरेअघबस्तुनिचाख्यो १ वस्तुसकलमलराशिकाम
मददम्भसुभटघन । सुकृतसत्यरणजीतिकर्मकोअमलसबै
तन २ तनपगसुरगुणगायप्रभुरजवत्तदरुखअनलगहि ।
रिपुहिसाहितममकर्मनृपशापपापकोदुर्गदहि ३ । ४० ॥

टी० । कर्मन पाप शापको कठिन दुर्गरचिराख्यो अर्थात् मेरे कुत्सित कर्मसोई बलराजाहै ताने शापमय कठिन अतुटदुर्ग जो कोट ताको रचि राख्यो भावपाप शापते पापाणभया तन और कौन शुद्धकरि सक्ताहै इति कठिनदुर्ग तामें मनबुद्धि अरु चित्त अहम्जो अहंकार येचारों शृंगकंगूरा हैं ते कैसे पुष्टरहे कि वस्तुनिचाख्यो अघभरे अर्थात् जो असत् वस्तुइ विषयबश इंद्रिनद्वारा वाकी स्वाद ग्रहणकिया ताको जो पाप समूह सो मनादि में भरे ताते माटिभर धुससम पुष्ट मनादि शृंग हैं १ पुनः मनोरथ चिंतवन बुद्धि सों विचार अहंकार ते अपनपौ इत्यादि सब पुरुषस्त्री परधन हरण परहानि अपवाद तन पोषतादिमें रत इत्यादि सकलबस्तुमल जोपाप ताकी राशिढेरीताकोपाइ पुष्टबली जोकामअनेक भांतिकामना तथा मद जाति विद्या धनादि पाइ हर्षबढ़ावना तथा दंभ पुजावने हेतु झूठा वेष बनावनाइत्यादि धन बहुतसे सुभट वीरहैं तिन को लैकै सुकृत जो सत्कर्म सत्य धर्म आचरण इत्यादि को रणमें जीति अर्थात् असत् मनोरथादि प्रचंडपरि इंद्रिय विषय व्यापार में लगाय धर्म आचार को निर्मूल नाशकरिदियो तब अमल तन जो रहासो असत् कर्मन को होगया अर्थात् पूर्वका कछु सुकृत रहा ताके सम्बन्धते जोकोई इंद्रिय सत्कर्ममें भी लागतरिहैं सो नष्टहोनेते सर्वागतनेंद्री असत्कर्मन में लगे भावकिसीभांति मैंपावननहीं हैसक्तीरहौं तहां आपुअनुग्रहकीन्हे २ कैसे अनुग्रह कीन्हे हेप्रभु आपुके तनमेंजोपांयहैं तिनके जोगुण हैं तिन को सुरदेवता ब्रह्मादि गायरहेहैं ऐसेजो पद हैं तदरुख अनलगहि तौने

पाँयन को मेरी सन्मुख करना रूपजो अग्नि है ताको गहिकै मम कर्म नृपरिपुहि सहित शापपाप को दुर्ग रजवत् देहभस्मकरि दीन्हेउ अर्थात् पदरज मेरे शीशमें लगाय पाँयन को प्रभावरूप अग्नि लगाय मेरे शत्रु कुटिल कर्म जो सबलराजा रहा त्यहि सहित पापशापको जोदुर्घट कोट पाषाणको तन ताको धूरि सम सहजही भस्मकरि मोकोशुद्धकरि दीन्हेउ इत्यनुग्रह ३ । ४० ॥

मू० । अभिमतफलदातारदेवतरुवरसमकारन। कर्मकुमतिमल लागकृपाकरिकीननिवारन १ कीननिवारनपापभईमुनिघर कीभामिनि । अववरदीजियमोहिंचरणरतिदिनअरुयामि निरदिनअरुयामिनिरतरहौंचरणहरणमहिभारहौ । तुल सिदासबरपायकहिजयरघुपतिदातारहौ ३ । ४१ ॥

टी०। हेश्रीरघुनाथजी आपुअभिमत फलदातार मनवांछितफल देनहारे हौ कौनभाँति देवतरुवर समदेवनको वर श्रेष्ठ तरुवृक्ष जो कल्पवृक्ष ताकी समान बेस्वार्थ सहज स्वभावते मनोकामना पूर्णकरि देतेहौ सन्मुख होत शरण मात्रही काहेते सबभूतमात्रके आदि कारण सबको उपजावन हारेहौ कर्म कुमति मललाग मेरी मतिकुत्सित भई अर्थात् बिनाविचारे कुकर्म कीन्हेउँ ताहीते मलपाप मेरे लागिगया ताको आपु कृपाकरि निवारणकीन पापछुड़ायदीन्हेउ १ पापनिवारणकीन्हेउ पुनः शुद्धह्वै मुनि घरकी भामिनी नवीन पावन स्त्री सम मुनिकीपत्नी भइउँ इति लौकिक स्वार्थ तौ सब आपने किया अब परमार्थ हेतु वरदीजिये मोहिं कौन वर दिन अरु यामिनि चरणरति हे रघुनाथजी आपुके पद कमलनमें दिनौ राति मेरी प्रीति बनीरहै २ पुनः अहल्या कहत हे श्रीरघुनाथजी आपु महिभार हरणहारहौ अर्थात् भूमि को भार महापाप ताको नाशकर्ता हौ भाव सहजै कृपासिंधु हौ ताते कृपाकरि ऐसा मेराचित्त शुद्ध सनेही करि दीजिये जामें दिनौ राति आपुके पद कमलनमें रतरहौं इति सुनि प्रभु एवमस्तु कहे गोसाईंजी वर्णन करत कि मनभावत वरपाइ सब भांति आनंद ह्वैकै अहल्या कहत जय रघुपति दातारहौ जगत्भरे को मन वांछित देबेको महादानी ऐसे श्रीरघुनाथजीकी सदाजयहोय जयहोय कहि प्रणाम करि पति धामको गई ३ । ४१ ॥

मू०। लखिगतिसुरमुनिहर्षि वर्षिशुभसुमनसराहत । अशरण शरणसमर्थघोरभवसिंधुनिवाहत १ सिंधुनिवाहतअगम सुगमबरदायकलायक। कुमतिकुकर्मकुरेखकपटकलिकलुष नशायक २ कलुषनशायकरामप्रभुतुलसिदासभजितजि करष । मनबचउरकर्मनिभजहुलखिगतिसुरमुनिमनहरष ३ । ४२ ॥

टी०। गतिलखि सुरमुनिहर्षि सुमनवर्षि सराहत पाप शापमयीअहल्या की सुंदरि गतिभई प्रभुकी कृपाते पावनहै पतिको प्राप्तभई सोदेखिदेवता मुनि आनंदहै मंगल फूल बर्षत अरु प्रभुकी प्रशंसा करतेहैं क्या सराहत अशरण शरण समर्थ जासभीतको सहायक कोऊनहींहै ऐसे अशरण को अभयकरि शरणमें राखनेको समर्थ तथा शरणमात्र भवसिंधु निबाहत भवसागरते पारकरिदेत १ भवसिंधुते निवाहत अर्थात् जन्म मरण दुःख छुडावत पुनः अगमवर सुगमदायकलायक हैं अर्थात् जो वरदान ब्रह्मा शिवादिको देनेमेंअगमहै नाहीं दैसक्तेहैं सोई वरदान सुगमसहजही देदेने के लायक श्रीरघुनाथजी हैं कौन अगमवरहैजाकोसुगमदेनेलायकहैं कुमति अर्थात् जो जीवनकी बुद्धि कुमारगमें लगीहै ताते परधन परस्त्री पर अपबाद परहानि हिंसा वृथाजीवनको दंड इत्यादि जो कुकर्मकरतेहैं पुनः पूर्व असत्कर्मनको फल दुखभोगनेकी कुरेखा शीशमें ब्रह्मा लिखिदियाहै पुनः कपट अर्थात् कहते सुबचन साधुवेष अरुकर्म दुष्टनके करते हैं पुनः कलिकलुष कलियुगके जो करालपापहैं इत्यादि किसीके मिटायबेयोग्य नहीं तिनसबको नशायक नाशकरिदेनहारे अर्थात् शरणमात्र जीवनके कुमति कुकर्म कुरेखा कपट कलिकलुष इत्यादि नाशकरि शीघ्रहीजीवको शुद्धसनेही बनायलेते हैं २ कलुषनशायकरामप्रभु पापनको नाशकरन हारे श्रीरामै प्रभुहैं हेतुलसिदास देहाभिमानी जीव कर्षतजि तिनहिंभजि कर्ष जो मानमर्षतादि कठोर स्वभाव ताको त्यागि प्रभुकोभजु कौनभांति मन बच उर कर्मनिमन पद कमलनमें लगाये मुखते गुणगान उरमेंरूप को ध्यान कर्मनते कैंकर्यता इसभांति भजु काहेते जिनकी कृपातेअहल्या की सुंदरिगति देखि देवता मुनि मनते हर्षितभये ३ । ४२ ॥

मू०। चलेहर्षिमुनिसंगरामलक्ष्मणमगमाहीं।वनउपवनम्रृगाविहं

गविटपलखिपूंछतजाहीं १ पूंछतमुनिसबकहतन्हायसुर-
सरिरघुराई।कहतकथाइतिहासजनकपुरपहुँचेजाई२पहुँचे
प्रभुपुरनिकटलखिबागतड़ागनिअतिभले। खगमृगमधुप
समाजयुतजनकनगरदेखनचले ३ । ४३ ॥

टी०। लक्ष्मणजी सहित श्रीरघुनाथजी हर्षि आनंदह्वै मुनि विश्वामित्र के संग मगमाहीं रास्तामें आगेको चले बन जो आपहीभये उपबन जो समूह वृक्षलगा येते बनसमभये तहाँ मृगा विहंग जो पक्षी कोकिला मोर चकोर शुकसारिकादि तथा विटप आँब अनार कदंब कचनार विल्वादि वृक्ष इत्यादि पूंछतजाहीं यथा यहकौनबनहै यहमृगकौनजातिहै यहकौन पक्षीहै यह कौनवृक्षहै इत्यादि पूंछत राहमेंचलेजातेहैं १ रघुनाथजी जो पूंछत ताकोउत्तर मुनि विश्वामित्रजी कहतजातसंते सुरसरि जो गंगाजी तहाँ पहुँचे रघुराई न्हाय रघुनाथजी मुनिन सहित स्नानकीन्हे पुनः रघुनाथजी सों मुनि पुराणनके इतिहास कथाकहत चले जातसंते जाइ जनकपुरमें पहुँचे २ पुरके निकट पहुँचि प्रभु श्रीरघुनाथजी बाग तड़ाग नि अतिभले लखि सुमन बाटिका बाग बन तथा पक्के ताल अमलजल कमलफूले इत्यादि बाहेरहि अत्यंत शोभा देखि हर्षे काहेते बन बागन में खग पक्षी तथा अनेक भांतिके मृगनकी समाजयुतहै तथा तड़ागन में कमलनपर बाटिकनमें फूलनपर मधुप भ्रमरनकी समाजयुतहैं पुनः जनकनगर देखन पुरको चले ३ । ४३ ॥

मू०।बापीसुभगसरोजयुतसरवरविविधमराल।मानोंअगणितमा
नसरशोभादेतविशाल १ शोभादेतविशालविमलजलसु
धासपूरे।मणिगणपुरटबँधाननारिनरमज्जतभूरे२मज्जतसु
रमुनिआयजनुपर्वमानसरपायजग। लहतचारिफलपरशि
जलजापीबापीसरसुभग ३ । ४४ ॥

टी०। बापी जो बावली सो सुभग सुंदरी ऐश्वर्यमय बनी सरोज युत फूले कमलनसहित तथासर जो ताल तेवर उत्तम बने तिनमें विविध मराल अनेकहंस बैठे कैसे सोहत मानहु अगणित गनती रहित बहुत मानसरहैं ते विशाल बड़ी शोभा देरहे वा बड़े भारी ताल शोभा देते हैं १ कैसे विशालशोभा देते हैं सुधास अमृत सम स्वादिष्ट विमल जलते

पूरेभरेहैं पुनः मणिगण पुरट वँधान पुरट जो सोना अनेक रंगकी मणी जटित सीढ़ी वँधीहैं तहां भूरेनाम बहुत नारि नरमज्जत स्नान करते हैं ते कैसे शोभितहोते हैं २ यथा सोमवारी अमावस महावारुणी इत्यादि पर्वमें जगत् विषे मानसरपाइ जनु सुर देवता मुनि ऋिनसंयुक्तमज्जन करते हैं तिस जलको परशि अंगमें लागने ते जापीजो मंत्रजाप करने वालेहैं ते अर्थ धर्म काम मोक्षादि चारि फल लहत पावते हैं ऐसीवापी जो बावली सर जो तड़ागते सुभगहैं ३ । ४४ ॥

मू० । सुन्दरचहुँदिशिबागबनकुसुमितफलितअपाराजनुसुरधरकीबाटिकाबसीसहितपरिवार १ बसीसहितपरिवारकीरकोकिलधुनिराजे । पथिकनलेतबुलायात्रिविधविधिपवनसमाजै २ पवनसमाजैसुरभिसुखजनुवसंतऋतुगृहसघन । कहतुलसिदासप्रभुपुरनिरखिसुन्दरचहुँदिशिबागबन ३ । ४५ ॥

टी० । जनकपुरकीचारहुदिशिबागैं अरु वन सुन्दर कुसुमितफूले फलित फले अर्थात् बागन बननमें वृक्ष गुल्मलता ऐसे फूले फले हैं जिनकोक-हिकैकोऊ पारनहीं पायसकत कैसेशोभित होतजनु सुरधरकी सुरदेवता तिनकी धर जो भूमि अर्थात् देवलोककी वाटिकाबागैंहैं ते परिवार छोटे बड़े सहित तेई आय इहां बसी हैं १ देवलोककी वाटिका परिवार सहित बसी तिनमें कीर सुवा तथा कोकिलादि बोलत तिनकी धुनिराजै मधुर शब्द शोभा देरहाहै तथा त्रिविध विधि शीतलमंद सुगंधादि पवन की समाज पक्षिन को शब्द कैसा मनोहर है यथाज्ञातसंते पथिकनको बु-लाये लेत भाव राहगीरन को मनमोहितहोत ठाढ़े है शोभा देखते हैं २ काहेते पथिक मोहि जातेहैं त्रिविध पवनकी समाज तथा सुरभि जो सुगंध सो सुखदेरही है कौनभांति जनुवसंतऋतु गृह सघन वसंतकेवास करिबेको सघन मन्दिर है गोसाईंजी कहत जनकपुरके चारहु दिशिबाग वन ऐसे शोभितहैं जाको मनलगाय प्रभुदेखते हैं ३ । ४५ ॥

मू० । परेनृपतिसजिसैनमत्तगजरथहयराजत । नृत्यगानसुखथानसुभगदुंदुभिवरबाजत १ बाजतबंदीसूतयूथयूथनिभटगाजैं । वनितादिकशुभगानकराहिंसुरतियलखिलाजैं २

लाजैललखिअमरावतीसुरपुरकीशोभाहरे। विविधवृन्दइंद्रादिसुरसैनसाजिजनकपुरपरे ३ । ४६ ॥

टी० । जनकपुरके चारिहुदिशि बाहिर सरम्याप्ति समीपबागनमें सेना हाथी घोड़े रथ पैदरादि चतुरंगिनी सेनासजे नृपतिराजालोगपरे हैं तहांगज हाथीहयघोड़े बंधेरथखड़े इत्यादि गजन शोभादेरहेहैंतथा सखथाननमें नृत्य गान अर्थात् तंबूगड़े कनाते घेरी नमगीगतनेतिनमें ऊंची भ्ावाभाड़ेहैंगी नीचे ऊंचा कोमल बिछौनाबिछा तापर मसनदलगी गिर्दा गिर्दिमध्यरे आगे चौकड़े चंगेरखासदान पानदान अतरदान पीकदानधरे तहां मंत्री सुभटन सहित राजालोग बैठे सेवक चमर छत्र व्यजनादि सेवा साज लिहे खड़े हैं इति सुखके स्थाननमें यार मुख्यादि नृत्यगान करिरहीहैं कहांसुभग सुंदरी वरश्रेष्ठ दुंदुभी बाजिरहीहैं १ यथा नगारादि बाजा बाजत तथाबंदीजन विरदावली कहिरहे हैं सूतराजनके वंशकी प्रशंसा करिरहेहैं तथा युथ युथनि भटगाजें झुंडझुंड योधा गर्जतेहैं तालदेरहेहैं तथा वनिता पुरकी युवती आदि शुभगान करहिं मंगलीक गीतगायरहीहैं तिन-को रूपदेखि गान सुनि देवतनकी स्त्री लजाती हैं २ लाजैलखि अमरा-वती जनकपुर ऐसा शोभामय है कि सुरपुर देवपुरिनकी शोभा हरे लेतीहै ताते अमरावती इंद्रपुरी सोऊ जनक पुरको देखि लजाइजात भाव मेरे में ऐसीशोभा नहीं है काहेते जेअनेकन राजालोग टिके हैं ते कैसे शोभित होतेहैं यथासुर सेनता इंद्रादि तेविविधवृन्द अनेक प्रकारके वृंद यूथसेनसजे विभव सहित तेई वरुण कुबेर इंद्रादि आइ जनकपुरके आसपासपरे हैं ३ । ४६ ॥

मू० । धवलधामचित्रनिखचितकलशमनहुँगविज्योति । जगमगातखंभनिपुरटप्रकटदामिनीहोति १ प्रकटदामिनीहोति मोतिमणिझलकझरोखनि । भामिनिभूषणसजतमनहुँनु रतियतनधोखनि २ धोखनितनसुरधामसबधामधाम सब थलनचति । जनकनगरछविमयचकृतहाटबाटमणिमय खचति ३ । ४७ ॥

टी० । धवल धाम चित्रनिखचित उज्ज्वल रंगके जो मंदिर तिनमें अने-क रंगकी चित्र विचित्र चित्र सारीलिखीहैं तथा मंदिरके शीशपर जोकलश

हैं सो कैसे प्रकाशमान हैं मनहुं रवि सूर्यनकी ज्योतिसी प्रकाश होती है तथा पुरट जो सोनो ताके बनेहुये खंभनिमें जो हीरादि मणीजटित हैं ते कैसी जगमगात यथा दामिनी प्रकटहोतीहै १ यथा खंभनमें दामिनी सी ज्योति प्रकट होतीहै तथामणि मोती भरोखन में झलकते हैं तिनके भीतर मंदिरमें भामिनी जो दिव्य स्त्री आपने अंगनमें भूषण धारण किहे हैं सो सजत शोभा देरहेहैं अथवा अंगनमें साजि रहीहैं शृंगार करती हैं ते कैसी सुंदरी मनोहर देखातीहैं मनहुं सुरतियतन धोखनि अर्थात् देव लोकके धोखे जनकपुर में देवनकी युवती आयगई हैं यहमाधुर्य है तथा ऐश्वर्य में जनकपुरकी स्त्री ऐसीदिव्य शोभामय हैं जिनके आगे देवनकी स्त्री मानो धोखेहैं जो खेतमें झूंठही वनायकै ठढ़ियाय दीनी जातीहैंतैसी देखात २ सुरबाम जो देवतनकी स्त्री तिनके तन जिनके आगे धोखनि सी लागत ऐसी पुरमें सबस्त्री ते धाम धाम मंदिर मंदिर प्रति सबथल नाचती हैं ऐसा जनकनगर छविमयी है तहांकी हाट जो वजार वाटजो गली इत्यादि सर्वत्र माणिमय चित्रसारी ऐसी खचितहैं जाको देखिलोग चकृतह्वै जातेहैं ३ । ४७ ॥

मू० । सुनिश्रवणननरपालऋषयआगमनअनंदित । भूसुरवर गुरुज्ञातिसाथमुनिपदशिरबंदित १ वंदतिनृपहिविलोकि मिलेकौशिकमुनिनायक । भयेबिदेहबिदेहनिरखिद्वउसुत सबलायक २ सबलायकरघुनायकहिनरपतिनिरखिबिशा लको।देखिभानुकुलभूषणहितनमनबशनरपालको ३ । ४८ ॥

टी० । विश्वामित्र ऋषय को आगमन श्रवणन काननसों सुनि भाव विश्वामित्र महामुनि नगरकोआये इत्यादिक शब्दकानमें परतही नरपाल अनंदित महाराजजनकजी परमआनन्द ह्वै वरश्रेष्ठ भूसुर जो ब्राह्मण गुरु सतानन्द तथा ज्ञाति जो बंधुवर्ग इत्यादि साथलै चले जाइ मुनि पदशिर बंदित महाराज जनक पाँयनपर शीशधरि विश्वामित्र जी को प्रणाम कीन्हे १ नृपहि वंदत विलोकि मुनिनायक कौशिक मिले अर्थात् महाराजजनकजी को प्रणामकरते देखि मुनिनमें श्रेष्ठ जो विश्वामित्रजी ते उठाय उरमें लगाय मिले कुशल पूंछि निकट बैठारे तासमय दोउसुत सबलायक निरखि बिदेहबिदेहभये अर्थात् दोउ राजकुमारनको रूपस्वभाव तेज प्रतापादि समर्थ देखि प्रेमानंद ते विदेहजी विशेषिविदेह

भये भाव ब्रह्मानंद रूपमेंलगे रहैं तातें देहकी सुधि भुलाये रहे जबराम प्रेम प्रवाहसें मगनभये तब ब्रह्मानंद भी भूलिगया १ विशाल बड़े सुंदर तेजवंत सबलायक भानुकुल भूषणाहि रघुनायकाहि निरखि देखि नरपति नरनको पालनहारे तनमनतेवशभये अर्थात् सूर्यकुलमें भूषणसम प्रकाश कर्त्ता ताहूमें उत्तम जो रघुबंशतामें उत्तम जो श्रीरघुनाथजी तिनको प्रत्यंग निरखि देखि जनकमहाराज मनते सबअंतःकरणकरिकै तनतेंसब इन्द्रियन करिकै रघुनन्दनके बश ह्वैगये निरखब अंतरकी दृष्टि ते देखब नेत्रनते नरपति शब्द उचितहै नरपाल पूर्वशब्द अंतमें आवने की रीति कुण्डलिकामेंहोत तातेंपुरोक्त अथवा कथितपद दूषणनहींहोताहै ३।४८॥

मू०। बिबशरावभयेप्रेमथकेनिरखततनशोभा। लोचनभयेचकोररामसुखशशिरसलोभा १ लोभासकलसमाजपरस्पर चाहतरामै। धीरजधरिनृपकहतबूझिमुनिसबगुणधामै २ सबगुणतेजप्रतापमयकाकेसुरतरुफलनये। कहियकृपा करिकृपानिधियेबालककाकेभये ३।४९॥

टी०। रावजनकमहाराज तनकी शोभा निरखतसंते नेत्रथके मनते विवश बिशेषि प्रेमकेबशभये कौनभांति महाराजके लोचननेत्र चकोरभये राममुख शशिरसलोभा रघुनाथजीको मुखचन्द्रकेप्रेमरसमें लोभाइकैयक टकरहे १महाराजकेसाथ यावत्जनआयेरहैं सोसमाजभरि लोभान काहेते परस्पर चाहत रामै रघुनाथजीके अवलोकन सनेहबार्त्ता सबआपुसमें करतेहैं पुनः सबगुणधामै मुनिबूझि अर्थात् योगज्ञान विराग जपतप इत्यादि सब उत्तम गुणकेभरे मन्दिर हैं ऐसा मुनि विश्वामित्रको समर्थ समुझि भाव ऐसे तपोधनी समर्थको जहांतक उत्तमवस्तु प्राप्तहोइ सो सब उचित है तामें आश्चर्य न मानाचाहिये ऐसाविचारि धीरजधरि नृप जनकजी कहत २ जनकजी कहत कि रूप शीलादि सबगुणनकेभरे तेज प्रतापमय अर्थात् जो सहायरहित अकेले सबलोकभरेको परास्त करिसकै अरु किसी की दृष्टि सन्मुख न ह्वैसकै ताको तेजकही पुनः जाकी कीरति यश सुनि शत्रुके उरमें तापहोइ तथा सब जगतडरै ताको प्रतापकही ऐसे तेज प्रतापकेभरे ये जो दोऊकुमार हैं सो काके सुरतरु फलनये अर्थात् कौने सुकृतीके सुकृतरूप कल्पवृक्षमें सुन्दर उत्तम नये फलफले हैं भाव ऐसे

फल किसीने नहीं पावा है मुनि कृपानिधि कृपाकरि सबहाल कहिये ये दोऊबालक काके उत्पन्नभये ३।४९॥

मू०। कैमुनिमणिनृपमणिकिधौंयोगयज्ञफलआहिं । गणपतिप शुपतिलोकपतिममसंशयमनमाहिं १ ममसंशयमनमाहि ज्ञानगतिगिराविनाशी । बरबसइनवशहोततजतसुखरस अविनाशी २ अविनाशीअवलोकियेयुगलरूपनिजसँगर धौ।काहियप्रकटसंदेहमनकैमुनिमणिनृपमणिकिधौ ३।५०॥

टी०। कै मुनिमणि किधौं नृपमणि अर्थात् किसी मुनिके कुलके शिरोमणि उत्पन्नभये ताके योगके फल हैं किधौं काहू नृप राजाके कुल के शिरोमणि उत्पन्नभये ताकी यज्ञके फलआहिं भाव किसी मुनीश्वरने समूह योग क्रियादिकिया ताको फल वंशशिरोमणि इन कुमारनकोपाये अथवा किसी राजाने बड़भारी यज्ञकिया ताको फल वंशशिरोमणि इन कुमारनकोपाये अथवा गणपति गणेशजी पशुपति शिवजी ये दोऊ नर-रूपधारी हैं अथवा लोकपति अर्थात् वैकुण्ठलोक के पति भगवान् तथा पाताललोक के पति शेषजी ये दोऊ मूर्त्तिमान हैं इत्यादि मेरेमनमाहिं संशय है भाव जोमैं कहतहौं सोईहै वा नहींहै १ काहेते ममभेरे मनमाहिं संशय है कि इनके देखतसन्ते ज्ञानकी जो गतिहै विवेक विरागादि तथा गिरा जो बाणी इत्यादि विनाशी विशेषि नाशह्वैगई कौनभाँति कि मेरा मन अविनाशी सुखरस तजत अरु बरबस इनके बशहोत अविनाशी जो ब्रह्म ताको सुखरस जो ब्रह्मानन्द ताको मनत्यागेदेत अरु जबरइन इन कुमारन के बशहोत अर्थात् ब्रह्मानन्दत्यागि इनके प्रेमप्रवाह में ऐसामन मगनभया कि पृथ्वाक्षर वाणीनहीं मुखते कढ़त २ काहेते मेरी ज्ञानगति अरु वाणी विशेषिनाशभई अविनाशी नाशरहित अर्थात् दिव्यशोभा अवलोकि देखतसन्ते ये कुमार युगल दोऊरूप निजसंगरधौ निज आपने संग मेरेमनको रधौ परिपक्व प्रेमलगायलीन्हे अर्थात् रधधातुको संधन अर्थहोता है यथा चतुर रसोईदार भातु दालिको रींधि परिपक्व क-रिलेत्त तथा मेरेमनको प्रेम परिपक्वकरि आपने संगकरिलीन्हे तौ ये कौन हैं यह मेरेमनमें संदेह है ताको मिटायवेहेत प्रकट इनको हाल कहिये मुनिमणि मुनिन के बालक हैं किधौं नृपमणि काहू राजा के बालक हैं

सो प्रसिद्धकरि कहिये वेष राजन को संग मुनि के ताते दोऊ नामलैपूंछे अपूर्वरूप तेजते मनुष्यरूप में देवरूपकी शंका ३ । ५० ॥

मू० । जपतपब्रतरतधर्मजगतजहँलगिशुभकर्मनि । दयाक्षमादिकनेमाक्रियाआचारचारगनि १ चारवेदसबभेदयोगासिधिसाधतयोगी । आतमअनुभवरूपब्रह्मसुखपावतभोगी २ पावतभोगीयोगबशसोप्रकटतकबहुँकहिये । सोफलमुनिनायककिधौंजपतपबलतेप्रकटकिये ३ । ५१ ॥

टी० । गायत्री आदि विधिपूर्बक जप तथा जलशयन पंचाग्नि आदि तपस्या तथाएकादशी चान्द्रायणचतुर्मासादिव्रततथासत्यशौचतपदानादि जो धर्म हैं तामेंरत प्रीतिकिहे पूजापाठ संध्या तर्पण तीर्थाटन दानादि जहांलगि शुभकर्म्म जगत्में हैं सो सबकरि तथा दया अर्थात् बे प्रयोजन जीवनकी रक्षा तथा क्षमादिक जो यमहैं यथा योगशास्त्रे ॥ तत्राहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्य्यापरिग्रहायमाः॥अर्थात्अपराधौकिये जीवकोनमारैझूठन बोलै अस्तेयनाम चोरी न करै ब्रह्मचर्य इंद्रियजीतेरहै परिग्रह विषयनको संगत्यागेरहै पुनः नियमकीक्रिया यथायोगशास्त्रे॥शौचसंतोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानिनियमाः इत्यादि क्रियाकरै पुनः अपने वर्णआश्रमादि की जो रीति वेदमें लिखीहै ताही अनुकूल चलना यही आचारहै अर्थ पंचकेयथा ॥ सदाचार्य्योपदेशात्तु प्राप्तोपायत्तयापुनः ॥ विपरीतान्निवृत्तोथ वर्णादिविहितंचरन् ॥ सोआचाररीतिपरचारनामचलना १ पुनःचारोवेद यथा ऋक्यजुरथर्वण इत्यादिके सबभेद अर्थात् वेदाध्ययनकी विधि जैसी मनुस्मृतिके चौथे अध्यायमें लिखी है ताहीभांति पढ़ना तथा योगीजन योगसिद्धीकेअर्थ यमनियमआसन प्रत्याहार प्राणायाम ध्यानधारणसमाधि इत्यादि क्रिया साधते हैं पुनः योगविराग विवेकादिकरि आत्मरूपको जो अनुभवतदाकार जो ब्रह्मसुख ताको भोगकरता भोगीते पावते हैं २ ब्रह्म सुखके भोगी योगक्रियाबशते जो ब्रह्मानंदपावते हैं सो प्रकटत कबहुँ कहिये अर्थात् सदा एकरसनहीं रहिसक्ताहै कबहूं किसीदिन किसीसमय सो ब्रह्मानंद हृदयमें प्रकटहैआवता है सोई ब्रह्मानंदको फलपरब्रह्ममूर्तिमान ताको किधौं मुनिनायक विश्वामित्रजी आपने जप तप बलते प्रकटाकिये मूर्तिमान् परब्रह्मरूप सबको नेत्रनते दिखाय दिये ३ । ५१ ॥

मू०। अलखअगोचररूपहरिजोवरणतश्रुतिशेश। जाकेहितविधिदेवमुनिध्यावतगणपमहेश १ ध्यावतगणपमहेशयोगयतननहिंपावत। जपतपव्रतकृतकर्मधर्मधनहृदयबसावत २ हृदयबसतवहुरूपजबसकलसिद्धिसबसुःखभरि। प्रकटकीनसुवइरूपमुनिअलखअगोचरभूपहरि ३। ५२॥

टी०। अलख जो लखि न जाय अर्थात् किसीकी दृष्टिमें नहीं आवत पुनः अगोचर अर्थात् गोचरकही इंद्रियनकी विषयशब्द स्पर्शरूपरसगंधादि तिनकरिकै नहीं प्राप्तह्वैसक्केहैं ऐसा जो हरिरूप जो श्रुति वेद तथा शेषादि जो रूप वर्णन करते हैं पुनः जारूपकी प्राप्तीहित विधि ब्रह्मादि सब देवता पुनः सनकादि शुकदेवादि मुनितथा गणप गणेश महेश शिवजा इत्यादिध्यावतेध्यान भजनादिकरतेहैं १ गणपमहेशादि यमनियम आसन प्रत्याहार ध्यानधारणा समाधि इत्यादि योगकी यत्नकरि ध्यावतेहैं ताहूपर जारूपको नहींपावतेहैं तथा गायत्री आदि मंत्र विधिवत् जपपंचाग्नि आदि तप चांद्रायणादि व्रत इत्यादि पूजा पाठ संध्या तर्पण तीर्थयाग्न दानादि कर्म कृतनाम करते हैं तथा सत्यशौचाचारादि धर्मरूप धनहृदय में बसावत सबभांति उत्तम पावनह्वैजाते हैं २ कैसे उत्तम ह्वैजातेहैं कि विषय वासना देहाव्यवहार मनकी चंचलतात्यागि जबकर्म योगविरागादि दृढसाधनकरि अणिमादिक सिद्धी ब्रह्मानंदस्वतंत्रताअचाह संतोषादि सबप्रकारको सुख अंतरभरिहोता है तब वहरूप हृदयमें बसता है ऐसा जो अलख अगोचर भूप हरिसब रूपनमें राजा सोई परब्रह्मरूप ताको मुनि विश्वामित्र जी भूतलमें मूर्तिमान् प्रकटकीन्ह प्राकृत दृष्टिते देखते हैं ३। ५२॥

मू०। कीधौंमदनविशेषसंगमुनिनायकवशकीन। ऋषितपतेजप्रतापतेसेवतपदलवलीन १ सेवतपदलवलीनशंभुकोवैरसँभारयो। चाहतआपुसहायमंत्रमनमांभविचारयो २ चारयोविधिसेवासजैयुगुलरूपछविदेखिये। वारवारभूपतिकहैंसुनिमुनिमदनविशेषिये ३। ५३॥

टी०। कीधौं येदोऊकुमार विशेषकरिकै मदन कामदेवहैं तेसंगमें रहिकै मुनिनायक विश्वामित्रको आपने वशकरिलीन कौनहेत ऋषिके तप

करिकै तेज प्रताप समूहहै ताहीते लवलीन तन मन लगाय मुनिकेपद सेवते हैं १ काहेते कामदेव लवलगाये मुनिकेपद सेवत ताको प्रयोजन यह कि शंभुको बैर सँभारयो अर्थात् शिवजी कामको स्थूलतन भस्मकरि दियोहै सोई बैर सँभारयो भाग शिवको जीति लेनो चाहत ताहेत मन मांझमंत्र विचारकीन्हेउ अर्थात् राजनीतिकी यह रीति है कि जो आपु अबलहै तौ किसी सबलकी सेवाकरि वाकीसहायलै सबलशत्रुको जीतत इत्यादिमंत्र मनमें विचारि तपोधनी विश्वामित्रते आपु आपनी सहाय चाहत २ शिवको जीतिबे हेत कामदेव मुनिते सहायता चाहत इसहेतु सदा संगरहि मन क्रम वचन इति चारिहु विधिते सेवासजै वा सेवन अर्चन बंदनदास्यता इतिचारिउ विधिते सेवा करते हैं ऐसे युगल दोऊ रूपकी छबि देखियेदेखि परती इत्यादि भूपति जनकजीबारम्बार कहते हैं हेमुनि मेरेवचन सुनिये येजो दोऊबालक हैं ते विशेषि करिकै मदनकाम देवै हैं ३ । ५३ ॥

मू० । सदाज्ञानवैराग्यसोंरत्योरहतमनमोर । ब्रह्मसच्चिदानंदघन चितवतचंद्रचकोर १ चितवतचंद्रचकोररूपहरिसुथलथिरानो । निरखतबालकनयनतौनसुखजातनजानो २ जातन जानोब्रह्मसुखछक्योप्रेमअनुरागसो । सोमनइनकेबशरह्यो लह्योनज्ञानविरागसो ३ । ५४ ॥

टी० । महाराज कहत हेमुनि काहेते मेरेमनकी संदेह नहीं जाती है कि मेरोमन सहज स्वभावते सदा सर्वकालमें एकरस ज्ञान वैराग्यमें रत्योप्रीति किहेरहत पुनः ब्रह्मव्यापक हरिरूप सच्चिदानन्दघन सत् जो त्रयकाल एकरस चित्कहे सदा चैतन्य आनंद जामें घनसमूह ऐसा ब्रह्म सच्चिदानंदघन सोई चंद्रमा समताको सदा चितवतरहौं चकोरकीनाई १ यथा चंद्रको चकोर तैसेही चितवत संते हरिरूप सुथल थिरानो सुथल जो अमल मेराहृदय तामें हरिरूप थिरानो सदा एकरस बास किहेरहै अर्थात् ब्रह्मानंदमें सदा मगनरहौं तौनसुख ब्रह्मानंद कैसाभया कि इन बालकनको नयननिरखत नेत्रनसों देखतसंते जो अपूर्व आनंद उत्पन्न भया ताके प्रभावते ब्रह्मसुख जातनजानेउ भावब्रह्म सुख कब जातरहा सो मैंना जानिपायों २ ब्रह्मसुख जातनजानेउ जब प्रेम अनुरागसों छक्यो अघानेउ काहेते ज्ञान विरागसों वैसा सुख नहीं पायों सोसुख इन

बालकन के बश मनरह्यो तबलह्योपायो भाव इनके देखनेमें अधिकसुख पायो ३ । ५४ ॥

मू० । सुनतभूपकेप्रियवचनपुलकिकहैंमुनिराज । जोकछुकह्योसु सत्यसबतुमहिंविदितसबकाज १ तुमहिंविदितसबकाजरा जदशरथकेजाये । मखहितआनेमाँगिआपुकेनगरसिधा ये २ नगरसिधायेआपुकेरामलषणधनुशरधरे । महिरक्षक भक्षकअसुरसुनतभूपआनँदभरे ३ । ५५ ॥

टी० । भूप जनकमहाराजके कहे प्रिय श्रवण रोचक मधुर वचनसुन-तहीं मुनिराज विश्वामित्रजी प्रेमते पुलकि कहत हेविदेहजी तुमहिं वि-दित सबकाज जोकछु होनहार है सोसब जानतेहौ १ तुमहिं सबकाज विदित भाव आपुतौ सर्वज्ञहौ परंतु जोपूछेउ ताते कहतहौं राज दशरथ केजाये अर्थात् जो महाराज पूछे कि मुनिनके बालकहैं वा राजकुमार हैं तापर कहत कि येकौशलेश दशरथ महाराजके पुत्रहैं जोकहौ इहां विभव रहित कैसे आये सो आपनी इच्छाते नहीं आये हैं मखहित माँगिआने आपनी यज्ञकी रक्षाकरिबे हेत मैं महाराज दशरथते माँगि इनबालकनको आपने आश्रमको आनेउ तहाँ ताड़कासुबाहु आदिको मारि यज्ञकी रक्षा कीन्हें पुनः आपुके नगर सिधाये अर्थात् धनुषयज्ञ देखिबेहेत आपुके नगर को आये २ आपुके नगर सिधाये धनुशरधरे रामलषण नाम अर्थात् मेरे संगआये ताते अपर विभव रहित केवल धनुषबाण धारणकिहे जे श्याम-गात बड़ेहैं इनको राम ऐसानाम है इनके छोटेभाई गौरअंग तिनको लक्ष्मण ऐसानामहै इति माधुर्य कहि पुनः ऐश्वर्य दर्शावत महिजो पृथ्वी ताके रक्षकभार उतारनहार कौनभांति असुर भक्षक असुर जो दैत्यराक्षसा-दि तिनके नाशकर्त्ता भाव परब्रह्म रघुवंश कुलमें अवतीर्ण भयेहैं इत्यादि सुनत भूपजनक महाराजके उरमें आनंद भरिभयो भाव विशेपि धनु भंजैंगे ३ । ५५ ॥

मू० । भागजानिअनुरागनृपचलेलिवायनिकेत । आदरआश्रम आनिकैपूजेप्रेमसमेत १ पूजेप्रेमसमेतनिरखिनरनारिसुखा री । रघुकुलभूषणदेखिसराहतसुकृतसँभारी २ सुकृतपुंज

राजाजनककहिपुरनरपदलागहीं । कोजानैकाकेसुकृतयाग
भागअनुरागहीं ३ । ५६ ॥

टी० । रघुनंदनके आगमनते आपनी बडीभारी भाग्य उदय जानि अनुराग अचलप्रीति सहित नृपजनक महाराज रघुनंदन सहित मुनिको संगमेंलैके निकेत जो मन्दिर तहांकोचले आश्रम आपने मन्दिरको आनिकै आदर प्रेमसमेत पूजे अर्थात् आसन अर्घ्यपाद्य मधुपर्क आचमन गंधाक्षत दल फूल धूप दीप नैवेद्य बंदनादि प्रेमसमेत कीन्हें १ महाराज प्रेमसमेत पूजनकीन्हें तासमय निरखि नरनारि सुखारी अर्थात् मुनिके संग श्यामगौर सुन्दरस्वरूपवंत राजकुमारको देखि पुरकेस्त्री पुरुष परम आनंदभये कैसे आनंदभये रघुकुलके भूषण श्रीरघुनाथजी को देखि सब आपनी सुकृति सँभारि सराहतभाव हमलोगनकी बडीभारी भाग्य उदय भई तौतोऐसे परम सुन्दर राजकुमार नेत्रनकी विषय करिपाये इत्यादि प्रशंसा करते हैं २ पुनः सब कहते हैं कि राजाजनक सुकृतपुंज हैं अर्थात् महाराज जनकजी बडे सुकृती हैं जोकछु सुख देखैमेंआवे ताको कछु आश्चर्य न जानिये ऐसाकहि पुरनर पदलागते मुनिको प्रणाम करते हैं पुनः कहत कोजानै काकेसुकृत यहनहीं जानिजात कि कौनकी सुकृत पुण्याय उदयभई जाकीवश ये राजकुमार यागभाग अनुरागहीं अर्थात् धनुष यज्ञ पूर्णभयेको जो भागहै जानकीजीको बिवाह तापर ये राजकुमार अनुराग किहे इहांको आयेहैं यहकाहूकी सुकृति उदयहै ३ । ५६ ॥

मू० । कमलनयनश्रीरामछबिमरकतमणिघनश्याम । सुभगगौर
लक्ष्मणदहनदामिनिवरणललाम १ दामिनिवरणललाम
अंगअगणितछबिसोहैं । जनकनगरनरनारि चकृतअद्भु
तछबिजोहैं २ जोहैंमनमोहैंसकलकोहैपावैपारकबि । तुल
सिदासबैनानिकहैकमलनयनश्रीरामछबि ३ । ५७ ॥

टी० । नवलनील कमलसम नयन श्रीरघुनाथजीके तनमें छबिकैसी मरकत मणिसम चिक्कन चमकदार तथा सजलघन सम श्यामवरण तथा दामिनिवरण दहन अर्थात् दामिनीकी प्रकाश आपनी शोभाते मंद करने वाले अथवा दहन अग्निवरण तथा दामिनिवरण लक्ष्मणजी सुभग अत्यंत सुन्दरगौर अंग ललाम कहे श्रेष्ठ हैं १ कैसे दामिनिवरण ललाम हैं कि

जिनके अंगनमें अगणित संख्या रहित छवि अर्थात् द्युतिलावण्यता स्वरूप ता सुन्दरता रमणीकता कांति माधुरी मृदुता सुकुमारतादि अंगन प्रति सोहतहै इत्यादि राजकुमारनमें जो अद्भुत आश्चर्यमय जोछवि है ताको जनक नगरके नरनारी चकृतहै जोहैं देखतेहैं २ जोहैं मनमांहैं सकल जो देखताहै तेतौ सबै मनते मोहिजाते हैं गोसाईंजी कहत कि जब देखनहार सबै मोहिजाते हैं तौ को ऐसा कविहै जो कमलनयन श्रीरघुनाथजी की छवि अयनानि वचननसों कहै पुनः कहिकै पारपावहि भाव यथार्थ शोभा प्रभुकी कहनेवाला कोऊऐसा कविनहीं है जोकहि सिराहि ३ । ५७ ॥

मू० । देखेमुनिसँगआजरीबालकयुगुलअनूप । श्यामगौरसुन्दरबदनमनहुमदनयुगरूप १ मनहुमदनयुगरूपविरचिविधिस्वकरबसाये । निजसुकृतकेपुञ्जजनकपुरदेखनआये२ देखनआयेकुवँरद्वउविधिरचिराख्योकाजरी।सियवरयोग्य सँयोगयह समुझिदेखुसखिआजरी ३ । ५८ ॥

टी० । पुरकीस्त्री परस्पर वार्त्ता करतीहैं हेरीसखी आजु युगुल अर्थात् द्वयअनूप बालक मुनि विश्वामित्रके संगमें मैं देखे अनूप जिनकी समता को दूसरारूप किसीलोकमें नहीं है कैसेहैं एक श्यामवरण एक गौरवरण सुन्दर सर्वांग सुठौरबने तथा सुन्दर चंद्रसम बदन मानहु मदन कामदेव युग द्वयरूप धारण किहे है १ मानहु मदन युगरूपहै ताको विधिस्वकर विरचि बसाये अर्थात् पूर्व कामदेवको शिवजीने उजारि दियारहै अरु कामै द्वारा सबसृष्टिकी रचनारहै इसहेत ब्रह्माजी मानौं स्वकरनाम आपने हाथ विरचि विशेषि रचिकै मदन युगरूप कामदेवके द्वयरूप बनाय पुनःलोक में बसाये तेई निज आपनी सुकृतके पुंज बड़ी सुकृतिहै जिनके ताते धनुष यज्ञ देखने हेत जनकपुरको आये हैं २ हेरीसखी जोकछु काज होनहारहै सोविधि ब्रह्मा पूर्वहीं रचिराख्यो इसीहेत दोऊकुवँर धनुपयज्ञ देखने हेत आये हैं काहेते सियवर योग्य सँयोग यह अर्थात् राजकुमारन को इहां आवना यह जो संयोग है तामें यही होनहार देखिपरता है कि सियवर योग्य अर्थात् जानकीजी की योग्य जैसा वर चाहियत रहै तैसेही श्याम राजकुमारहैं ताते हेरीसखी आजुही समुझि देखुऐसेही होइगो३ । ५८॥

मू० । अपरकहतसखिसत्यहैएककठिनहठिकर्म । प्रणविदेहको

धनुषयहउठैनगिरिसमधर्मै १ उठैनगिरितेगरूबालमृदु
अतिसुकुमारे । सोअसमंजसकठिनमेटिकोयोगसँवारे २
साँवरकुँवरप्रतापबलमुनिगणकहतसुमत्यहैं । शंभुप्रताप
विदेहकीपुण्यभंजिधनुसत्यहैं ३ । ५६ ॥

टी० । पूर्ववालीके वचनसुनि अपरसखी कहत हे सखी आपको वचन सत्य है परन्तु एक हठिको कर्म कठिन है काहेतें विदेह महाराज को यह प्रण है कि जो धनुषतोरै ताके संग कन्याको बिवाहकरी अरु यह शिवको धनुष गिरिसम धर्म यामें पर्वतकी समान गुरुता धर्म है भाव बड़े कठिन बली योधा रावण बाणासुरादि नहीं उठायसके सो धनुष जो राजकुमार ते न उठैतौ कैसे संयोग है सक्राहै १ काहेते संदेह संयोगमेंहोत बालमृदु बालक कोमल किशोर अवस्था तापर अत्यंत सुकुमार अरु धनुष गिरि पर्वत ताहूते अधिकगरू सो जोनउठै तौ कैसे संयोग होई सोई मेरेमनमें कठिन असमंजसहै ताकोकौन ऐसाहै जो असमंजस मेटिकै योग सँवारै बिवाहकरावै २ ताके बचनसुनि पूर्व कहनेवाली सखी पुनः समाधान करत हेसखी असमंजस किसहेतकरतीहौ काहेते सुमति सुंदरीमतिवाले मुनिगणकहतेहैं कि सावँरकुँवर श्यामवरण जो राजकुमारहैं तेबलप्रताप करिके परिपूर्ण हैं अर्थात् कैसेहू दुर्घट कार्यपरै ताको करिडारबे में नेकहू श्रम न आवै ताको बलकही तथा जाकोसबजग आपहीडरै ताको प्रताप कही इत्यादि बलप्रतापते भरिपूरि श्यामराजकुमार हैं इसी बात को बहुतसुमतिवाले मुनिजनकहतेहैं ताहूपर शिवजीके प्रतापते विदेह महाराजकी जोपुण्यहै ताहीते सत्यधनुभंजिहैं श्यामराजकुमार निश्चय करिकै शिवधनुषको तोरि डरिहैं ऐसा बिचारि संदेह त्यागौ ३ । ५६ ॥

मू० । आयसुपायमुनीशकोभोरलषणरघुराय । सुमनहेतउपवन
गयेश्यामगौरद्वउभाय १ श्यामगौरद्वउभायजानकीजाय
निहारे । गिरिजापूजनहेतमध्यउपवनपगधारे २ पगधारे
नयननिलखेराजकुमारनिहारिकै । सोसुखतुलसीकहैकिमि
कहिनजायमुखचारिकै ३ । ६० ॥

टी० । मुनीश जो विश्वामित्रजी तिनको आयसु आज्ञापायकै भोरही लषण अरु श्रीरघुनाथजी श्याम गौर दोऊभाय सुमनहेत उपवनगये फू-

लनकेहेत फुलवारीको गये १ उपवनमें दोऊभाई आयकै जानकीजीको निहारे चाहसहित नेत्रनभरिदेखे कौनहेत आई गिरिजापूजनहेत उपवन के मध्य पगधारे पार्वतीजीके पूजनहेत बागके मध्यमें आई २ किशोरीजी बागके मध्यमें पगधारे तहां राजकुमारनको निहारिकै लखे प्रत्यंग की शोभानिहारिकै नेत्रनसों देखे भाव आवरन वहानारहित सन्मुख ठाढ़ैहै देखे सो सुख वासमयमें जो जानकीजी के मनमें आनन्दभयो ताको चारि मुखनकरिकै ब्रह्मानहीं कहिसक्केहैं ताकोतुलसीदास किमिकहै अर्थात्चारि मुखकेपुनःआदिआचार्यते तौकहीनहींसक्केहैंतहांमैंअल्पज्ञकैसेकहों३।६०॥

मू० । रामसियाकोमिलनसुख वेदनपावहिंपार । प्रीतिप्रेमपर मितिसुमति प्रीतमगतिरतिसार १ गतिरतिसार विचार कहतथकिरहतबिचारी । सोमैंकहौं विवेककवनमतिगति संसारी २ मतिगतिशंकरशारदाकहिनसकतसुखसरसको। तुलसिदासक्यहिबिधिकहैरामसियासुखदरशको३।६१॥

टी० । श्रीरघुनंदनजनकनंदिनीके मिलनसमयजो सुखभयाताको कहतसंते वेदभी पारनहींपाइसक्केहैं काहेते किशोरीजीमें तोप्रीतिके प्रेमअंग की परमितिमर्यादा अर्थात्हदहै तथाप्रीतमजो श्रीरघुनाथजी तिनकीप्रीति कीगति जो यासमयमें रीतिहै सो रतिसार प्रीतिको सारांश अर्थात् प्रणयहै तहां प्रीतिमें आठअंगहैं यथादो० । प्रणय प्रेमआशक्ति पुनि लगनलाग अनुराग । नेहसहित सवप्रीतिके जानवअंगविभाग ॥ ममतवतवममप्रणय यहसौम्यदृष्टितिहिहोइ । प्रीतिउमगसोप्रेमहै विह्वलदृष्टीसोइ ॥ चित अशक्तआसक्तिसोइ यकटकदृष्टीताहि । बनीरहैसुधिलगनकी उत्कंठादृग माहि ॥ जाकेरसमेंलीनचित चोपदृष्टिसोंलाग । जासुप्रीतिमेंचितरंगो मत्तदृष्टिअनुराग ॥ मिलनिहँसनिबोलनिभली ललितदृष्टिसोनेह । प्रीति होइसर्वांगउर दृष्टिअधीनसदेह ॥ तहां परिपूर्ण प्रीतिकी जो उमंग है ताको प्रेमकही सोतौ जानकीजी में परिपूर्ण है तथा हमतुम्हारे हैं तुम हमारेहौ इत्यादि प्रीतिको जो सारांश है प्रणयसो सहजसुभावते रघुनाथ जीमें है पुनः सुमतितौ दोऊमेंहै काहेते इधरतौ लक्ष्मणजी आज्ञानुकूल उत्तम सेवक हैं तथा उधरसखी परम उत्तम किशोरीजी की आज्ञानुकूल हैं इधर किशोरीजी की इच्छा है कि श्याम राजकुमारे हमको पतिमिलैं

इस हेत बारम्बार प्रीति उमगतीहै सोई रोमांच कंठारोध आंसु आदि नेत्रनमें इत्यादि सर्वांगमें प्रेम परिपूर्णहै तथा रघुनाथजी निश्चय जानते हैं कि धनुष हमही तोरैंगे ये हमारिही पत्नीहोइँगी सो मानसमें प्रसिद्धै कहेहैं कि मेरे शुभअंग फरकतेहैं इति आपनी मानिलेना प्रणयहै १ गति रतिसार बिचारि अर्थात् रति जो प्रीति ताको सार जो प्रणयताहीमय गतिसहज स्वभावतेरीति प्रभुमें विचारि कहत समय कबिनकी जो बुद्धि है सो बिचारी थकितह्वै जातीहै तातेवाणी नहीं कढ़त सोई बातमें कौन विवेकतें कहौंकाहेते मतिगति संसारी मेरीतौ बुद्धि संसारमें लगीहैबिषय सुखको व्यापारकरि रहीहै २ जाको मतिकी गति करिकै अर्थात् बुद्धिकी प्रवीणता ते शंकर शारदा सोभी सरस रससहित जो सुखको नहीं कहि सकत सोई राम सियाके दरशको सुख तुलसी कौन बिधि कहै ३।६१ ॥

मू० । पूजिबिबिधबिधिपाँयपरि विनतीसीयसुनाय । आदिअंत त्रयलोकतू स्वबशबिहारिणिमाय १ स्वबशबिहारिणिमाय मनोरथजानतिहीके । प्रकटप्रभावप्रतापअगमबरदानशचीके २ शचीशारदाहरितिया सेयसेयसबसुःखभरि । जय जयजयगिरिपतिसुता बिबिधबिनयसियपायँपरि३ ।६२॥

टी० १ अर्घ्यपाद्य आचमन स्नान गंध फूल धूप दीप नैवेद्यादि बिबिध अनेक बिधिते पार्वती को पूजि पुनःसीयपायँनपरि बिनती सुनाये स्तुति करनेलगी माय हेमातु आदि जोकाल बीतिगया अंत जोआवनहार तथा वर्त्तमान इति तीनिहूं कालमें स्वर्ग भूमिपातालादि त्रयलोकनमेंतू स्वबश बिहारिणि अर्थात् किसीकी परबश नहींहौ आपनी इच्छाते बिहार करने वालीहौ १ हे स्वबश बिहारिणिमाय मेरे हृदयके जो मनोरथ हैं सोआपु जानतीहौ भाव अंतर्यामिनीहौ प्रभाव जो महिमा तथा प्रताप जो ऐश्वर्य सो लोकमें प्रकट सबजानतेहैं क्याजानतेहैं अगम जो किसीकोदेनेकी गम नहींहै जोदैसकै ऐसे अगमवरदान अर्थात् पतिव्रत धर्मशची आदिकनको देनहारीहौ २ शचीजो इंद्रानी तथा शारदाजो ब्रह्मानी हरिकीतिया इत्यादि सबै आपुको सेय पूजनकरि भरिपूर सुखपाईं भाव बिवाह समय गौरिकीपूजा सबै करती हैं यह वेद विधानकी रीतिहै गिरिपति हिमाचल ताकीसुताहे पार्वतीजी आपुकी जय जय जयहोय इत्यादि बिबिध बिनय सुनायपुनः सीय पायँपरी ३।६२॥

मू० । वचनप्रसादसुपायसियहर्षिचलीनिजधाम । सोछविहृदय निरूपकरिगुरुपहँगवनेराम १ गुरुपहँगवनेरामजानकी भवनसिधाई । सुमनदियेमुनिहाथरामकहिकथासुनाई २ कथासुहाईसुनतमुनि सतानंदआवतभये । जनकविनय कहिमोदलहिरामलषणआशिषदये ३ । ६३ ॥

टी० । सुवचन प्रसादपाय हर्षिसिय निजधामचली पूजाकरि पार्वती जीसोंसुंदर आशीर्वादपायआनंदह्वै श्रीजानकीजी आपनेमंदिर कोचलींसो छबिहृदय निरूपकरि सोई जानकीजी की सर्वांग शोभा आपने हृदयमें बखानकरतसंते रामगुरुपहँ गवनेश्री रघुनाथजी गुरुविश्वामित्र के पास कोचले १ जबजानकी.जीभवनको सिधाईंतबरघुनाथजी गुरुपासको चले जाइकै सुमनफूलमुनिके हाथमेंदीन्हें पुनः रामकहि कथा सुनाई बागको समग्र वृत्तांतरघुनाथजी यथार्थ मुनिसों कहिदीन्हें अर्थात् गिरिजापूजन हेत जनकनंदिनी बागको आईरहैं तिनको देखत संते हमकोदेरलगी २ जो बागकीसुंदरि कथारघुनाथजी सुनाईंताको मुनिविश्वामित्रजी सुनतहीरहैं ताहीसमय तहांकोजनकजीके पठाये तेसतानंद आये तेजनकविनय कहि अर्थात् विश्वामित्र ते कहे कि राजकुमारन सहित आपको जनकजी बोलावते हैं पुनः मोदलहि अर्थात् दोऊभाई प्रणामकीन्हें सोदेखि आनंद पाय राम लषणको आशीर्वाद दिये अथवा निछैल जो कथा रघुनाथजी कहिरहे सो सुनते संते सतानंद आय जनक विनय कहे तब मोद पाय विश्वामित्र दोऊभाइनको आर्शीर्वाद दिये यथा तुम्हारा मनोरथ सफल होय ३ । ६३ ॥

मू० । आजुभूपबनिबनिचलेरंगभूमिशिरमोर । पावकपानीपवन महिसुरनरमुनिइकठौर १ सुरनरमुनिइकठौरआपुकोजन-कबुलायो । कौतुकदेखनचलियसतानँदवचनसुनायो २ वचनकहेमुनिरामसोचलहुतातअवसरभले । काकोयश दशदिशिविदितआजुभूपबनिबनिचले ३ । ६४ ॥

टी० । यथा जनक विनयसुनाये यथा जे राजनमें शिरमौर भूप महा-राजते बनि बनि आपनी राज साज ऐश्वर्य सहित साजि साजि रंगभूमि को चले पुनः पावक जो अग्नि पानी पवन महि जो भूमि सुर जो देवता

तथा नर मुनि इत्यादि देखने हेत सब यकट्ठा हैं १ तहाँ सुर नर मुनि सब इकठौरहैं ताते राजकुमारन सहित आपुको जनकजी बुलायोहै ताते कौतुकलीला देखनेहेत आपहू चलिये इत्यादि बचन सतानंद विश्वामित्र ते सुनाये २ जनकजीको बुलावन सुनि मुनि विश्वामित्रजी रघुनाथजी सों वचनकहे भले अवसर अच्छे समयपर बोलावआयाहै हे तात रंगभूमि को चलहु आजु भूपतौ सबै बनि बनि चलेहैं परंतु देखें काको यश दश दिशि विदितहोइ भाव देखीकौनधनुपतोरै ताकोयश सर्वत्रफैलै ३ । ६४ ॥

मू० । रामलषणकौशिकसहितसतानंदअगवान । चलेरंगभूमि हिसकलमंगलमोदनिधान १ मंगलमोदनिधाननारिनरगृह तजिधाये । नगरबगरमेंबातभूपसुतदेखनआये २ देखि जनकपरिपगनिपूरिप्रेमआनँदलहित । आसनआदरदेय करिरामलषणकौशिकसहित ३ । ६५ ॥

टी० । रघुनाथजी लक्ष्मणजी पुनः कौशिक विश्वामित्र सहित सतानंदको अगवान आगेकरि मंगल प्रसिद्ध उत्सव मोद मानसीआनंद ताके निधान स्थान श्रीरघुनाथजी सकल समाज सहित रंगभूमिहि चले १ मंगल मोदके निधान मंदिर जो जनकपुरके नारि नर तेगृहतजि घरछाँडि सब रंगभूमिको धाये किसहेत कि नगरकी वगर जो राहैं तिनमें यहबात प्रसिद्धभै कि भूपसुत अर्थात् विश्वामित्रके साथ जेआयेहैं तेई राजकुमार या समयमें रंगभूमि देखनहेत आये हैं यहहाल सुनि राजकुमारनको देखनहेत सबधाये २ इहाँ विश्वामित्रको देखि जनकजी पगनिपरि प्रणाम करिप्रेमपूरि आनँदलहित अर्थात् राजकुमारनको देखि प्रेमउमँगि सर्वांग में भरिगया पुनः रंगभूमिमें आये तौ हमारी प्रतिज्ञाभी पूर्णकरैंगे यह बिचारि परम आनंदपाये पुनः कौशिक सहित राम लषणको आदरदेय आसन दिये अर्थात विश्वामित्र लषणलाल सहित रघुनाथजीको आदर दैकै प्रीति पूर्वक वार्त्ता करि पुनः उत्तम मंचपर बैठारे ३ । ६५ ॥

मू० । रामरूपनृपदेखिकैद्युतिमुखकीभइक्षीन । रविप्रतापनिरख तमनौउडुगनज्योतिमलीन १ उडुगनज्योतिमलीनदीन बलहीनबिराजत । जड़खलदलदलमलेउसाधुसुरसज्जन

गाजत २ गाजतदुंदुभिसुमनसुरमगननारिनरपेखिके। थ
कितचकृतपलनहिंलगतरामरूपनृपदेखिके ३ । ६६ ॥

टी० । पूर्ण प्रकाशवंत श्रीरघुनाथजीको देखिकै अपरनृप राजनके मुखकी द्युति जो प्रकाश सो क्षीन मंदपरि गई केसे क्षीनभई यथा रवि प्रतापनिरखत सूर्यनकोप्रताप देखतसंते उडुगन जो नक्षत्र तिनकी ज्योति जाभाँति मलीन होत १ यथा सूर्यनके सन्मुख उडुगनकी ज्योति मलीन होतीहै तैसेही रघुनाथजीको देखि अपरराजा दीन वलहीन विराजत पुरुषारथ बल रहित बैठेहैं तथा खलदल समूह दुष्ट यावत्रहे ते दलमलेउ सभीतभयो यथा रविदेखि अंधकार तैसेही प्रभुकोदेखि राक्षसादि डरायके भागनेलगे पुनः यथा रविके उदयमें चकवाक कमल आनंद होतेहैं तथा रघुनाथजी को देखि साधुजन सुर देवता सज्जन हरिभक्तिकरनेवाले ते गाजत प्रसन्नतासहित वार्त्ता करनेलगे २ दुंदुभिगाजत नगाराआदि अनेक बाजा बाजनेलगे तथा रघुनाथजी को रंगभूमिमें बैठे पेखिनाम देखिके सुरसुमन देवता फूल वर्षनेलगे तथा पुरके नरनारि मगन प्रेममें डूबेहैं कौनभांति रामरूप नृप देखिकै थकित चकृत पलनहिं लगत अर्थात् परब्रह्म परमात्मासोई नृपनाम नरराजरूपते बैठेहैं तहां ऐश्वर्य्य यद्यपि छपायेहैं परंतु माधुरीमें तौ ऐश्वर्य दर्शित होती है सो अद्भुत छटा देखिके लोगचकृतभये नेत्रनमें चकचौंधी आयगई पुनः हितपूर्वक अवलोकत संते थकितभये सर्वांग शिथिल ह्वै यकटक रहिगये पलक किसीकी नहीं लगती है ३ । ६६ ॥

मू० । जोजाकेउरभावनादेख्योरामशरीर । कउशिशुकउप्रभु मित्रअरिस्वामिसखाबलवीर १ स्वामिसखाबलवीरधीर धरिप्रभुहिनिहारैं। वर्षतसुरशुभकुसुमदेवमुनिजयतिउचा रैं२जयतिउचारि समाजलखिजनकबुलाईजानकी। सता नंदआनीतुरतखानिसकलकल्याणकी ३ । ६७ ॥

टी० । समाज विषे यावत् जन बैठे ठाढ़े किसी भाँति वर्त्तमान हैं तिनमें जाके उरांतरमें जो भावना अर्थात् जौनेभावते जा भाँति को ईश्वरको रूप भावतारहै तैसेही राम शरीर रघुनाथजीको स्वरूपताने देख्यो कोऊ शिशुबालककरि देख्यो यथा रानिन सहित जनकजी पुनः

कोऊ प्रभु पालनहार करिदेख्यो यथा हरि भक्तन पुनः कोऊ मित्रहित करता करि देख्यो यथा देवतादि भारत अर्थार्थी पुनः कोऊभरि आपना नाशकरता करि देख्यो यथा राक्षसादि पुनःकोऊ स्वामी करि देख्यो यथा दासभाव वाले रामसेवक तथा सखाभाववाले सखाकरि देख्यो पुनःजेबल बीरता गर्वित राजा रहे ते बली बीर करि देख्यो १ इत्यादि स्वामि सखा बलबीर करि धीर्यधरि प्रभुको सबै निहारते हैं भरु सुर शुभ कुसुम देवता मंगलीक फूल वर्पत पुनः देवता मुनि जयजयकार शब्द उच्चारण करत २ देवादि जयति उच्चारि रहेहैं ताको सुनि पुनः सब समाज बैठाहै ताको लखि देखि समयजानि जनक महाराज जानकी जी को बुलाये भाज्ञा दीन्हे तब सतानन्द तुरतही भानी रंगभूमि को लिवायलाये कैसी हैं श्रीजानकीजी सकल कल्याणकी खानि अर्थात्सब भांतिको कल्याण जिनते उत्पन्न होताहै ३। ६७॥

मू०। मिथिलापुरकेनारिनरासियरघुबीरनिहारि । विनतीकरहिं
बिरंचिसनअंचलअंजलिधारि १ अंचलअंजलिधारिदे
हुबरदानबिधाता । रामजानकीयोग्यजोरिमिलवहुयहना
ता २ नातजुरैनृपप्रणटरैभूपतिजायलजायघर।यहसंयोग
बिचारिकहिंमिथिलापुरकेनारिनर ३।६८॥

टी०मिथिलापुर के बासी नारिनर सब सियरघुवीर निहारि अर्थात् बरण स्वरूप भवस्था स्वभाव कुल तेज परस्परचाह इत्यादि सब उत्तमता एकतुल्य ऐसे श्रीरघुनंदन जनक नन्दनी को देखि अंचल अंजलि धारि बिरंचिसन विनती कराहिं अर्थात् स्त्री तौ अंचल पसारि तथा पुरुष अंजलिधारि हाथपसारि ब्रह्मासन विनती करतेहैं १ स्त्री अंचल पसारि पुरुष हाथपसारि मांगतेहैं कि हे बिधाता कृपाकरि यह बरदानहमकोदेहु कौनबरदान कि जनकनंदनी के योग्य बर रघुनन्दनहैं यह पति पत्नीको नाताजोरी मिलावहु भाव जानकीजीको बिवाह रघुनन्दनके साथहोय यह बरदान देहु २ नातजुरै नृप प्रणटरै अर्थात् इसभाँतिते बिवाह होय जामें जनकजीके प्रणकी बाधानरहै आवरघुनन्दनके हाथते धनुष टूटि जाय सो देखि सबराजा लजायकै अपनेघरनकोजाय इति निर्विघ्नबिवाह होवैयहसंयोग बिचारिकैमिथिलापुरके नारिनरकहिरहेहैं विधाताते ३।६९

मू० । मालजलजयुगहाथअतुलछविसियपगधारी । जगतजन
निसुखखानिनिरखिमोहेनरनारी १ नारिमध्यवरजानकी
रघुवरपदअनुरागहिय।देखतसुरनरमुनिमगनदीन्हेनयन
निमेखसिय २त्यागिसकुचरामहिलखेनयनमूँदिछविहृदय
भरि । रंगभूमिसियपगधरेमालजयुगहाथधरि ३ । ६९ ॥

टी० । जलजकमलनकीमाल अर्थात् जयमाला युगदोऊहाथनमेंलिहे अतुल छविहै जिनमें ऐसी श्रीजानकीजी रंगभूमिमें पगधारी आवतीभई कैसी हैं जगत्जननि सबसंसारको उत्पत्ति पालनहारी पुनः सुखखानि सबभाँतिको सुख जिनते उत्पन्न होताहै ऐसी ऐश्वर्य माधुर्यरूपमें दर्शित होत ऐसीअद्भुत छटा देखत संते प्राकृत नरनारी सबै मोहिगये १ नारि मध्यवरनारी जोसखी जनहैं तिनके मध्य श्रीजानकीजी वरनाम उत्तम हैं पुनः हृदयमें रघुपति पदको अनुराग अचल प्रीतिहै इत्यादि उत्तमोत्तम रूप देखिकै सुरनरमुनि मगन देवता मनुष्य मुनीश्वरादि प्रेममें बूडिगये अरुसीय नयननमें निमेपदीन्हे काहेते जानकीजी पलकनते नेत्रबंद करि लीन्हे २ त्यागि सकुच रामहिलखे पुनः छवि हृदयभरि नयनमूँदे लिये अर्थात् प्रथमतौ जानकीजी लोग कुटुंब सबको संकोचत्यागि नेत्रन भरि रघुनाथजीको भलीभांति सर्वांग निहारिकै देखिलीन्हे जब श्यामसुन्दर स्वरूपकी छवि नेत्रनद्वारा पैठि हृदयमें भरिपूरि गई तब पलकनते नेत्र बंदकरि भीतरही देखनेलगी यही अनुरागको रूपहै इसभांति दोऊ हाथन में जलज कोमाल कमलनको बनाहुआ जयमाला धारण किहे जानकी जी रंगभूमिमें पगधरे ३ । ६९ ॥

मू० । जनकबोलिबंदीसकलकह्योकहोप्रणजाय । देवदनुजमहि
पतिमनुजसबकोदेहुसुनाय १ सबकोदेहुसुनायभाटदशस
हससिधाये। चहुँदिशिहाथपसारिसुनहुभूपतिचितलाये २
चितलायेप्रणजनककोधनुषधरयोयहरंगथल । करउठाय
भंजैनृपतिबरैजानकीवाहिपल ३ । ७० ॥

टी० । बंदीजन यावत्रहे तिन सकलको बोलि आपने निकट बुलाय जनक महाराज कहे कि जाय राजसभामें हमारा प्रणकहो तहां देवता दैत्य मनुष्य इत्यादि यावत् महीपति राजाहैं तिनसबको सुनाय देउ १

जब जनकजी कहे कि हमारा प्रण सबको सुनायदेउ सो आज्ञापाय दश सहस्र दशहजार भाट सिधाये चले तहां राजसभा में जाय चारिहूंदिशि हाथ पसारि बोले हे भूपति राजालोगो चित्त लगाय हमारे बचनसुनौ २ श्रवण द्वारा चित्त लगायकै जनक महाराजको प्रणसुनौ धनुपधर्यो यह रंगथल रंगभूमिमें कठोर शिवको धनुष धरोहै ताको जो नृपतिकरउठाय भंजै जो राजा हाथोंतें उठाय याको तोरि डारै सो वाही पल जानकी को बिवाहै ३ । ७० ॥

मू० । हरगिरितेगरुजानियेकमठपृष्ठतेखोर । महिसँगरच्योविरंचिजनुसकलबज्रतनतोर १ सकलबज्रतनतोरिमोरिमुरिगयेदशानन । बाणासुरसेसुभटभयेभज्जितकहुजानन २ जाननकउयाकोमरमाशिवहिछांड़िकोतानिये । निजबल हृदयबिचारिकैहरागिरितेगरुजानिये ३ । ७१ ॥

टी० । हरगिरि शिवके बास को पर्वत जो कैलास ताहूते गरू या धनुषको जानिये पुनः कमठ पृष्ठतेखोर कछुवाकी पीठीते अधिककठोर है तथा अचल कैसा है यथा बज्रको तनतोरि ताही को जोरिमानौ विरंचि महिसंग ब्रह्माने पृथ्वी के साथही रचिदिया है १ काहेतें जानिये कि बज्रको सकल तनतोरिकै याको ब्रह्माने रचाहै कि मोरियाको तोरिकै दशानन सब भांति बलकरि हारिमानि रावण मुख फेरिगया तथा बाणासुर ऐसासुभट महाबली सोऊ भज्जितभये अर्थात् ऐसाचोरायभागे जाको जात समय कोऊ जानिनहींपावा कबगये २ शिवहि छाँड़ियाको मरमकोऊ जानन अर्थात् याधनुषको गुप्तहाल एक शिवजी जानतेहैंजिन याको चढ़ाये हैं अरु शिवको बराय और कोऊ सुरनर नागादि याकोहाल नहीं जानताहै कि कैसा गरू कठोर है हे राजालोगो ताधनुषको तानिये उठायकै खैंचिये परंतु निज आपनाबल हृदयमें विचारि लीजिये कि हमारे इस माफिक बलहै भावजो कैलास उठावा ताको उठावा यह नहीं उठिसका इस विचारते हरगिरि जो कैलास ताहूतेगरूइस धनुषको जानिये बलहोय उठाइये ३ । ७१ ॥

मू० । नृपसमाजप्रणकहतहौं रेखावचनखँचाय । रंकराजाशिरताजस्वइलेहैधनुषउठाय १ लेहैधनुषउठायजगतमहँकी

रतिहोई । जयमालाउरडारिजानकीव्याहैसोई २ स्व
इधनुधरिबलसमुभिनिजमुखमेंकारिखनहिंलहौं । वीरधीर
धनुसोगहैनृपसमाजमेंप्रणकहौं ३ । ७२ ॥

टी० । बंदी बोलेकि महाराजको जो प्रणहै ताको नृपराजनकीसमाज में हमरेखा खँचायकै बचन कहते हैं भाव जो हमकहते हैं सोई निश्चय जानौ क्या प्रणहै यथा शिवको धनुष जो उठाय लेहै सोरंक अर्थात् चहै कंगालहोय व राजाहोय या समाजमें सोई शिरताज होयगो १ कैसे शिर-ताजहोयगो कि जो धनुष उठायलेहै ताकी प्रथम तौ जगत महँ कीरति होई सबै प्रशंसा कराहिंगे पुनः वाहीके गरेमें कन्याजयमाला डारैगी सोई जानकी को बिवाहै २ कीरति जयमाल सहित कन्या बिवाहै यहलाभ तौ बड़ीहै परन्तु निज आपना बलयाके उठायवे योग्य समुझिलेई सोई धनुषको धरीउठाइवे हेत हाथ लगाई नातरु मुख में कारिखनहिंलहौ अर्थात् जो धनुश उठावने गया अरु न उठा यह उपहास रूपकारिखन लिह्यो याते बेहतर बैठरहना है ताते धीर्यवंत जो वीरहोय सोई धनुगहै उठावने हेत हाथ लगावै इत्यादि नृपजो राजा तिनकी समाजमें महा-राजको प्रण हम कहते हैं ३ । ७२ ॥

मू० । नहिंछीवैकरधनुषयेसबकोकहौंबुझाय । जिनभूपनरणमं-
डिकैरिपुबलदेखिभगाय १ रिपुबलदेखिभगायगायद्विज
संतनमानहि । परतियपरधनहेतदेतशठहठवशप्रानहि २
प्राणहिदेतसमर्पिकैममताबशपातकचये । कारिखलागहि
मुखनमेंनहिंछीवैकरधनुषये ३ । ७३ ॥

टी० । पुनः बंदीबोलेकि सबको बुझाय सबराजनको समुझायकेहम कहतेहैं ये धनुषकर नहिंछीवै यहिआचरणवाले राजा शिवधनुषको हाथते छुवैं नहीं कौने आचरणवाले जिन भूपनरण मंडिकै अर्थात् शत्रुकेसन्मुख युद्ध प्रारंभ करिकै पुनः रिपुबल देखि भगाय अर्थात् शत्रुको सबल देखि प्राण बचावने हेत पीठि देखाय भागिगये १ रिपुको सबल देखि भागि जातेहैं इतिकादर पुनः गाय द्विज जोब्राह्मण संत इत्यादिको बड़ा करि नहीं मानतेहैं ताते अधर्मी पुनः परस्त्री परधन हरि लेनेहेत शठहठ वशते प्राण देतेहैं अर्थात् कामवश ते परारी स्त्री प्राप्तीहेत तथा पराएधन

हरिबे हेत ऐसे लोभीहैं कि अनेक उपाय बांधि प्राणहूं त्यागि देतेहैं ऐसा हठ पकरतेहैं २ अधरमपर प्राणहिं समर्पि देते हैं इत्यादि ममता बशते पातक बये देहाभिमानते लोकसुख चाहते तनरूप क्षेत्रमें महापापनको बीज बोइराखे ताते सर्वांगमें पाप वन हैगया है ये आचरणवाले राजा शिवधनुष करसों नछुवें काहेते मुखनमें कारिखलागि है भावधनुष तौ उठी न वृथाही उपहास होई ताते धनुष न छुवें ३ । ७३ ॥

मू० । ऐसेनृपधनुकाधरैंसुनहुसकलमहिपाल । प्रजादंडपरचंड अघदाननकवनेहुंकाल १ दाननकवनेहुंकालदेवगुरुपितृ नमानहिं । श्रीमदतेमदअंधवेदकोपंथनजानहिं २ जानहिं मातुनपितुधरमकर्मवचनपातककरैं । कारिखकुलहिलगाव हींऐसेनृपधनुकाधरैं ३ । ७४ ॥

टी० । पुनः बंदीबोले हे सकल महिपालहु राजालोगहु हमारे वचन सुनहु ऐसे नृपधनुकाधरैं ऐसे आचरणवाले राजाक्या धनुषको उठावहिंगे नहीं उठायसक्ते हैं कैसे आचरणवाले जे विनापराध बधबंधन ताड़न धन हरणादि प्रजाको दंडदेते हैं पुनः प्रचंड अघपाप यथा साधु ब्राह्मण कोधन हरणबध ब्राह्मणी कुलस्त्री गमन इत्यादि करतेहैं तथादान कौनेहुं काल नहीं अर्थात् साधु ब्राह्मणको भोजन धनादि न पूर्वदीन्हे न अब देते हैं १ भूतवर्त्तमान कौनेहुं काल न दानकीन्हे अरु देवतागुरु पितृ इत्यादि को नहीं मानते हैं अर्थात् गुरुसेवा आज्ञा संध्या तर्पणादि कुछ नहींकरते हैं काहेते राज श्रीमदमें मत्तऐश्वर्य में मदांधताते वेदको पंथधर्म आचा- रादिनहीं जानतेहैं २ माता पिता मानिबे को धर्म नहीं जानते हैं अरु कर्म वचन पातक पापही करतेहैं अर्थात् परधनहरण हिंसापरस्त्री गमना- दि कर्म ते पाप कठोर वचन झूठ बोलन निंदा वृथाबोलन वचनपापहै ऐसेनृपधनुषको न धरैं हाथै न लगावहिं काहेतेकुलहि कारिख लगावहिंगे भावधनुषतौउठीनइसउपहासते कुलमेंस्याहीलागीपूर्वयशजाई ३।७४ ॥

मू० । ऐसेनृपधनुनागहौमानहुवचनप्रतीति । पुरधेरहिलावहिं अनलराखहिंनहींसभीति १ राखहिंनहींसभीतलमीतमंत्री हिततोरैं । पातकबांधैंसेतुपुण्यसरिसरितिफोरैं २ मानम-

दिद्विजधनहरैंतियवालकवधकुलदह्यौ । कह्यौंपुकारिपसारि करऐसेनृपधनुनागह्यो ३ । ७५ ॥

टी० । पुनःबंदीकहत कि हमारे वचनकी प्रतीतमानहुऐसे नृप ऐसेआचरणवाले राजाधनुपकोनगह्यो हाथनलगावहु कैसेनृपजे शत्रुकोपुरअथवा किसीको ग्रामजेआपनी सेनातेघेरतेहैं अरुअनल लावहिंग्राममें अग्निलगायदेतेहैं तामेंसभीति नहिंराखतेहैं अर्थात् अनेक जीवजरिजाहिंगे ताकी भयनहींराखतेहैं कि यामें महादोपहोयगो १ सभीतिनहीं राखतेहैं बरबश ग्रामफूंकिदेतेहैं पुनःमीतमंत्रीको हिततोरि देतेहैं आपनेस्वारथ हेतु सबके शत्रुह्वैजातेहैं ऐसेकृतघ्न पुनःपातकवांधहि सेतु पापको पुलबाँधते हैं अर्थात् हिंसा परधन हरण परस्त्री गमन इत्यादिपाप आपु करते हैं तिनके करनेवालेन को आदरकरतेहैं इतिसुलभ मार्गकरि देतेहैं ताते अभय है प्रजामहापाप करने लागतेहैं पुनः पुण्यकी सरिसर नदीताल ताकीवृत्ति जो रीतिहै ताको फोरै पुण्यकर्म में बाधाकरतेहैं २ कैसी बाधाकरतेहैंमानमर्दिद्विज धनहरैं ब्राह्मणनको अनादर करि उनको धनहरि लेतेहैं तहां विप्रमानना पुण्यको तडागहै भोजनदान देनापुण्य की नदीहैसो धर्मसेतु जबआपही नाशकिये तबसबै अधर्म करनेलगे पुनःतियवालक वध अर्थात् जबशत्रुकी पराजय करिपाये तबउनकी स्त्री वालकनको मारिडारतेहैंऐसे पापनते कुल दह्यौ परिवारसहित नाशहोतेहैं ऐसे नृपराजा अधर्मीते यहि धनुषको नागह्यौ हाथनालगावौ यहबात हमपुकारिकै कहतेहैं भावधनु उठावने ते पीछे उपहास होई ३ । ७५ ॥

मू० । समुझिभूपधनुषहिधरौनिजकुलबलदलदेखि । मातु और पितुऔरहैधर्महितजेविशेखि १ धर्महितजेविशेषिशूरकरलीकनजाकी । शत्रुसमरबलवंततेगतीक्षणनहिंबांकी २ बांकीकीरतिचंद्रसीजगतउजेरोनाहिंकरौ । भाटकहतअण खाँचिकैसमुझिभूपधनुषहिधरौ ३ । ७६ ॥

टी० । हे भूपहू समुझिकै धनुषहि धरौ क्यासमुझिकै निजकुल बल दलदेखि भावजब आपनाकुल उत्तमदेखौ पुनः तुम्हारे धनुषउठावने योग्यबल होय पुनः धनुष उठावनहारके बहुतेरे राजाशत्रु ह्वै जावँगे तिनसों युद्धकरिबे योग्यतुम्हारे दलहोय इत्यादि आपनादेखि पारजावे योग्यसब

बात समुझि तब धनुषउठावो अरु जिनकी माता औरजाति तथा पिता और जातिहैं इत्यादि कमअसिल ताहूपर जे विशेषिसत्य शौच तपदानादि धर्मको तजेहैं १ विशेषि धर्महितजेहैं अरु शूरकी लीकनजाकी अर्थात् एकतौ धर्मवंतनहीं पुनः शूरबीरनमें जिनकी गनती नहींहै पुनः बलवंत शत्रुते समरमें जिनकी बाँकी तीक्षणपैनी तेगनहीं है भाव सबलतेयुद्धकरिबेमें कादरहैं २ बाँकी कीरतिचंद्रमासरीखे जगतमें उजेरो नहिंकरो भावजाके धर्म आचरणकी प्रशंसा लोकमेंनहीं होतीहै ते कैसेधनुष उठाय सक्ते हैं इत्यादि प्रणरेखा खैंचिकै भाटकहते हैं हे भूपहु समुझि धनुषहि धरौ ३ । ७६ ॥

मू० । धनुषआँगुरीजनिछुयोबलकुलआपुनिहारि । सत्यसुकृत त्यागेहृदयकहतअसत्यबिचारि १ कहतअसत्यबिचारिनारिबधब्राह्मणकीन्हो । आगतकोसंकल्पिऐंचिद्विजमुखतेलीन्हो २ द्विजमुखछरसनकरिभरयोदानिशिरोमणियशलियोबदनरदनमसिलागिहैधनुषआँगुरीजनिछुयो ३ । ७६ ॥

टी० । हे भूपहु आपुबल कुलनिहारि आपनाउत्तम कुल धनुषतोरिबे योग्य बलदेखिकै तबअँगुरी ते धनुषछुयो नातरुजे सत्य आचरण तथा सुकृत पुण्याय हृदयते त्यागे असत्यबिचारिकै कहत अर्थात् आपनीबड़ाई स्वारथ बिचारि झूठही कहतेहैं १ यथास्वारथ हेतझूठ बोलतेहैं तथानारि अरुब्राह्मणको बधकीन्हे प्राणहरे पुनःजोआगतको संकल्पिसो द्विजमुखते ऐंचिलियो अर्थात् पूर्वकाल जोभूमिसंकल्पिदियो पुनःकिसीबातसोंनाराज़ भये तब खातहुये ब्राह्मणों के मुखते छीनिलियो २ पितृनकी संकल्पी भूमि तौ ब्राह्मणनते लैलीन्ह्यो अरु द्विजमुख छरसकरि न भरयो अर्थात् मधुर चरफरादि षटरस भोजन बनाय ब्राह्मणको भोजन कबहूं नकरायो ज़ाते दानि शिरोमणि यशलियो उत्तमदानी यशपावते सो नहीं कीन्ह्यो अधर्मके भरे भूप अँगुरीते धनुष न छुयो नातरु बदन मुखै मसि स्याही लागी ३ । ७७ ॥

मू० । शेषसमाननरेशसोधरेभूमिकोभार । जाकोभानुसमानकोतेजप्रतापअपार १ तेजप्रतापअपारचंदसमकीरतिभारी । पावकसमद्युतिवंतपवनतेबलअधिकारी २ बलअधिकारी

पवनसोबुद्धिप्रकाशगणेशसो । सोधनुछुवैमहेशकोशेषस
माननरेशसो ३ । ७८ ॥

टी० । कैसा राजा धनुषउठाय सक्ताहै जो शेषजीकी समान भूमिको भारधरे भाव परिश्रम सहिकै भूमिकी रक्षाकरतेहैं ऐसे जे भूपहैं तो पुनः भानुसमान जामें तेज प्रताप अपारहै अर्थात् जो विनासहाय अकेले सब को जीतिसकै जाके सन्मुख कोऊ न ह्वैसकै ताको तेजकही पुनः दो० ॥ होतजु अस्तुतिदानते कीरतिकहिये सोइ।होत बाँहुवलते सुयश धर्म नीति सोहोइ॥जाकी कीरति सुयशसुनि होत शत्रुउरताप।जगडरात सबआपही कहिये ताहि प्रताप॥इत्यादि तेज प्रताप सूर्यनकी समानजामें बडाभारी हो १ यथा सूर्यनसम तेज प्रताप अपारहोइ तथा चंद्रसम भारी कीरति होइ चंद्रसमशीतल तापहारक आनंददायक पोषक पुनः शील सुभाव दानकी बडीभारी प्रशंसाहोइ पुनः पावक अग्नि समद्युति प्रकाशहोइ पुनः पवनते अधिकारी बलकरिकै होय २ पवनसो अधिक बलीहोय पुनः गणेश जीकी समान जाके बुद्धिको प्रकाशहोय सो महेशको धनुष पिनाक छुवै जो शेषसम भूमिकोभार धरनेवाला भूपहोइ सो धनुषउठावै ३ । ७८ ॥

मू० । यहिप्रकारकेनृपधरैंशिवपिनाकपरचंड । जाकेसत्यप्रताप
कोध्वजादीपनवखंड १ ध्वजादीपनवखंडभूपहरिचंदसो
होई । पृथुरघुबानादिलीपसगरअंशुमानसोकोई २ कइय
यातिसुगाधिसेशिविदधीचनृपउच्चरै । वारबारप्रणउच्चरौं
यहिप्रकारकेधनुधरै ३ । ७९ ॥

टी० । शिवजीको पिनाक धनुष प्रचंड अर्थात् महाकठोर गरुहै ताको यहिप्रकारके नृपराजाधरै धनुष उठावै कयहिप्रकारके राजा जाकेसत्यधर्म तथा प्रतापको ध्वजा सातौद्वीप तथा नव खंडमें प्रकाशमानहै १ कैसे राजनके सत्य प्रतापको ध्वजा सातद्वीप नव खंडमें प्रकाशितहै यथा अ-योध्याके भूप हरिचंद जे सत्य धर्मपर सर्वस धन राज्य स्त्री पुत्र आपनी देहतक दैदीन्हे सत्य न त्यागे ऐसा जो होय अथवा पृथुकी समान होय जे प्रजाकी रक्षाहेत बरबस गहि धेनुरूप पृथ्वीको दुहे अथवा रघुकी स-मान होय जे यह प्रतिज्ञाकीन्हे कि याचकको नाहीं ना करब जो माँगी सोई देब तथा कैसहू सबलबीर युद्धमें सन्मुखहोई ताको पीठि न देब

सन्मुखैंजूझब तथा परस्त्री पर दृष्टि न करब येप्रतिज्ञा अमल निबाहे पुनः बान जो अयोध्याके राजाभये जिन परिपूर्ण धर्मपाले तथादिलीप जिनकी राजमें गाय बाघ एकघाट पानी पीतारहे अथवा सगर जिनके पुत्र समुद्र खोदे जिनकी अश्वमेधको घोडा कोऊ न बाँधिसका अथवा अंशुमान समहोय २ अथवा कोई ययाति समहोय जे एकसैएक अश्वमेध यज्ञकरि इसीदेह इंद्रपदपर चलेगये वा गाधि सम प्रतापवंतहोय अथवा शिविकी समान दया वीर दानरिहे जे कबूतरके प्राण बचायबेहेत आपनी देह दै दीन्हे वा दधीच समहोय जे देवतनके हेत प्राणत्यागि हाड़दीन्हे ऐसा जो नृप उच्चरै जाकोयश जगत कहिरहाहोइ यहिप्रकारके जे नृपहोइ ते धनुष को धरै शिव धनुषको उठावै इसहेत बारबार प्रणउच्चरै कहतेहैं ३।७९॥

मू०। कीनारायणधनुधरैंजाकोप्रबलप्रताप। धर्‍योमेरुमंदरमहीमथेउसिंधुकरिदाप १ मथेसिंधुकरिदापप्रबलहिरण्याक्षहिमार्‍यो। मुरमधुकैटभबधनसुयशजगमेंबिस्तार्‍यो २ बिविधभांतिबसुधासकलतुलसीप्रतिपालनकरैं। दुर्‍यो होयनृपरूपधरिसोनारायणधनुधरैं ३।८०॥

टी०। पुनः बंदीबोले कितौ नारायण धनुधरैं उठाय तोरिसक्तेहैं काहेते जाको प्रताप प्रबल है भाव जाके प्रतापके आगे सुरासुरादि सबके प्रताप मंदपरिजाते हैं कैसेहैं नारायण जे मेरु मंदर महीधर्‍यो सुमेरुआदि पर्वतनसहित सब मही पृथ्वीको धारणकिहे हैं अथवा बाराहरूपते पृथ्वी धरे पुनः कच्छपरूपते मंदर मेरुधर्‍यो मंदराचल पर्वत पीठिपर धर्‍यो पुनः चतुर्भुजरूपते दापकरि मानसहित समुद्रमथे सबरत्ननिकारे १ दाप करि सिंधुमथे पुनः बाराहरूपते प्रबल प्रकर्षकरिकै बली जो हिरण्याक्ष ताकोमारे तथा मधुकैटभ मुरादि बड़े बली दैत्यभये हैं तिनको बधन अर्थात् मारिकै जगमें सुयश बिस्तार्‍यो सुंदरयश फैलाये २ इसीभांति गोसांईजी कहत कि बिबिधभांतिके रूपधरि सकल बसुधा सबपृथ्वी प्रतिपालनकरैं भाव जबजब धर्मकी हानिभई तबतब अनेक रूपधरि भूभार उतारि धर्मस्थापनकीन्हे सोई नारायण बर्त्तमानमें जो नृपरूपधरि दुर्‍यो होइ अर्थात् राजकुमाररूप धारणकिहे राजसमाजमें छिपा बैठाहोइ सो नारायण धनुषधरै उठावै तूरै ३।८०॥

मू० ।विधिसमानपरचंडसोआयोहोयसमाज।ज्यहिजगकीरचना
करीसरिसरगिरिगजराज १ सरिसरगिरिगजराजसमुद्रसा
तहुजिनबांधे। ऊंचनीचजगसृष्टिप्रबलबलतेज्यहिसाधे २
साधिवेदचारौमुखनिरचोसकलब्रह्मांडसो । यहकोदंडसो
ईधरैविधिसमानपरचंडसो ३ । ८१ ॥

टी०।बिधि ब्रह्माकी समान प्रचंड बड़ातेज प्रतापवंत सोजो यहिराज-
समाजमें आयोहोय ज्यहि सब जगकी रचनाकरी सबभूतको उत्पन्नकियो
कौनरचना सरि नदी सर तड़ाग गिरि पर्वत गजराज जे दिग्गज पृथ्वी
को थांभे हैं १ नदी तड़ाग दिग्गज पुनः जिन सातहु समुद्रबांधे तिनके
बीचिमें सातद्वीपबनायेतथा ऊँचे स्वर्गदेवादि नीचे भूतल पातालनरनागा
दि वा ऊँचे मुक्त मुमुक्षू नीचे बद्धजीव वा ऊँच ब्राह्मणादि नीच शूद्रादि
वा ऊँचे सुर नरादि नीचे पशु पक्षी कीट पतंगादि यावत् जगकी सृष्टि है
ताको ज्यहि प्रबल बलतेसाधे प्रकर्षकरिकै बलहै जिनमें त्यहिबलते जाकी
जैसी मर्यादाबांधे ताको तैसेही निबाहत यथा घिरुहरीआदि जलवर्ष भूमि
में आपही पैदाहोत गूलर फलमें भुनगा आपहीहोत कुशवारीमें कीट बिना
खाये पिये वृद्धहोत इत्यादि निबाहत २ चारिमुखनि चारिहुवेद साधे शुद्ध
उपजाये इसीभांति सब ब्रह्मांडको रचे सोई यह कोदंड धनुषधरै उठावै
जो बिधिसमान प्रचंडहोय ३।८१ ॥

मू०। कीपुनिशंकरधनुधरैज्यहिविषकीनोपान । त्रिपुरदनुजदाह
नजगतहतोएकहीबान १ हतोएकहीबानमदनतनरिसमें
जारयो। चंदगगनशिरधरैशूलसूरजज्यहिमारयो २ मारयो
दुखसबजगतकोजगतसबैपलमेंहरै। आयोजोनृपरूपधरि
कीपुनिशंकरधनुधरै ३।८२ ॥

टी०। नारायण ब्रह्मा की पुनि शंकरहोइ तौ धनुषरै उठावै काहेते
ज्यहि शिवजीने हलाहल विषको पानकरि पचैडारे पुनः जगत्दाहन भस्म
करता अर्थात् संसारको नाशकिहे देतारहै ऐसा त्रिपुर दनुज दैत्य त्रिपुरा-
सुर ताको जिन एकही बाणतेहत्यो नाशकरिदीन्हेउ १ यथा त्रिपुरासुरको
एकही बाणतेमारे तथा महाबली बीर काम ताको रिसमें अग्नितें जारयो
क्रोधकरि भस्मकरिदीन्हे पुनः सिंधुतें जो निसरा त्यहि चंद्रमाको शीशमें

धरैहैं पुनः दूसर जो अत्रि मुनिकोपुत्र चंद्रमा गगन आकाशमेंहै तथा सूर्य तिनको ज्यहि शंकरने त्रिशूलसों मारयो भाव महा प्रलयकालमें सबको नाशकरतेहैं २ पुनः कृपाकरि सब जगतको दुःखमारयो भाव सदा सबै जीवनकी रक्षाकरतेहैं पुनः प्रलयकाल आयेपर एकपलकभरमें सबैजगत कोहरैं नाशकरते हैं सोई जो नृप राजाको रूपधरि आयोहोइ तौ शंकर धनुधरैं ३ । ८२ ॥

मू० । गणनायकसोहोयजोसोधनुधरैप्रमान । जाकोपूजैंप्रथमसुर विघ्नहरणकीबान १ विघ्नहरणकीबानध्यानहरिहरबिधि साधैं । ज्यहिसुमिरणतेसिद्धसिद्धियोगहिअवराधैं २ अव राधैंगिरिजासुवनफलपावहिंमुखजोहिजो । सोपिनाकयह करधरैगणनायकसोहोयजो ३। ८३ ॥

टी० । जो गणनायक सो गणेश जाकी समानहोइ सो प्रमाण धनु- धरै सत्यकरि सोई उठावै कैसे गणेशहैं जाको पूजैं प्रथम सुर सबदेवता जिनको मंगल कार्यमें प्रथमहीं पूजते हैं काहेते बिघ्नहरणकी बान जिनको स्वभाव बिघ्नहरता है १ विघ्नहरणकी बान सुभावहै ताते हरि हर विधिसाधैं ब्रह्मा विष्णु शिवादिकार्य सिद्धहेत साधना पूजादि करते हैं काहेते जाकोनाम स्मरण ते सब विघ्न मिटि कार्य्य सिद्धहोत पुनः जिनको सुमिरनकरि सिद्धजन योगहि अवराधैं प्राणायामादि योगक्रिया करतेहैं २ गिरिजा सुवन पार्वतीकेपुत्र गणेशजीको अवराधत पूजा जपा- दि करत संत जोमुख जोहिसो फल पावहिं जोई आश्रितह्वै गणेशजीको मुख निहारता है सोइ अर्थादिफल पावताहै ताते जो गणनायकसो होय सो यहिपिनाक धनुधरै भाव गणेशजीके तुल्यहोय सोयहि धनुषको उठाय सक्ताहै ३ । ८३ ॥

मू० । शशिसूरजादिगपालसबसुरसुरपतिमहिपाल । यक्षसर्पगं धर्बमनुमनुजदनुजयमकाल १ मनुजदनुजयमकालपितृ मुनिसिद्धसमाजै । गिरिसमुद्रबसुमरुतजहांलगिसकल बिराजै २ सकलबिराजैंसबसुनतज्याहिबलहोयसोउठहुअ ब । धरिधनुप्रणपूरोकरौशशिसूरजादिग्पालसब ३ । ८४ ॥

टी० । शशि चंद्रमा सूर्य्य दिग्पाल सब सुरभाव दिशनको पालने

वाले सब देवता तथा सुरपति देवराज इन्द्र महिपाल भूतलके यावत् राजा तथा यक्ष कुबेरादि सर्प बासुकी आदि गंधर्व तुंबरादि मनु स्वायंभु आदि मनुज मनुष्य दनुज दैत्य यमकाल १ मनुज सुधन्वादि दनुज बाणासुरादि यमराज काल दिनदंड पक्ष मासादि पितृ कश्यपदक्षादि मुनि सिद्धादि सब सवै समाजमें हैं गिरि हिमांचलादि सातौसमुद्र आठौवसु मरुत पवन इत्यादि जहांलौ स्वरूपवंतहैं सवै इहां बिराजमान हैं २ सुर नरादि सकल बिराजमान हमारे वचन सब सुनतेहैं तिनमें धनुउठायवे योग्य ज्यहि के बल होय सो अब उठौ शशि सूर्य्यादि सब दिग्पालादि धनुष धरौ तूरौ प्रणपूरौ पूरकरौ ३ । ८४ ॥

मू० । बैठकतेउठिउठिसजेसुनतभाटकेबैन । अभिमानीमानीमहिपकियोहियेअतिचैन १ कियोहियेअतिचैनदेवबलइष्टसँभारयो । कटिपटदृढ़करिदंडभुजनिकोजोरप्रचारयो २ जोरप्रचारिनिहारिभटअरुणनयनआसनतजे । कहांधनुषतृणप्रणकहांबैठकतेउठिउठिसजे ३ । ८५ ॥

टी० । भाटकेबैन जनकजीकी प्रतिज्ञा जो बंदीजन सुनाये तिनको सुनि जेमहीप अभिमानी मानीरहे अर्थात् बलादिको गर्व ताको अभिमान कही तथा ऐश्वर्यादि परचित उन्नत राखना सोमान है यथा गर्वः अभिमानः अहंकारः त्रयंगर्वस्यचित्तस्यसमुन्नातिः परस्मादुत्कर्षचिंतनेनौन्नत्यं मानउच्यते इत्यमरविवेके इति अभिमानीमानी राजाहिये अतिचैनकिय उरमें आनन्दहै बैठकते उठि उठि सजे भूषण बसन सँभारे १ हियेमें अत्यंतचैन आनंदमानि पुनः इष्टदेवनको बल सँभारे सुमिरणकीन्हे पुनः कटिमें पट दृढ़करि कमरबंद कटिमें पुष्टकरिबांधे पुनः भुज दंडनको जोर प्रचारे तालदैचले २ जोर प्रचारि जोरकरि तालठोंकि धनुषको निहारि भट अरुण नयन क्रोधते नेत्र लालकरि योधन आसनतजे आसनतेचले इसभांति बैठकते उठि उठि राजासजे पुनः मानकरि बोले कहा धनुष तृण तिनुकासम धनुष क्याहै भाव अबहीं तोरेडारते हैं पुनः प्रण कहा भाव जौन धनुष टूटीतौ बरबस बिवाह करेंगे ३ । ८५ ॥

मू० । धनुननयोकरकटिनयोतमकिछुयोधनुआनि । पांवनवंशीशहुनवैभईप्रबलबलहानि १ भईप्रबलबलहानिमानमुख

कोसबसूख्यो।तनमेंचल्योप्रस्वेदअधरदलबिद्रुमरूख्यो २ रूख्योबिद्रुमबदनभोदेहदशाबिह्वलभयो । लोचनमन दूनौनयेधनुननयोकरकठिनयो ३ । ८६ ॥

टी० । अत्यंत बलकरि उठावनेलगे तहां धनुषतौ नहींनयो परन्तु अमितभयेते करकठि नयो हाथ करिहाउं टेढ़ेहैगये काहेते आनि तमकि धनुछुयो अत्यंत बलकरि धनुष उठाये ताते पाँवनये तथा शीशहुनवै पुनः प्रबल प्रकर्ष करिकै जोबलरहा ताकी हानिभई १ काहेते जानिये प्रबल बलकी हानिभई कि मुखको जो मानरहो सोसब सूखो मानते जो प्रसन्नतारहै सो श्रमते नाशभई मुख सूखिगया पुनः तनमें प्रस्वेद पसीनाचल्यो विद्रुमदल अधर रूख्यो मूँगासम अरुण ओष्ठ रूखेपरिगये सूखि गये २ विद्रुमसम अरुण अधर तथा बदनरूख्यो परिगये तथा देहकीदशा विह्वलभई सर्वांग ढीलेपरिगये पुनः लोचननेत्र अरु मनदोनौं ढीलेपरिगये ताते नयेभाव अतिश्रमते नेत्रनपर पलकैं झांपिमई मन हारिमानि लियो काहेते धनुतौ नयोनहीं भावउठि न सक्यो अरु अत्यंत बलकरनेते हाथकरिहाउं नयगयो सीधे नहींहोतेहैं ३ । ८६ ॥

मू० । एकतजैएकैधरैंकरैंअनेकउपाय । बैठठाढ़ेमध्यधरिधनुक हुँचाउनखाय १ धनुकहुँचाउनखायबिरदबंदीगणबोलैं । बैठहिंशीशनवायनयनपलकैंनाहिंखोलैं २ नयनकरेरेभाट कहिमातुजनेकहुंतरुतरे।कोदोकणै अहारके एकतजै एकैधरै ३ । ८७॥

टी० । एकराजा उठायकै हारिगये तालेतजैधनु उठावन त्यागि अलग खड़े भये तब एक राजाधरैं धनुप पकरि उठावने लगे ते अनेक उपाय करैं कैसे उपाय करते हैं बैठे ठाढ़े धनुमध्य धरि बीचमें पकरि अनेक भांति बलकरि उठावते हैं परन्तु कहूँचाउ न खाय भाव किसी भाँति मनुचैन नहीं पावत १ जब धनुष उठावतमें मनुचाउ नहीं खात किसी भाँति तिलभरि भूमि नहीं छांड़त तब हारिमानि आय शीशनवाय नेत्र मूँदि आसनपर बैठे लज्जावश नयननकी पलकैं नहीं खोलते हैं यह दशादेखि जे बंदीगण पूर्व राजनकी बिरदावली बोलैं पूर्वकोयश करिरहे रहैंते प्रातिकूल बोले २ क्या प्रतिकूल बोले नयन करेरे भाटकहि सक्रोध

नेत्रगुरेरि भाटकरेरे कुञ्चन कहोकि कहुँ तरुतरे मातुजने अर्थात् किन्ही विपति कालमें घरछोड़ि बनको भागिगये तहां कहूंकिसी वृक्षतरे माताने जन्मा तहां उत्तम भोजन तौमिला नहीं कोदौके कण अहारकरिकै दूध पिआये ताते जन्महीं ते कमजोर हैं तेई राजा एकतजें एकैधरें अनेक भांति बलकरि हारिबैठे धनुप किसीने नहीं उठावा ३ । ८७ ॥

मू० । धनुधनसबकोहरिलयोमतिगतिनामसदाप । यशकीरतिबलबीरताधीरजतेजप्रताप १ धीरजतेजप्रतापनियमव्रतधर्मसुकर्मनि । अस्त्रशस्त्रकीहारिरूपद्युतिलाजकाजगनि २ लाजकाजपरगाजधरिराजनिधनुकरसोछियो । रीतेबीतेसबभयेधनुधनसबकोहरिलियो ३ । ८८ ॥

टी० । शिवको धनुष सब राजनको उत्तमतादि सबधन हरि लियो कौन उत्तमधन यथा मतिकीगति अर्थात् सुबुद्धिको विचार नाम उत्तम प्रशंसा सदाप सहित अहंकार पुनः यश अर्थात् नीति धर्म सहित बाहुबलकी प्रशंसा तथा कीरति अर्थात् दानशीलादि की प्रशंसा बल बीरता धीरज तेज प्रताप तहां कैसहूंदुर्घट कार्यपरे ताकोकरि डारवेमें श्रमन आवे ताको बलकही सबलशत्रु ते युद्धकरत में मनहर्ष मुख प्रसन्न बनाहै ताको बीरता कही तथा काम क्रोध हानि लाभ आपत्कालादिमें मनथिर रहना धीर्यहै जाकी सन्मुख कोऊ न ह्वैसकै सो तेजहै जाको सबडरै सो प्रतापहै १ नियमव्रत अर्थात् सदाचार एकरस निबाहना पुनः सत्य शौच तप दानादि जोधर्म तामेंहोम पूजापाठ संध्या तर्पन तीर्थादि जो सुकर्म इत्यादि सबनाश भये तथा अस्त्र वाण चक्रादिशस्त्र खड्गगदादि तिनकी हारि भई तथारूपकी द्युति जो प्रकाशपुनः लाजके जे काजहैं यथाबड़ेन को दबाव अनुचित त्यागादि २ लाजकाजादि पर गाजधरि नाशकरितब राजनकर हाथसों धनु छुयो तबधनुप ने सबकोउत्तम धनहरि लियोताते सबराजा बलबीरतादिते रीते खालीभये तथासुकृतआदि जो पूर्वकीपूंजी रही सो बीत्यो चुकि गयो ताते मंदभये ३ । ८८ ॥

मू० । गाजिगाजिधनुकरधरयोलाजिलाजिगेभाजि । साजिसाजिबलदलसबैराजाराजसमाजि १ राजाराजसमाजभयेमुखगोवनलायक । संपतिसबैगँवायकरयोशंकरधनुधा

यक २ धायकआसनपरगयेजनुतनबलधनुछलिहरयो।
लाजिलाजिबैठेसकलगाजिगाजिकरधनुधरयो ३।८९ ॥

टी० । गाजिगाजि करधनुधरयोराजालोग गर्जिगर्जि हाथनसों धनुष उठावनेगे जबधनुष न उठा तबलजाय लजाय भागिगये कैसे भाये रहैं आपनाबल सँभारि तथादल साजि साजिसबै राजाआय यहांराज समाज में विराजमान भये १ ताही समाज में राजा शिवधनुषन उठनेपर मुख गोमुखकी प्रसन्नता तेज उतरि गयो बनलायक उदासीन भये काहेतेसबै संपति गँवायतब शंकर धनुधायककरयो भाव पूर्वहीआपनी सबै ऐश्वर्य नाशकरि दीन्हे जब किशोरीजीके बिवाह हेत शिवजीको धनुप तोरिबेकी इच्छाकीन्हे धनुषकेपास धायकै गये२जब धनुषनहीं उठोतब कैसेधायकै आसन परगये जनुतनकीप्रभा तथा बलताको धनुषने छलकरि हरिलियो ताते पूर्वतो गर्जि गर्जिकरसों धनुधरयो जबउठिनसक्यो तब सकलराजा लजाय लजाय भाय आसननपर बैठे सबशोभा उतरिगई ३।८९ ॥

मू० । धनुसुमेरतेगरु भयोउठैनकोटिउपाय । तिलनटरै भूपति लरैंधरैंअरैं लपटाय १ धरैंअरैंलपटायजायँगड़िअधिक धरामें । जम्योशेषकेशीशईशजनुचढयोकलामें २ कला-रूपकैलासको धरणिरूपधनुकोलयो । उदय अस्तगिरि भारधरधनुसुमेरतेगरुभयो ३ । ९० ॥

टी० । शिवको धनुष सुमेरुते अधिक गरूभयो काहेते कोटि करोरिन उपायकीन्हे तबहूं नहींउठताहै कैसीउपाय भूपति राजालोग करतेहैं कि धरैं अरैं धनुषकोपकरि अड़ेरहते हैं तामें लपटायकै लरतेहैं अनेकभांति बलकरि उठावतेहैं परंतु तिलनटरै तिलभरि भूमि नहींछांड़ताहै १ जब राजालोग धनुषको पकरि अड़े लपटाय ज्यों ज्यों बलकरि उठावाचाहत त्योंत्यों धरा जो भूमि तामें अधिक गडतचलाजात कैसो अचल देखात यथा शेषके शीशपर गड़ोहै अथवा कला कहे इसकालमें याधनुषपर जनु ईश शिवजी चढ़े बैठेहैं जो इहां उत्प्रेक्षाकरतेहैं सो सत्योपाख्यानमें यथा-र्थहीलिखाहै अर्थात् किसी राजाको शेषरूप किसीको शिवरूप धनुष देखि परा २ अथवा कैलासकोकलारूप है अर्थात् अत्यंतगरू जो कैलास पर्वत ताने आपने अंश कलाकरि धनुषरूप धारणकियो अथवा धरणि धनुको रूपलयो अर्थात् पृथ्वी धनुषकोरूप धारणकियो अथवा उदयगिरि अस्त

गिरिआदि यावत् पर्वतहैं तिनसबको भार धारणकिहेहैं ताते धनुषसुमेरुते अधिक गरूभयो ३ । ९० ॥

मू० । क्रोधवचनबोलेजनकनृपबलपौरुषदेखि । प्रणप्रमाणदेखन
नसबैआयेभूपविशेखि १ आयेभूपविशेपिमनुजसुरअसुर
सभामें । तिलभरिसकैंनटारिशंभुधनुधरयोधरामें २ धरा
नछूटीधनुषतेबलनकरयोभूपतितनक । बीरधीरधरणीनहीं
क्रोधबचनबोलेजनक ३ । ९१ ॥

टी० । नृप राजनको बल तथा पौरुप बलकी कर्त्तव्यता देखि अर्थात् जब किसीको उठावा धनुप नउठा तब जनकजी क्रोधसहित वचनबोले कि हमारे प्रणको प्रमाण सत्यता देखनेहेत विशेषि भूपश्रेष्ठ राजा सबै आये भाव सबलोकन में यावत् बली बीररहे ते कोऊ बाकी नहींरहे १ कैसे विशेषि भूपआये मनुज जे मनुष्य राजाहैं सुरदेवता असुरदैत्य राक्षसादि सबै सभामें बैठेहैं तेसबलागे परंतु कोऊ तिलभरि भूमिते टारि न सक्यो जिसधरा पृथ्वीमें रहै तहें शंभुधनुप धराहै २ कैसाधरा है धनुप किधराजो पृथ्वीसोधनुपते तिलभरि न छूटी तातेयहसूचितहोत किभूपति राजा लोग धनुप उठावबेमें तनकौ बलनहीं कियेकाहेते जो बलकरि उठावते तौ कौनिउदिशि तिलभारितौ खसकततातें अब निश्चयभई कि धीरवीर धरणी नहीं पृथ्वीपर कोऊ धीर्यवंतवीर नहीं रहा इति क्रोधवचन जनक बोले ३ । ९१ ॥

मू० । प्रणहमारमिथ्याभयोजाहुसकलनृपधाम । बिधिनरच्योवैं
देहिवरुपुरुषनकोऊबाम १ पुरुषनकोऊजाननतोप्रणग
हधरतोकहा । कन्यारहीकुमारियहभईहास्यजगमेंमहा २
हास्यभईबसुधासकलशूरहीनसबजगठयो । जनकसभामें
कहवचनप्रणहमारमिथ्याभयो ३ । ९२ ॥

टी० । जनकजी कहे किहमाराप्रण मिथ्याभयो पूरानपरा ताते सकल नृपधाम जाहुअर्थात् विवाहकी आशात्यागि आपने घरनको सबराजाजा-तजाहुकाहेते आशात्यागहु किवैदेहिवरु बिधिनरच्यो अर्थात्नतो सब राजा बिधिके रचेहौ अरुजानकी के बिवाहयोग्य जोवरुहै ताको ब्रह्मा ने नहींरचाहै यहव्यंग होत किवहस्वइच्छित प्रकटभया पुनः वाच्यार्थने वै-

देहीको बरु ब्रह्माने लोकमें रचिबेनहींकियो काहेतें पुरुषतौ कोऊ देखिन नहींपरते हैं सब वामस्त्री देखिपरते हैं भाव समाजमें पुरुषार्थ काहूमें नठहरा १ पुरुष नकोऊ जानतौ भाव पूर्वते जोमें जानतौ कि भूपनमें पुरुषार्थ नहीं है तौ यहप्रण कहाधरतो अर्थात् जो धनुपतारै ताको कन्या व्याहौं यहप्रण काहेको धारणकरतो काहेतें इसी प्रणके पाछे मेरी यह कन्या तौ कुमारिरही पुनः जगमें महाहास्य भई भाव विदेहको प्रण जड़वत् है यह अगमप्रण क्यों किया कन्या कुमारी राखना मंजूरर है २ तहाँ मेरी तौ हास्य भइबै भई परंतु सब जगमें यावत् वसुधा पृथ्वी है सो सकल शूरहीनठयो ठहरयो इत्यादि सभामें जनकजी वचन कहे कि हमारा प्रण मिथ्याभयो कोऊ बली बीर न ठहरा ३ । ९२ ॥

मू० । लषणलालकोलालमुखसुनेजनककेबैन । फरकेअधरप्रलापकोअरुणभयेदुउनैन १ अरुणभयेदुउनयनजोरिकरभेउठिठाढ़े । करुणानिधिकीओरबचनबोलेरिसबाढ़े २ बाढ़ेरिसकहसुनुजनकबचनकहौरघुबंशरुख । रामकृपालुसमाजमहँलषणलालकहलालमुख ३ । ९३ ॥

टी० । जनकके कठोर वचन सुनेतेही क्रोधवशते लषणलालको मुख लाल भयो पुनः प्रलापको अधर फरके यथा ॥ प्रलापोऽनर्थकंवचःइत्यमरः ॥ अर्थात् अनर्थक बचन कहनेहेतु दोऊओठ फरकनेलगे तथा दोऊ नयन अरुण लालभये १ दोऊनयन अरुणभये पुनः करदोऊ हाथजोरि उठि ठाढ़ेभये कैसे ठाढ़ेभये करुणानिधिकी ओर अर्थात् सेवकके दुःखमें आपहू दुःखितह्वै तुरतही दुखहरना यह करुणागुणहै ताके निधि परिपूर्ण भरे श्रीरघुनाथजी तिनकीओर हाथजोरि माथनाय पुनः रिसबाढ़े बचन बोले २ रिस बाढ़ेते उचित अनुचितको विचार नहीराखे ताते कठोर बचन कहे कि हे जनक सुनु रघुबंशको रुखराखे बचन कहौ भाव रघुबंश को अनादर बचन न कहौ काहेते राम कृपालु समाजमें रघुबंशनाथकृपा मंदिर श्रीरामचन्द्र समाजमें बैठेहैं अरुअबहीं धनुषको हाथसों छुये नहीं तौ तुमकैसे अनुचित बचनकहिडारे कि पृथ्वी में कोऊ पुरुषशूरबीर नहीं है तुमको कैसे सूचितभया किरघुनाथजी धनुष नहीं तोरिसक्तेहैं इत्यादि लालमुखक्रोध भरे लषणलाल कठोर बचनकहे ३ । ९३ ॥

मू० । कहाधनुषजीरणधरौंयहपुरुषारथकौन । प्रभुआयसुपावों तनकधरौंचौदहौभौन १ धरौंचौदहौभौनमहीघटचटपट फोरौं । मंदरमेरुउपारिसमुदवसुधासबबोरौं २ वसुधाबोरौं समुदमेंसमुदरसातलमेंभरौं । शेशकेशधरिमहिकरपिक हाधनुषजीरणधरौं ३ । ६४ ॥

टी० । श्रीरघुनाथजी सों लक्ष्मणजी कहत हैं महाराज जीर्णधनुषकहा धरौं बहुत दिनोंको वनापुरानसेरा खुद्दा शिवधनुषताको क्याउठावों यह कौनपुरुषार्थ क्या मेरेबलकी प्रशंसाहोइगी हेप्रभुजो आपुको तनुकआय-सुपावौं तौ चौदहौ भुवनधरौंसहजही उठायलेउं १ मंदकौनाई चौदहौ भुवन उठायलेउं पुनः महीघटपृथ्वी को कच्चघड़ाके समान चटपट शीघ्र-हीफोरिडारौं कौनभांति मेरुमंदरउपारि भावपृथ्वी को आधार जो सुमेरु पर्वतहै ताको उखारिडारौं अरुवसुधा जो पृथ्वी सबताको लैसमुद्रमेंबोरि देउँ २ यथा वसुधा समुद्रमें बोरौं तथासमुद्रको जलले रसातलमें भरौं यामें संदेहहै किपृथ्वीको शेषथाँभेहैं ते कैसेछाँडेंगे तहां शेशकेशधरि महि करपि अर्थात् एकहाथ ते शेषके शीशके बारगहि एकहाथसों पृथ्वीको खैं-चिलेहौं इत्यादि पुरुषार्थ आज्ञाहोयतौ करौं अरु इसपुराने धनुष कोक्या उठावौं ३ । ६४ ॥

मू० । महिसुउठाऊँधनुषयहजोप्रभुआयसुहोय । दिग्गजचारिय कत्रकरिमहीधरनपुनिसोय १ महीधरनपुनिखैंचिलोकचौ दहधरिआनौं । हिमिगिरिअरुकैलासधनुपऊपरधरिता नौं २ तानौंसकलसमाजनृपचढ़िचढ़िडारहुँभारकह । धाय सहसयोजनमहीसहितउठावोंधनुषयह ३ । ६५ ॥

टी० । पुनः लषणलालकहत हे प्रभु जो आपुको आयसु आज्ञाहोयतौ महिजो पृथ्वी त्यहि सहितयाहि शिवधनुषको उठावौं भाव केवल धनुष उठावने को फलपापमयी है तातेधनुषनहीं लइसकाहौं पृथ्वी सहित उ-ठाइ हौं पुनः दिग्गजचारि यकत्रकरि दिशागज जो भूमिको थांभे हैं तिन चारिहु को बटोरि एकठेकाने करिदेउं पुनः महीधर जो पर्वत तिनसब-नको सोई भाँति एकत्रकरौं १ मही धरनको खैंचि पुनः चौदहौलोक धरि आनौं अर्थात् अतलादि सातनीचे भूरादि सातऊंचे हैं तिनचौदहौ

लोक पकरि खैंचिकै एकत्र करिदेउँ पुनः हिमाचलगिरि अरु कैलासलै धनुषके ऊपरधरि तानौंभाव धनुषको हाथसों नछुवों दोऊगोसननमें दोऊ पहार दबाय धनुषको नवावों २ या भांति जब धनुषको तानौं तापरनृप राजनकी समाज चढ़ि चढ़ि भारकहँडारौं अर्थात् भूमि सबलोक दिग्गज सबपहार दोऊपहारनयुत धनुष तापर राजनकी समाज ऐसा भारलिहे सहसहजार योजनलौंधाय दौरा चलाजाउँ इसभांति मही पृथ्वी सहित यहि शिवधनुषको उठावों जो आज्ञाहोय ३ । ९५ ॥

मू० । जनकहियेसकुचेसहमिडरेसकलमहिपाल । दिग्गजधरथ
लछूटिगोभयतेदिशियमकाल १ भयतेदिशियमकालजान
कीहियहर्षानी । गुरुरघुपतिमनतोषकहीसुंदरमृदुबानी २
महिकंपतिप्रणलषणकेसूरजकेमनसुखभयो । सभासशंक
प्रमाणसुनिजनकशीशसकुच्योनयो ३ । ९६ ॥

टी० । लक्ष्मणजीके बचनसुनि तथा रघुबंशी प्रतापवंतजानि जनक जी सकुचे हियेमें लज्जाभई भाव हमते बचनकहते नहींबने पुनः सकल महिपाल सहमिडरे सब राजालोग अत्यंत भयमानि डराने शंकाभयो काहेते दिग्गज धर थलछूटिगो दिशागज जौनथल धरा पृथ्वीको पकरेरहे सो छूटिगयो भाव शंकामानि कांपिउठे तथा यम कालादि दिशाके पाल-नेवाले भयते डरिगये १ यम कालादि भयते सबदिग्पाल डरे पुनः जा-नकीजी हियेमें हर्षानी भाव प्रतापवंतहैं राजकुमार धनुष उठावहिंगे यह बिचारि आनंदभई पुनः गुरू बिश्वामित्र तथा रघुनाथजीके मनमें संतो-षभयो भाव यासमयमें ऐसेही बचनकहना उचितरहै ऐसाबिचारि सुंद-रि मृदु कोमल बाणीकही भाव आदरसहित बुलाय बैठायलीन्हे २ महि कंपत पृथ्वी कांपिउठी लक्ष्मणजीको प्रणसुनत कुलकी उन्नताई जानि सूर्य मनते परम सुखीभये लक्ष्मणजीके बचन प्रमाण सांचे सुनि सभा सशंक सबकेमनमें शंकाभई जनकजी सकुचे ताते शीशनयो लज्जाते शिरनवायलिये ३ । ९६ ॥

मू० । कौशिकमुनिआयसुदयोसुनहुरामरघुबीर । धनुषउठावहु
बामकरहरहुजनककीपीर १ हरहुजनककीपीरसभाकोशो
चनिवारो । सुरसज्जनसुखलहहिंदुष्टमुखकीजियकारो २

कारोमुखमहिपालसबज्यहिधनुनिजकरसोंछियो । सोधनु करौमृणालइवकौशिकमुनिआयसुदियो ३ । ६७॥

टी० । कौशिक विश्वामित्र मुनि धनुतोरनेहेत रघुनाथजीको आयसु आज्ञादीन्हे सुनहुराम रघुवीर रघुवंशशिरोमणि उत्तमवीर हेरामचंद्र हमारेवचन सुनहु वामकर बांयेहाथसों धनुषउठावो अरु प्रण न पूरहोनेकी जो जनककी पीरहै ताको हरहु १ धनुषउठाय जनककी पीरहरहु पुनः जनकके विषादते सब समाजभरेको पश्चात्तापहै सो सब सभाको शोच निवारहु मिटावहु पुनः सुर सज्जन सुखलहहिं अर्थात् आपुको धनुषउठावतदेखि सुर देवता सज्जन हरिभक्त ते मनभावत सुखपावहिं पुनः धनुषउठाय दुष्टनको मुख कारोकीजिये उपहासरूप मुखमें स्याहीलागे मुखछिपाय भागें २ तिनसब महिपाल राजनको मुख कारोकरौ ज्यहि निजकर धनुछियो जिन नरेशन अपने हाथनते धनुषउठाये नउठा सो धनु मृणालइवकरौ सोई शिवधनुषको कमलनालकी नाईकरि तोरिडारौ इत्यादि कौशिक विश्वामित्र मुनि श्रीरघुनाथजीको आयसुदेतेभये ३।६७॥

मू० । करिप्रणामरघुवंशमणिउठेयथामृगराज । आयसुमांगेउ जोरिकरसुखमाछविशिरताज १ सुखमाछविशिरताजमंचतेचलेगोसाईं । पुरजनपुण्यसँभारिदेवदुंदुभीबजाईं २ दुंदुभिबाजींअतिघनीवंदीजनधन्यधन्यभनि । मध्यवेदिकापरगयेकरिप्रणामरघुवंशमनि ३ । ६८ ॥

टी० । आज्ञापाय विश्वामित्रजीको प्रणामकरि रघुवंशशिरोमणि यथा मृगराज सिंहसम आसनतेउठे पुनः कर हाथजोरि मुनिनसों आयसुमांगे कैसा रूपहै सुखमा छबि शिरताज अर्थात् स्वरूपता सुंदरता रमणीकता माधुरीआदि यावत् सुखमा शोभाके अंगहैं तिनमें शिरताज सबनसोंउत्तम छबि है जिनमें १ सुखमा छवि शिरताज गोसाईं लोकपालनहार स्वामी मंचतेउतरि धनुषके निकटकोचले तासमय पुरजन जनकपुरके नरनारी आपनी पुण्यसँभारे भाव हमारे जोकछु सुकृतहोय सो यहसमय सहायहोय जामें सहजही रघुनाथजी धनुषको उठायलेवें पुनःआकाशमें देवता दुंदुभी नगाराआदि बजाये २ अतिघनी बहुत एकसाथही दुंदुभीबाजीं तथा वंदीजन धन्य धन्यभनि भाव जनकजीको मनोरथसहित

प्रण पूरकरनेवाले आपही कृतार्थरूपहैं इत्यादि कहनेलगे इसभांति मुनि को प्रणामकरि रघुवंशमणि मध्य बीच बेदिकापर धनुषढिगगये ३ । ९८॥

मू० । पटकतधनुलक्ष्मणलख्योजान्योप्रभुमनबात । कह्योधर णिधारीसबैसजगहूजियेगात १ सजगहूजियेगातधनुष कोधूकादेरै । जोमहिचलीतौसृष्टिबिकलतासबकोहेरो २ हेरोमैंरघुवंशमणिलेतधनुषमनमेंसख्यो । लटकतमहीसँ भारियोपटकतधनुलक्ष्मणलख्यो ३ ।९९ ॥

टी० । लक्ष्मणजी लख्यो देख्यो कि धनुपटकत अर्थात् धनुपकोतोरि डारनेचाहतेहैं यह प्रभुकेमनकी बातजान्यो भाव अबहीं हाथ नहींलगा- ये उठावनेको मनकीन्हे यहजानि धरणिधारी सबै कहेउ अर्थात् शेष बा- राह कमठ दिग्गजादि यावत् पृथ्वीको धारणकरनेवाले हैं तिनसबनसों लक्ष्मणजी कहे कि गातसों सजगहूजिये देहको सँभारेरहिये १ काहेते गात सजगहूजिये धनुषको धका ठोकर दूसरो दबाव अर्थात् धनुषचढ़ावत में भूमिमें ठोकरलागै वा दबावपरै ताकेबेगते जो महि पृथ्वीचली हाली डोली वा उलटिजाइ तौ सृष्टिविकलता सबकोहेरो सुरासुर नर नागादि यावत् देहधारी सृष्टिमेहैं तेसब बिकलह्वैजायँगे ऐसा निश्चय जानिलेउ भाव जो आनंदकालमें प्रलयकालको दंड भूतनको भया तौ तुम्हारी बड़ी निंदाहोयगी इसहेत गातसँभाररहो २ हेसख्यो शेष कच्छपादि सखा लोगो रघुवंशमणिको मैं हेरो मनमें धनुषलेत अर्थात् धनुषउठावनेको मन करिचुके ऐसारुख मैं रघुनाथजीको देख्यों ताते लटकतमही सँभा- रियो अर्थात् हालत डोलत गिरतसमय पृथ्वीको भलीभांति सँभारि गहे रहियो इत्यादि पटकत धनुपतोरतसमय लक्ष्मणलख्यादेख्यो ३ । ९९ ॥

मू० । बामअँगूठापांयदबिबामहाथगहिलीन । दमकदामिनीज्यों करैसबकेनयनमलीन १ सबकेनयनमलीनखैंचिकीनोनभ नाई । शब्दरह्योब्रह्मांडखंडह्वैधर्योगोसाई २ धर्योगोसा ईशंभुधनुशब्दसुनेयोगीजगे । खंडखंडधनुतनभयोबामअँ गूठाकेलगे ३ ।१०० ॥

टी० । यहां धनुपचढ़ावनेकी रीति है कि बामपांयके अँगूठासों एक गोसा भूमिपरदाबि पुनः बामहाथसों धनुपको मध्यमूठि गहे अरु दहिने

हाथसों ऊपरको गोसागहि खैंचि रोदाचढ़ाये पुनः उठाय दहिने हाथसों मध्यरोदागहि खैंचे तब ज्यों दामिनी दमकतीहै तैसेही दमक धनुपकरता है ताही बिजुलछटा प्रकाशते सब देखनहारके नयन मलीनभये दृष्टिमें चकचौंधी समायगई ताते कछु देखिनसके १ सबकेनयन मलीनभयेताते काहूको कछु देखितौ परानहीं खैंचिके नभनाई कीन्हेउ अर्थात् बामहाथे मूठिगहे दहिनेहाथते जब रोदाखैंचे तब धनुप आकाशवत् गोलाकारह्वै-गया दोऊगोसा समीपह्वैगये पुनः जबटूटो तब वाको जो प्रचंड शब्दभया सो ब्रह्मांडभरमें भरिरह्यो तब गोसाईं श्रीरघुनाथजी टूटे धनुपके दोऊ खंड भूमिपरधरिदीन्हे २ गोसाईं सबको पालनहार रघुनाथजी शंभुको धनुषतोरि भूमिमेंधरे ताको कठोर शब्दभया ताकोसुने जे समाधिलगाये योगीजनरहैं ते जागिपरे देखैंमें तो दोईखंडहैं परंतु चढ़ावतसमय प्रभुके बामअँगूठाको जोरलागेते धनुषको तन खंडखंड धूलिगया ३ । १०० ॥

मू० । शिवशिववृषभपुकारईधनुषशब्दसुनिघोर । दिग्गजदि-ग्पालनभयोहृदयकंपअतिजोर १ हृदयकंपअतिजोरकंप-कैलासईशथल । शिवशिरसुरसरिधारउछलिआकाशगयो जल २ गयोसुजलआकाशथलउमागणेशविचारई । कहा भयोकैसोभयोशिवशिववृषभपुकारई ३ । १०१ ॥

टी० । वृषभजो नंदीश्वर तेबिकलह्वै शिवशिव पुकार करनेलगे काहेते धनुभंगको घोर महाभयंकर शब्द सुनिके तथा दिग्गज जेदिशा गजभूमिके थांभनेवाले पुनः वरुण कुबेरादि दिग्पालनके हृदयमें अत्यंत जोरते कंप भयो भाव भयमानि सबको करेज कांपिउठा १ यथा अति जोरते दिग्-पालनको हृदय कांपा तथा ईशथल शिवको वासस्थान जोकैलास सोऊ कांपिउठा ताते शिवजीके शीश जटाबिपे जो सुरसरि गंगाजीकी धाररहै ताको जल उछलिके आकाशको चलागया २ जब शिव शीशते उछलि सुजल शुद्ध सुन्दरजल आकाश थलकोगयो ऐसाशिव सहित कैलासहाला सोदेखि उमा पार्वती तथा गणेश मनमें विचार करनलगे कि कहाभयो यहकौन अद्भुत कौतुकभयो पुनः कैसो भूचालभयो वा कौनवस्तुको घोर शब्दभयो जासों ब्रह्मांड हालिउठा तहां वृषभनंदीश्वरतो विकलह्वै शिव शिव पुकार करनेलगे ३ । १०१ ॥

मू०। जयजयजयरघुबंशमणिसुरफूलनबर्षाय। वेदविप्रबंदीविरुदनारीमंगलगाय १ नारीमंगलगायसियाजयमालउठाई। शोभितप्रभुउरमध्याविश्वकीरतिजनुछाई २ कीरतिगावहिंसिद्धमुनिबलप्रतापछबिरूपभनि। सतानंदआनंदकह जयजयजयरघुबंशमनि ३। १०२॥

टी०। सुरफूलन बर्षाय धनुभंगभयेपर आकाशते देवता फूलनकीवर्षा करतेहैं पुनः रघुबंशमणिकी जयहोय जयहोय जयहोय ऐसाशब्द उच्चारण करते हैं पुनः विप्रवेद पढ़िरहे हैं बंदीजन बिरदावली प्राचीन कुलकोयश बखान करते हैं नारी मंगलगीत गाय रही हैं १ संगमें नारी मंगल गीत गायरहीं अरु श्रीजानकीजी दोऊ हाथनते उठाय श्रीरघुनाथजीके गरेमें पहिरायदिये प्रभु छातीपर कैसाजयमाल शोभितहोत जनु विश्वकीरति छाई भाव इसीकेद्वारा प्रभुकी उत्तमकीरति संसारभरेमें छाई फैलिरही अर्थात् सबै प्रभुकी प्रशंसा करिरहे हैं २ सिद्ध याज्ञवल्क्यादि मुनि नारदादि ते कीरति गावते हैं पुनः बलप्रताप रूपछबि भनि बखान करते हैं यथा दो०॥होतजु अस्तुतिदानते कीरतिकहियेसोय। होतबाहुबलते सुयश धर्मनीति सहहोय ॥ जाकीकीरति सुयश सुनिहोतशत्रुउरताप। जगडरात सब आपही कहिये ताहिप्रताप॥पुनःछबियथा॥ द्युतिलावण्यस्वरूप स्वइ सुन्दरता रमनीय। कांतिमधुर मृदुता बहुरिसुकुमारतागनीय॥शरदचंद्रकी झलक समद्युति तनमाहिंलखाय। मुक्तापानीसमगनौलावण्यतासुहाय॥ विनभूषण भूपित जुतन रूपअनूपमगौर। सबअँगसुभग सुठौरसुठि सुंदरता शिरमौर ॥ देखी अनदेखीमनौ तरुनी रमनीसोय। कांतिदेहकी ज्योतिजो भूमिस्वर्णसी होय ॥ देखेतृप्ति न पाइये सोईमृदुता जान। परसे परस न जानिये मृदुताताहि बखान ॥ इत्यादि कोऊमुनि प्रभुकी कीरति गायरहाहै अर्थात् कैसा कोमल शीलस्वभाव उत्तम उदारहै कोऊ बलकी प्रशंसा करत अर्थात् ऐसे महाबल है कि अत्यंत गरू कठोर शिव धनुष ताको तृणसम तोरिडारे नेकहू श्रमन आया तथा कोऊप्रताप वर्णनकरत अर्थात् जिनकोबल देखि सबराजा डरायगये कोऊरूपकी छबि बखान करतेहैं यथा मुखकी द्युति शरदचंद्रसम मरकत मणिसी तनकी श्यामता चमकिरही भूषण विशेषि नहीं पहिरे स्वाभाविक भूषितवत् देखातेहैं कैसे सर्वांग सुठौरबने ऐसा अद्भुतरूप कि देखनहार देखि अघातेनहीं जेबहुत

दिनते देखिरहेहैं तेऊ कैसी चपकते देखतेहैं मानौ कबहूं देखेनहीं इत्यादि सिद्धमुनि कहते हैं तथा सबकाम पूर्णभयाजानि आनन्दहै सतानंद कहत श्रीरघुवंशमणिकी जयहोय जयहोय ३ । १०२ ॥

मू० । नृपगणभयेमलीनसबसंतभयेआनन्द । जनकशोचसंकटगयोसियामातुसुखवृन्द १ सियामातुसुखवृन्दनिछावरिमणिगणदेहीं । रामसियाछबिदेखिप्रेमबशकीननकेहीं २ कीननकेहींदानसबसमयशंभुधनुटूटजब । तुलसिदाससंकटगयेनृपमनभयेमलीनसब ३ । १०३ ॥

टी० । धनुषभंग जयमाला परतही नृपगण जे विवाहाश्रित राजा समूह बैठेरहेहैं ते मलीनभये मनउदास मुखधूमिल परिगये यथा रविउदय भये तारागण यथा सूर्य उदयभये कमल प्रफुल्लित होते हैं तथा धनुष टूटे सब संतआनंद भये तथा जनकशोच संकटगयो अर्थात् प्रण किहे को शोच कन्या कुमारी रहबेको संकट रहासो तमसमूह रात्री सम नाशह्वै गयो सीयमातु सुनयनाजीके मनमें वृन्दबहुत सुखभयो चकवाकी सम आनंद भई १ जानकीजीकी माताके मनमेंबड़ा सुखभया ताते मणिगण बहुत मणिमुक्तादि याचकन को निवछावरि देतीहैं इत्यादि तौ प्रधानहै तिनको भिन्न भिन्नकहे तथा रामसिया छवि देखि अर्थात् श्रीरघुनन्दन जनकनंदिनी की जो शोभाहै सो सबभांतिते उत्तमहै यथा कवित्त ॥ जैसे मिथिलेशत्योंनरेशकौशलेशवेश शाधवीसुनयनकासुकौशिल्लाहुखासीहैं । निमिकुलकमलप्रकाशरघुबंशभानुमिथिलानिवासीतैसधन्यऔधबासीहैं ॥ जैसीयेकुमारिकाकुमारगौरश्यामरूपरसप्रेमप्यासीयेवैसुखमाउपासीहैं बिजनाथचन्द्रलालचंद्रिकाकिशोरीसियविज्जुलछटासीद्युतिराघवघटासीहैं ॥ इत्यादि दोऊरूपकी शोभादेखिप्रेम वशक्यहिनहीं निवछावरि कीन २ जब शंभुधनुष टूट तासमय क्यहिदान नहीं कीन सबै कीन्हे काहेते सबै निवछावरि करतेहैं गोसाईंजी कहत कि जो पूर्वबिना धनुषटूटे संकटरहा सो धनुष टूटेते मिटिगयो त्यहि आनन्दते दानकरते हैं तथानृपजे विवाह आशाते धनुष उठावनेहेत आयेते सबराजा मनते मलीनभये ऐसे उदासीन ह्वैगये यथाप्रातके नक्षत्र ३ । १०३ ॥

मू० । महामोदमिथिलापुरीरामकियोधनुभंग । खलमलीनस

ज्जनसुखदसुरसुसुमनशुभरंग १ सुरसुसुमनशुभरंगकपट भूपतिमनमाखे । लक्ष्मणउठेसक्रोधराममारतबचिराखे २ बचिराखेरघुबीरनृपतियप्रकटींजुहुतींदुरी । रामसियाजोरी निरखिमहामोदमिथिलापुरी ३ । १०४ ॥

टी० । रामकियोधनुभंग ताते मिथिलापुरीमें महामोदहै अर्थात् जानकीजीकी योग्यबर जानि सबको पूर्वाभिलापरहै तामें भूपको प्रणबाधक रहा जब श्रीरघुनाथजी धनुपको तोरिडारेसो मनभावत भयाताते मिथिला पुरवासी लोगनके मनमें महा आनन्दभया पुनः धनुभंग देखि खल दुष्ट राजा मलीनभये भावखलनको दुखदायक हैं पुनः सज्जननकोसुख देनहारे श्रीरघुनाथजी हैं ऐसाजानि सुर देवता शुभमंगलीक पीतरंग के सुन्दर सुमन फूल बर्षिरहेहैं १ यथा आपने रक्षक जानि देवता आनन्द ह्वै मंगलीक फूलबर्षतेहैं तथा आपनेशत्रु जानि कपटभूप राक्षसादिजेकपट ते राजाबने बैठेहैं तेमाखे क्रोधबश ह्वै कुवचन कहनेलगे तिनको बिमुख देखि मारनेहेत धनुषबाण सुधारि लक्ष्मणजी उठे परन्तु मारतसमय रघुनाथजी बचायराखे भाव यह मंगलकाज समय बध करना भला नहीं यह विचारिमना कीन्हेवाण प्रहार नकरने दीन्हे २ जब दुष्टनृपनको रघुनाथजी बचायराखे तब जोतिया दुरीहुतीं सो प्रकटीं अर्थात् सुन्दरता बलतौ पूर्वही जानतीरहीं अब क्षमावंत शीलस्वभाव जानि रघुनाथजी को देखनेहेत जे परदेवाली स्त्रीछिपीरहीं तेऊ प्रकट भईं खुलिकैप्रभुको देखने लगीं इत्यादि श्रीरघुनंदन जनकनंदिनीकी मनोहर जोरी देखि मिथिलापुर में महाआनन्द है ३ । १०४ ॥

मू० । करकुठारपरशुरामकेआयेसुनिधनुभंग । गौररूपअनुरूप शिवजटाभस्मसर्वंग १ जटाभस्मसर्वंगदेखिसकुचेसबरा जालागेकरनप्रणामकालनिजसमुझिसमाजा २ समुझिस माजपिनाकलखिकहेवचनअरिकामकोक्योंहितोरयोबोल्यो तुरतकरकुठारपरशुरामके ३ । १०५ ॥

टी० । परशुरामके हाथमें कुठार शोभित शिवधनुपको भंगसुनि जनकपुर को आये कैसा रूपहै गौर वर्ण शिव अनुरूप यथा शिवको दूसरा रूप है काहेते शिरमें जटा तथा सर्वंगमें भस्म बिभूति धारणकिहे १ शिरमेंजटा

सर्वांगमें बिभूति अजिनबस्त्र कटिमें तरकस वामकाँधे धनु दहिनेहाथ कुठारलीन्हे इत्यादि परशुरामको देखत सब राजा भयमानि सकुचे भाव वीरता वेपते लज्जामाने अर्थात् क्रोधकरि वध न करैं इत्यादि आपनाकाल समुझि सब समाजभरि उठिउठि सब राजा प्रणाम करनेलगे २ स्वयंबर हेत राजनकी समाज इहां बटुरीहै इत्यादि समुझि पुनः पिनाकलखि शिवजीको धनुप टूटपरा देखि परशुराम सक्रोध वचनकहे क्या कहे काम के अरि नाश कर्त्ता जो शिव तिनको धनुप क्यहिं तोरयो इत्यादि कुठार हाथमें लिहे परशुराम तुरतही बोल्यो आवतही ३ । १०५ ॥

मू० । तोरयोधनुरघुबंशमणिजाकोप्रबलप्रताप । हानिकहाभय रावरीकहियप्रकटकरिआप १ कहियप्रकटकरिआपदेवद्विजवरकीनाई । पूजियमानियतुम्हैंआपनीवृद्धबड़ाई २ वृद्धबड़ाईतबहिंजगगायविप्रपदपूजिभणि । देहुआशिपाप्रेमसोंधनुतोरयोरघुबंशमणि ३ । १०६ ॥

टी० । लक्ष्मणजी उत्तरदये हे परशुराम शिवधनुपको रघुवंशमणि श्री रामचंद्रजीने तोरयोहै जाको प्रताप प्रबलहै भाव जिनकी समताको दूसरा बीर नहींहै पुनः रावरी आपुकी कहाहानिभय धनुपटूटेते सो बात आपु प्रकटकरि कहिये १ कैसे प्रकटकरि आपु कहिये देव द्विजवरकी नाईं देवनसो शांत सतोगुणी स्वभाव श्रेष्ठ ब्राह्मणकीनाईं केवल तपोधन कोबलराखि वचनकहिये बीरताके बलतेनहीं शुद्धब्राह्मणह्वैतौ हम आज्ञा पालनकरैंगे काहेते आपनी बड़ाईवृद्धके हेत तुम्हैं पूजिये मानिये अर्थात् आपुको बड़ामानि पूजनकरनेते हम क्षत्रिनके धर्मकी प्रशंसा सम्पतिकी वृद्धिहोतीहै २ हमारे सम्पतिकी वृद्धि तथा धर्मकी बड़ाई तबहीं है जगमें जब गाय तथा ब्राह्मणोंकेपद पूजिये ताते हम आपके दासहैं आपु भाणि आपनी हानिको हालकहिये अरु प्रेमसहित आशीर्वाद दीजिये धनुप रघुनाथजी तोरेहैं ३ । १०६ ॥

मू० । कालवश्यबोलतकहागुरुकोधनुषविहंड । विप्रनऐसोबालसुनुनृपकुलशिरकोखंड १ नृपकुलशिरकोखंडपरशुकरतीक्षणधारा । धनुज्याहिंतोरयोआजुतासुभुजकाटनवारा २

काटनवारापरशुयहज्यहिकाटेभूपतिमहात्वहिसमेतरामहिं हतौंकालबउंयबोलतकहा ३ । १०७ ॥

टी० । लक्ष्मणजीसों सक्रोध परशुराम कहत हेविहंड बिशेषि नीच बालक तू कालवश कहा अनादरबचन बोलताहै यह धनुष हमारेगुरूको है नीचके संबोधनमेंहंडशब्द चेटीआदिमें हंजपदयथा ॥ हंडेहंजेहलाह्वाने नीचांचेटींसखींप्राति ॥ इत्यमरः हेबालक सुनु मैं ऐसोबिप्रनहींहौं जातोको आशीर्वाददेउँ मैं नृपकुल शिरको खंड अर्थात् राजनके कुलभरे के शीश काटनेवाला बिप्रहौं १ राजनके कुलके शीशकाटनहार परशुकर तीक्षणधारा मेरे हाथमें जो परशुहै ताकी तीक्षण पैनी धार है भाव इकइस बार पृथ्वीभरेके राजनके शीशकाटिडारेउँ कबहूं गोठिल नहींपरा तथा आजु ज्यहिं धनुषतोर्योहै तासुभुज काटनवारा अर्थात् हे बालक जोतूने कहा कि धनुषटूटेमें आपुकी क्या हानिभई सोभीसुनिले यहधनुष हमारे गुरू शिवजीको है ताको जानेतोराहै ताके भुजनको काटनवारा यह मेरे हाथमें कुठारहै काहेते जोकहौ कि कन्याबिवाहके हेतु बिदेहने प्रणकिया रहै ताके पूर्णकरिबेहेतु तोरिडारे तहां केवल उठायकै चढ़ाय खैंचिलेतेही प्रतिज्ञा पूरीहोतीरहै तब शिवधनुष तोरेते क्या अधिक लाभरहै तातेमारे भुजबलअभिमानते तोरिडारे याहि अपराधते मैं वाकेभुजा काटिडारौंगो क्योंकि इनहीं भुजबल गर्बते बेप्रयोजनही मेरे गुरुको धनुषतोरा सबको अपनाबल देखावने हेतताको फलमैं देउंगों २ ज्यहि महाभूपति सहसबाहुआदि महाबली राजनकोकाटे सोई अबधनु तोरनहारके भुजाकाटनवारा यह परशु है त्यहि करिकै हे बालकत्वाहिसहितरामहिं हतौंमारहुंगो ताते कालके वश तूकहाअनादर बचन बोलता है भावतू केवल कुबचनाते मृत्युबोलावता है ३ । १०७ ॥

मू० । भूपतिमिलेनखेतमेंतुम्हैंबिप्रकुलदेव । हतेतुम्हारेहतिगये तेद्विजपदबिनसेव १ तेद्विजपदबिनसेवक्षत्रधर्मनतेहीने । तेतुमकाटेपरशुकूरकपटीजड़दीने २ जड़दीनेनृपतुमहते पापराशिनहिंचेतमें । तातेबाढ़ेभवनमेंभूपतिमिलेनखेत में ३ । १०८ ॥

टी० । लक्ष्मणजी बोले हेदेव बिप्रकुल तुमको खेतमेंभूपतिन मिलेउ

भावब्राह्मणहैं जबअस्त्र धारणकीन्हेउ तुमआपना धर्मआपही त्यागिदिया तबतुम्हारे परास्तकी कौनवडी वातरहै परंतुरणखेतमें वलीवीर धर्मवंत राजाकोऊ तुमको नहींमिला ताहीते आजुतक तुम्हारी जयहोतआईकाहेते जे द्विजपद विनसेवरहेते तुम्हारे हतेहतिगये अर्थात् जेब्राह्मणोंकीसेवा पूजानहीं करतेरहे तेईअधर्मी राजातुम्हारे मारेते मरिगये भावजबसहस्रबाहुक्षत्री राजाहै क्रोधवशवृथाही जमदग्निऋषिको वधकिया तौ ब्रह्मदोष ते वह आपहीमारा तथा औरहूजे राजावाकोसंगदिये तेभीब्रह्मद्रोही उसी पाप में मिलिनाशभये तामें आपुकी कौनवलवीरता है १ यावत्तुम्हारे हाथमरे ते राजाबिन द्विजपदसेव ब्राह्मणोंते विमुख क्षत्रधर्मतेहीने अर्थात् क्षत्रीकेधर्म यथामनुस्मृतौ ॥ प्रजानांरक्षणंदान मिज्याध्ययनमेवच । विषयष्वप्रशक्तिश्चक्षात्रियस्यसमासतः ॥ पुनः गीतायां ॥ शौर्यंतेजोधृतिर्दाक्ष्यं युद्धेचाप्यपलायनम् । दानमीश्वरभावश्चक्षत्रंकर्मस्वभावजम् ॥ इत्यादि धर्म त्यागि याकी प्रतिकूल अधर्म करतेहैं यथा प्रजापालचाहिये तहांवृथाही दंडदेना दानचाहिये तहां ब्राह्मणोंकी वृत्तिहरिलेते हैं इज्यानाम यज्ञ करना चाहिये तहां औरहूको नहीं करनेदेतेहैं विद्या वेदादि ध्ययन पढ़ना चाहिये तहां द्यूत पांसादिखेलतेहैं विषयत्यागचाहिये तहांमद्यमांस वेश्यागमनमें आसक्त रहतेहैं पुनः शूरता चाहिये तहां कादरता पुनः सत्यशौच तपादिकरि ऐसातेज चाहिये जाकेडरते कोऊसन्मुखनहोवै तहांकुकर्मकरि ऐसेतेजहीन जिनको नीचहूनहींडरत धीर्यरहित मूर्खयुद्धमें भागनेवाले दानचाहिये तहांपरधन हरतईश्वर भावचाहिये पक्षपातरहितसबको एक दृष्टि देखना तहांस्वार्थमीत इति क्षत्रधिर्मते हीन पुनः क्रूरदुष्टकपटीछल करिकार्य साधनेवाले तथाजड महाअज्ञानऐसे जेमरणयोग राजारहे ते तुमपरशाते काटेहौ अथवाजेदीनरहैं पौरुषहीन तिनकोमारे २ जड़दीन नृपनको तुमहते मारेउअथवाजे पापकीराशिरहैं जोहिंसा परहानि परस्त्री गमन इत्यादिअसत्कर्म करिपापकी ढेरीलगायराखे अथवा जे चेतमें नहीं मोहतेमदांधरहे तिनमरेराजनको मारिविजयपाये ताते भवनमेंवाढ़े घरही में बिजयीवीर बनेबैठेहौ धर्मवंतवीर भूपतिराजा तुमको रणखेतमें नहीं मिलेउ ताहीते तुम्हारी वीरता आजुतकरही ३ । १०८ ॥

मू० । क्षत्रविहीनीमहिकरीपरशुबारइकबीस । सोनविदितत्वद्दि बालजड़तुरतजाइहैखीस १ तुरतजाइहैखीसवचनमुखत्रो

लुसँभारेगुरुगुनहीभोमौनताहितूपीछेडारे२ पाछेबचहुन कालकेबालकलखिकरिवरटरी।परशुधारज्याहिकाटिहौंक्षत्र बिहीनीमहिकरी ३।१०६॥

टी०। लक्ष्मणजीसों परशुरामकहत इकबीसबार परशुते महिक्षत्र विहीनीकरीअर्थात् इसीपरशातेसबराजनकोशिश काटिकाटि यकइसबार बिशेषिक्षत्रिनकरिकै हीनपृथ्वी करिदीन्हेउं क्षत्रीबीर भूमिपरनहींराखेउं सोरवहि विदितनहीं हेजड़बाल तुरतखीसजाइहै क्षत्रिनके नाशकरिबेको हालतोको नहींमालूमहै कबहूं किसीतेसुने नहींजो अनादर बचनबोलता है हेबालकजड़ महाअज्ञानी तुरतही नाशह्वैहै १ तुरत खीसजाइहै इसी साइति तेरे प्राण जाहिंगे ताते मुखते सँभारि वचनबोलुउचित अनुचित विचारि बचन कहु काहेते तूतौकछु अपराध किहेनहीं जो गुरुको गुनही है भाव जिसने मेरे गुरुको धनुप तोरिडारा सो तौमौनभो कछुभी उत्तर नहीं देताहै अरुतू ताहिपीछे डारे ताकबिदि जवाबदही करता है तामें आपने प्राण क्यों गँवावता है २ पुनः जो तेरे वचनसुनि क्षमा क्रिहेउँ सो वालक लखि करिवर टरी अर्थात् प्रथमहीं कुवचनके साथही तोको बध करता परन्तु बालकदेखि तेरी एक अल्पमृत्यु टरिगई अबबहुतबार्त्ता जनिकरु नातरु कालहू के पाछेलुके न बचिहौ काहेतेज्याहिते क्षत्रबिहीन महिकरी विना राजनकी पृथ्वी किहेउँ जासों ताही परशुधारते तुम्हारा दोऊभाइनको शिर काटिहौं ३।१०६॥

मू०। द्विजकुलकेनातेडरौं सुनह्नुबिप्रसतभाव। नतक्षत्रीकुलको सकललेहुँतुरतअबदाव १ लेहुँतुरतअबदावपरशुधनु भूमिगिराऊँ। धर्मबड़ोरखवारमारिद्विजपातकपाऊँ २ पा तकपाऊँशीशपरदूजेरघुपतिकरडरों। यमघरतुमहिंबसा वतोद्विजकुलकेनातेडरों ३।११०॥

टी०। एकतौ द्विज ब्राह्मणहौ पुनः हमारेकुलके नातेदारभी हौ ताहीते मैं डरताहौं हे विप्र परशुराम सतभाव सांचीवात कहतहौं सो सुनहु नत जो ब्राह्मण बधके दोषको न डरतो तौ क्षत्रीकुलको दावँ अब तुरतही स-कललेहुँ अर्थात् जो अनेकन क्षत्रिनको कुल तुमने नाश करदिया सो सब को दावँ या समै तुरतही लेतूं भाव इसी क्षण बधकरतूं १ कैसे अब तुरत

बावं लेउं परशु धनु भूमिगिराऊं अर्थात् दहिने हाथमें कुठार बायें में धनुष लिहेहौ सो दोऊभुज काटि परशु धनुप सहित भूमिपै गिरायदेतो परंतु धर्म तुम्हारेहेत बड़ो रखवारहै सोई तुमको बचावताहै काहेते मारि द्विज पातक पाऊं अर्थात् ब्राह्मणकेमारे पाप लागैगो २ तुम्हैं ब्राह्मणको मारि एक तौ शीशपर पातक पाऊं सब ब्रह्मदोषी कहैंगे दूजे रघुपति करडरौं भाव रघुनाथजी धर्मवंतहैं जो मैं ब्राह्मणकोमारौं तौ मोको तुरतही त्यागि देहैंगे इसडरते कछु भी करतेनहीं बनताहै ताते द्विज कुलके नाते सों डरताहौं भाव एक तो ब्राह्मण दूसरे रघुकुलके भैने ताके बधमें बड़ापाप है नाहीं तौ तुमहिंमारि यमके घरमें बसावतो ३ । ११० ॥

मू० । लैकुठारसन्मुखधरयोरामलषणकीओर । कौशिकबरजो बालकहिमोहिंनहींअबखोर १ मोहिंनहींअबखोरिकरौंअबकालहवाले । परशुबन्योस्वइहाथविपुलभूपतिघरघाले २ घरघालेशिरमालिकाशंकरकोपूजनकरयो । अबचाहततव शिरहरयोलैकुठारसन्मुखधरयो ३ । १११ ॥

टी० । दहिनेहाथ गहे कुठारको काँधेपर धरेरहे जब बहुत कठोरबातैं लक्ष्मणजी कीन्हे तब कांधाते उठाय लय कुठारको राम लषणके सन्मुख धरयो परशाकी धार सन्मुखकरि हाथमें लीन्हे पुनः परशुराम बोले हे कौशिक विश्वामित्रजी बालकहि बरजौ अब मोहिं खोरि नहीं है अर्थात् बड़ीढिठाई करिचुका अब इसबालकको मनाकरौ नातरुमोको दोषनहिं हेउ यह मरणहार ह्वैचुका १ यह मरणहारह्वैचुका ताते अब मोको खोरि नहींहै यहि कालहवालेकरौं इसबालकको मारताहौं काहेते जो विपुल घरघाले भूपति जो राजा तिनके बहुतघर नाशकीन्हे सोई कराल परशा मेरेहाथमें बनोहै २ कैसे घरघाले राजनकोमारि तिनके शिरकी मालिका मालाबनाय त्यहिकरिकै शंकरको पूजनकरयों अर्थात् मुंडमाल शिवको प्रियहै अब चाहत तवशिरहरयो हेबालक अब तेराशिर काटाचाहतहौं इसभांति कुठारसुधारि धार दोऊभाइनकी सन्मुखधरयो ३ । १११ ॥

मू० । रामकहीकरजोरिकैभृगुकुलकमलदिनेश । बालकहीनविचारिउरक्रोधनकीजियलेश १ क्रोधनकीजियलेशबालअपराधविहीनो । धनुकरममतेटूटचूकसोंमहींअधीनो २ महीं

अधीनोकर्मबशबांधियदीजियछोरिकै । दासबिचारिप्रभावमोहिंरामकहीकरजोरिकै ३।११२॥

टी०। भृगुकोकुल सोई कमलको बनहै तामें दिनेश सूर्यसम उत्पन्न ह्वै कुलको प्रकाशकरता इति हे भृगुकुल कमलदिनेश परशुराम बालक अज्ञ दीन पौरुषहीन बिचारि तापर लेश नेकहू क्रोध न कीजिये इत्यादि बचन कर हाथजोरिकै रघुनाथजीकहे १ काहेते यापर क्रोध लेश न कीजिये बाल अपराधविहीनो अर्थात् एकतौ बालकहै ताकेबचन बुद्धिमान् प्रमाणै नहींकरतेहैं दूसरे बालने आपको कछु अपराधभी नहींकिया इति वालक अपराधकरिकै बिशेषि हीनहै काहेते ममकरते धनुटूटसोचूकमहीं अधीनो अर्थात् मेरेहाथन शिवजीकोधनुष टूटाहैताते यहचूकमेरेहीआधीन महीं अपराधकिया तामें व्यंग्ययह कि यहिकर्म करनेको दूसराकोऊ समर्थ नहींरहै शिवधनुषको तूरनामेरेही आधीनहै भाव जोधनुष किसीबलीबीरको तिलभरि उठावा नहीं उठा ताको हम तृणसम तोरिडारे तबहूँ मेराप्रभाव आपुको नहीं सूझताहै ऐसे मदांधहौ २ पुनः वाच्यार्थ हेमुनि आपु को प्रभाव बिचारि कर्मबश अर्थात् आपुकी प्रतिकूल शिवधनु भंग इतिकर्म जो मैं कियाहै ताकीबश मैं आपुके आधीनहौं ताते मोहिं आपना दास बिचारि छोरिदीजिये अथवा बाँधिये अर्थात् आधीन सेवकको वधकरना तौ योग्य नहीं जो क्षमाकीजिये तौ छांडिदीजिये न क्षमाकीजिये तौ बाँधि राखिये इति हाथजोरिकै रघुनाथजी कहे यामें व्यंग्य कि कर्मबश अर्थात् ऐश्वर्य त्यागि देहधारी कर्मकरि मैं आपुके आधीनहौं अब जो मेराप्रभाव ऐश्वर्यरूप बिचारिये तौ गर्बबश जो हठ पकरेहौ सो छांडिदीजिये पुनः माधुर्य में आपु ब्राह्मण मैं क्षत्रीहौं तहाँ जो मोहिं दास बिचारिये तौ बाँधिये अर्थात् जो प्राकृतै दृष्टिहै तौ बल बीरताके गर्बते जो हठ पकरेहौ सो बाँधिये पोढ़िकै धारणकरिये भाव पाछेहथियार न डारिदेना ३। ११२ ॥

मू०। शंभुदंडखंडितकरयोसोभुजखंडहुँआज । जोकरपरशुप्रचंडलखिकटेअवनिकेराज १ कटेअवनिकेराजबचहुनाहिंदीनउपायन । क्षत्रबंशातनपायबचनमुखमृदुलसुभायन २ मृदुलसुभायनक्योंबचौधनुतोरतनाहिंतबडरयो । अनुजसहितभुजकाटिहौंशंभुदंडखंडितकरयो ३ । ११३ ॥

टी० । परशुराम बोले हे राजपुत्र शंभुकोदंड शिवको धनुष खंडित करयो जिन भुजनसे तोरिडारेउ सोई भुज तुम्हारे खंडहुँ आजुमें काटहुँगो जो प्रचंड परशु मेरे कर हाथमें है सो लखि अर्थात् देखिले ज्यहिकरिकै अवनि पृथ्वीके अनेक राजाकटे १ जैसे अवनिके अनेकराजा कटे हैं तैसेही तुमहूंकोकाटिहौं दीनउपायन अर्थात् वचिवेहेत दीनवनि कोमलवचन इत्यादि उपायकरतेहौ तिनउपायन करि नहीं वचहुगे पुनः क्षत्रवंश तन पाय क्षत्रियके कुलमें देहधरि मृदुल कोमल स्वभावते मुखते वचन बोलते हौ भाव दीनवने न वचिहौ ताते यथा क्षत्रियहौ तथा वीरता पूर्वक ललकारि हमसों युद्धकरौ २ जो युद्धकरि हमको जीतौ तव वचिहौ अरु मृदुल स्वभायन दासवनिअधनिह्वै कोमल वचन कहि क्यों वचिसकेहौ काहेते जब धनुपतोरने लग्यो तव क्यों नहीं डरयो ताते यथा तुम वलके गर्वते शिवजीको धनुप तोरयो तथा अनुज छोटेभाईके सहित तुम्हारेभुजा हम काटि डारहिंगे ताते तुमको उचितहै कि युद्धकरौ ३ । ११३ ॥

मू० । क्षत्रबंशद्विजमानियेलषणकहींहँसिवात । हमपैपापनहोय
द्विजजननीकीन्हीघात १ जननीकीन्हीघातताहितेमनअ-
तिवाढ़ो । बड़बैरीरणहत्योविरदपायोशिरगाढ़ो २गाढ़ोपायो
पापशिरतासोंरिसनाहिंठानिये । तुम्हैंमारिकोअघलहैक्षत्र
बंशाद्विजमानिये ३ । ११४ ॥

टी० । जव परशुरामकहे कि दीन स्वभायन न वचिहौ युद्धकरौ तापर लषणलाल हँसिकै वचनको निरादरकरि वात कहत कि क्षत्रबंश द्विज मानिये क्षत्रियबंशभरि ब्राह्मणको वड़ाकरि मानतेहैं तातेहमपै पाप न होय द्विज हे विप्र तुमसों युद्धकरि तुमको मारिये यहपाप हमसों नहींह्वैसक्ता है यह आपहीते ह्वैसक्ताहै कि जननीको घातकीन्ही आपु आपनेही हाथ आपनी माताको शिरकांटे १ जव जननीको घातकीन्ही ताहीते मन अत्यंत वीरतामें बाढ़िगयो भाव दीन आधीनको मारते भल वनताहै पुनः वड़ बैरी रणहत्यो वड़ावैरी सहसवाहु ताको रणमें जवमारयो तवगाढ़ो विरद पुष्टकरि वीरताको बाना शिरपरपायो भाव ब्राह्मणह्वै क्षत्रियको वाना मूड़ परा पोढ़करि २ बाना नहीं पायो गाढ़ो पाप शिरपायो अर्थात् ब्राह्मण है शस्त्र सों जीवघात करना यह पुष्टकरिकै पापको भार शिरपर लदा तासों रिस नहिं ठानिये अर्थात् आपु तौ पापको वोझै लादेहौ भाव पापैते मरे

हो तुमको मारनाकौनबातहै ताते रिस न ठानिये रिस न बढ़ाइये अर्थात् न आपु रिस करौ न हमारे रिस बढ़ावो भाव रिसैते अनुचितभी ह्वैजाता है कदाचित् रिसबश आपको घातकरैं सो हमको मंजूर नहीं है काहेते तुम्हैं ब्राह्मणकोमारि अघकोलहै पापकोलेवै क्षत्रियब्राह्मणकोमानतेहैं ३।११४॥

मू०। रेकुठारकुंठितभयोगयोस्वभावसक्रोध। अरिप्रचंडदहिअवनिनृपकीन्होहृदयप्रबोध १ कीन्होहृदयप्रबोधअछतअरिदेखतठाढ़े। उत्तरसुनतसरोषमोरहृदिज्वालनबाढ़े २ ज्वालनबाढ़ेजरतउरघोरधारकोलैगयो। काटिकाटिकंठनिकुतरुरेकुठारकुंठितभयो ३। ११५॥

टी०। सक्रोध परशुराम कहत हेरेकुठार कुंठित अर्थात् गोठिल ह्वैगयो तथा सक्रोध स्वभावगयो सहजस्वभाव मेरा क्रोधमयीरहै सोभीजातरह्यो काहेते अवनिनृप प्रचंड अरिदहि भूतलके राजा जे प्रचंड बड़ेकराल बीर बली सहसबाहुआदि तिनको भस्मकरि मारि अब हृदय प्रबोधकीन्हेउ बिचारपूर्वक संतोषकरि शांतह्वैगयो १ काहेते जानिये कि हृदयमें प्रबोध कीन्हे कि तेरेअछत हेफरसा तू मेरेहाथमें बनाहै अरुमैं अरि शत्रुकोठाढ़ देखतहौं कौनभांति सरोष उत्तर सुनत अर्थात् रिससहित कठोरबचनते जवाबदेरहा है तथा मोरहृदि ज्वालनबाढ़े मेरेभी हृदयमें क्रोधाग्निके-ज्वालाबाढ़तजात भाव ज्योंज्यों उत्तररूप साकल्यपावत त्योंत्यों क्रोधाग्नि प्रचंडहोत ताहूपर इसबालकको बध नहींकिया ताते जानताहौं कि मेरा पूर्वको स्वभाव मिटिगया २ क्रोधअग्निके ज्वालनके बाढ़ेते मेरा उर अंतरलौ जराजाताहै अरु याबालकको शिश नहीं काटताहौं तौ फरसाकी घोर महाभयंकर धार ताको कौन हरिलैगया पुनः आपही समाधानकरतेहैं कि कुतरु बबुर बहेरासम कुवृक्षसरीखे खल राजनके शिरकाटिकाटि हेरेकुठारअब कुंठितभयोतेरीधारगोठिलपरिगईतातेनहींचलताहै ३। ११५

मू०। जोरघुपतिआयसुकरैंतौद्विजदेहुँदेखाय। रणमंडलकीकठिनतातुमकोदेउँबताय १ तुमकोदेउँबतायपरशुधनुलख्यो तुम्हारो। भूमिशेषमैंपारसारिबाणनउरफारो २ बाणनउरफारोंसमुझिविप्रघातपातकपरैं। समासमेतविचारियेजोरघुपतिआयसुकरैं ३।११६॥

टी० । लक्ष्मणजी कहत हेद्विज परशुराम जो रघुनाथजी आयसुकरैं तुमसों युद्धकरिबेकी आज्ञादेवैं तौमैं आपनी वीरता देखायदेउँ कौनभांति रणमंडलकी कठिनता अर्थात् जो पूर्बमें कहा कि रणखेतमें तुमको कठिन भूप परिपूर्ण शूरवीर बली नहींमिला सो परिपूर्ण वीरता जैसी होती है सो तुमको बतायदेउँ अर्थात् तुम ब्राह्मणहौ सो तुम्हारे सांचीतौ वीरता होतीनहीं यावत् भगवत्अंश व्यापक प्रतापरहा सोई वीरतारही सो तौ गया अब तुम्हारे वीरता नहींरही तब कठिन वीरके सन्मुखभये जीवबचायबेहेतु हथियारडारि बिप्रबनिजाउगे अरु क्षत्रिनमें परिपूर्ण वीरता होतीहै काहेते जो अंग अंग कटिजायँ तबहूं जीवतरहेसंते सन्मुखै जूझैं इत्यादि तुमको बतावौं १ कैसे वीरता तुमको बतावौं कि तम्हारो परशु तथा धनुपलख्यों सब देखिचुक्यों शक्ति रघुनाथैजीकी दीन्हीहै सोतौ रही नहीं तब ऐसीबीरता तुममेंकहांहै जो सन्मुख युद्धकरौ किसी खाईभीति आदिकीओट चहौ ठाढ़होउ सो क्या बचायसक्तीहै जो शेषमय भूमिके पारजाउ अर्थात् भूमिके अंत जहां शेषहैं तहां जो पातालमें खड़ेहोउ तहां मारिकै बाणते तुम्हाराउर छातीफारों २ यद्यपि बाणनते तुम्हाराउर फारि सक्ताहौं परंतु बिप्रघात पातकपरै ब्राह्मणको मारेते पापको फल भोगना परै यहसमुझि डरमानताहौं भाव स्वइच्छित युद्ध नहीं करिसक्ताहौं जो रघुपति आयसुकरैं अर्थात् वै महाराज मैं उनको सेवक जो रघुनाथजी आज्ञाकरैं तब मैं युद्धकरौं तबै जो पापहोई सो उनहींको है मोको नहोई इत्यादि बात सभालमेत आपहू विचारिये सच्चीहै वा नहीं ३ । ११६ ॥

मू० । लषणवचनकहिधनुलियोनयनसयनकरिराम । बरजेतुम बालकनिपटभृगुपतिसबगुणधाम १ भृगुपतिसबगुणधामताहिसोंसमसरिकीजे । जाकीपदरजसेव्यआपनेशिरधरिलीजे २ शिरधरिलीजेरसिककृपाअनुजासिखावनप्रभुदयो । मुखरुखरामनिहारिनतलषणवचनकहिधनुलियो ३ । ११७ ॥

टी० । पूर्बवत् बचनकहि लक्ष्मणजी हाथमें धनुपालिये बाणचढ़ावने की इच्छाकिये तैसेही नेत्रनकी सयनकरि रघुनाथजीबरजे मनाकीन्हेंक्या बचनकहि बरजे हेलषण तुमनिपट बालकबनाय लरिकाहौ भावऊँचनीच तुमकोनहीं समुझिपरताहै भृगुपति सबगुणधाम अर्थात् शम दम तप शौच शांति आर्जव ज्ञान बिज्ञान इत्यादि जो ब्राह्मणनमें गुणचाहिये तिन हेरगे

मंदिर हैं परशुराम १ सवगुणनके मंदिर विप्र पुनः भृगुकुलमें उत्तमताहिसों समसरि कीजे तिन परशुरामसों क्षत्रियह्वै समता ते बराबरी कीन चाहत्ते हौ यहतुम्हारे धर्मते प्रतिकूलहै काहेते जाकी पदरजसेव्य जिनके पायँन की धूरि तुम्हारे पूजाकरिबे योग्यहै सोई पदरजलै आपने शिरपर धरिलीजैं भावस्वामी सेवकभावते वार्ताकीजे २ कैसा सेवकभाव रिस रूपा शिरधरि लीजे अर्थात् यथाकृपाकरि कछु कहैं सो शिरपर धरिये तथाजो रिसकरिकहैं सोऊ शिरधरि मानिलीजे भावबडेको अनादरकबहूं नकरी इत्यादि अनुज छोटेभाईको प्रभुसिखावनदिये तबजो हाथमेंधनुप लिये लक्ष्मणजी कठोर बचन कहते रहैं ते राममुख रुख रघुनाथजी के मुखकी ओरनिहारि लषणनत लक्ष्मणजी शीशनवाय लिये प्रौढ़ता को सकोचकिये ३ । ११७ ॥

मू० । असससमर्थभृगुबंशमणिसुररक्षकद्विजपाल । महिमंडल
इकईसगनिकरीनिक्षत्रबिशाल १ करीनिक्षत्रमहीसकल
दईबिप्रकेहाथ । रुधिरकुंडतर्पणकियोतेईभृगुकुलनाथ २
तेईभृगुकुलनाथकेचरणशरणसेवहुसुमति । अभयहोय
तिहुँलोकमहँअससमर्थभृगुबंशपति ३ । ११८ ॥

टी० । भृगुबंशमें शिरोमणि परशुरामअस समर्थहैं कि सुर देवतन के रक्षाकरनहारे तथा द्विजपाल ब्राह्मणन को पालनेवाले हैं अर्थात् धर्मके स्थापनकरनेवाले हैं कैसेधर्मके स्थापनकरनेवाले हैं कि महिमंडलबिशाल ताको इकइस बारगनिकै निक्षत्रकरी अर्थात् समुद्र पर्य्यंत जो बिशाल बड़ाभारी भूमिको मंडल तामें यावत्राजा अधर्मी होतेगये तिनको एक साथही सबको नाश करादियाकीन्हे इसीभांति पृथ्वीमें इकइसबार किसी दुष्ट राजाको नहींराखे क्षत्रहीन पृथ्वीकरि दीन्हे १ महीसकल पृथ्वीसब जब निक्षत्रकरि दीन्ही कोऊराजा न रहिगया तब विप्रनके हाथसंकल्पि दई अरु रुधिरकेकुंडमें अर्थात् परशुरामके पिताको सहसबाहुने बधाकिया रहै ताको दाउँलेने हेतवाके सहायक राजनसहित सहसबाहुको मारिताके रक्तको कुंड भरितामें पिताको तर्पण कीन्हे तेई भृगुकुलनाथहैं २ तेई भृगुकुलनाथ हैं तिनके चरणारविंदनके शरण ह्वैकै सुमति सुंदरी बुद्धिते सेवाकरहु तौ तिहुँलोकमहँ अभयहोय तुमको किसी लोकमें कछुभी डर न रहिजाय ऐसे समर्थ भृगुपति हैं ३ । ११८ ॥

मू० । जाकेपदरजकेधरेमुदमंगलकल्याण । अभयकरनसंकटद्द
रनगावतवेदपुराण १ गावतवेदपुराणकल्पतरुसमसुख
दाता । हरिहरपूजतजाहिपरमसुखदानिविधाता २ दानिवि
धाताजानिकैनिशिदिनसेवनजेकरैं । अर्थधर्मकामादिकी
पदरजसुखजाकेधरैं ३ । ११९ ॥

टी०।जाके पदरज जिन ब्राह्मणनके पायँनकी धूरिमाथेपर धरेते मुदमन मेंआनंदहोत तथामंगल प्रसिद्धउत्सव बनेरहत पुनः सदाकल्याण कुशल रहतपुनः अभय करन किसीभांति को डर नहींरहत संकटदरन राजदंड शत्रुघेरनादि संकटको दलनहारी बिप्रपद धूरिहै ऐसा वेद पुराण माहात्म्य गावत १ क्या वेदपुराण गावते हैं सुखकोदाता कल्पवृक्ष की समान नि-कटहोतही अर्थ धर्म कामदेत ताते परमसुख दाता जानि जाहि हरि हर विधाता पूजते हैं २ सबफलको दानि जानिजे विधाता सृष्टिकर्त्ता पाल-न संहार कर्त्ता तेऊ निशिदिन रातिउ दिवस सेवनकरते हैं अथवा दानि बिधाता जानिजे ब्राह्मणों को दिनराति सेवनकरते हैं पुनः जाके पद की रजशीशपर धरतेहैं तेअर्थ धर्म काम मोक्षादिसब सुखपावते हैं ३।११९॥

मू० । कालव्यालतासोंडरतजाकेइनपदप्रेम । यहैक्रियायहयोग
हैयहैयोगजपनेम १ यहैयोगजपनेमकपटतजिमनवचकाय
क । स्वइसुकृतीस्वइशूरजाहिद्विजभक्तिअमायक २ माय
कछलतजिपूजिपदतनमनधनसेवाकरत । जीवजालदुख
मालसबकालव्यालतासोंडरत ३ । १२० ॥

टी० । जाके इनपद प्रेम तासों कालव्यालडरत अर्थात् जा जनकेउरमें इन ब्राह्मणों के पद कमलनमें प्रेमहै प्रेमसहित सेवन करतेहैं ताकोका-लरूप सर्प डरतभावजो सबको खाय जाताहै सो ब्रह्मण्यके सन्मुखनहीं आवताहै पुनः ब्राह्मणनके पदको जो प्रेमहै यहैक्रिया शुभकर्महै तथायही अष्टांगयोग सिद्धदायकहै यहै याग अश्वमेधादि यज्ञहै यही मंत्रजपहै यही शौचादि नियमहै १ कैसे याग जप नेमहैं जो कपटतजि सांचे भावते मन लगाय बचन ते स्तुति आदिकरि काय देहके अंगनकरिकै सेवनइत्यादि जाहि द्विजभक्ति अमायक माया छलरहित्त जे ब्राह्मणकी भक्तिकरत्त हैं सोई सुकृती धर्मवंत सोई शूरवीरहैं २ माया झूठाजाल छल चातुरीतजि

त्यागकरि पूजत अर्घ पाद्याचमन स्नान गंध पुष्प धूप दीपादि जे ब्राह्मण को पूजनकरि भोजनकरावत बसन धन दानदेत अथवा दासह्वै तन मन धनते सेवाकरत कैंकर्यता यथा धनते भोजन बसनदेत करसों पगधोवन वसनप्रच्छालन पगदावन पवनकरनादि जेकरतेहैं ताको कैसा तेजप्रताप उदितरहत कि वाके जीवको जाल जो मोहादि माया तथा रुज बियोग हानिआदि दुःखनको माला सब तथा कालसर्प तासों डरताहै ३।१२०॥

मू०। सोत्रिलोकपावनपरमजिनकेद्विजपदप्रीति ।विभ्रमश्रमता कोनहींदिशाविदिशिसबजीति १ दिशाविदिशिसबजीति मोहरिपुकटकभगावै ।यशदायकगुणग्रामरामअनुजहिस मुझावै २ रामबुझावैअनुजकोक्षत्रबंशयाहीधरम । पद रजनितहितशिरधरैसोत्रिलोकपावनपरम ३।१२१॥

टी०। जिनके द्विजपद प्रीति जिन जननके हियमें ब्राह्मणोंके पदार-बिंदोंमें प्रीतिहै भाव श्रद्धासमेत नितही सेवनकरिरहेहैं सो तीनिहू लोक-नमें परमपावन उत्तम पवित्रहै पुनः बिभ्रम बिशेषिभ्रम पुनः श्रम ताको नहीं होतीहै अर्थात् हर्ष अथवा शोक अथवा भयते बुद्धि भ्रमितह्वै यथार्थ ज्ञाननरहै यथा कबित्त॥ आजुकी बातसुनोसजनीमडयेप्रकटीछबिकौतुक भारी ।जेवनबैठिबरातसबैरघुनाथचढ़ीसबनारिअटारी॥ देखतश्रीरघुवीर कोरूपभईमतिविभ्रमगावनहारी । भूलिगईदशरत्थकोनामवैदेनलगींमि थिलेशहिगारी॥ इत्यादि हर्ष शोक भयमें ताको बिशेषि भ्रम नहींहोतीहै सबसमय बुद्धि बिचारते ज्ञान एकैरस रहताहै तथा कैसहू दुर्घट कार्यकरै तबहूं श्रम अर्थात् थकते नहींहैं भाव दृढ़बल बनारहता है पुनःदिशा पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर बिदिशा ईशानादि कोण इति आठौदिशनमें ताही की जीतिहोत भाव वासों जीतनेवाला कोऊ कहौं नहीं ठहरत ऐसा दि-ग्विजयीहोत १ लोकमें सब दिशा बिदिशि वाकीजीतहोत तथा परलोक मार्गमें मोहरिपु ताकी कटक कामादि ताहू शत्रुसेनाको बिवेकते जीति वाको भगायदेवै पुनः यशदायक गुणग्राम अर्थात् धैर्य्य थिरता धर्मनीति शील उदारतादि समूहगुण आवतेहैं तिनकरिकै लोकमें सुंदरयश होता है इत्यादि वचनकहि रघुनाथजी अनुजहि छोटेभाईको समुझावते हैं २ क्या रघुनाथजी लक्ष्मणजीको समुझावते बुझावतेहैं कि हमाराक्षत्रियबंश

को यही धर्महै कि जो ब्राह्मणोंके पदकी रज शीशपर धरता है सोई त्रि-
लोकमें परम पावनहै २ । १२१ ॥

मू० । रामसिखावनदुहुँसुन्योलषणश्रौरभृगुवंश । मतिगतिसुर
तिसँभारिउरब्रह्मसच्चिदानंद १ ब्रह्मसच्चिदानंदभयोनृपसु
तअवतारी । शारँगकरमेंदियोविविधविनतीअनुसारी २
विविधभांतिपातकलगैकटुकवचनमनमेंगुन्यो । परशुधर
नपुनिलषणहूरामसिखावनदुहुँसुन्यो ३ । १२२ ॥

टी० । लषण और भृगुवंश दुहूं रामसिखावन सुन्यो अर्थात् जो दूसरे
किसीमें नहींहै केवल रघुनाथैजीमेंहै सोई आपना उत्तमधर्म जो रघुनाथ
जी लक्ष्मणजीप्रति उपदेशकीन्हे ताको लक्ष्मण अरु परशुराम दोऊसुने
तहां परशुरामकी जो मतिकीगति बुद्धि बिचारकी प्रवीणता सो मानमद
ते भ्रमितरहै ताकी सुरति सँभारि बुद्धि विचारको थिरकरि उर अंतरते
जानिलिये कि येतौ परब्रह्म सत् चित् आनंदरूप हैं काहेते जो ऋषिकी
यज्ञरक्षामें सबल निशाचरनकोमारे पदरजते अहल्यातारे महाकठोरशिव
धनुपतोरे मेरेसन्मुख अभयवने वार्त्ताकरते हैं ऐसी शक्ति राजकुमारनमें
नहीं ह्वैसक्तीहै पुनः ऐसा शुद्ध धर्मभी मनुष्यमें नहींहै ताते सत् त्रिकाल
में एकरस शुद्धचित्त सदा चैतन्य एकरस ज्ञान अखंड आनंद परब्रह्म हैं१
सोई ब्रह्म सच्चिदानंद नृपसुत अवतारीभयो धर्मस्थापनहेत राजकुमार
रूपते अवतीर्णभये यही सत्यताहेत शार्ङ्ग करमें दिये विष्णुको दियाहुआ
वाशार्ङ्गधनुषताको रघुनाथजी के हाथमें दिये जबवह चढ़ायखेंचि लिये
तबसंदेह मिटिगई बिविध बिनती अनुसारी अनेक भांतिविनती करने
लगे २ काहेते बिनती करनेलगे कि विविध भांतिके कटुवचनकहे ता-
कोपातकलगे अर्थात्स्वामीको मैं अनेकभांति अनादर वचनकहे सोमोको
बड़ाभारी पापलगैगो इत्यादि मनमें गुन्यो विचारकीन्हे सोई क्षमाकराव-
नेहेत बिनतीकीन्हे इत्यादि परशुराम पुनः लषणदोऊ श्रीरघुनाथजी को
सिखावन सुन्योभाव लक्ष्मणजी तौ प्रभुको धर्मउपदेश सुनि चुपरहे पर-
शुराम बिनय कीन्हे ३ । १२२ ॥

मू० । नृपसभीतउठिउठिचलेपरशुरामगतिदेखि । आशिषभृगु
पतिदेयकरिआनँदलह्योविशेखि १ आनँदलह्योविशेषि

जनकपुरजनसबरानी । बंदीमागधसूतउच्चरहिंमंगलबा
नी २ मंगलबानीपुरभईबाजिउठेदुंदुभिभले । संतसुधासुर
गणमुदितनृपसभीतउठिउठिचले ३ । १२३ ॥

टी० । धनुबाण परशा सौंपिहाथजोरि प्रभुकी बिनतीकीन्हे इत्यादि परशुरामकी गतिदेखि नृपसभीत सहितडर अर्थात् प्रथम कुवचनकहे रहैं जबप्रभुको प्रभाव देखे ताते डरमानि उठि सबराजा चले तथाभृगुपति आशिषदेय करि परशुराम आशीर्वाद देकै प्रभुको प्रसन्न देखि बिशेषिआ-नंदलहे पाये पुनः जय जयकार करिचलेगये १ परशुरामके गयेपरसुनयना आदि सबरानी तथा जनकपुरके जन स्त्री पुरुष सब बिशेषि आनंदलहेउ तथाबंदीजन मागधवंशप्रशंसक सूत यशगावनवाले ते मंगलबानीउच्चरहिं गानकरि रहे २ तिनके गानादिमंगलवाणी पुरमें भई तथा भले भाँति उत्सवभरे दुंदुभी नगारादि बाजिउठे संतनसहित देवता आनंदभये राजा डरि उठि चलेगये ३ । १२३ ॥

मू० । समयपायकौशिककहेउजनकमहीपबुलाय । सजहुसकल
मंगलसुभगदशरथनृपतिबुलाय १ दशरथनृपतिबुलाय
व्याहकुलरीतिसँभारो । माड़हुरचहुविचित्रनगरगृहगली
सँवारो २ गलीसँवारहुअगरमयसबकुतर्कसंशयदहेउ ।
चारपठाइयअवधपुरसमयपायकौशिककहेउ ३ । १२४ ॥

टी० । समयपाय अर्थात् जबसब भांति स्वस्ति भयो इत्यादि सुन्दर समयजानि महीप राजाजनकको बुलाय कौशिक विश्वामित्रजी कहे कि प्रथम दशरथ नृपति बुलाय पुनः सकल मंगल सुभग सजहु अर्थात् बि-वाहसमयके यावत् मंगलअंगहैं तिनको सुभग सुन्दर ऐश्वर्यसहित सजहु १ दशरथ महाराजको बुलावहु ते अपर पुत्रनसहित बरातसजिकै आवहिं अरु तुम व्याहमें जो कुलकीरीति है ताको सँभारहु सुधिकरि अथवा कु-लगुरु वृद्धनसों पूंछि सब उद्यम समयअनुकूल प्रारम्भकरहु यथा चित्र विचित्र माड़हु रचहु तथा नगरविषे यथा आपना गृह तथा सब मन्दिर अरु गली सबसँवारहु २ यथा मन्दिर लीपि पोति धोय अस्तरकारीकरि तामें चित्रसारी रचि ध्वजा पताका कलश दीप बन्दनवार वितान विचित्र माड़वआदि सँवारहु तथा पुरकी गली अगरमय सँवारहु अर्थात् बहारि

साफकरि तामें अगरादि सुगंधित वस्तु यथा केवड़ा गुलाबादि जल अगर तगर कपूर केसरि कुमकुम चन्दन इत्यादिको अरगजा छिरकादह् काहेते सब कुतर्क संशय दहेउ अर्थात् धनुपनटूटनेकी प्रणछूटनेकी कन्या कुमारी रहने की जो कुत्सित दुखदतर्कणा दुखसहित शोच विचार तथा दुष्ट राजा वा परशुराम इत्यादिके विघ्न करिवेकी जो संशयरहे सो भी दह्यो राम प्रतापाग्निमें भसमभयो ताते निश्चिंतह्वैके अब सब आचारकीजिये अरु अवधपुरको चारदूत पठाइये महाराजको बुलावनेहेत इत्यादि विश्वामित्र जनकजीसोंकहे ३ । १२४ ॥

मू० । सतानंदअवधहिचलेलग्नपत्रिकाहाथ । हीरनीरयुतमणि पादिकसकलसुमंगलसाथ १ सकलसुमंगलसाथदेखिरघु पतिपुरपावन । भूपतिलियोहँकारिदीन्हपत्रिकासुहावन २ दीन्हपत्रिकानृपलखीरामव्याहमंगलभले । गृहगृहबजेब धावपुरसंतानंदअवधहिचले ३ । १२५ ॥

टी० । श्रीरघुनाथजीके व्याहकी लग्नपत्रिका हाथमेंले जनकजीकी आज्ञा पाय सतानंद अवधहि अयोध्याजीकोचले कौनी सामाते हीरपदिक नीर मणियुत सकल सुमंगल साथ अर्थात् हीरापदिक तथानीरमेंजे उत्पन्नहोत मुक्तादि इत्यादि अनेकमणिन सहिततथा सोनेकेपात्र भूषणवसन हरदी अक्षत नारियर पूगीफलादि सबभाँतिकी मंगलीकपदार्थसाथमेंलीन्हे १ सकल मंगलपदार्थै साथलिहे आयपहुंचे रघुपति पुरपावन परम पवित्रश्रीअयोध्यापुरी की शोभादेखि परम आनंद ह्वै राजद्वारपर खबर जनाये हालसुनिभूपति हँकारिलिये अर्थात् जनकपुरते मिथिलेशजीके प्रोहित आये हैं ऐसाहाल सुनिदशरथ महाराज आपने पासको बुलायलीन्हे ते सुहावन परमसुंदर सुखदेनहारी पत्रिकादीन्हे सो हाथमेंलै खोलि महाराजबांचने लगे प्रथम ऊपर को शिरनामायथा स्वस्तिश्री १०८ मदखण्ड विक्रमदुदोर्भूमण्डलाखण्डलोयोऽयोध्यापुरि वर्तते दशरथो नित्यं प्रतापान्वितः पत्रन्तस्यसमीपमेतुमिथिलायामंगलोदंत्यदो॥ यस्सीरध्वजसञ्ज्ञको निमि कुलज्येष्ठेन तेनेरितम् १ तथा पत्रिकांतरसमाचार यथा स्वस्तिश्री १०८ स्तात् १ श्रीमत्पंक्तिरथेवयंतुनतयः सीरध्वजाख्यस्यमे । तस्मिन्निन्द्रइवापरापरमहीभृत्यक्षभेदीयतः ॥ योजानातिगुरोर्मतेनसकलंकाव्यन्दसारं मतं । सिद्धायस्यसदस्सदस्सविबुधास्सन्मन्त्रविद्याधरा २ श्रीमद्भूपेन्द्र

भवतः कृपयेहशंसस्ताद्वोजयायसजयस्सजयायदीये ॥ श्रीवत्सलक्ष्मसुख मांकितवक्षसिश्रीस्सानन्दथुस्सकमलाकमलामलश्रीः ३ सीतायाहलकृष्ट भूतलभवःपाणिग्रहायोद्यतान् प्रत्युक्तिमिमनावृणोतुसइमांकन्यांसमा स्फालनम् ॥ कुर्य्याद्योऽजगवस्ययत्तुवलिभिर्नीत्थापितंस्थानतस्तद्भ वनम्भवतस्सुतेनसदसिद्वेधाकृतन्दृश्यते ४ त्रातुंयेनजगत्सुकेतुतनयांहत्त्वा सुबाहुर्हतो मारीचश्शतयोजनोपरिजलेक्षिप्तःक्रतूरक्षितः ॥ दृष्टस्सोऽय मितीडितोजनतयाहल्याकृतार्थाकृतारामोऽत्रास्त्यृपिणानुजेनचसमम्भङ्क्त्वाथनुश्शूलिनः ५ सीतारामवृतातयासचवृतोयाचोर्मिलामेसुता त त्पाणिग्रहणायलक्ष्मणइतोऽन्यौयोभवद्देहजौ ॥ तौधर्म्मध्वजकन्ययोस्स मुचितौपाणिग्रहार्थम्भवा नागच्छत्विहसेनयासहकृपांकृत्वा।ततोनश्शुभ म् ॥ इत्यादि नृपलखिदशरथ महाराजदेखिके प्रतिअक्षर भलीभांतिबांचे सो रामव्याह मंगलभले रघुनंदनके बिवाहकोहाल भलो मंगलमयजामें सबहाल लिखाहै सो प्रसिद्ध सबको सुनाये सबसभामें प्रसिद्ध है यह मंगल समाचार अयोध्या भरेमें फैलगया तातेपुरमें घरघर वधावनबाजने लगे इत्यादि सतानंद अयोध्याको चलेआय मंगल समाचार सुनाय सब-को आनन्द दिये ३ । १२५ ॥

मू० । रामजानकीव्याहसुनिसाजीभूपबरात । रथतुरंगमातंग घनगजघंटाघहरात १ गजघंटाघहरातदुंदुभीधुनिचहुंओ रन । मंगलभरिभरिथारभामिनीगानझकोरन २ गान झकोरप्रमोदपुरसुरतियजयजयसुमनधुनि । दशरथधौंसुर पतिसज्योरामजानकीव्याहसुनि ३ । १२६ ॥

टी० । सतानंदके हाथ पत्रीद्वारा श्रीरघुनंदन जनकनंदनी को बिवाह सुनि भूपदशरथ महाराजवरात सजे तामें रथपुनः तुरंग घोड़े मातंगमद स्रवतसवल ऊंचे हाथीतहां रथ बिचित्र सजे अर्थात् सोना मणिजटित बना किंकिणी शब्दकरिरही जरतारी ध्वजा पताकालगे चमरलगे कोमल ऊंचा बिछौना बिछा सर्वांग भूषित श्यामकर्ण घोड़ेनहे तथा पुष्टांगभारी दँतारे श्रेष्ठ हाथिनपर जड़ाऊझूल मणिजटित सोनेकी अंबारी धरीमाथ बिचित्र रँगे समूहघन सरीखेदेखातेहैं तिन गजनके घंटा ऊंचेशब्दते घह-रातेहैं तथा सवारीके घोड़े बहुरंगके पुष्टांग चंचल तिनपर मखमली जर-तारी मणिजटित जीनैंलगाम पूजी दुमची तंग जेरबंद रकाबैहै कल हवेल

कलँगी इत्यादि बिचित्र सजी तिनपर नवीन अवस्थाके छैलसवार भये रथनपर महाराज सहित श्रेष्ठ रघुवंशी वशिष्ठादि मुनि सवार हाथिनपर सचिव मंत्रीसेनप सवार १ गजहाथिनके घंटाघहरात तथा दुंदुभी नगारादिकी धुनि चारिहूं ओर ह्वैरही पुनः दधिदूर्वाक्षत रोरी हरदी फूलफल दलमुक्तादि मंगलीक पदार्थै कांचन थारनमें भरे भामिनी सौभागिनी युवती शृंगार किहे हाथनमें थारलिहे गानझकोरन ठौर ठौर मंगलगान करि रहीं तिनके समूह शब्द उत्तम पौनकेसे झकोरा श्रवणनमें लागत संते थिरमनमुनिनको चंचलहोत शांतरसत्यागि शृंगारको उद्दीपनकरत २ युवतिनके मंगलगानकू झकोरनते पुर प्रमोद अयोध्याजी में सबके मन में प्रकर्षकरिकै आनन्द है पुनः सुरतिय देवांगना सुमन फूल वर्षि जयजय धुनि करिरहीं ता समयमें कैसा विभवदेखातकि दशरथ महाराजहैं किधौं श्रीरामजानकीकोविवाहसुनि सुरपतिइंद्रआपनीऐश्वर्यसज्यो ३।१२६॥

मू०। कुलविचारव्यवहारकरिगुरुआयसुनृपपाय । मिथिलापुरकोमगलियोभूपनिशानबजाय १ भूपनिशानबजायसगुणसुन्दरशुभपाये । बीचबासकरिविविधजनकपुरभूपतिआये २ भूपतिआयेजनकपुरअतिउछाहआनन्दभरि। दुहुँसमाजसंगमसुभगकुलविचारव्योहारकरि ३। १२७॥

टी०। विचारपूर्वक कुलको व्यवहारकरि दलन कांडन क्षेत्र क्षेत्रपाल ग्राम देवपूजन पितृनिमंत्रण इत्यादि कुलकी जो रीतिरहे ताको विचारि कै भाव जो बिना दुलहाहोनेवालीरहैं तेतौ कीन्हे अरु जो दुलहाके संग होतीहैं सो इहां नहींकीन्हे पुनः शुभ मुहूर्त्तजानि पयानकरिबेकी मुनिवशिष्ठ आज्ञादीन्हे इति गुरुको आयसुपाय नृप दशरथ महाराज मिथिला पुरको मगलियो चले निशान दुंदुभी ढोलझांझ तासादि अनेक भांतिके बाजाबजाय १ भूपदशरथ महाराज निशान वजायचले सघटयुवती दधि विप्ररथी लोवा नकुल मृगझुंडादि सुंदर शुभ कल्याणकर्त्ता सगुन पाये मार्गमें जातसंते बीच बीच विविध अनेक भांतिसुखपूर्वक बास करि पुनः चलतसंते भूपति दशरथ महाराज जनकपुरको आये २ अत्यंत उछाहपुत्रनको बिवाह ताते आनंद उरमें भरि दशरथ महाराज जनकपुरको आय अरुइहां भी मिथिलेश जी विचार पूर्वककुलको व्योहार करिकै अगवानी पठाये तेभी भूषण बसन सजे गजरथ बाजिनपर सवार संगमें बाजाबा-

जत इत्यादि दुहूं समाज सुभग सुंदरी ऐश्वर्य सहित हैं तेसंगम अर्थात् परस्पर मिलि प्रणामादि कीन्हे ३ । १२७ ॥

मू० । उमारमाब्रह्मायणीपतिनसहितपुरआय । रामजानकीरूप छबिदेखनकोललचाय १ देखनकोललचायनिरखिदशरथ केबारे । मनवचक्रमवशप्रेमभयेसबदेखनहारे २ देखनहा रेभेमगनऋधिसिधिमंगलदायनी । सियबिवाहकृतकर्मस बकेउमारमाब्रह्मायनी ३ । १२८ ॥

टी० । उमापार्वती रमालक्ष्मी ब्रह्मायणी सरस्वतीइत्यादि पतिनसहित अर्थात् शिवसहित उमा विष्णुसहित रमा ब्रह्मासहितब्रह्माणी जनकपुरमें आये कौनहेत रामजानकी रूपछवि अर्थात् यथाचुम्बक लोहाकोखैंचततैसे ही जो नेत्रनको खैंचै ताको रूपकही यथा भगवद्गुणदर्पणे ॥ चुंबकायःकरण न्यायैर्दूरादाकर्पकोबलात् ॥ चक्षुषांसगुणोरूपंशाणःस्मरशरावले ॥ तथाछबि ॥ दो० ॥ द्युतिलावण्यस्वरूपस्वइसुन्दरतारमणीय ॥ कांतिमधुरमृदुतावहुरि सुकुमारतागनीय ॥ अर्थात् शरदचंद्रसम मुखकी द्युति मोती कैसोपानी तनमें लावण्यता विना भूपणै जो भूषितवत् स्वरूपता सर्वांग सुठौर बने सुन्दरता देखी अनदेखीसी रमनीकता सोनेसों अंगकांति देखि तृप्त नहीं सो माधुरी मृदुता कोमल अंगसुकुमारता जो फूलौचोट न सहिसकै इत्यादि रघुनाथजीको रूपअरु जानकीजीकीछवि देखनेहेत लालचकरिकै आये १ दशरथकेबारे निरखि देखनको ललचाय अर्थात् दशरथ नंदनके श्यामसुन्दर स्वरूपकी माधुरी प्रत्यंग निरखत संते अघाते नहीं ताते वारंवार देखनको लालचबनाहै ताते देखनहारे सब मनबच क्रम करिकै प्रेमके बशभयो अर्थात् ऐसो प्रेम उमंग्यो जाते तनमें रोमांच कंठारोधन ते वचन नहीं कढ़त अरु नेत्रनद्वारा मनललकिकै रूपमें लगे देहकी सुधि किसिको नहींहै २ देखनहारे ब्रह्माविष्णु शिवादि जे बाहेर बरातमें रघुनन्दनको देखिरहेहैं तेतौप्रेमसें मगनभे बूड़िगये तथा ऋद्धि सिद्धिमंगलकी दायनी जो उमारमा ब्रह्मायनीते मिथिलेशके घरमें मड़येमें सिय बिवाह क्रमसब्कृत अर्थात् उमादि प्रधान आवन कहे पतिन समेत कहने को भाव कि ब्रह्मादिजे आये तेतौ गुप्तरूपते सबचरित्र देखामात्रकीन्हे कुछ कार्य नहीं कीन्हे अरु उमा रमा शारदा प्रसिद्ध रूपते रानिनके साथ बर

परछन सिंदूर चढ़ावन लहकवरि सिखावन इत्यादि सब क्रिया जानकी जीके विवाहकी करतीरहीं ताते इनको आवन प्रधान है ३ । ११८ ॥

मू० । सुथलभूपडेरादियोकौशिकलक्ष्मणराम । पायखबरिपितु आगमनचलेहर्षिगुणधाम १ चलेहर्षिगुणधाममुदितभेटे रघुराई । मुनिपदरजधरिभूपभरतभेटेद्वउभाई २ भेटेपुर जनगुरुद्विजनरामदेखिपूरणाहियो । ऋधिसिधिसबमंगल लियेसुथलभूपडेरादियो ३ । १२९ ॥

टी० । सुथल सुंदरेस्थान में अर्थात् जहां सबभांति को सुपास है तहां भूपजनक महाराज बरातको डेरादिये तब कौशिक जो विश्वामित्र तिन सहितलक्ष्मण अरुरघुनाथ जी पितुके आगमन की खबरि पाय गुणधाम हर्षिचले अर्थात् कृपा दया शील सुलभ उदारतादि अनेकगुणन के भरे मंदिर श्रीरघुनाथजी आनंद सहित पिताके मिलनहेत चले १ गुण धाम हर्षिचले जाय रघुनाथ जी प्रणाम पूर्वक पिताको भेंटे भाव प्रणाम करते देखिदशरथ महाराज उठाय हृदयमें लगाय लीन्हे पुनः भूपदशरथ महाराज मुनि पदरज धरि प्रणाम करि विश्वामित्र के पायँनकी धूरि आपने शिशपर धरे तथा शत्रुहन भरत दोऊभाई प्रभु को प्रणाम करि मिले तथा तीनिउभाय यथायोग्य मिले २ पुनः लषण सहित रघुनाथ जी गुरु वशिष्ठको प्रणाम करि मिले तथा अपर ब्राह्मणन को प्रणाम करि पुनःअवधपुरके यावत् जन रहैं तिनको यथायोग्य प्रभुमिले तबराम देखि पूरण हियो रघुनाथजी को देखिसबके हृदय आनंदते भरिगये इसभांति सबथिर भये अरु सुथलमें जहां भूपजनक जी बरातको डेरादिये तहां ऋद्धि सिद्धि सबमंगल पदार्थ लिहे खड़ी हैं ३ । १२९ ॥

मू० । सखिनृपसंगद्वैऔरसुतगौरसुभगसुठिश्याम । लषणअनुहरतएकहैंएकसत्यजनुराम १ एकसत्यजनुरामकहैंजेनयननिहारे । वैसहिबदनमयंकनयनवैसहिरतनारे २ वैसहि लक्ष्मणरामछबितैसेबलछबिदेहदुत । नामभरतरिपुहनकहतसखिनृपसँगद्वैऔरसुत ३ । १३० ॥

टी० । जनकपुर की युवती परस्पर वार्ता करतीहैं हे सखी नृप दशरथ महाराजकेसंगद्वै सुतपुत्र औरहैं ते एकतौ लषण अनुहरत लक्ष्मणै

जी की समान गौर बरण सुभग सुंदर तथा एकसुठि सुभग अत्यंतसुंदर श्यामवरन ते सत्य जनु रामसत्यसत्य यथा रघुनंदनै आइँ १ काहेते जानिये जिन नयन निहारे जे आ र आंखिन निहारे भली भाँति देखि लीन्हे ते कहते हैं कि एक राजकुमार सत्य करिकै जनु रघुनाथै जीहैं काहे ते वैसहि वदन मयंक वैसहि रतनारे नयन अर्थात् यथारघुनंदन को वैसही मुखचंद वैसही अरुणारे नेत्र वैसही सर्वांग श्याम एकतुल्य हैं २ रूप सुंदरता माधुरी आदि जैसे लक्ष्मण अरु रघुनाथजी की छबि है तैसेही उनहूँ राजकुमारनके बल छबि सोभा देह द्युति देहकी प्रकाशहै जैसेइन को रामलक्ष्मणकहत तैसे उनको नामभरत अरु रिपुहन अर्थात् शत्रुहन कहत हे सखी ऐसे दुइपुत्र नृपसंग औरहैं ३ । १३० ॥

मू० । सखिविदेहसमुझैंहियेतौनिरूपमैंकीन । चारहुकुवँरबिवाहियेयहिपुरनृपपरवीन १ यहिपुरनृपपरवीनदीनविधिचारिसगाई । जसकन्यातसकुवँरयोगशिवदीनमिलाई २ दीनमिलायमहेशविधिबड़ोयोगजपतपकिये । तौसबपुरसुकृतीसमुझिसखिविदेहसमुझैंहिये ३ । १३१ ॥

टी० । हे सखी जो विदेह महाराज हियेमें समुझैं तौ निरूपकीनयथा योग्य अनुरूपि राखेउहै कि जो नृपप्रवीन होयतौ चारिहु कुवँर यहि पुर बिवाहिये अर्थात् जो जनकमहाराज चतुरहोइँ तौ इनचारिहु राजकुमारन को आपनेही इहां बिवाहकरैं १ काहेते नृप प्रबीण इसीपुरमें इनको विवाहकरैं कि विधि चारिसगाईदीन अर्थात् ब्रह्माने चारिहु संयोग रचिकै चारिहु कुमारनको इहां पठैदीन काहेते जैसे विदेहके घरमें चारि कन्या हैं तैसेही दशरथ महाराजके चारि कुमारहैं यह संयोग धनुपव्याज शिव जी मिलायदीन २ काहेते यह संयोग महेश बिधाता मिलायदीन बड़ो योग जप तपकिये जनकमहाराज बड़ोभारी अष्टांगयोग तथा मंत्र जप तपस्यादिकिये ताही सुकृतको यहफल उदयभयो ताते जो विदेह महाराज आपने हृदयमें यहीबात समुझैं तौ यह समुझी कि जनकपुरवासी सबै सुकृतीहैं अर्थात् जो चारिउ कन्यनको इनहीं चारिहु राजकुमारनके साथ विवाहकरिदेवैं तौ पुरवासी कृतार्थहोवैं ३ । १३१ ॥

मू० । चारिकुवँरातिरहुतिचलैंपायसुभगससुरारि । कहुँदिनदश कहुँमासभरिदेखितइनरनारि १ देखितइनरनारिजाहि

पुनिदुलहिनिचारी । कछुदिनवैउतरहैंजनकबोलिहैंकुमारी २ जनककुमारीआयहैंअवधछांड़िअपनेथलै।वनिवनिदिनदशवीसमेंचारिकुवँरतिरहुतिचलैं ३ । १३२ ॥

टी० । अवपूर्वाभिलाष करतीहैं अर्थात् जव चारिहु भाइनको विवाह होई तव इस प्रकारको सुख सव को होइगो कैसा सुख यथा सुभग सव भाँति ऐश्वर्य्य सहित सुंदरि सुखद ऐसी सुभग ससुरारिपाय चारिकुवँर तिरहुतिदेश जनकपुर को चलैं अर्थात् रघुनंदन भरत लक्ष्मण शत्रुहन इति चारिहु राजकुमार सुखद ससुरारि जानि अवश्य इहां को आवहिंगे तव कहूं दशदिन रहेंगे कवहूं एक मासभरि रहेंगे तव राजकुमारन को देखि जनकपुर के नरनारि तृप्तहोइँगे नेत्रनभरि अघायके देखहिंगे अर्थात् अवहीं नाते को नेह नहीं रहै पुनः रघुवंशी स्त्रियन की दिशा दृष्टि नहीं उठावते पुनः ऋषिनके साथ ताहूपर स्वयम्वरते राजनकीभीर इसविघ्ननते युवतिनको देखने में संकोचरहा अरु जव विवाहभये पर साधारण आवहिंगे तवनातानेह वलते मारगजातसमय दाउनगहि वरन को पकरि लावहिंगी तहां एकांत थलमें लैकै मनभावत आनन्द लूटेंगी आपनी इच्छा पूर्णकरि तव छाँड़ैंगी १ जव निरभय सुचित्तएकांतमेंदेखेंगी तव नरनारि तृप्तहोइँगी अर्थात् नरतौ चहै अवै तृप्तभये होयँ नारी अवहीं प्यासीहैं ते तवै तृप्त होइँगी जव ससुरारिकेनाते इहांआय मास भरिरहैंगे पुनः चारि दुलहिनि जानकी आदि इहांते जाहिंगी वै कछु दिन उत अयोध्याजीमें रहैंगी पुनः जनक वोलिहैंकुमारी अर्थात् जानकी आदि कुमारी जनकजीको प्राणनते अधिक प्रियहैं ताते देखनहेत महाराज शीघ्रही बुलावहिंगे २ महाराजके वुलावनेपर जवअवधछांड़ि जनक कुमारी जानकी आदि आपने थलै जनकपुर को आयहैं तवपाछेदशवीस दिनमें रघुनंदनादि चारिहु कुवँर वनिवनि भूषण वसन वाहनादि सजि साजि तिरहुति देश जनकपुरको चलैंगे इसभाँति इहां आवरहेंगे तव युवती अघायकै देखैंगी ३ । १३२ ॥

मू० । येबातैंवड़िपुण्यतेसखिपुरवैंत्रिपुरारि । तौविरंचिहमहीं रच्योसुकृतटूटदिनचारि १ सुकृतटूटादिनचारिचारिनृपकुवँरबिवाहौ । माड़वतरेनिहारिलेहुजगजीवनलाहो २ जी

वनलाहौ कीअवधियह सुखदेखहिंधन्यते । विधिरुखनृप उरजोबसैये वातैंबाड़िपुण्यते ३ । १३३ ॥

टी० । हे सखी येबातैंजोपूर्व मैंकहिगईते बड़ी पुण्यतें त्रिपुरारि पुरवैं अर्थात्जो हमारी बड़ी सुकृति उदय होय तौ ये सबबातैं महादेवजी पूर्ण करहिंगे जो हमारा मनोर्थ पूर्णहोवै तब जानैं कि विरंचि हमहिंरच्यो अर्थात् हमको परिपूर्ण सुकृती ब्रह्माने बनायोरहै परंतु चारिदिन हमारी सुकृति टूटिगयो अर्थात् कुँवार शुक्ल द्वादशी को राजकुमार इहाँमध्या-ह्नमें पहुंचे पुनः पूर्णिमातक चारिदिन शोचरहा कार्तिककृष्ण प्रतिपदा को रघुनंदन धनुष तोरे शोच मिटिगया इत्यादि यावत् शोचरहा तावत् चारिदिन हमारी सुकृत खंडितरही १ चारिदिन सुकृत टूटीरही तावत् दुखरहा अब चारि नृप कुँवर बिवाहौ जानकी आदि चारिहु कुमारिनके साथरघुनन्दन आदि चारिहु राजकुमारनको बिवाहकरौ पुनः व्याह समय माड़वतरे निहारि नेत्रनभरि देखि जगत्में जीवनको लाभआनन्दलेहु २ जीवनलाहौकी अवधिजगमें जीवनकी जोलाभहैताकी-मर्यादहइहै यहजो रघुनंदनादि चारिउ कुमारनके बिवाहको सुख जे जन नेत्रनभरि देखहिं ते धन्य कृतार्थ रूपहैं परन्तु जो विधि रुखनृप उरबसै ब्रह्माकी अनुकूल तातें जो चारिहू कुमारन को बिवाह जनक महाराजाके मनमें बैठैतौ ये बातैं बड़ी पुण्यते जब पुरवासिन की बड़ी सुकृत उदयहोवै ३ । १३३ ॥

मू० । सखिसुकृतीताहीगनै रामलषणछविदेखि । तातेपुरसुकृती बड़ोआयेकुवँरविशेखि १ आयेकुवँरविशेषिनारिनरभेसुख भारे । दर्शनफलतत्कालभूपदशरथहि निहारे २ दशरथ रावनिहारिकै दूलहदुलाहिनिपुनिबनै । यहबिवाहदेखहिसु नहिसखिसुकृतीताहीगनै ३ । १३४ ॥

टी० । पूर्ववचन कहनेवाली को दूसरी उत्तरदेती है हे सखीजे नेत्रन भरि रामलषणकी छबि देखिलीन्ही ताही जननको हमसुकृती गनै हैं तौ जो राजकुवँर विशेषकरि दैवयोग जनकपुरको आपहीआयेतातै जनकपुर बड़ो सुकृती है भावपुरके स्त्री पुरुष बड़े भाग्यवाले हैं १ काहेतें पुरजन बड़े भाग्यवाले हैं कि इहांको विशेष करिकै राजकुवँर आये तिनको देखि नारिनर भेसुखभारे राजकुमारन के अनूप रूपकी माधुरी अवलोकतसंते स्त्री पुरुषनको बड़ाभारी सुखभया पुनः तत्काल शीघ्रही कुवँरनके दर्शन

को फलभया कि भूप दशरथहि निहारे भाव जिनके ऐसे अपूर्व चारित्र्य तिन बड़े भाग्यवाले दशरथमहाराज के दर्शनपावा २ अब दशरथमहाराज को निहारिकै इनके दर्शनको फल पुनः रामादि दूलह अरु जानकी आदि दुलहिनी इनके बिवाहको देख ३ पुनः बनैगो ताते यह बिवाह जे आपनी आँखिनते देखहिं अथवा देखनहारन के मुखते सुनहिं हे सखी ताहीको हम सुकृती गनैं ३।१३४॥

मू०। ब्याहघरीबिधिलिखिदई बर्षिसुमनसुरगाय। रामबिवाह उछाहवड़ देखनचलेबजाय १ देखनचलेबजाय सता नँदजनकबुलाये। दशरथसहितबरात जनकमंदिरचलि आये २ मंदिरचलिआयेसबै पाँउड़परिजयजयभई। करिउत्साहसमाजशुभ ब्याहघरीबिधिलिखिदई ३।१३५

टी०। ब्याहघरी शुद्धलग्नलिखि विधि ब्रह्माने नारद के हाथ जनकजी के पासको पठई अर्थात् हेमन्तऋतु तामें उत्तम अगहनमास शुक्लपक्ष पंचमीतिथि उत्तराषाढ़नक्षत्र वृद्धियोग भृगुवार सूर्य अस्ताचल पहुंचे पर गोधूली वेलामें शुभलग्न विचारि लिखिकै ब्रह्मा नारदके हाथ पठाये सोई समयजानि रघुनाथजी के बिवाहको जो बड़ाभारी उत्साह है ताको देखनेहेतु सुर ब्रह्मा शिव इन्द्रादि सब देवता सुमन फूलबर्षि सुन्दर प्रभुको यशगाय दुन्दुभिबजाय जनकपुरको चले १ देवता दुन्दुभीबजाय ब्याह देखनहेतु चले ताहीसमय ब्याहकरावनेहेतु सतानन्दको जनवासे को पठाय बरातसहित चक्रवर्तीजी को जनकबुलाये अर्थात् सतानन्द जायकहे कि बिवाहहेतु चलिये सो सुनि बरातसहित दशरथमहाराज जनकजी के मन्दिरको चलिआये २ कैसे चलिआये पाँउड़परि अर्थात् सुन्दर बसन आगे बिछावतजात तापर चलेआय जब सब समाजसहित महाराज मन्दिर में पहुँचे तब पुर व्योमादि सर्वत्र जयजयकार धुनिभई पुनः जो ब्याहकीघरी बिधाताने लिखिदईरहै ताहीसमय में शुभमंगलमय जो समाज है सो सब उत्साह मंगलाचारकी क्रिया करनेलगे ३।१३५॥

मू०। कोबितानसुखमाकहै जिहिथलसुखमाआहि। नटतकिंकिरीलक्ष्मीरुखजुगवतपलजाहि १ रुखजुगवतपलजाहि जहांदुलहिनिबैदेही। बिधिहरिहरयमइन्द्र होतचितवैं

हिततेही रचितवैंहिततेहीकृपादूलहश्रीरघुपतिरहैं।सम-
धीदशरथजनक सम कोबितानसुखमाकहैं ३ । १३६ ॥

टी० । बितान सुखमा कोकहै जनकजी के माड़व में जैसी शोभा है ताको कौन ऐसो कवि है जो यथार्थकहि पारपावै काहेते ज्यहि थल सुखमाकाआहि अर्थात् सुखमा जो शोभा सोतौ इसस्थानमें कोईचीज नहीं भाव जो दासिनकी दासीहैं तिनहुनमें गनतीनहीं काहेते जहाँ नटत किंकरी लक्ष्मी अर्थात् लक्ष्मीजी नाच गानकरि जानकी जी को रिझावती हैं तथा किंकरी टहलुई है नित्य सेवा शुश्रूषा करती हैं ताहूपर रुख जुगवत पलजाहि अर्थात् कैंकर्यता करत में पल पल प्रति जानकीजी की मुखकीओर निहारत रहती हैं अर्थात् प्रसन्न हैं वा नहीं ऐसेहीबात काशी में उद्भटसंन्यासी काष्ठजिह्वास्वामी कहेहैं यथा ॥ सियाजीरानिनमेंमहरानी औरसबैरौतानी १ गौरापानलगावतराचिरचिरमाखवावतआनी । चितवतभौंहखड़ीकरजोरेइन्द्रानीब्रह्मानी २ आठौसिद्धिखड़ीकरजोरेनवनिधिमनहुँविकानी । कोटिनब्रह्माण्डनकीप्रभुतारोमरोमअरुझानी ३ जो मायाएकैघाटेपरसबहिपियावतपानी । स्वउचाहतजाकीकरुणाकोबारबार सन्मानी ४ जाबिनपातौंहिलिनसकतजोसबघटमाहँसमानी । सन्तजननकीइष्टदेवतारामाप्रियाजगजानी ५ अर्थात् सब शक्तिनकी ईश्वरी है यथा महेश्वरतन्त्रे ॥ ब्रह्मोवाच ॥ तप्तकांचनगौरांगीशक्तीनांशक्तिदायिनी १ काहेते लक्ष्मीजी को रुख जुगवत पलजाहि जहाँ जिस माड़वबिषे वैदेही दुलहिनि हैं कैसी ऐश्वर्यवन्त श्रीजानकीजी हैं जेहीहित चितवैं सो विधि हरिहर यम इन्द्रहोत अर्थात् हितपूर्वक जाहीपर कृपादृष्टि हेरत सो विधि सृष्टिकर्त्ता हरिलोक पालनकर्त्ता हर संहारकर्त्ता यम न्यायपूर्वक जीवनको रक्षा दण्डदायक इन्द्र देवनको राजा इत्यादि ऐश्वर्यवाले होत अर्थात् आपनी ऐश्वर्यहेतुब्रह्मादि सदा बन्दनाकरतेहैं॥ यथा मार्कण्डेयसंहितायां॥ शिवउवाच ॥ कारुण्यामृतवर्षिणींहरिहरब्रह्मादिभिर्वन्दितां । ध्यायेभक्तजनेप्सितार्थफलदांरामप्रियांजानकीं २ पुनः दूलहरूप जहां श्रीरघुपतिरहैं आसीन हैं तही कृपाहित सबचितवैं तिनहीं श्रीरघुनाथजी की कृपाते आपनाहित ब्रह्मादि सबै देखते हैं पुनः दशरथ जनकसम अर्थात् जे ऐसे सुकृती जे परब्रह्म आदिशक्तिको पुत्र पुत्री बनाये ऐसे जहाँ समधी तहां वितानकी सुखमा माड़वकी शोभाको ऐसाकवि है जो कहिसकै ३।१३६ ॥

मू० । इन्द्रब्रह्मदूनोंमिलेवन्दीवर्णतभाय । सवसमाजसवसाज सोहमैंप्रत्यक्षदिखाय १ हमैंप्रत्यक्षदेखाययहैउपमाजिय आवै । नारिसहितसुकुमारिरामव्याहनसुखगावै २ राम व्याहसुखदेखहीअमरावतिसंयुतचले । निजनिजपुरसुर गणसहितइन्द्रब्रह्मदूनोंमिले ३ । १३७ ॥

टी० । यासमयको भाव उपमा बन्दीजन वर्णनकरत कि समर्थी दोऊ मिलत में कैसे शोभितहोते हैं यथा इन्द्र ब्रह्मा दूनोंमिले अर्थात् दशरथ महाराज एकतौ सब राजनके राज चक्रवर्ती हैं पुनः पुत्रन के विवाहते परिपूर्ण ऐश्वर्य सजेहैं ताते ऐश्वर्यवन्त देवराज इन्द्रकी उपमादिये अरु वैवस्वतैको बंश दोऊहैं तौ बंश एकही है तहां अयोध्या मुख्य राजधानी है मिथिला इनते छोटा है परन्तु दशरथजीते कईपुस्ति ऊँचे जनकजी पुरिखाकी जगापररहे हैं पुनः कन्याके बिवाहते विभवरहित साधारण हैं ताते इनकीपितामह ब्रह्माकीउपमादिये सोईबन्दीजन कहतयथाइन्द्रब्रह्मा दोउनकी सबसाज ऐश्वर्य तथा दोउनको सवसमाज सो हमको तो प्रत्यक्षही देखातो है भाव अनुमान उपमानको कछु प्रयोजनै नहीं भाव इन्द्र आपनी ऐश्वर्यसहित दशरथमहाराज के समीप बैठेहैं तथा दशरथ महाराज इन्द्रकी ऐसी ऐश्वर्य राजसाज तथा देवनकी ऐसीसमाज अनेक राजा संगलिहे बैठे हैं दोउनमें नेकहू भेदनहीं पुनः वेदतत्त्व धर्मकर्म के परिपूर्णज्ञाता विवाहविधि बतावनेहेतु ब्रह्मा बैठेहैं तिनहीं के समीप वेदतत्त्व धर्मकर्म के ज्ञाता जनकमहाराज वैठे हैं तिनहू में भेदनहीं १ सोई ब्रह्मा इन्द्र हमैं प्रत्यक्ष देखाते हैं ताते दोऊ महाराजनकी यही इन्द्र ब्रह्मा की उपमा हमारेजीमें आवतीहै काहेते सुकुमारि नारिसहित रामव्याहन सुखगावै अर्थात् यथा जनकजी रानी सहित सबकार्य करतेहैं तथा सुकुमारि नारि सरस्वती सहित ब्रह्मा रघुनाथजी के विवाहको मंगलानन्द गानकरते हैं भाव सरस्वतीरानिनके संग मंगलगावत तथा ब्रह्माजी गउयेतर वेदगान करते हैं यथा कौशल्या तथा इन्द्राणी उहाँ गानकरत २ रामव्याह सुखदेखही श्रीरघुनाथजी के विवाहको आनन्द देखनहित अमरावति संयुत इन्द्रपुरी सहितचले यथा इन्द्र तथा निज आपन आपन पुरसहित सुरगण देवता समूह आपनीपुरिनकी समग्र शोभा ऐश्वर्य बटोरि सबै देवताआये ते सब वर्त्तमान तथा सब विभवसहित दोऊ महाराज

वर्त्तमान मिले ताते यथा इन्द्र ब्रह्मा दोऊमिले यह कहते हैं ३।१३७॥

मू० । रामसुभूषितजगमगेमाड़वमध्यसमाज । माथेमुक्तामौर छबिनखतसहितनिशिराज १ नखतसहितनिशिराजनारि नरदेखतशोभा । रघुपतिमुखशशिशरदनिरखिछबितृप्तन कोभा २ रघुपतिमुखछबिशरदशशिनयनचकोरनिलखिल गे । मदनकोटिशतवारियेरामसुभूषितजगमगे ३।१३८॥

टी० । रामसुभूषित अर्थात् पगमें जावक पीतधोती क्षुद्रघंटिका करांगुली मुद्रिका पहुँची कंकण कड़ा केयूर कंठा मणिमाल प्रदिक कुण्डल जरकसी जामा पेटुका उपन्ना पाग इत्यादि भूषण वसनसहित रघुनाथ जी माड़व मध्य समाजमें बैठे जगमगे भूषणमें मणी चमकिरही हैं कंचन मुक्तनजटित माथेपर मौर कैसाशोभितहोत यथा नखतसहित निशिराज चन्द्रमा है अर्थात् मुख चन्द्रकेसमीप मुक्ता नक्षत्रसे छबि देखावते हैं १ मौरसहित मुख यथा नखतन सहित निशिराज चन्द्रमा है सोई शोभा नारि नर स्त्री पुरुष सबै देखते हैं कौन भाँति यथा रघुपतिमुख शरदशशि छवि निरखत को तृप्तनभा अर्थात् शरदऋतुके पूर्ण चंद्रवत् रघुनाथजी को मुख ताकी छबि माधुरी किरणैं तिनको चकोरवत्नेत्रनद्वारा पानकरतसंते को नहीं तृप्तभया भाव कोनहीं नेत्रनभरिदेखा २ काहेते सबै तृप्तभये कि शरदशशिसम रघुनाथजीके मुखकी छबि लखि देखिकै नयन चकोरनद्वारा सबै अवलोकनमेंलगेरहैं यकटकसब देखैकीन्हे ऐसे श्रीरघुनाथजी बसन भूषण सहित मड़येतर समाजमें बैठे जगमगाय रहेहैं जिनपर कोटिशत मदनवारिये जिनकी अलौकिक शोभापर सौकरोरि कामदेव निवछावरि करिदीजिये भाव समतायोग्य नहीं है ३।१३८

मू० । मुनिवशिष्ठअरुसतानँद भरद्वाजजाबालि । अत्रिअगस्तिसुगर्गऋषि कश्यपमुनितपशालि १ कश्यपमुनितप शालि देवऋषिसनकसमेते । लोमशअरुचिरजीव व्यासपाराशरजेते २ पाराशरकौशिकसहित गौतमशुकउ द्धरतपद । वेदमंत्रकरणीकरैं मुनिवशिष्ठऋषिसतानँद ३।१३९॥

टी० । वशिष्ठमुनि रघुबंश पुरोहित तथा सतानंद निमिबंश पुरोहित ये दोऊतौ मुख्य सबकार्यके करनेवालेहैं पुनः रामजानकीको बिवाहजानि औरहू मुनिआये यथा भरद्वाज अरु जाबालि येऊ रघुबंशके आचार्य हैं पुनः अत्रि अरु अगस्ति सुंदरऋषि गर्गाचार्य तथा तपशालि तपोधनी कश्यपमुनि १ यथा कश्यप तथा देवऋषि नारद अरु सनकादि समेत पुनः लोमश तथा चिरजीव मार्कंडेय पुनः व्यास अरु पाराशरादि यावत् ऋषिहैं २ पाराशर अरु कौशिक जो विश्वामित्र तथा गौतम अरु शुकदेव इत्यादि श्रुतिनके पदउच्चरत पढ़िरहेहैं पुनः वशिष्ठमुनि अरु सतानंद ऋषि ये दोऊदिशि आगेबैठे वेदनके मंत्रनते करणीकरें मंत्रपढ़ि पढ़ि बिवाहके सब कर्मट क्रिया करावतेहैं ३॥१३९ ॥

मू० । सूरजकुलगतिसबकहैं पावकआहुतिलेय । गणपतिकर पूजाकरैं विधिबिवाहकहिदेय १ विधिबिवाहकहिदेय पव नपुनिशेषमहेशा । सुरपतिसुरगणसहित मगनढिगलखतरमेशा २ लखतरमेशसुदेशछबि रामसबहिजानतरहैं। विप्रवेषबेदनपढैंसूरजकुलगतिसबकहैं ३ । १४० ॥

टी० । सूर्यतौ कुलगति जो सबरीतिहै सो कहैंसमयपर आपने कुल कीरीति बताइदेतेहैं तथा पावक अग्नि मूर्त्तिमान् होमकी आहुतीलेते हैं तथा बिधि ब्रह्मा सो बिवाहकी जो वेदमें विधिहै ताको बतायदेते हैं इसी भांति गणपतिकर अर्थात् श्रीरघुनंदन जनकनंदिनी पूर्व गणेशजीको पूजनकरतेहैं १ बिवाहकी बिधि ब्रह्मा कहिदेत पुनः पवन अरु शेष तथा महेश शिवजी तथा सुरगण सहित सुरपति जो इंद्रइत्यादि व्याहसमय रघुनंदनको देखतसंते प्रेममें मगनहैं तथा ढिगलखत रमेशा रमाके ईश बिष्णुते रघुनाथजीके ढिग नगीचही बैठे लखत रघुनाथजीको देखतेहैं २ कैसे रमेश लखतेहैं सुदेशछबि अर्थात् जौने अंगमें जैसीशोभाचही तैसेही सर्वांग सुठौरबनेहैं तिनको देखते हैं अरु श्रीरघुनाथजी सबको जानतेहैं अरु ब्रह्मादिसब बिप्रवेषधरे वेदनको पढ़िरहे हैं अरु सूर्य कुलकीगति रीति सब कहतेहैं ३।१४० ॥

मू० । जनकमगनरानीसबै मुनिबशिष्ठकहिदीन । सतानंदआनीसिया भूषणसजतनवीन १ भूषणसजतनवीन राम

ढिगअस्थितकीन्ही।मुनिवरअवसरसमुझि शांतिश्रुति मगकहिदीन्ही २ दीन्हीदुन्दुभिअतिघनी सियमंडप आईजबै । दशरथसभासमेतसुख जनकमगनरानी सबै ३।१४१॥

टी०। सुनयनादि सबैरानी अरु जनकजी तेतौ प्रेममें मगन देहकी सुधि नहींहै कि अब क्याकरनाचाहिये यहजानि बशिष्ठजी कहिदीन कि कन्याको माड़वतरे लैआवौ सोसुनि सतानंदजीआनी सिय श्रीजानकी जीको मड़येतरको लवायलाये तिनके अंगनमें नवीनभूषण सजत भाव नवीन भूषण बसन भूषितकरिलाये १ बसन भूषण नवीन सर्वांगमें शोभादैरहे हैं रामढिग स्थितकीन्ही रघुनाथजीके नगीचही सन्मुख बैठारिदीन्हे तब जोबात करनाचाही सो अवसर समुझि मुनिवर श्रुतिमग शांतिकहिदीन्ही अर्थात् बशिष्ठादि श्रेष्ठमुनिन वेदआज्ञा अनुकूल शांति पढ़नेलगे २ जबै जासमयमें जानकीजी मंडप मड़येतरकोआईं तब अति घनी दुंदुभीदीन बहुतबाजा बाजनेलगे जानकीजीको देखि दशरथ महाराजतौ समाज सहित सुखीभये तथा सब रानिन सहित जनकजी प्रेम में मगन हैं ३।१४१ ॥

मू०। जनकपायँपूजनलगेशाखोच्चारउचारि । रानीनृपमनमोद भरिलैकोपरशुचिवारि १ लैकोपरशुचिवारिनारिवरमंगल गाईं। कन्यादानबिचारिदेवफूलनझरिलाईं २ फूलेतरु नृपसुकृतकेचरणप्रक्षालतसुखजगे । निरखिबदनदम्पति मगनजनकपायँपूजनलगे ३।१४२॥

टी०। शाखोच्चार यथा बरपक्षे ॐ योवैश्रीरामचन्द्रस्सभगवान् अद्वैतपरमानंदात्मा यत्परं ब्रह्मभूर्भुवस्स्वस्तस्मैवै नमोनमः स्वस्तिश्रीमत्प्रबलतर हयगज रथ पदातिबल प्रतापनिर्ज्जित प्रचंडप्रोद्दण्डारातिव्रय चमू जयलब्धयशः पूरमयामृतोदधि प्रकामोद्यच्छरद्राकेशकर प्रकाशप्रकाशित्किताखण्डब्रह्माण्डमण्डलस्य परमसद्बुद्धि विस्तार विस्तारितालौकिक पराक्रमितानेकबलवाद्विपक्षेलाधीश गुरुमौलिलसन्मुकुटमणि विस्फुरित कांति परिचुंबितचरणकमल विमलधर्म्मार्ज्जितधनाधिप विशालतमकमनीय क्रोशदानातिशयस्योत्तमर्षि श्रीमत्कश्यपगोत्रस्यकश्यप मरीचिभर-

द्वाजत्रिप्रवरस्यसुरसज्जन गोब्राह्मणास्तेषामुपरिदयादृष्टि श्रीमन्महाराज जगज्जनकः श्रीविष्णोर्नाभिकमलोद्भव ब्रह्मा तस्यपुत्रः मरीचिः कश्यपः विवस्वान्मनुः इक्ष्वाकुः कुक्षिः विकुक्षिः वाणः अनरण्यः पृथुः त्रिशंकुः धुंधुमारः युवनाश्वः मान्धाता सुसंधिःध्रुवसंधिः भरतः असितःसगरः असमंजसः अंशुमान् दिलीपः भगीरथः ककुत्स्थः रघुः कल्माषपादः शंखणः सुदर्शनः अग्निवर्णः शीघ्रगः मरुः प्रसुस्नुकः अंबरीषः नहुषःययातिः अस्यां रात्रौसत्कुलसञ्चरित प्रतिष्ठागारिष्ठस्य नाभगस्यप्रपौत्रः १ पुनः अजवर्मणस्तस्यपौत्रः २ पुनः दशरथस्यपुत्रः इत्यादि त्रयवार यथा कश्यपगोत्रस्य कश्यप मरीचि भरद्वाजात्रिप्रवरस्य श्रीमद्दशरथवर्मणस्तस्यपुत्रःप्रयतपाणिश्शरणंप्रपद्ये स्वस्तिसंवादेष्वभयंवो वृद्धिर्वरकन्ययोर्मंगलमास्तामिति प्रथमः द्वितीयः तृतीयश्शाखोच्चारः तथा कन्यापक्षेयथाॐ अवाची सुभगेभंवसीते वंदामहेत्वा यथा नस्सुभगात्वमसि यथा नःसुफलात्वमसि स्वस्तिश्रीमन्निजकुलकमलप्रकाशनैकमार्तण्डबन्धुजनकुमुदप्रकाशैक चंद्र वादीन्द्रपरिपन्थिनीरगहन विदारणैकपंचास्यसेवित रमानाथपादारविंद मकरन्दानन्द चित्त जनपुञ्ज शौर्य्यधैर्य्यकारणसमर्थस्य स्वस्तिश्रीव्याघ्रायणगोत्रस्य व्याघ्रायण गौतमकश्यपत्रिप्रवरस्य सदाचारसत्कुलसञ्चरित प्रतिष्ठागरिष्ठस्य श्रीमद्द्विज सुर सज्जन भूमिप्रतिपालने तत्परो धर्मधूर्धारिणसमर्थोदीनार्तिहर दुष्टदमनेपराक्रमोत्साहयुक्तः श्रीमन्नारायणस्य नाभिकमलोद्भव ब्रह्मा तस्यपुत्रो मरीचिः कश्यपः वैवस्वतः इक्ष्वाकुः निमिः मिथिलः जनकः उदावसुः नंदिवर्द्धनः सुकेतुः देवरातः बृहद्रथः महावीरः सुधृतिः धृष्टकेतुः हर्य्यश्वः मरुःप्रत्यंधकः कीर्त्तिरथः महीधृक् कीर्त्तिरातः महारोमा स्वर्णरोमा तेषांप्रपौत्रीयं पुनः ह्रस्वरोम्नः तस्य पौत्रीयं पुनः सीरध्वजस्यपुत्रीयं इतित्रयवार यथा व्याघ्रायणगोत्रस्यव्याघ्रोच्चारणैक ध्रुवत्रिप्रवरस्य ऋग्वेदारण्यकशाखाध्यायिनो धर्ममूर्त्तिवर्मणः सीरध्वजस्यपुत्रीयं प्रयतपाणिश्शरणंप्रपद्ये स्वस्तिसंवादेष्वभयंवोवृद्धिर्वर कन्ययोर्मंगलमास्तामिति प्रथमःद्वितीयः तृतीयश्शाखोच्चारः इत्यादिशाखोच्चार दोऊकुल गुरुउच्चारणकीन्हे अरु जनकजी पायँपूजनलगे कौनभांति कि रानी सुनयना तथा नृप जनक दोऊ मोद आनंद मनमें भरे पुनः कोपर शुचि वारिभरि अर्थात् भारीपात्रमें पवित्रजलभरि १ शुचि वारि कोपरमेंलिये पायँधोवतेहैं तासमय वरनारि उत्तमयुवतीमंगलगावतीहैं तथा कन्यादानको समयबिचारि देवता फूलनकी भरिलगायेअर्थ-

त वर्षिरहे अरु सब प्रशंसाकरते हैं कि नृप जनकजीके सुकृतरूप वृक्षफूले ऐसा पदप्रक्षालित श्रीराम जानकीके पद धोवतसमय सुखजगे उरमेंआ-नंदउत्पन्नभया काहेकरिकै श्रीरघुनाथजीको बदननिरखि नेत्रनभरि देखि इसभांति कन्यादानसमय जनकजी पायँपूजनलगे ३।१४२ ॥

मू०। जेपदपंकजनृपधरेजेशिवमानसहंस । जेपदपंकजमृदुलरसमुनिसंकुलअलिबंश १ मुनिसंकुलअलिबंशप्रकटकीन्हीजिनगंगा। वरणतवेदपुराणप्रणतहितविरदअभंगा २ विरदअभंगप्रसंगश्रुतिमुनितियकेपातकहरे। अजसनकादिकतेभजैंजेपदपङ्कजनृपधरे ३।१४३ ॥

टी०। जेपद पंकज नृपधरे श्रीरघुनाथजीके जोपदकमल जनक महाराज हाथमेंधरे धोयरहेहैं ते कैसेहैं जे शिवजीके मनरूपमानसरमें हंससरीखे वासकिहेहैं पुनः जेपदपंकज मृदुलरस जिन पदकमलनको प्रेमरस मकरंद ताके लोभहेतु मुनिसंकुलअलिवंश संकुलसमूह मननशील मुनिते अलिभ्रमरकेवंशसरीखे सदाबसेरहतेहैं १ जिनपदकमलनमें समूह मुनि भ्रमरबंशसरीखे अनुरागरस पानकरतेहैं तथा जिन पायँन गंगाप्रकटकीन जे लोकपावनकर्ता हैं पुनः जिन पायँनको विरद अभंग प्रणतपाल ताको वाना जो कबहूं मिटता नहीं है ऐसा जाको वेदपुराण वर्णनकरत २ अभंग जो कबहूं भंग नहींहोत सदा एकैरस चलाआवत ऐसाविरद प्रणतपाल ताकोबाना ताकोप्रसंग कथाविस्तार श्रुति वेदनमें बर्णनहै तथा लोकोंमें प्रसिद्धहै कि मुनितियके पातकहरे अर्थात् जिनपायँन अहल्याके पापहरि पावनकरिदिये पुनः अज ब्रह्मादिक देवता तथा सनकादिक मुनि तेऊ जिनकोभजतेहैं जेपदपंकज जनकमहाराज हाथमेंधरे धोयरहेहैं ३।१४३

मू०। जनकरावसमको सुकृतकहतदेवमनमाहिं । निरखिमगन कौतुकपरमजयजयकहाहिंसिहाहिं १ जयजयकहाहिंसिहाहिं वचनकहि चारसँवारे । नरनारिनलखिरूपनेहवश देहविसारे २ देहविसारेरूपकोंव्याहलाहलोयनरुकत। कोशलेश मिथिलानगरजनकरायसमकोसुकृत ३।१४४ ॥

टी०। देवता मनमेंकहत कि जनकरावसम को सुकृत अर्थात् ब्रह्मा शिवादि मनमें सराहनाकरतेहैं कि राजा जनककी समान दूसरा सुकृती

कोऊ नहीं है पुनः परमकौतुक निरखि अत्यन्त अद्भुत विवाहलीला नेत्रन भरि देखिसिहाहिं इसी सुखप्राप्तीको ललचाते हैं पुनः जयजयकार करते हैं १ श्रीजनकनंदिनी रघुनन्दनकी जयहोय जयहोय ऐसा कहते हैं अरु सिहाते हैं पुनः वचनकहि चार सँवारे कोमल वचनकहि विवाहके जो चार यथार्थ रीतिते सब क्रिया कर्तव्यता तिनको सँवारे उत्तम विधिते सब यथार्थ करवाये तथा नरनारिन रूपलखि विवाह समय श्रीजनकनंदिनी रघुनन्दनको सुन्दर स्वरूप नेत्रनभरि देखि पुरके नरनारिन नेहकेवश अत्यंत प्रेमते विह्वल देहकी सुधि बिसारे हैं भाव यह सुधिनहीं कि हम कौन हैं कहां बैठे हैं २ काहेते देहकी सुधि बिसारे हैं कि दूलहरूप को देखतसंते व्याह समयको लाभ भलीभांति देखिलेना ताहीहेतु लोयन जो नेत्र ते रुकत रूप अवलोकनते बिलग नहींहोत सोई परमानंद जिनको सुलभ प्राप्तहै तौ कोशलेश जो दशरथ महाराज तथा मिथिला नगरमें जनकमहाराज की समान को सुकृती दूसराहै भाव इनसम येई हैं ३ । १४४ ॥

मू० । होनलगींवरभाँवरीदुलहिनिललितललाम । दूलहसुन्दर साँवरोशशिमुखपंकजराम १ शशिमुखपंकजरामवामलखि मंगलगावहिं । मुनिगणभाँवरिकृत्तकरहिंगनितियनिवतावहिं २ मगनमोदभाँवरिपरैंरानीतनमनबावरी । सबकुलचारविचारकरिहोनलगींवरभाँवरी ३ । १४५ ॥

टी० । बर श्रेष्ठ भाँवरी होनलगीं कौन श्रेष्ठताहै ललित ललाम दुलहिनि तथा पंकजसम साँवरो शशिमुख ऐसे सुन्दर राम दूलह अर्थात् ललितनाम सुन्दर गौर वर्ण सर्वांग सुठौरबने पुनः ललामनाम भूषण सर्वांगमें शोभा देरहे अथवा घरको भूषण कुलको भूषण सब लोकको भूषण ऐसी ललितललाम श्रीजानकी ऐसी दुलहिनि तथा पंकजनाम कमल सोई नीलकमल सम साँवरो वर्ण तथा शशि चन्द्रपूर्ण सम मुख सर्वांग सुठौर बने ऐसे सुन्दर रघुनाथजी दूलह इत्यादि उत्तम दूलह दुलहिनि ताते उत्तम भाँवरी होनेलगीं १ कमलसम सुन्दरश्याम चन्द्रसममुख ऐसे श्रीरघुनाथजीको लखि देखिके बाम जो युवतीगणते मंगल गावती हैं पुनः मुनिगण भाँवरिकृत करहिं बशिष्ठ शतानंदादि समूह मुनि ते सब भाँवरी की कर्तव्यता करते हैं पुनः गनितियनि बतावहिं एक दो तीनि इति भाँवरीगनि त्रिन सों बतावते हैं अथवा ब्राह्मणी गावनेवाली जेतनी रहीं

तिनको गनिकै भोजन भूषण बसन दशरथजी ते देवावते हैं २ जा समय भाँवरी परती हैं तव रानी सब मोदमगन आनन्दसेंबूडीं तनमनते बावरी भईं अर्थात् मन प्रेमानंद में बूडा ताते देहकी सुधि नहीं है विचार पूर्बक कुलके आचार सब रीतिकरि वर श्रेष्ठ भाँवरी होनलगीं ३ । १४५ ॥

मू० । रामनिछावरिकोगनैमुक्तामणिगणखान । मण्डपधनपूरोभयोजनुजुवारियवधान १ जनुजुवारियवधानजनकमन्दिरते आवैं । मुनिवशिष्ठकेवचननेगगहिताहिदिवावैं २ नेगसाधिआहुतिदईव्याहभयोसबकोउभनै । देवभूपरानीजनकरामनिछावरिकोगनै ३ । १४६ ॥

टी० । मुक्तादि मणिगणनकी खानि जहां हैं तहां जैसी रघुनाथजी की निवछावरिहोतीहै ताहिकौन गनिसकाहै भावअसंख्य होती हैं काहेते धन पूरोमंडपभयो जनु जुवारि जब धानमुक्तामणी सोनाआदि धनकरिकैमा-ड्वकी भूमि परिपूर्ण है भाव सर्वत्र बिथरे परे हैं यथा जुवारि यव धान अर्थात् और अन्न छीमी बालीके भीतर रहत ते ऐसेखेतमें नहीं बिथरिसक्ते हैं अरु जुवारि यव धान बालीमें बाहेरैरहतेहैं ताते खेत कटेपर बिथरेपरे रहते हैं १ काहेते मणि मुक्तादि जुवारि यव धानकी नाईं परेहैं सोकहत कि जनक मंदिरते आवैं अर्थात् दायज हेतु जनकजीके भंडार मंदिरते ढोयढोय मड्येतरको आवत दशरथजीके आगे धरत पुनः वशिष्ठ मुनिके इनहीं वचनहैं कि जासमय जो आपना जेतोनेग बतावत ताहि तेतरोही दिवावते हैं तहां देत लेतमें जोगिरे तेभूमिमें परेहैं २ नेगसाधि सब नेगि-नको परिपूर्ण नेगदैकै आहुतिदई देवनको संतुष्टहोने हेतु सब देवनके मंत्र पढ़िपढ़ि घृतादिकी आहुती अग्निमेंकीन्हे भाँवरीकीन्हे तब सबकोऊ भनैकहिरहे हैं कि श्रीराम जानकीको बिवाहभयो तासमय ब्रह्मादिक देवता पुनः भूपदशरथ सुनयनादिरानी जनकजी इत्यादि सबै निवछा-वरि करतहैं ताते राम निवछावरि कोगनै ३ । १४६ ॥

मू० । ज्यहिंविधिरामविवाहभोसोकहिसकहिंनशेष । संपतिशोभासुखसुभगमंगलमोदसुवेष १ मंगलमोदसुवेषसाजुशुभसकलसमाजैं।कहिकहिथकेगणेशव्यासजिनश्रुतिपथसाजैं २

श्रुतिपथसाजैंतेचकृतमोदविनोदउछाहभो। तुलसिदाससो
किमिकहैज्यहिबिधिरामविवाहभो ३ । १४७ ॥

टी० । ज्यहिविधिते श्रीरघुनाथजीको विवाह भयोहै सोसमग्र वृत्तांत यथार्थ शेषौजी नहीं कहिसक्ते हैं काहेते दोऊ महाराजनकी जैसी संपति ऐश्वर्यरही तथा वर कन्या समधी समधिनी वरात ज्यउनासीपुर मंदिर माडव इत्यादि दोऊ दिशिमें जैसशोभारही तथा धनुभंग भयेपर समाज सहित जनकजीको सुखपत्रिका पाय समाज सहित दशरथजीको सुख बरातआये बिवाह समय सबहीको सुख इत्यादि जैसासुखभया तथा शुभग सुन्दर ऐश्वर्य सहित जोमंगल उत्सवभया तथा मोदमानसी आनंद तथा वर कन्यादि सबको जो सुंदरवेष अर्थात् स्वरूप वसन भूषणादि १ मंगलमोद तथा सुवेषादि जो सकल समाजको साजहै सो शुभ कल्याण कर्ता अर्थात् जाको श्रवण कीर्तनकरि औरहू जीवनको कल्याणहोत ताको कहतसंते गणेश तथा व्यासादिमुनि पुनः जिन श्रुतिपथसाजे वेद मार्गचलाये ब्रह्मादि तेऊ कहिकहि थके पारनपाये २ जे श्रुतिपथसाजे ब्रह्मा तेऊ व्याहदेखि चकृतभये कछु बुद्धि न कामकिया ऐसामोद विनोद अंतर बाहेर आनंद उत्साहभयो ताको तुलसीदास कैसेकहै जाविधि श्री राम विवाहभयो ३ । १४७ ॥

मू० । जनककीनजोमुनिकहेउसबकन्यकाविवाह। भरतशत्रुसूदनलषणदूलहकरेउछाह १ दूलहकरेउछाहनृपतिदशरथ सुखपायो। रामव्याहविधिशोधिमुनिनदेवनिकरवायो २ देवनिकरवायोसुकृतिदूलहदुलहीसुखलह्यो। जोरीचारिनिहारिसुखजनककीनजोमुनिकह्यो ३ । १४८ ॥

टी० । जोबात जासमयमें वशिष्ठमुनि कहे सोईबात जनकमहाराज कीन्हे इसीभांति सबकन्यका चारिहूको बिवाहभयो यथा कुशध्वजकी जो कन्याबडी ताकेसंग भरतजीको विवाह तिनकोनाम मांडवी तिनते छोटी श्रुतिकीर्ति ताकेसंग शत्रुघ्नजीको बिवाहभया तथा जनकजीकी छोटी कन्या उर्मिला ताकेसंग लक्ष्मणजीको बिवाहभया इत्यादि तीनिहू जनेन को महाउर जामा कंकण मौरादि भूषितकरि दूलहबनाय उछाहकरे भाव बिवाहको सब उत्सवकीन्हे १ दूलहबनाय व्याह उत्सवकीन्हे सो देखि देखि महाराज दशरथ अधिक ते अधिक सुख पावते हैं यथा रघुनाथजीके

विवाहमें यावत् विधिकीन्हीरहैं सोई विधिशोधि वशिष्ठादि मुनिन ब्रह्मादि देवतन उसी विधिते तीनिहू भाइनके बिवाह करवाये २ देवनि सुकृति अर्थात् उत्तम विधिते सवक्रिया करवाये ताते श्रीरामादि दूलह जानकी आदि दुलही ते यथायोग्य मनभावतपाय परम सुखपाये इसभांति चारिहुजोरी निहारि देखनहार सबके मनमें सुखभयो इत्यादि जोबात मुनि कह्यो सोई जनकजी कीन्हे ३ । १४८ ॥

मू० । मघामेघदशरथभयेयाचकदादुरमोर । सरसरिताद्विजगण भयेबाढ़िचलेचहुँओर १ बाढ़िचलेचहुँओरशालिजनकादिकरानी । पुरपरिजनभेकृषीसुखीसुखसुंदरपानी २ सुंदरपानीबुंदमणिभूषणपटवर्षतनये । रामसियापावससुखदमघामेघदशरथभये ३ । १४९ ॥

टी० । देखतसन्ते नेत्रनकोआनंद अन्तमेंजीवको कल्याणकर्ता ऐसा जो ऐश्वर्य गुप्तमाधुर्य भूषित श्रीजनकनन्दिनी रघुनन्दन को सुन्दर स्वरूप ताको वर्षाऋतुकरि वर्णन करत तहां बर्षा में भादवँ अधिक ताहूमें मघा नक्षत्र अधिकहोत तथा इहां मघाके मेघ महाराज दशरथ भये भाव अत्यंत दान बर्षिरहे हैं बर्षा में दादुर मेढक तथा मोर आनंदह्वै बोलत तथा इहां परिपूर्ण दानपाय याचक प्रशंसा करिरहे हैं तेई दादुर मोरहैं अत्यंत जल वर्षे नदीउमड़ि चलती हैं तालबहिचलत तथा इहां द्विजगण ब्राह्मणसमूह तेई सर सरिता तालनदी नद सरीखे बाढ़िचहुँओर चले समूह दानपाय चारिहू दिशिको आनंदितचले जातेहैं १ ब्राह्मणबाढ़ि चारिहूओर चले तथा शालि जनकादिक रानी अत्यन्त बर्षाभये पर शालिधान हरित ह्वै अत्यन्त बाढ़त तथा जनकआदि पुरके नररानी सुनयनाआदि पुरकीनारी इत्यादि सबके मनमें आनंदबढ़त तथापुरजन परिवारके जन ते सबकृषीहैं अर्थात् जनक अरुरानी धानसरीखे अरु पुर वा परिवार जन ते और अन्न सरीखे उत्सव सुंदर पानीपाय सबैसुखीभये २ जो मणीदान करतेहैं सोई सुंदरपानी के बुंदहैं तथाभूषण पट दुशालादि सोई सघन धारनये नवीन वर्षिरहेहैं इसभाँति श्रीराम जानकी पावस वर्षाऋतु सुखदायकभये तथा दशरथ मघाके मेघभये ३ । १४९ ॥

मू० । वरकन्याराउलचलेमुनिआयसुअसदीन । भूपसमाजसमेतसबजनवासेपगदीन १ जनवासेपगदीनबजेदुंदुभिअति

भारी । दुलहिनदूलहल्यायभवनआसनदैनारी २ दूलहदु लहिनिसमनिरखिरानीसुखसानीभले । रहसविदशलहकौ रकृतबरकन्याराउलचले ३ । १५० ॥

टी० । मुनिवशिष्ठ वा शतानंद अस आयसु आज्ञादीन जातेवरकन्या राउलमंदिरके भीतरको चले तथा सबसमाज सहित भूपदशरथजी जन वासे को पगदीन चले १ जब दशरथ जी जनवासे को चले तत्रअत्यंत भारी दुंदुभी नगारा बजे अरुदुलहिनी दुलहनको मंदिरके भीतरलायना-रिन आसनदीन बैठारे २ यथादूलह तथा दुलहिनी समनिरखि अर्थात् स्वरूपता बरण अवस्था स्वभाव सब यथायोग्य बराबरिदेखि सुनयनादि रानी सुखसानी मनतनमें आनंद भरिपूरि रहा है पुनः रहसएकांतिक आनंद के विशेष्य वश लहकौरिको व्यापार करावती हैं इसहेतु वरकन्या मंदिर के भीतरको चले रहैं ३ । १५० ॥

मू० । रमाउमागावनलगींलैमातनकोनाम । धरिकपोललहकौर कृतकरनिखवावतराम १ करनिखवावतरामकुलाहलमंगल होई।नेकअनेकप्रकारसकुचकहँप्रकटतदोई २ प्रकटततिय वचननिकहैंरामसीयप्रेमनिपगीं। कहतकैकयीकौशिल्लारमा उमागावनलगीं ३ । १५१ ॥

टी० । रमालक्ष्मी उमापार्वती इत्यादि मातृकौशल्यादि को नामलेले गारीगावन लगीं अरु लहकौरकृत दोउनसों लहकौर लीलाकरावती हैं कौनभाँति कपोल धरिकरनिराम खवावत अर्थात् किशोरीजी को कपोल मुखके पँजरेको भागसो आपने बामहाथपर धरि अरुदाहिने हाथेते दधि मिश्री आदि रघुनाथजी खवावते हैं १ रघुनाथजी आपने हाथनजानकी जीको खवावते हैं तासमय मंगलमय कोलाहल अर्थात् वहुती युवतिनको पुष्टउच्चारित शव्दएकमें मिलागंभीर है रहाहै पुनः दोउवरकन्या नेकना-मथोरा पुनः अनेकप्रकारते सकुचकहँ प्रकटत अर्थात् सवव्यापारमें थोरा संकोच करते हैं २ तिययुवती जन प्रकटैं अनेकभाँतिके व्यापार करावने हेतु बचन कहती हैं अरु श्रीराम जानकी के प्रेममें पगीं सर्वांग प्रेमतेप-रिपूर्ण अरु कौशल्या सुमित्रा कैकेयी आदि मातनको नामलैलै रमाउमा गावती हैं ३ । १५१ ॥

मू० । सियसूधीतुमचतुरहौरमाकह्योमुसुकाय । मुनितियकीनाईं
कहूँकीजियनाहिंरघुराय १ कीजियनहिंरघुरायसीयसिखसुन
हुहमारी । पदकबहूंजनिछुयोपगनिकीसुगतिनिनारी २ ना
रीचारिबिवाहियोएकधनुषदलिगथलहो । रमाकहतरघुना
थसोंसियसूधीतुमचतुरहो ३ । १५२ ॥

टी०।हास्यबर्द्धक वचन रमालक्ष्मी जी मुसकायकै कह्यो हेराजकुमार जानकीजी सूधीसहज स्वभावहैं अरुतुम चतुरहौ भावये विदेहपरमहंसकी कन्यातातै इनकोसीधा स्वभावहै कछु छलवार्तानहीं जानतीहैं आपुके पिता कैसेहैं कि कैकेयीजीकी सुंदरता नारदते सुनि तिनको आपना बिवाह करिबे हेतु जादूगीरिनि देवकालीको पठाय कैकेयीको मोहिलिये सोहाल मातापिता जाना आपनी मर्याद राखिबे हेतु राजाकेकय गर्गाचार्य पठाय करारनामा लिखाये भाव आपनी कन्याको बिवाह तब करैंगे जब दशरथ महाराज लिखिदेवैं कि तुम्हारिही कन्याके पुत्रको राजगद्दी देयँगेसो छल राखि लिखिदिये भावबिवाहमात्र पत्ररहाजब कैकेयी घरमेंआईं तबअनेक छलवचन कहि कैकेयीते वहपत्र माँगिलिये पुनः जब पायस देनेलगे तब बडाभाग कौशल्याकोदीन्हे इसीते सूचित होताहै कि छलराखि पत्रलिखे पुनः आगेदेखैं कौनकौन चातुरीकरैं ऐसे चतुरके आपु पुत्रहौसो आपहूकी चातुर्यता प्रसिद्धै देखिपरती है काहेते किशोरीजीकी सुंदरता सुनि ऋषि यज्ञरक्षाके बहाने अकेलही बाहन रहित पैदर इहांको दौरेआयो अरु आपु में चेटक नाटकविद्या बहुती देखिपरती हैं काहेते किसी चेटकबलते मारीचको उड़ाय समुद्रपार पठायो सोतौभला बाणको बहानाहै अरु पायँन की धूरिमेंतौ न मालूम कैसाचेटक सिद्धकिहेहौ कि जाकोलगाय पाषाण रूपते अहल्याको दिव्यस्त्री बनाय वाको न मालूम कहांको उड़ाय दिहेउ पुनः इहां आय ऐसाचेटक लगाय दिहेउ जामें किशोरीजी तौ प्रधानै हैं औरी सब युवती तुमहींपर प्राण वारनकिहे हैं पुनः परशुराम ऐसे सबल क्रोधी तिनपर चेटकडारि सैंतिही हथियार धरायलीन्हेउ ऐसे चतुर आपु हौ अरु किशोरीजी सूधीहैं छलवार्ता कछुनहीं जानतीहैं ताते हे रघुराय कहूँ मुनितियकी नाईं नहिं कीजिये अर्थात् पदरज लगाय इनको न कहूँ उड़ाय दिहेउ १ हे रघुराय आपुतेतौ कहती हैं कि मुनितियाकीनाईं कीजिये नहीं परंतु छली पुरुषनको ठेकाना नहीं हैताते हे जानकीजी तुम

हमारा सिखावन सुनेहु पुष्टमनमा धरेरहेहु क्यासिख देती हैं कि रघुनं-दनके पायँ कबहूँ जनिछुयो अर्थात् भूलिहूकै न छुयो काहेते पगनिकी सुगति निनारी रघुनंदनके पायँनकी सुगति लोकरीतिते न्यारी है भाव जब पत्थरते स्त्री बनाय उड़ाय देते हैं तौ कोमल स्त्रीको उड़ावना कौन बड़ीबातहै इत्यादि २ पुनः एक और आपुकी बड़ीभारी चातुर्यताहै कि एक धनुष दलिचारिनारी बिवाहियो अरु गथलहौ धन पावतेहौ अर्थात् विदेह की प्रतिज्ञा एक जानकीजीके हेतुरहै कि जोधनुपतोरै ताको सीता बिवाहैं सो एकतौ शिव धनुप तोरयो अरु समाज सहित जनकजीपर ऐसा कछु मोहन मंत्र डारिदिहेउ जाते चारिउ कन्यनको चारिउ भाइमिलि बिवाह करि उत्तम सुन्दरी स्त्रीलिहेउ पुनः जोकछु घरमें मणि मुक्ता सोनादि धन है सोऊ लिहेलेतेहौ इत्यादि रघुनाथजीसों रमा कहतीहैं कि तुम चतुरहौ अरु जानकीजी सूधी हैं ३ । १५२ ॥

मू० । हासविलासविनोदमयनेगयोगकरवाय। रामउठायेभवनते शिविकारुचिरचढ़ाय १ शिविकारुचिरचढ़ायदुलहिनिन सहितसुहाये। दुंदुभिदेवनपुहुपरामजनवासेआये २ जनवा सेदेखतमगनभूपदीनलखिद्विरदहय।पोषेयाचकविविधसु-खहासबिलासविनोदमय ३ । १५३ ॥

टी० । बिनोद आनंदमय हास बिलास हास सहित सुखद लीलाकरि पुनः नेग जो दानदेना उचित रीतिसे होताहै यथा मैहरद्वार वार्ता मिला-वनादि तथा योग परस्पर लहकौर खवावना जुवाँ खेलावना इत्यादि सब करवाय पुनः भवनते राम उठाये कोहवर मंदिरते रघुनाथजी आदि चा-रिहू दुलहनको उठाये पुनः शिविका रुचिर पालकी सुंदरिनपर चढ़ाये १ सुहाये सुन्दर चारिहु दूलह दुलहिनिन सहित सुन्दरी पालकिन पर च-ढ़ाय दासी दास साथ चारिहू पालकी उठाय कहारचले तासमयमें देवतन दुंदुभी बजाय पुहुप फूलबर्षे इसभांति दुलहिन सहित चारिहु भाइ रघुनाथ जी जनवासेको आये २ जनवासे देखत मगन दुलहिनिन सहित राज-कुमारन को देखि जनवासे के जन सब बराती प्रेम में बूड़िगये पुनः भूप लखि दशरथ महाराज पुत्र पतोहन को देखि आनंदह्वै द्विरद हाथी हय घोड़े इत्यादि अनेकदान याचकनको दीन्हे सो पाय याचकपोपे संतोषित

भये इत्यादि हास विलास विनोदमय विविध अनेकभांति सुख सबको भया ३ । १५३ ॥

मू० । षटरसचारिप्रकारकेभोजनविविधबनाय । शतानंदआपु हिजनकदशरथचलेलिवाय १ दशरथचलेलिवायपाँवड़ेअर्घसुहाये । मणिसिंहासनरुचिरछरसभोजनपरुसाये २ भोजनपरुसायेमुदिततियगणगानविहारकेमुनिदशरथभोजनकियोषटरसचारिप्रकारके ३ । १५४ ॥

टी० । षट्रस यथा मीठाखट्टा तिक्तलवण अम्लकटुइत्यादि छः प्रकारका जिनमें स्वाद पुनः भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य तिनमें विविध अनेकभांति के भोजन बनाये यथा भक्ष्य में भेद बोंदी लड्डू खुरमाँ पपरी पेराक स-मोसा मठरी गुलावजामुनि गुलगुला खाभा बतासफेनी शक्करपालादि जो चर्बणवत् रूखे होते हैं पुनः भोज्यमें भेद यथा दालि भात खिच्चरी त-स्मईरोटी पूरी मालपुवा अमिरती जलेबी आदि जे रससहित रुखाई लिहेहोते हैं पुनः लेह्यमें भेद यथा दूध दही रावड़ी मलाई हलुवादि जे अधिक रसीले पुनः चोष्यमें भेद यथा सब सालन तरकारी चटनी अचा-रादि इत्यादि अनेकभांतिके भोजन बनायकै तैयारकीन्हे तब शतानंद स-हित आपही जनकजी बरातको जाय भोजन करावने हेतु समाज सहित दशरथ महाराजको लवाय लैचले १ कौनभांति दशरथ महाराज को लवाय लैचले अर्घ अर्थात् आगे सुन्दर सुगंधित जल छिरकत पुनः सु-हाये पाँवड़े अर्थात् सुंदरी विचित्र चांदनी बिछावत जात तापर चलेजात मंदिर पहुँचे पर पाँयधोय मणि जटित सिंहासनन पर यथायोग्य सबको बैठाय पुनः पनवारदै छैयोरसके भोजन परसनलगे २ मुदित आनंद मन ते भोजन परसाये जब जेंवनलगे तब तियगन विहार के गीतगारी आदि गान करनेलगीं इसभांति षट्रस चारिप्रकारके यावत् व्यंजन हैं तिनको मुनिन सहित दशरथ महाराज भोजन किये ३ । १५४ ॥

मू० । पानमानप्रमुदितदयेभयेविदाजनवास । गहमहबाजींदुंदुभीमंगलमोदविलास १ मंगलमोदविलासबरातिनमंदिरभूले । जनकप्रीतिरजसुदृढ़रामछबिपावसभूले २ भूलेगज

यांचकन गृहपहिरिपायमंदिरगये । जानरायरघुपतिसवाह्
पानमानप्रमुदितदये ३ । १५५ ॥

टी० । प्रमुदित आनंद पूर्वक सन्मान आदर सहित सबको पानबीरा दीन्हे तब विदाह्वै जनवासको दशरथ महाराज चले तासमय गहगह दुंदुभी उत्सवभरे गंभीर शब्दते नगारादि बाजाबाजनेलगे तथा मंगल प्रसिद्ध उत्सव मोद मानसी आनन्द इत्यादि विलास सुख सबमें परिपूर्ण हैं १ ऐसा मंगल मोदको विलास है जामें बरातिन मंदिर भूले अर्थात् रघुनंदनके बिवाह को उत्सव देखत संते अंतर बाहेर ऐसाआनन्द परिपूर्ण रहा जाते बरातिनको घरनको सुख तथा घरकोकार्य सबभूलिगया काहेते रघुनाथजीकी छबिसोई पावस वर्षाऋतु है तामें अनेक उत्सव सोई हिंडोलाहै तापर सबके मनआरूढ अरु जनकजीकी जो प्रीति सोई सुदृढ रज्जु सुन्दर पुष्ट रसरीहै ताके बलते सबबराती भूलते हैं अर्थात् ब्याहउत्सव में तौ सबेमगनै हैं परन्तु जब आपने घरकोजानेकी इच्छाकरतेहैं तबप्रीति ते जनकजी राखि छाँड़तेहैं इतिहिंडोरा कैसीपैंग सबके मनझूलि रहेहैं २ पुनः यावत् यांचकरहे तिनके गृह गजभूलत अर्थात् दानमें जो हाथीपाये ते घरमें बांधे भूमि रहे हैं पुनः जरीजामा पाग दुशालादि जो बसन पाये तिनको पहिरि आपने मंदिरन को गये पुनःरघुपति जानराय रघुनाथजी चतुरनमें शिरोमणि हैं ताते प्रमुदित परमआनन्द पूर्वक सन्मान सहित खानपानादि सबहिन को यथोचित दीन्हे ३ । १५५ ॥

मू० । तीनिमासदशरथरहे नितनवआदरहोय । बिदासाजसाजी
जनक सबकोमुखरुखजोय १ सबकोमुखरुखजोय सहस
दशस्यंदनसाजे । मुक्तामणिगणसुपट भाँडकंचनकेराजे २
मणिगणलागेअत्रजेते तेरथपूरेलहे । जनकराजदायजस
जे तीनिमासदशरथरहे ३ । १५६ ॥

टी० । दशरथ तीनिमास रहे अर्थात् कार्तिक कृष्णत्रयोदशीको बरात जनकपुरमें पहुंची अरु पौषशुक्ल दशमीको विदाभई इसहितावते दोमास बारह दिनरही अरु कार्तिक अगहन पौष गने ते तीनि भये ताते कहत बरात सहित दशरथमहाराज तीनि महीना जनकपुरमें रहे तहांदिनप्रति नितनवा आदर होतारहा पुनः सबको मुखरुख जोइ भाव निश्चय बिदा होनेको मुखकी चेष्टा देखि जनकजी बिदाकी साजसजी १ दशरथ कोहेट

विश्वामित्र इत्यादि सबके मुखकोरुख देखि दशसहस स्यंदन दशहजार रथसाजे पुनः मुक्तादि मणिन के गणसमूह पुनः सुपट सुंदर बस्त्र तथा कंचनके भांड सोनेके सबबरतन बिराजमान २ पुनः माणिनके गणजामें समूह लगे ऐसे अत्र सबभांतिके हथियार इत्यादि तें रथपूरे लहे अर्थात् सबवस्तु भरे रथपाये इसभांति राजाजनक दायजसजे तीनिमासदशरथ महाराज रहे पुनः चले ३।१५६॥

मू०। दिग्गजसहसपचासलौंसजेजरकसीसाज। मणिमुक्ताकी
झालरीझपेसोहगजराज १ झपेसोहगजराजजरीजरकसी
अमारी। तिमिरअरुणइकठौरमनोपावसऔंधियारी २
पावसऔंधियारीसघनघंटशब्दसुरबासलौं। जनकरायदा
यजसज्योदिग्गजसहसपचासलौं ३। १५७॥

टी०। दिग्गज पचास सहस बड़े ऊंचे पुष्टांग हाथी पचासहजार तक जरकसीसाजत्तेसजे कैसी जरकसीसाज जामें मणिमुक्तनकी झालरीलगी है ऐसी जरकसी झूलनते गजराजझपे सोहत हाथिनपर दिव्यचमकदार झूलें शोभा देरहीहैं १ जरतारी झूलनतेझपे गजराजसोहत तथापीठिन परजरकसी अमारी कसीहैं ते कैसीसोहत मानौपावस औंधियारी में तिमिर अरुण इकठौर अर्थात् श्यामश्याम समूहहाथी तिनपर मणिमुक्तन युक्तजरकसी झूलें तथाअमारी कैसी शोभा दे रही हैं मानौ पावस वर्षाऋतुकी औंधियारी में तिमिर जो अंधकार तथा अरुण जो सूर्य ते दोऊ एकही ठौरहैं इहांहाथी अंधकार अरु जरतारी सूर्य हैं ये दोऊ एकत्रकबहूं नहीं होतेहैं ताते असिद्ध विषयावस्तु उत्प्रेक्षा लंकारहै २ समूहहाथीसोई सघन मेघनकी तुल्यहैं तिनकी गर्जनसरीखे जो हाथिन के घंटनको जो गंभीर शब्द है सो सुरबास लौं देवनकोबास जो स्वर्गलोक तहांलौं शब्द सुनाता है ऐसे पचास हजार लौं दिग्गज दायज के हेत जनकजी साजते भये ३। १५७॥

मू०। तुरीलाखदशबरसजेबरनबरनकेजीन। रथतुरंगतेअतिभ
लेचंचलसुभगनवीन १ चंचलसुभगनवीन अलंकृतभूष
णराजे। बरननिदरिमनबेगरंगरंगनिबनिसाजे २ बनिबनि

साजेवाजिबर जिनहिदेखिसुरहयलजे । जनकरायदायज सज्यो तुरीलाखदशबरसजे ३ । १५८ ॥

टी० । वरतुरी श्रेष्ठघोड़े दशलाखसजे जिनपर वरनवरनयथा अरुणपीत सेतनील हरित गुलाबीआबीऊदी लाखी मखमलजरी युत रंगरंगकी जीनें कसीहैं ते कैसे घोड़हैं रथतुरंगते अतिभले तुरंगघोड़े जे रथनमेंनड़े हैं तिनते अत्यंत भले कौन भलाईहै एकतौ चंचल दूसरे सुभग अत्यंत सुन्दर तीजे नवीन थोरीउमिरिके १ चंचल सुभग नवीन पुनःभूषणअलंकृत राजे अर्थात् लगाम पूंजी कलँगी जेरबंद हैकल हँवेल सडाके गजगाह दुमची जीनपोस इत्यादि भूषण तिनकरिकै अलंकृत भूपितहैं पुनः बरन अनेक रंगके यथाअबुजाश्यामकर्ण कुम्मैत सुरंग अबलख समुद संदली संजाव सुरखाब समुंद सिरगाचौधरा पचकल्याण नीलाचीना नकुल फुलवारीमुश्कीगरी इत्यादि अनेक बरनके पुनः आपनीवेगके आगे मनकीवेगको निंदा करतेहैं ऐसेरंग रंगके साजेते बनिवनि तयारकीन्हे २ वरवाजि उत्तमघोड़े जे साजे बनिबनि तयार भयेते कैसेहैं जिन्हैंदेखिसुरहय देवनकेघोड़ उच्चैःश्रवादिलजाते हैं इत्यादि राजाजनक जो दायजसज्यो तामें दशलाखवर तुरी उत्तम घोड़े सज्यो ३ । १५८ ॥

मू० । वृषभवृंददशलाखलौ सुंदरसबगुणधाम । शृंगअंगमंडित पुरट सोहतललितललाम १ सोहतललितललाम भरेभोजनपकवानै । सौरभमृगमदमलय अगरकुम्कुमकेथानै २ अगरकुम्कुमारसभरे झपेजरकसीआँखलौ । जनकराय दायजसज्यो वृषभवृंददशलाखलौ ३ । १५९ ॥

टी० । वृषभवृंदबर धनके झुंड दशलाखलौ सजेते सुंदरसबगुणधाम अर्थात् सर्वांग सुठौर बने यथाचौ० ॥ कारिकछोटीसिरेकानु । मोरेमुख ग्रीवालघुजानु ॥ बक्षनितंबायतगोलोदर । पोंगीपूंछस्वल्परोमोपर ॥ श्वेतबरनतनऊंचेकन्धर । सबपुष्टांगवृषभयेसुन्दर ॥ तथा उत्तम गुणनके भरे मंदिर यथा चौ० ॥ शुद्धसभीतनीतिसंभुवार । बलीभारवहतेजसभार ॥ समयस्वामिरुखआज्ञाकार । येगुणधामवृषभनिर्द्धार ॥ पुनःशृंग अंगपुरट मंडित पुरटसोना मंडित भूषित शृंग अंग अर्थात् सींगें सोनेते मढ़ी शोभित हैं तथाललित सुन्दर ललाम भूषण सर्वांगमें भूपितसोहत १ ललित ललाम सोहत पुनः खाझा लड्डू पेराक बोंदी खरमादि पकवान भोजन

हेतभरे जिनपर लदेहैं तथा सौरभ जो सुगंधितवस्तु यथामृगमद कस्तूरा मलय चंदन अगरकुम्कुम इत्यादिके थानै पात्रभरे २ अगर कुम्कुमादि के रससुगंधित जिनमें भरे ऐसे पात्रलदे पुनः आंखलौ आँखिनतक जर-कसी भूलनते सर्वांग झपेहैं ऐसेदशलाखलौ वृषभदायजमेंसजे ३।१५९।

मू० । महिषीलाखसतानवें देशदेशकीखानि । मनोश्यामघनके सुवनमहीचरैंसबआनि १ महीचरैंसबआनिदूधधरनीध सिधारै । शृंगकंठमणिहार शिशुनप्यावतसुकुमारे २ प्या वतसुकुमारैथननिदूधसुधारविधानवें । जनकरायदायज सज्यो महिषीलाखसतानवें ३ । १६० ॥

टी० । सत्तानबेलाख महिषी भैंसी सो मन्दराजी गुजराती भूडभदा-वरि आदिदेश देशनकी खानि और और भांति बनावटकी न्यारी न्यारीते श्यामपुष्टांग ऊंची कैसी शोभित होती हैं मनौ श्यामघनके सुवन करिया बादरनके बच्चा समूह आकाशते उतरि आय सबमही पृथ्वीपर चरतेहैं १ यथामेघनकी जलधार भूमिपर गिरततथा ये जो महीपर आनि सबचरत तिनके दूधकीधार जो वेगते छूटतसो धरणी पृथ्वीमें धसिजात शृंगैंसोनेते मढ़ीकंठमें मणिनकेहार पहिरे सुकुमारे शिशुथोरी उमिरिके बच्चनको दूध प्यावतीहैं २ सुकुमारे बच्चनको प्यावती हैं ताते वैनाम निश्चय करिकै थ नननते सुंदरे दूधके धारनके विधान होतेहैं अर्थात् दूधतौ अधिक अरु शिशु सुकुमार बहुत पीनहीं सक्ते हैं अरु भैंसी पन्हानी तौ एक में बच्चा पीवत तबतीनि छातिनते दूधधार जो छूटतसो भूमिपै गिरतऐसी महिषी सत्ता नबेलाख दायजहेत जनकराय सज्यो ३ । १६० ॥

मू० । धेनुलाखयुगबानवे कामधेनुसीरूप । अलंकारमणिगणव सन सोहतपरमअनूप १ सोहतपरमअनूप दूधसूधीसुठि लूरी । संगशिशुनकेवृंद सकलशुभलक्षणपूरी २ पूरीछवि कोकोकहै ज्योंहिदेख्योस्वइजानबै । जनकरायदायजसज्यो धेनुलाखयुगबानवे ३ । १६१ ॥

टी० । बान्नबेलाख पुनः बान्नबेलाख इत्यादि युगनामदो बान्नबेलाख अर्थात एक करोर चौरासीलाख धेनु गऊवैं कैसीहैं कामधेनुसी रूप

बाँछित फलदायक पुनः मणिगण अलंकार समूह मणिनके भूषणनकरिकै भूपित अरु सुन्दरे बसनकीभूलैंपरीं ताते परमअनूप उपमारहितसोहत१ काहेते उपमारहित सोहत दूधतौ मनबाँछितदेत अरु सूधी पुनः सुठिरूरी अत्यंत सुन्दरी तथा शिशुनके वृन्दथोरी उमिरिके बछिया बछवनकेभुण्ड संगमें इत्यादि शुभलक्षणनतेपूरीभरीहैं२जिनमें भरीपूरीछविहै ताकोऐसो को कविहै जो कहिसकै कोऊ नहीं कहिसक्ता है काहेते वैनाम निश्चय करिकै सोई जानै जो ज्यहिने आपनी आँखिते देख्योहोइ सोई कहिसक्ता है इत्यादि युगबान्नबे लाख धेनु दायजहेत सज्यो ३ । १६१ ॥

मू० । शिविकालाखबहत्तरी सियदासीअसवार । मनहुँकामतिय रतिचढ़ीं करिषोड़शशृंगार १ करिषोड़शशृंगारजानकी पियअधिकारी। मनगतिरतिपरवीनचतुरविद्याछविभारी२ बिद्याछबिसतभावउरसियसेवाउनमत्तरी । दासीदायजनृ पसज्यो शिविकालाखबहत्तरी ३ । १६२ ॥

टी० । बहत्तरिलाख शिविकापालकी सजाये तिनपर जानकीजीकीदासी असवारभईंते कैसी शोभा दैरहीहैं यथाषोडश सोरहौशृंगार यथाउवटन१ मंजन २ बसन ३ जावक ४ केशसँवारन ५ सिंदूर ६ चन्दनलेप ७हाथमें मेहँदी ८ अरगजा ९ बेसरिआदि बारहौ भूषण १० फूलहार ११ सुगंध १२ मीसी १३ तांबूल १४ अंजन १५ चातुरी १६ इति सोरहौ शृंगार करिमानौ कामकी तियारति पालकिन पर चढ़ीं १ षोड़शशृंगारकिहे अत्यन्त स्वरूपवंत पुनः गुणवंत उत्तमकैसी हैं जानकी पिय अधिकारी श्री जानकीनाथ के सेवाकी अधिकारी हैं कौनभांति जिनमें भारी छवि पुनः सब बिद्यामें चतुर अरु रति जो प्रीति तामें ऐसी परवीनहैं यथा मनकी गति यथा देहइन्द्रियके सुखहेत मन अनेक उपाय बाँधाकरत अर्थात् श्री रघुनंदन जनक नंदिनीके परस्पर सुख पूर्वक प्रीति बढ़ावने हेत अनेक उपाय करनहारी हैं २ छबिविद्या सतभावउर सिय सेवा उनमत्त अर्थात् तनमें छवि यथा मुग्धावस्था गौरवर्ण सर्वांग सुठौरबने भूषण बसन सजे पुनः बचन कर्ममें विद्या यथा गान वाद्य कोक कला हावभाव नृत्य कौतुक कैंकर्यतासाज इत्यादिमें परमचतुर पुनः उरमेंसतभाव मनमें साँचीप्रीति ताते जानकीजी की सेवामें उनमत्त भाव सेवा आठौयाम करती हैं दूसरी बात जिनको नहीं सुहाती है बियोग एक पलक को नहीं सहिसक्ती हैं

ऐसी दासी दायजनें दिये तिनके असवार होनेहेत बहुनरिलाख शिविका पालकी महाराज सज्यो ३ । १६२ ॥

मू० । सवालाखपिंजरसज्यो कंचनखँचितबिचित्र । शुकशारिका मरालबहु कुहीबाजशुचिमित्र १ कुहीबाजशुचिमित्र सिया रुचिकैप्रतिपाले । तेसेवकसबलिये जानकीसेवनवाले २ सेवनवालेभागबड़ जगतजननिज्यहिजगसृज्यो । तासु संगयहकौनबड़ सवालाखपिंजरसज्यो ३ । १६३ ॥

टी० । कंचन खचित बिचित्र सवालाख पिंजर सज्यो सोनेके सलाकन करिकैरचित चित्रबिचित्र पिंजरा एकलाख पचीसहजारसज्योजिनमें शुक सुवा शारिका मैना मराल हंसइत्यादि बहुत पक्षी पालेहैं तथा कुही बाज इत्यादि शुचिपवित्र मित्रहैं भाव इच्छापूर्वक कामकरते हैं १ शुचि मित्र कुही बाजादि जिनको आपनी रुचिते जानकीजी प्रतिपालेप्रतिदिन खान पानादि दिवावती रहींते पक्षिन को ते सेवक हाथनमेंलिये जे सब जानकीजीकी सेवा करनेवाले हैं २ कविकी उक्ति जे जानकीजीकी सेवा करने वाले हैं तिनकी बड़ीभारी भाग्य है काहेते ज्यहि जगसृज्यो संसार को उत्पन्नकियो ऐसी जगत जननीकी सेवाको प्राप्तभये ताते बड़ीभाग्य वालेहैं तिन जानकीजीके संग यह कौन बड़ा बिभव है जो सवालाख पक्षिनके पिंजरा साजे ३ । १६३ ॥

मू० । ऊंटअजाअरुश्वानको लेखागनोंसिराय । जेप्रियसियके नृपलख्यो नगरबाहरेजाय १ नगरबाहरेजाय मनहुँअम रावतिघेरी । दुंदुभिदयेसहस्र छत्रअरुचमरघनेरी २ चम रघनेरीभवनपट आसनविविधविधानको । दायजदियोन येगने ऊंटअजाअरुश्वानको ३ । १६४ ॥

टी० । ऊंट अजाछेरी श्वानकुत्ता इत्यादिको लेखा कौन चहौ तौ गने नहीं सिरातजेते दीन्हे काहेते जे जीव सियके प्रियनृप लख्यो जिनको जनकजी जानेकी जानकीजीको प्यारे हैं तिनसवको दैदीन्हेतेई हाथीघोडा रथ गाई भैंसी ऊँट कुत्तादि जाय नगरके बाहेर ठढ़िआयेगये १ जाय नगरके बाहेर कैसे शोभितहोते हैं यथा अमरावति इंद्रपुरी ऐश्वर्य करिकै घेरीहै सहस्र कहे हजारन दुंदुभी नगारादिदये तथा घनेरी बहुत छत्रचमर

दीन्हे २ यथा बहुत चमर छत्रादि तथा पटभवन तंबू कनात नासियाना आदि तथा विविध अनेक विधानके आसन जाजिम कालीन तोनक मसनदादि तथा ऊँट छेरी कुत्तादि यावत् दायजदिये सो सब ये नहींगने इनकी संख्या प्रसिद्ध नहींकहे असंख्यहैं ३। १६४ ॥

मू० । रानिनसुतासँवारिकै करुणासींखसुनाय । पतिव्रतधर्महि दृढ़धरयहु सेयहुसहजसुभाय १ सेयहुसहजसुभाय होहु नितस्वामिहिप्यारी । सदासुहागिनिहोहु यहैआशिषाहमारी २ यहैआशिषादोहिंहम सुताअंकउरधारिकै । भेंटिभेंटि पांयनपरैं रानीसुतासँवारिकै ३ । १६५ ॥

टी० । सुता पुत्री जानकीआदि तिनकोसँवारि शृंगारकरि भूषणपहिराय पुनः सुनयनाआदि रानिन करुणा वियोग दुःखवश सीखसुनाय क्या सिखावन सुनावती हैं हेपुत्री पतिव्रत धर्महि दृढधरयो पुष्टधारणकिहेउ पुनः सहजस्वभावते पतिको सेयहु अर्थात् केवल पतिनको ईश्वरमानि सहजस्वभावते मन बच क्रमते सदा सेवामें तत्पररहेउ १ सहजस्वभाय ते पतिको सेयहु इति सिखावनदीन्हे पुनः आशीर्वाद देत यथा आपने स्वामिनको नित्यही प्यारीहोहु तथा सदा सुहागिनीहोहु अर्थात् अनुकूल पति सहित तुम्हारा सुहाग अचलरहै यह हमारी आशिषा आशीर्वादहै २ सुता अंक उरधारि पुत्रिनको अँकोरामेंबैठारि माताकहती हैं हेपुत्री यही आशीर्बाद हमदेतीहैं सदासुखी सौभागिनीरहो इत्यादिसुता सँवारिकै पुनः रानी भेंटिभेंटि पांयनपरैं भाव माधुर्यमें वात्सल्यरसते वारंवार भेंटती हैं तथा जबऐश्वर्य बिचारतीहैं तबपांयनपरतीहैं यहशांतरसतेहोत ३।१६५ ॥

मू० । जनकनयनधाराबहै सुतालियेउरलाय । सियकंठाछोड़त नहीं जनकनत्यागीजाय १ जनकनत्यागीजाय सचिवस मुभ्कावतराजै । धीरजधर्मपरान ज्ञानगुणध्यानसमाजै २ ध्यानसमाजनलाजरह छुटतलगतरोवतगहै । मातुगरेपुनिपितुगरे जनकनयनधाराबहै ३ । १६६ ॥

टी० । प्रेम करुणाबशते जनकजीके नयननमें आंसुनके धाराबहै सुता लिये उरलाय सनेहबशते पुत्रीको उरमें लगायालिये तथा सीय जानकी जी मिलतसमय पिताकेकंठते आपनाकंठ नहींछोड़ती हैं तैसे जनकजीते

भी पुत्री त्यागीनहींजात नहीं छोड़िजात१ जनकजीते तौ पुत्री त्यागिनहीं ज्ञात अरुसचिवमंत्रीलोग सबमहाराजकोससुभावतेहैं ताहूपरनहींछाँड़त काहेतेज्ञानके यावत् गुणअरु ध्यानकीसमाज पुनः धीर्यधर्म इत्यादिपरान भावसिय रघुवर सनेहकी प्रबलताते डराय सबभागिगये यथा सबल वि-रोधी शत्रुकोदेखिकोऊभागै तैसा इहां न समुझना इहां ऐसासमुझनाचा-हिये यथा सबलशत्रुकीभयते कोऊअबलआपनीसहायहेतुछोटेनकोटिका-येहोइताहीके सहायहेतकोऊ महासबल आयगया ताकी बड़ी ऐश्वर्यदेखि आपनी लघु ऐश्वर्य को संकोचमानि आपनी अबलताते बिनाभयकी भयमानि सजातिभी भागि जातेहैं वाकी बास सावकाश देनेहेत तथा इहां मोह शत्रुकी भयते अबलजीव आपनी सहायताहेत धीर्य धर्म ज्ञान ध्यानादि टिकायेरहा जब सियराम सनेह महा सबलजीवको सहायक आया तब याको बास सावकाश देवेहेत अबल धीर्यादि भागिगये तहां काम क्रोधादिके बेगमें मनुनपरै ताको धीर्यकही तथा सत्यशौच तप दा-नादि जहां पूरेहोयँ ताको धर्मकही पुनःलोक सुखको तुच्छ जानना सो विरागहै तथा देह व्यवहार असार आत्मरूप सार जानना ताको विवेक कही तथा मेरी मुक्ति निश्चय होवै यह मुमुक्षुताहै वासना त्याग शम कही इंद्रियविषयते रोकना ताकोदमकही विषयतेपीठिदेना उपरामकही दुःख सुख समजानना तितिक्षाकही शास्त्र वचनमें विश्वास श्रद्धामनादि थिररखना समाधान है इत्यादि सबज्ञानके गुणहैं पुनःध्यानकी समाज यम नियमादि अष्टांग योगहै इत्यादि सब विदेहजी में परिपूर्णरहैं जब सियराम सनेह उरमें परिपूर्ण भया तब धीर्यादि निसरिगये अरु मोह दल इसीकोताबेदारभया अर्थात् पुत्रादिकन पर अत्यंतसनेह होना सोई मोहहै अरु ईश्वरपर अत्यंत सनेहहोना अनुराग है तहां जो पुत्री या-मातृ भावते अत्यंत सनेहरहा ताही में जब ईश्वर मिला तबवही मोह अमल अनुराग ह्वैगया तबज्ञान ध्यानादिको अंतरमें रहने को ठौरहीनहीं रहा ताते निसरिगये २ ध्यानादितौ निसरीगये पुनःपावन प्रेमते लोक लाजभी नहींरही ताते छूटतीहैंतौ पुनः अंगमें लागत काहेते जानकीजी छूटिकै पुनः रोवतगहै कौन भांति माताकेगरे पुनः पिताकेगरे ताहीते जनकजीके नयननते आंसुनकी धाराबहत ३ । १६६ ॥

मू० । बिदाहेतरघुबरगयेजनकरायकेधाम । शानिलखिआसन

दियोकीन्हेरामप्रणाम १ कीन्हेरामप्रणामकहतम्रदुवचन
सुहाये। बिदादीजियेमातुनृपतिचहअवधसिधाये२ अवध
सिधायेसुनतनृपरानीमुखसूखतभये। वचननमुखपंकजक
ढ्योबिदाहेतुरघुवरगये ३ । १६७॥

टी०। रघुबर बिदाहेतु रायजनकके धामगये सालुनते बिदामांगनेहेतु सब भाइन सहित श्रीरघुनाथजी राजाजनकके रनिवास मंदिरकोगये तिनको लखि देखिकै सुनयना आदि रानिन आसनदियो सिंहासनपर बैठने कहे अरु राम प्रणामकीन्हे रानिनको भाइन सहित रघुनाथ जी हाथजोरि प्रणामकीन्हे १ रघुनाथजी प्रणामकरि बैठे पुनःसुहाये मृदुवचन कहत श्रवण रोचक कोमल वचनते कहत हे मातु नृपति अवध सिधाये चाहत तातेबिदादीजिये भावहमनहीं बिदामांगनेकी इच्छाकिहेरहैं परंतु पिताके आधीनहैं ते महाराज अवअयोध्याजीको चलाचाहतेहैं तो हमकोभीजाना अवश्यहै ताते हमकोभी बिदादीजिये२ नृपतिअवधसिधाये ऐसासुनतही रानीमुख सूखतभयो अर्थात् कोशलेश महाराज अयोध्याजीको सिधावा चाहते हैं हमकोभी बिदादीजिये इत्यादि विभाववचन रघुनाथजीके मुख ते सुनतही करुणारस आयगया शोक स्थायिते सुनयनादि सब रानिन को मुख सूखिगया मुखपंकजते वचन न कढ्यो अर्थात् यथा निशाकाल कमल बंदह्वैजात तामेंपरि भ्रमर नहीं कढ़िसकत तथा जब बिदाहेतु रघु-नाथजीगये तब वियोग निशापाय रानिनको मुख कमल बंदह्वैगया वचन भ्रमर न कढ़े ३ ।१६७॥

मू०।रानीरघुबरपाँयधरि कहतबचनभरिनयन । तुम्हैंकहतमु
नियोगिजन घटघटतुम्हरोअयन १ घटघटतुम्हरोअयन
सकलगतिजाननवारे। दीजियअभुवरयुगल प्यासयहहद
यहमारे २ हृदयहमारेतुमवसौकहौंदूसरोविनयकरि।सुता
किंकरीराखिये रानीरघुबरपायँधरि ३ । १६८ ॥

टी०। रानी रघुबर पांयधरि नयनभरि वचनकहत श्रीरघुनाथजीके पायँपकरि भाव ईश्वरजानिपायँगहे पुनः वात्सल्यरसते शिशुमानि वियो-गतेकरुणाभईताते नेत्रनमेंआंसूभरे गद्गदवचनकहतहेरघुनंदन तुम्हेंमुनि योगिजनलोमशयाज्ञवल्क्यादि परब्रह्मकरिकहतेहैं तातेघटघटतुम्हरोअयन

घरहै भावसब घटव्यापकहौ १ जो घटघटमें तुम्हारोबास है तौसकलगति जाननवारेहौ सबके बाहर भीतर की गति जानतेहौ हे प्रभु हमारे भी हृदयमें कछु प्यासहै ताते बरयुगल दोवरदानदीजिये २ क्याबरदानदीजियएकतौ हमारे हृदयमें तुमसदाबसहु पुनः बिनय करि दूसरो भी कहती हौं सुता किंकरी राखिये हमारी पुत्रिनको दासीकरि राखिये भाव कृपा दृष्टि पालन कीजिये ऐसाकहि रानी रघुनाथजी के पांयनपरी३।१६८॥

मू०।करिप्रणामरघुपतिचले रामसहितसबभाय । सुताचढ़ाईं पालकी सुंदरसीखसिखाय १ सुंदरसीखसिखाय भूपपहुँचावनआये । दुंदुभिदीनबजाय मुनिनदेवनगुणगाये २ गुणगायेपायेसबनि सगुनसुहावनअतिभले । समधीभेंटि प्रणामकरि करिप्रणामरघुपतिचले ३ । १६९ ॥

टी० । सबभाय सहित रामरघुपति भरतलषण शत्रुहनसहित रघुबंश शिरोमणि श्रीरामचन्द्र भावउत्तमकुल में भी परमोत्तम धर्मनीतिमय अमलयश प्रकाश करनहारे श्रीरघुनन्दन सासुनको प्रणामकरि बिदा ह्वै बरातकोचले ताही समय सुनयनादि रानिन सुन्दर सीखसिखाय सुता पालकी चढ़ाईं अर्थात् उत्तम कुलकी रीति पातिव्रत धर्म इत्यादि उत्तम सिखावनदै पुत्री जानकी आदिकन को पालकीनपर चढ़ाय बिदा कीन्हे १ तैसेही सुन्दर सिखावन देतसंते भूपजनकजी पहुंचावनहेतु पालकिन के साथही चले आये जासमयबरातचली तबदुंदुभी नगारादिबाजाबजाय दीन पुनः कश्यपादि मुनिन ब्रह्मादि देवतन प्रभुके गुणगावनेलगे २ देवादि गुणगाये सोई परममंगलकारीहै पुनः पयानसमय अतिभले सुहावन सगुनसबनिपाये अर्थात् लोवा नकुल चाख मृग भुंडादि अत्यंत भले हैं तथा पुस्तक सहित विप्रवेदाभ्यासी सघट सबाल सौभागिनी भूषित स्त्री इत्यादि सुहावन सगुन भये समधी दशरथजी को प्रणाम करि उरमें लगाय भेंटि बिदाकरि जनकजी खड़ेभये तब भाइन सहित जनक जी को प्रणाम करि भेंटि आशिष आयसुपाय रघुनाथजी बिदा ह्वै चले ३ । १६९ ॥

मू० । अवधपांचयेंदिनगये बसिबसिसकलसुवास । पुरप्रमोद आवतसुने रहसविवशरनिवास १ रहसविवशरनिवास प

हिरिशृंगारनरानी । आरतिमंगलसाजि गीतगावहिंमृदु बानी २ बानीमंगलसजिसवैकलशचौकचामरनये । अवध नाथसुखकीअवधि अवधपांचयेंदिनगये ३ । १७० ॥

टी० । सकल सुबास वसि वसि पँचयेंदिन अवधको गये मार्ग में सुन्दरसुपास ठौरनमें सुखपूर्वक वासकरत संते चले ते पँचयेंदिन दशरथ जी अयोध्याजीकोगये निकट पहुंचे पुरजन सुने कि चारिहु पुत्रनसहित पतोहन आनन्द पूर्वक महाराजआवते हैं इति आवतसुने ताते पुरप्रमोद अवधपुरमें परमआनन्दभयो अरु रनिवास कौशल्यादि रहसविवश रहस एकांतिक परमगुप्तआनंद ताकेविशेष्यवशहैं १ रहसविवश अर्थात् पुत्रपतो हनके विलास आचरण देखनेकी जो अभिलाष है ताको आनन्द परि- पूर्णहै पुनः दिव्य बसन भूषणादि शृंगारनको पहिरि पुनः कौशल्यासुमि- त्रा कैकेयी आदि सबरानी कंचन थारनमें माणिकदीप दधि दूर्वा हरदी फूलफल तुलसीदल अक्षत सिंदूर रोरी सोनामणि मुक्तादि मंगलपदार्थ युतआरती साजि मृदुबाणीते मंगलगीत गावती हैं २ मृदुवाणी ते मंगल गान करतीहैं पुनः नवीन चमरमोतिनकी चौकै कंचन कलश दीपपल्लव बंदनवार ध्वजा पताकादि सबै मंगलसाजसाजे तासमय सुखकी अवधि मर्यादाभाव जिनमें परिपूर्ण सुखकी हदहै ऐसे अवधनाथदशरथ महाराज अवधपुरके पास पँचयेंदिनगये पहुंचे ३ । १७० ॥

मू० । परिछनकरिभीतरगईं पुत्रबधूसुतसाथ । मंगलमोदसमाज युत आयेकोशलनाथ १ आयेकोशलनाथ पुरीहर्षितनर नारी । पुत्रबधूसुतदेखि मगनतनमनमहतारी २ महतारी वारहिंसुभग भूषणपटमणिगणमई । सुभगासिंहासनचारि धरि परिछनकरिभीतरगईं ३ । १७१ ॥

टी० । सुत पुत्रनकेसाथ पुत्रवधुनको परिछनकरि कौशल्यादि माता मंदिरके भीतरगईं इसभांति मंगलप्रसिद्ध उत्सवसहित तथा मोदमान- सी आनंदसहित समाजयुत अर्थात् सब समाजसहित मंगल मोदपूर्वक कोशलनाथ दशरथजी आये १ कोशलनाथ आनंदपूर्वकआये ताते पुरीके नर नारी हर्षित परम आनंदभये अरु पुत्रवधू सुतदेखि महतारी तनमन मगन अर्थात् यथा उत्तम गुणनयुत सुंदर पुत्र तिनकी यथायोग्य परमो-

त्तम अत्यंत सुंदरी पतोहैंदेखि कौशल्यादि माता तन मनते प्रेमानंद में बूडीहैं २ महतारी प्रेमानंदवश मणिमय सुभग भूषण तथा पट जरवफ्तादि वारहिं निवछावरि करतीहैं इसीभांति परिछनकरि भीतरकोलवायलैगईं तहां सुभग मंगलीक चारि सिंहासनधरि तापर पतोहन सहित पुत्रनको बैठाये ३ । १७१ ॥

मू० । मुनिनायकजोजोकहेउ सोसोकरिव्यवहार । दानदीनविप्र नमुदित भरिभरिकंचनथार १ भरिभरिकंचनथारभामिनी मंगलगावैं । रानीभूषणदेहिंसकलआशिषासुनावैं २ आशिषदेहिंसनेहभरिशंभुउमापरसनरहेउ । रामभायदशरथ सुखद रहैंसदामुनिजोकहेउ ३ । १७२ ॥

टी० । गठिबँधन कुलदेवादि पूजन जुवांखेलावनादि जो जो उपाय मुनिनायक वशिष्ठजीकहे सो सब व्यवहार कुलरीति लोकरीति सबकार्य करि पुनः कंचन सोनेके थारनमें मणि मुक्तादि भरि भरि मुदित आनंद सहित विप्रनको दानदीन्हे १ कंचनथार मणि मुक्ताभरि ब्राह्मणनको दीन्हे तथा जे भामिनी स्त्रीगण मंगलगावैं तिनको रानी सोनेके मणिजटित भूषण देतीहैं तेस्त्री विप्रादि सकल आशिषा आशीर्वाद सुनावतेहैं २ सनेह भरि रामसनेह उरमें परिपूर्णभरे आशीर्वाद देतेहैं कि शम्भु उमा परसन रहेउ हे शिव पार्वती दशरथ महाराजके परिवार पर प्रसन्न रहेउ सदाकल्याण किहेउकौनभांति यथापूर्व वशिष्ठादिमुनि कहेउहै तथाभाइन सहित रघुनंदन रानी पतोहन सहित दशरथ महाराज सदासुखद औरहू को सुखदेनहारे बनेरहैं ३ । १७२ ॥

मू० । रामबिवाहबखानईमोदसमुद्रउछाह । नारदशारदशेषशुक गणपतिकोअवगाह १ गणपतिकोअवगाहव्यासविधिक हिकहिहारे । मतिअनुरूपबखानिभजनकोभावविचारे २ मतिअनुरूपबखानिकैंगिरासफलनिजुमानई । तुलसिदास केकौनमति रामबिवाहबखानई ३ । १७३ ॥

इति बालकाण्डः समाप्तः ॥

टी० । मोद मानसी आनन्द तथा प्रसिद्ध उत्साह इत्यादि समुद्रसम अप्रार है सो रघुनाथजी के विवाह को मोद उत्सवको वखान करि सक्ता है काहेते नारदादि मुनि शारदादि विद्वान् शेषादि कवि शुकदेवादि परम हंसगणपतिआदि बुद्धिवंत समर्थ देव इत्यादिकन को कहिवे में अवगाह है थाह नहीं पायसक्केहैं १ यथा गणपति आदिको अवगाहहै तथा व्यासादिक बिबिध ब्रह्मादि आचार्य सृष्टिकर्त्ता तेऊ रामचरित कहिकहि हारि गये परन्तु भजनको भाव विचारे अर्थात् श्रवण कीर्त्तनादि भक्तिके अंगहैं ऐसा बिचारि मति अनुरूप वखानि जो कछु बुद्धिमें आया सो वखान कीन्हे २ आपनी मतिकीअनुरूप चरित वखानकरिकै निज गिरा आपनी बाणीको सफल करि मानते हैं कछु अंत पावनेहेतु नहीं तौ जो ब्रह्मादिकनको गति नहींहै तौ तुलसीदासके कौन मति कहा उत्तम बुद्धिहै जो रघुनाथजी को बिवाह वखानकरै ताते आपनी वाणीसफल होनेहेत मति अनुरूप महूंकह्यो ३ । १७३ ॥ कुं० ॥ ताकेकीन्हेकार्यवावारनिाउकहार । हारसुगुहिपहिरावतीकीन्हेसकलसिंगार ॥ कीन्हेसकलसिंगारकीनयुवती जेपरिछन ।। क्षणप्रतिसुनेजुबैनधन्यतेधन्यसवैजन ॥ वैजनाथतेधन्य प्रेम भरिगायकताके । केनधन्यसुनिचरितब्याहराघवसीताके ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागत वैजनाथ विरचितेकुण्डलिकाप्रदीपिकायांवालकाण्डःसमाप्तः ॥

अथ अयोध्याकाण्ड प्रारंभः ॥

कुंडलिया ॥

मू० । अवधअनंदप्रबंधसुख दिनदिनअतिअधिकाय । जबते रामबिवाहकरि आयेकोशलराय १ आयेकोशलरायभुवन सबआनँदभूरे । ऋधिसिधिसंपतिनदी अवधसागरभरि पूरे २ सागरसप्तसमानलौ गयोशोकअरुदोषदुख । अमरपुरीअहिपुरधरणि अवधिअनंदप्रबंधसुख ३ । १ ॥

टी० । दो० गुरुपदपद्मप्रणामकरि सियरघुबरउरधारि । तिलकअयोध्याकांडकृत निजमतिकी अनुहारि ॥ आनन्दको प्रबंध आदि कारणअयोध्याजी में उत्पन्नहोतरहत ताते दिनदिनप्रति अत्यंतसुख अधिकातजात भावसदा उत्सव बनारहत कबते जबते भाइन सहित रघुनाथ जी को बिवाहकरि कोशलराय दशरथ महाराज अयोध्याजीको आये १ जबते कोशलराय पुत्रनको बिवाहि पतोहुन को लैकै आये तबते सब भुवन आनन्दरूप जल करिकै भूरे ह्वैगये भाव सर्वत्रकी आनन्द वटुरिइहैं को चलीआई कौनभाँति ऋद्धि जो घृत दुग्ध शर्करान्नादि समूह तथा सिद्धि अणिमादिक तथा संपति यथाचांदी सोना माणि मुक्तादिसमूह धनइत्यादि ऋद्धि सिद्धि संपतिआदि नदीसमसर्वत्रतेचलीआवतीहैं तिनकरिकैअवध सागरभरिपूरे अयोध्यारूप समुद्र ऋद्धि सिद्धि संपति आदिकनते भरिकै परिपूर्ण ह्वैगया तहां समुद्र अधिक बढ़त तब बहुतदूरितक प्रवाहबोरि डारत २ इहां भूतलमें अयोध्यारूप समुद्र उमगो तब आनन्दरूप जल भूतल भरेमें फैलिगयो ताते सप्तसागर प्रमाणलौं शोक अरुदोष दुखगये अर्थात् सातौसमुद्र यथा लवण सिंधुते क्षीरसागर पर्यंत यावत् सातौद्वीप की भूमिहै तहांतक यावत् बासीजन हैं तिनकेशोक यथाहानि वियोग भयादि तथादोष पापकर्मनकी जो संचयरही तथा दुखयथारुज दरिद्रता वृथा दंड इत्यादि नाश ह्वैगये सब आनन्द शुद्ध राम सनेही परमपदके अधि-

कारीभये तथा अमरपुरी देवनकीपुरी अहिनागनके पुरपातालादि तथा धरणि भूतल सब इत्यादि अयोध्याके आनंद प्रबंधते सबैलोकनमें सबको सुखहै ३।१॥

मू०। दशरथभागसराहईसुरमुनिवरनरनारि। धर्मधुरीणप्रताप निधि जिनपायेसुतचारि १ जिनपायेसुतचारिजासु यश वरणिनजाई। श्रीरघुपतिमुखदेखि हर्षअतिलोगलुगाई २ लोगलुगाईगुणगनत शारदसोसुखचाहई। पुरीभागअनु रागसुर दशरथभागसराहई ३।२॥

टी०।सुरदेवता ब्रह्मादि मुनि नारदादि नरनारी लोकजन इत्यादि सब दशरथ महाराजकीभाग्यको सराहई सबप्रशंसाकरते हैं क्याप्रशंसाकरते हैं किजिनचारिसुतपाये तेकैसे हैं धर्मधुरीण तथा प्रतापनिधि अर्थात् चारिहुपुत्र एकतेएक अधिक धर्मकीधुरी धारणकरबे में सबल श्रद्धावंतभाव सत्य शौच तप दानादि धर्मधुरीण रघुनंदनस्वामि विभवरक्षामें धर्मधुरीण भरतस्वामिसेवकाई धर्मधुरीण लक्ष्मण रामभक्तनकीसेवकाई धर्मधुरीण शत्रुहन तथा जिनको सबै डरत ऐसेप्रतापभरेस्थान १ ऐसेचारिपुत्रपाये जिनको ऐसा बड़ायश जो वरणिनजाई कोऊकहि पार नहीं पावत पुनः माधुर्यरूपमें शोभाऐसीहै कि रघुपतिको मुखदेखिलोग लुगाई सबकेमन में अत्यन्त हर्ष होत देखे तृप्तनहीं २ प्रभुकी माधुरी देखि तृप्तनहींहोत पुनःशील सुलभ उदारतादि गुणनको गनत सदा सराहना करतेहैं जो माधुरी अवलोकन सुख पुरजनकोहै सोई सुखकीचाह शारदा करती हैं भाव प्रभुके दर्शनहेतु आवती हैं तथा सुर ब्रह्मादिक अनुरागसहित अवधपुरीकी भाग्य तथा दशरथजी की भाग्यकी सराहना प्रशंसा करतेहैं कि महाराजधन्य हैं ३।२॥

मू०। नृपसोंविनयसुनायकैकेकयसुवनसप्रीति। भरतहेतुविन तीकरी कहिमृदुवचनविनीत १ कहिमृदुवचनविनीतदि वसदशरहैंगुसांई। मुनिहुकहेनृपपाहिभूपपठयेद्वउभाई २ मुनिरुखतेआयसुदियोभरतउठेशिरनायकै। केकयसुतलै भरतसँगनृपसोंविनयसुनायकै ३।३॥

टी०। कैकेयीके पिता राजाकेकय तिनके सुवनपुत्र युधाजित्नामेते

सप्रीति नृपसों विनय सुनाय अर्थात् दशरथ महाराजते युधाजित् हाथ जोरि बोले कि हे राजन् हमारे समीप सबलदुष्टबसते हैंते बड़ादुःखदिहे हैं इसहेतु आपुसों कछु अर्ज करेंगे इत्यादि पूर्व नृपको विनय सुनाय कै प्रसन्न मनसन्मुखकरि तब मृदुबचन बिनीत कोमल वचन नम्रतासहित कहि भरतको लैजानेहेतु बिनतीकरी भाव जो भरत शत्रुहनको हमारेसाथ पठावोते येदुष्टनको मारें तब हम स्वतंत्रहोवें १ कैसे नम्रतापूर्वक कोमल बचनकहे कि हेगोसाईं भाव आपु चक्रवर्ती लोकभरके रक्षाकरनहारेहौ ताते हमारीभी रक्षाकरौ इसहेतु भरतको पठावो दशदिवस उहां रहैं तासमय मुनिहुकहेउ नृपपाहि वशिष्ठ वा जे देशांतरी मुनिजन आये रहैं तिनहूंकहे कि हेनृप दशरथजी यहभये हमलोगनकीभी यामें रक्षा है ताते यहकार्य अवश्य कीजिये अर्थात् वेदुष्ट मुनिनके शत्रु हैं तिनकोमारि हमारीभी रक्षाकीजिये २ मुनिरुखते अर्थात् मुनिनकी इच्छाहै कि भरत उहांजायँ इत्यादि विचारि महाराज आयसुदियो भरतको आज्ञादिये कि जाउ सोसुनि भरतजी शिरनाय प्रणामकरि उठे चलैकी साजसाजे इत्यादि नृपसों बिनयसुनायकै भरतकोसंगलै केकयपुत्रयुधाजित्चले ३।३॥

मू०। बिदारामकेचरणधरिभरतशत्रुहनभायमातुगुरुभ्रातानृप हिचलेसबहिशिरनाय १ चलेसबहिशिरनायसुभटसेनासँ गलीन्हे । श्रीरघुपतिपदकमलहृदयमनमधुकरकीन्हे २ म नमधुकरपदकमलरतिसुमिरतनामसनेहभरि । धन्यभरत भूतलभयेबिदारामकेचरणधरि ३ ।४ ॥

टी० । भूपकी आज्ञापायकै भरत शत्रुहन दोऊभाय रघुनाथजीके चरण हृदयमें धरि बिदाभये कौनभांति मातु गुरु भ्राता नृपहि इत्यादि सबहि शिरनाय अर्थात् प्रथम कौशल्यादि मातनको प्रणामकरि पुनः गुरु वशिष्ठकोभ्राता श्रीरघुनाथजीको नृपदशरथजीको इत्यादि सबकोप्रणाम करि चले १ सबहि शिरनायचले अरु सुभट सुंदर बीरबली योधा चतुरंगिनी सेना संगमेंलीन्हे पुनः श्रीरघुनाथजी के पद कमल हृदयमें धरे तिनकेबिषे आपनामन मधुकर भ्रमरकीन्हे अनुरागरस पान करते हैं २ श्रीरघुनाथजीके पदकमलनकी रति प्रीतिरस में आपनामन भ्रमरकीन्हे पुनः सनेहभरि परिपूर्ण सनेह सहित रामनामको सुमिरणकरत जातेहैं

ताते भूतलविषे भरतजी धन्यहैं जोरघुनाथजीके चरण हृदयमेंधरि विदा भये ननेउरेको चले ३ । ४ ॥

मू० । नारदआयेअवधपुररामचरितहितजाहि । प्रेमनेमजाके अवधिरामरूपउरमाहि १ रामरूपउरमाहिंरामदेखतउठि धाये । पूजतबिबिधप्रकारजोरिकरप्रभुशिरनाये २ प्रभुशि रनायेबूझियोमुनिप्रकटीविधिहृदयजुर । कहनविरंचिसंदे शसबनारदआयेअवधपुर ३ ।५ ॥

टी०। जाहि रामचरित हितते नारद अवधपुरआये अर्थात् आपनेजीव को कल्याणमाने सदा रामचरित्रै गानकरते हैं ऐसे नारदमुनि अयोध्या जीकोआये तें अंतरवृत्तिते कैसेहैं जाके प्रेम नेमकी अवधि मर्यादाहै प्रेमा-भक्तिको अखंडनेम लिहेहैं अर्थात् आपनेकृत सूत्रनमें आपना सहीसिद्धां-तलिखे यथा ॥ अथातोभक्तिंव्याख्यास्यामः ॥ साकस्मैपरमप्रेमरूपाअमृ तस्वरूपाच तल्लक्षणानिवाच्यन्तोनानामतभेदात् पूजादिष्वनुरागइति पाराशर्य्यः कथादिष्विति गर्गः आत्मरत्यविरोधेनेतिशाण्डिल्यः नारदस्तु तदर्पिताखिलाचारतातद्विस्मरणे परमव्याकुलतेति ॥ अर्थात् सबआचार अर्पणकरि सदा ईश्वरके प्रेममें बूड़ेरहना अरु पूर्व संयोगते वियोग अथ-वा लीलादिको क्षणमात्र विसरिजानेमें व्याकुलहोनेको हम भक्ति कहते हैं इत्यादि जा नारदके प्रेम नेमकी अवधिहै ताते उर अंतरमें सदा राम रूप धारणकिहेहैं १ प्रेमावेशते श्रीरामरूप उरमेंधरे ऐसे परमभक्त नारद को देखतही श्रीरघुनाथजी उठे करजोरि शिरनाये विविध प्रकार पूजत अर्थात् हाथजोरि प्रणामकीन्हे पुनः अर्घ पाद्यादि अनेकभांति ते पूजन कीन्हे २ प्रभुशिरनाये बूझियो श्रीरघुनाथजी शिशनवाय कुशल तथा आ-गमनको हेतु पूछे भाव किसहेतु आपु इहांको आयेहौ सो हाल कहिये इति प्रभुके बचनसुनि नारद बिधिहृदय जुरप्रकटी अर्थात् ब्रह्माजीकेहृदय में जो तापहै सो प्रसिद्ध कहिसुनाये भाव रावणकी अनीतिभयते त्रय-लोकवासी दुःखितहैं ताते खलको मारि शीघ्रही सबको दुःखहरौ इत्यादि बिधि ब्रह्माको संदेश कहनेहित नारदमुनि अयोध्याजीको श्रीरघुनाथजी के समीपआये ३ । ५ ॥

मू० । रामबचनसुनिमुनिगयेपायबचनबिश्वास । रामप्रकटमा

आकरीसबकेहृदयप्रकाश १ सबकेहृदयप्रकाशगुरुहिनृ
पजायसुनायो। रामतिलककरिदेहुनाथसबकेमनभायो २
सबकेमनभायोसुखदसुनिवशिष्ठआनँदभये।तिलकसाज
साजीमुदितरामभवनसुनिमुनिगये ३ । ६ ॥

टी०। श्री रघुनाथजी नारदते कहे कि जो बात तुमकहतेहौ सो हम शीघ्रहीकरैंगे इत्यादि रघुनाथजी के वचन सुनि विचारे कि सत्यसंध जो कहते सोईकरते हैं ताते यह कार्य शीघ्रही करैंगे इत्यादि वचन विश्वास पाय बिश्वास करिबेयोग्य प्रभुकेवचन सुनि मुनि नारदगये ताही समय रघुनाथजी आपनीमाया प्रकट करी ताको प्रकाश सब समाज भरेके हृदय में भया भाव जो कुछ कीनचाहते हैं सोई सबके मनमें बैठिगया १ रामरजाय सबके हृदय में प्रकाशभई ताते नृप दशरथ महाराज जाय आपनामनोरथ गुरुहिवशिष्ठजीको सुनाये हेनाथ सबकेमनभायो रामतिलक करिदेहु अर्थात् पुरजन परिवार प्रजा सचिवादि सबके यही अभिलाषहै कि दशरथ आपने जीवतहीं युवराजपद रघुनंदनको देदेवैं तौ जो सबके मनभाई यहीबात है तौ रघुनंदन को राजतिलक करिदीजिये २ सबके मनको भायो पुनः सुखद भाव इसीकारणते लोकभरि सुखापवैगो ऐसे वचन सुनि वशिष्ठ जी आनंदभये दोऊ मिलि कामकाजिनको आज्ञादिये ते सुमंतादि तेऊ मुदित आनंद मनते तिलकहेतु सबसाज साजनेलगे अरु मुनि रामभवनगये महाराजकी आज्ञापाय संयम क्रिया बतावनेहेतु मुनिवशिष्ठजी रघुनाथजीके मंदिरकोगये ३ । ६ ॥

मू०। नृपबातैंप्रकटींसबैमुनिरघुवरसमुझाय। नेमक्रियाव्रतधर्म
नृपतिलकभेदविधिगाय १ तिलकभेदविधिगायकहेउभूप
तिहिबुलाई। मंगलवस्तुमँगायतिलककीघरीसुहाई २ घरी
सुहाईकालिहैरामराज्यबैठाहिंजबै। बाजैविपुलबधावपुरनृप
बातैंप्रकटींसबै ३ । ७ ॥

टी०। मंदिर में जाय मुनिवशिष्ठजी नृप दशरथ जीकी बातैं जो जो कहे सो सबै प्रकटीं प्रसिद्धकरिकहे भाव महाराजकाल्हि तुमको राज्याभिषेक देइँगे इतिकहिपुनः नृपतिलकके विधिविधान के जो भेद हैं यथा

नेमक्रिया नेमसहितकर्म तथा धर्मव्रत इत्यादि गाय विधिवत्कहि रघुनाथ जीको समुझाये अर्थात् स्नान करि जानकीसहित कौशेयवस्त्र धारण करि भूमिमें कुशासन पर रहौ काहूको स्पर्श संभाषणनकरो आठयाम शौचसहितरहौ इतिनेम सहितक्रिया पुनः धर्मसहित व्रत यथा सत्यआचार ब्रह्मचर्य सहित निरंबु व्रत करहु इत्यादि जो राज्याभिषेक विधानके भेद सब समुझायकै चलेआये १ पुनः भूपतिहिबुलाय तिलक विधिके भेदगाय दशरथ महाराज को बुलाय राज्याभिषेक विधान में यावत्भेद रहै सोसबकार्य वशिष्ठजी बतायदिये पुनः जल फल मूल मणि ओषधादि यावत् मंगलकी वस्तुहैं तिनकोमँगाय पुनः तिलकहोनेकी घरीशोधे सुहाई सबकै कल्याण करबेयोग्य २ पुनः महाराजतें कहे वशिष्ठजी सुहाई घरी शुभ मुहूर्त्त तौ कालिहहै परंतु रघुनाथजी राजपर जब बैठें तबै शुभजानौ यह व्यंग्य है कि शुभघरी तौहै परंतु रघुनाथजी बैठैंगेनहीं पुनः नृपघातें सबैप्रकटीं सबैजनसुने ताते अवधपुरमें विपुल बहुत घरघर बधावा बाजे लगे ३ । ७ ॥

मू० । रामहेतुमंगलरचौआनौतीरथनीर । पानफूलफलमूलतृण हयगयमणिधनचीर १ हयगयमणिधनचीरपुरीसुन्दरिरचि राखौ । बन्दनवारपताककलशचौकैअभिलाखौ २ अभिलाषौकुमकुमअगरबीथीकेरनिसोंसचौ । मणिमयदीपप्रकाशिये रामहेतुमंगलरचौ ३ । ८ ॥

टी० । रामहेतु मंगल रचौ रघुनाथजीके राज्याभिषेक उत्सवहेतु मंगलके सबअंगरचौ शोभामय साजिकै बनावो पुनःपुष्कर नैमिष कुरुक्षेत्र गंगासागर प्रयागादि सब तीर्थनकोनीरआनहु पुनः पानादि दल कमलादि फूल नारियरादिफल कुशादि तृण इत्यादि सब औषधी लावो पुनः हयगय घोड़े हाथी सजौ पुनः मुक्ता विद्रुम पन्नापुखराज हीरा नीलक पिरोजा माणिक मर्कतइत्यादि मणी सोना चाँदी आदिकधन दुशाला बनात जरदम्त कमखाप अतलसादि चीर १ यथा घोड़े हाथी मणी धन बसन सब साजि एकत्र करौ तथा पुरी सुंदरि रचिराखौ अयोध्या पुरी अत्यंत सुंदरि बनिजाने की अभिलाषा मनमेंराखे सबसाज साजौ यथा साजौ मंदिर द्वार आँगन में बंदनवार मंदिरनपर ध्वजापताका आँगनमें धान्य दीप पल्लवसहित कनक कलश मणिमोतिनकी चौकें इत्यादि विचित्र रचिये

की अभिलापराखे रचनाकरौ २ पुनः बीथी जो पुरकीगली तिनको बहारि तहां कुसकुम अगर कपूर चंदनादि सुगंधित जलते सींचि पुनः केरनिलोंसचै कदलीके वृक्ष सर्वत्र लगावो इत्यादिकी अभिलाप राखेरचौ पुनः मणिनमय दीपसर्वत्र प्रकाशियेस्थापितकीजिये इत्यादि रामराज्याभिपेकहित मंगल रचनाकरौ ३ । ८ ॥

मू० । देखिदेवशोचतभयेअवधरामकीराज । दुष्टकष्टकोनाशिहै निश्चयभयोअकाज १ निश्चयभयोअकाजसुमिरिशारदा बुलाई । रामविपिनकहँजायँमातुसोकरहुउपाई २ रामविपिनकहँजायँजबकरउपायबुधिबलमये । चरणगहेंपालनकरौ देखिदेवशोचतभये ३ । ९ ॥

टी० । अवधरामकीराजदेखि देवशोचतभये अयोध्याजीमेंश्रीरघुनाथजी को राज्याभिपेक होतेदेखि इंद्रादिदेवता शोचत दुःख पूर्वक विचारकरते भये क्याशोचतेभये कि जो रघुनाथजी राजकाज में परेतौ को दुष्ट कष्टनाशिहै दुष्ट जो रावण तथा हमलोगनको जो कष्ट है ताहिकौन नाशकरैगो भाव जो रघुनाथ जी वनको जायँगे तबतौ रावणको मारि हमाराकष्ट हरेंगे अरु जो राज्याभिपेकह्वैगया तौ निश्चयकरिकै हमाराअकाजभया १ निश्चय अकाज भयो जानि देवनसुमिरनकरि शारदाको बुलाई तासों प्रार्थनाकरतेहैं हेमातु सोउपाय करहु जामें रामविपिन रघुनाथजी बनको जाहिं २ बुधि बलयेबुद्धिकरिबल करिकैमायाकरिकै ऐसाप्रभावप्रकाशकरौ जामेंराज्यरसभंगहोय जबराज्यत्यागि श्रीरघुनाथजीबनकोजाहिं तबहमाराकार्य सिद्धिहोय इत्यादि प्रार्थना करि चरणगहें शारदा के पाँयपकरत पुनः कहत हे मातु पालनकरौ हमारे दुःखमिटनेकी अवश्य उपाय करहु इत्यादि रामराज्याभिपेक होतेदेखि देवता शोचकरतेभये ३ । ९ ॥

मू० । धिक्धिक्देवनकहिचलीआगेहेतुविचारि । अवधगईरानी जहाँदेखीसुमतिसँभारि १ देखीसुमतिसँभारितहांपरवेशन पायो । कंठमंथरावैठितासुचितहितभरमायो २ हितभरमायोतिहिसमैप्रियाकेकयीकीअली । पुरदुखदायिनिसीभईधिक्धिक्देवनकहिचली ३ । १० ॥

टी० । देवनधिक्धिक्कहि पुनःआगेकोहेतुबिचारिचली अर्थात् रघुनंदन के राज्याभिषेक देखनेकीअभिलाषमें अवधनरनारि आनंदमेंमगनहैं ताको भंगकरि आपना स्वार्थ साधाचाहते हैं ऐसेस्वार्थी निर्दयीहैं ताते देवनको धिक्कार है ऐसा कहि पुनः विचार कीन्ही कि अबजो मेरीप्रेरणाते किसी की मति फिरिजायगी त्यहिहेतुते रघुनाथजी बनको जायँगे तामें सबसंसारकोहित है पुनः रामयश में मेरानामरहैगो त्यहि यशगान में उत्तम कविजन सुमति बुद्धि सिद्धि के अर्थ मेरी चाहकरहिंगे इत्यादि आगेको हेतु विचारि अयोध्याजीको चली अवधमें जहांसबरानीरहैं तहांसरस्वती गई तहां सुमतिसँभारि बुधिबल माया को प्रभाव फैलाय देखी अर्थात् रानिनकी बुद्धि भ्रमितकरिबेहेतु बहुतकुछमायाको प्रभाव फैलाये परन्तु रानिन के उरमें श्रीरामरूप बसा तहां देवमाया तुच्छ कैसे प्रवेशकरिसकै कुछभीबल नचला १ जबसुमति सँभारिदेखी तहांरानिन में मायाप्रवेश नहींकरिपायो तब मंथराके कंठमेंबैठि तालुचित हित भरमायो ताकेचित में जोराजकाज को हितरहा ताको भरमायदिया उलटा चिंतवनकरिदिया ताते अनहितकी उपाय बांधनेलगी २ यद्यपि मंथरा कैकेयीकी प्रिय अली प्यारीदासी है सबभांतिहितै करतरही तिहिसबै हितको भरमाय अन हित कर्त्ता बनायदियो ताते पुरदुखदायिनिसीभई अयोध्यापुरीभरेको महादुःखदायक भई इत्यादि कारणकरि देवनको धिक्कारदैचली ३ । १० ॥

मू० । नगरदेखिबातैंकही हिततोरनकीघात । मोहिंशोचइकउर भयो जोफुरमानहुबात १ जोफुरमानहुबात हितूहेतीदुख जानैं । काजनशातविचारि विनापूछेहुबखानै २ बिनपूछे प्रभुकेवचन इनबातैंपातकनही । उतरदेतनाहिंदोषहैनगर देखिबातैंकही ३ । ११ ॥

टी० । नगरदेखि हित तोरनघातकीबातैंकहीमंथराने देखाकिअयोध्याजीमें परम उत्सवयोग्य मंगल रचना ह्वैरही है ताकोहेतु पूछिसि तव लोगन बतावा कि प्रभात रघुनन्दनको राज्याभिषेकहै सो सुनि हृदयमें दाह भया अर्थात् कौनभाँति विघ्नहोवै इति विचारि कैकेयीकेपास जाय बोली क्याकही अर्थात् रानिनमें जो परस्पर हितकारता है ताके तोरिवेकी भाव विरोध कराय देनेकीघात विचारि बातैं कही क्याकही जोबात फुरमानहू

तौ मोहिं उरमें इकशोचभयो अर्थात् हेमहारानीजी जोमेरीबातको साँची मानौतौ कहौं मेरे उरअंतरमें एकबात सुनि बड़ा शोचभया १ जो मेरी बातको फुरमानौ तौ कहौं काहेते जोहितू हेतीको दुखजानै काज नशात विचारि अर्थात् हितकरनेवाला जो आपने हेती जाको हितकीन चाहत ताकोदुख होनेको कारण जानिपावै कि मेरे हेतीकोकार्य नाशहैजाने चाहताहै ऐसाविचारि विनापूछेहू बखानै अर्थात् जो हेती पूछबौ न करै तबहूं हितूको उचितहै कि वासों सबहाल कहिदेवै २ प्रभुके बिनपूछे वचन इन बातैं पातकनहीं अर्थात् बिना स्वामीके पूछे जो सेवक कोईबात कहैतौ पातक होता है परन्तु जो बातमें स्वामीको दुख होनहारहै सो बात जो स्वामी पूछबौं न करै तबहूं सेवकको कहिदेनेमें पाप नहींहै तथा उत्तरदेत दोषनहीं है अर्थात् स्वामी जोकहै सोई मानिलेना चाहिये अरु जो सेवक प्रौढ़ताकरि जवाबदेता सो दोषहै परंतु स्वामीको कार्य बिगरतदेखै ताके बनाइबे हेतु जो उत्तरदेवैतौ दोषनहीं होताहै ताते मैं कहौंगी अरु उत्तरभी देउँगी इत्यादि नगर रचनादेखि बातैं कही ३ । ११ ॥

मू० । इनठौरननिपूछेबिना कहैस्वामिसोंदास । सर्पअत्रअरिबिष अनल अनिलकंटदुर्वास १ अनिलकंटदुर्वास अशनपथ अपथजनावै । लाभहानिदुखदानिकहतपातकनहिंआवै २ लाभहानिनहिंबोलई प्रभुआयसुरुखनिशिदिना । स्वामि सुहागिलिदेहिसिख इनठौरनपूछेबिना ३ । १२ ॥

टी० । मंथरावोली हे महारानी जी बिना आपुके पूँछेभी मैं कहौंगी काहेते इनठौरन बिना पूछे दासको उचित है स्वामीसों बातकहै कौन ठौरन सर्प अत्र अरि विष अनल अर्थात् स्वामी देखता नहीं सर्प निकट आयगया ताको सेवक कहिदेवै तथा अस्त्रबाणादि किसीने मारा स्वामी नहीं देखताहै ताको दास कहिदेवै तथा स्वामी नहीं जानता है अरु अरि शत्रु निकट पहुँचिगया तथा भोजन जलादिमें किसीने बिष मिलायदिया तथा अनल अग्नि निकटलगी इत्यादि जो जानिपावै तौ सेवक कहिदेवै तथा अनिल पवन कंट काँटा अर्थात् मार्गजातमें घोरआँधी उठी अथवा विषम काँटाहै जो स्वामी नहीं देखातौ सेवक कहिदेवै तथा दुर्वास दुखदठौर वासकरताहोइ तहाँ सेवक बताइदेवै १ यथा अनिलकंट दुर्वासादि

बतायदेवै तथा अशनजो भोजन सोऊ पथ्य सुखदायक अपथ्य दुखदायक सोऊ जनायदेवै भाव यह भोजन करिबे योग्यहै यह भोजन करिबेयोग्य नहीं है यामें रोगवृद्धहोताहै २ तथा लाभ हानि दुख दानि अर्थात् जिसबात में लाभहै अरु स्वामी नहीं करताहै ताको कहै अथवा जामें हानिहोइगी अरु स्वामी करता है ताकोभी कहिदेवै तथा कोईबात करनेते पीछे दुख होइगो ताहूको बतायदेवै इनठौरन जो स्वामी पूछबौ न करै तबहूं सेवक को उचितहै कि अभयह्वैकै स्वामीको सिखावनदेवै पुनः हेसुहागिल स्वामिनी जिसबातमें लाभ अरु हानि कुछभी नहीं है तहाँ सेवकको उचित है कि निशिदिना प्रभुआयसु रुखबोलै रातिउ दिनमें जबस्वामीकी आज्ञा होइ वा रुखदेखै तबै बोलै नातरु स्वामीके सन्मुख कछुभी न बोलै ये वचन सरस्वतीके प्रेरणातेहैं ३ । १२ ॥

मू० । मोहिंभामिनीदुखभयोसमुझिएकउत्पात । सबपुरकोनीको लगै तुम्हैंभरतकोघात १ तुम्हैंभरतकोघात बातनृपरानि विचारी । काल्हिरामनृपहोहिं भईशोभापुरभारी २ भारी विपतिविचारिकैहृदयमोरदुखयुततयो । भरतबिदेशनरेश परमोहिंभामिनीदुखभयो ३ । १३ ॥

टी० । हे भामिनी एक उत्पात समुझि मोहिं दुखभयो अर्थात् कैकेयी प्रतिमंथरा कहत हेमहारानीजी तुम्हारे हेतु एकउत्पात अलाकारणहोताहै सो भयेपर पीछे तुमको महाविपत्ति होनहारहै सोई आगम समुझि मोको भी दुखभयो काहेते तुम्हैं अरु तुम्हारे पुत्र भरतको घात सबपुरको नीको लगैहै अर्थात् जामें तुम्हारा सुख सुहाग अरु भरतको सुख स्वतंत्रता जिस बातते नाशह्वैजायगी सोई बातहोना सबै अयोध्यावासिन को नीकलागताहै १ क्या सबको नीकलागताहै कि तुम्हैं भरतको घातकरिबेयोग्य बात नृपदशरथ तथा कौशल्यादि रानिन विचारकीन्हे क्याविचारकीन्हे किकाल्हि रामनृपहोयँ अर्थात् तुमतेतौ नहींबताये अरु न भरतको बुलाये तुम सौं छलराखि प्रातकाल्हि रघुनंदनको राज्याभिषेककरिदेवैंगे तिसहेतु पुरमें भारीशोभाभई ध्वज पताक कलशदीप कदली मणिचौकादि ऐसी मंगलरचना रचीगई जातेपुरमें बडीभारी शोभा देखाती है २ इतिभारी बिपत्ति विचारिकै मोरहृदय दुख ज्वरतयो अर्थात् जो काल्हि रघुनंदनको

राजतिलक ह्वैगया तौतुमको बड़ीभारी बिपत्तिहोइगी सोई बिचारि मेरा उर अंतरशोच दुखरूप ज्वरते तपिरह्योहै काहेते हे भामिनी भाव यासमय कोपकरिवे योग्य हौ इस सम्बोधनते यहीअर्थ प्रकटहोताहै यथाकोप नासैव भामिनी इत्यमरः इति हे कोप्रशीला बिचारकरि देखिये तुम्हारे विवाहके पूर्व तौ दशरथजी समय पत्र अर्थात् करारनामा लिखिदिये कि कैकेयी के पुत्रको राजपद देइँगे सोतौ बीचही रहा अबतुमते तौ बताये नहीं अरु भरतविदेशमें परे हैं इहां रामको राज्यपद दिहेदेते हैं इसबातते नरेश दशरथ पर क्रोधभया ताते मोहिं दुखभयो भावतुमसों छल क्यों करतेहैं ३ । १३ ॥

मू० । बिपतिबीजअंकुरभयो बयोकौशलारानि । पावसनृपउरदेखिशुभ आयसुसुंदरपानि १ आयसुसुंदरपानि अवधथल सुतबलपाई । गुरुपुरजनभेवारि तुम्हैंनितकीन्हउपाई २ कीन्हउपायसहायसब भरततेजतपसोगयो । चारिदिवस गतदेखियो बिपतिबीजअंकुरभयो ३ । १४ ॥

टी० । बिपत्ति बीज जो कौशल्या रानी बोयो तामें अंकुरभयो कैकेयी प्रति मंथरा कहत हे भामिनि तुम्हारी बिपत्तिरूप बेलि बढ़ावेहेतु कौशल्यारानीने जो बीजबोया तामें अंकुर तौ निकरिआया सोई निर्मूल कियाजाय तौ तौ सुखीरहौगी नातरु सब उपचार उत्तम हैं थोरेहीकाल में विपत्तिबेलि पल्लवित ह्वैजाइगी फिरि पीछे कुछ न बनिपरैगो तहां सुन्दर वर्षा देखि सबल खेतमें बीजबोवाजात इहां क्या है जामें आयसु पानी सुन्दर ऐसा नृप उर शुभ पावस वर्षादेखि अर्थात् दशरथ महाराजको उर सोई पावसवर्षाऋतु शुभ मंगलकारीहै तहां राम राज्यको जो मनोरथ है सोई सघन मेघहैं त्यहिं अनुकूल जोआयसु अर्थात् सुमंतादि कामकाजिन को जो सबकार्य्य साजिबेकी आज्ञादिये सोई सुंदर पानीको वर्षण है १ महाराजकी आज्ञारूप पानी पाय अवध थल सुतबलपाय पास्यादिपरे जोतेखेत बलीहोताहै इहां अयोध्यापुर सुन्दर थल सुखेतहै तामें पुत्रकी राज्यहोना सोई खेतमें बलपाय पुनः गुरुवशिष्ठ तथा पुरकेजन जो सब कार्य करनेवाले हैं तेई बारिजलभये अर्थात् भूप उर पावसमेंते आज्ञा वृष्टिते साधकजन पानी इत्यादि अनुकूल पाय तुम्हैं नितकीन उपाई

हे कैकेयी जो तुम्हारि ही बिपत्ति के हेतु यहसब उपायकीन्हे २ कौशल्या ऐसी उपायकीन जामें सबै सहायक ह्वैगये तातेभरत तेजतप गयो अर्थात् जबतक सूर्य्य के तेज तपनिते भूमितप्त रहत तबतक वीजनहीं जामत तथा जबतक भरत इहांरहे तबतक उनके तेज प्रतापते पुररूप भूमि तप्त रही अब परदेश जानेते भरतको तेजतप सब गयो सोई मनभावत समय पाय तुम्हारी बिपति को बीज कौशल्या बोयो सो अब अंकुरभया चारि-दिवस गत बीतेपर देखियो कैसी बिपति होती है ३ । १४ ॥

मू० । सत्यमानिरानीकहै कहुसखिमोहिंउपाव । भरतगयेअसगुनभये सोसबयहैप्रभाव १ सोसबयहैप्रभाव सुहृदसममैंसबजानौं । सवतिईरषाछांड़िपुत्रपतिआपनमानौं २ आपनमानिनकछुकहिय नृपमलीनउघरनचहै । हितूजगतमेरी तुही सत्यमानिरानीकहै ३ । १५ ॥

टी० । मंथरा के बचन सत्यमानि रानीकैकेयी कहती हैं हे सखीमोहिं बचने की उपाय कहु बिपतिहोना तो मैं जानिचुकी काहेते भरत सहायक ते तो ननेउरे को चले गये पुनः मेरी दाहिनि आंखि भुजफरकनादि बहुत असगुन भये सो सब यही को प्रभाव है जो होनहार है १ सब उत्पात होनहार के प्रभावते होते हैं नातरु मैं किसी को कछु बिगारा नहीं काहेते सब सुहृद सम सब रानिन को मैं मित्र की समान जानती रहौं कौनभांति सवतिभाव को ईर्षा सहज बैर छांडि मित्रता पूर्वक पुत्र पति आपन मानौं आपने ऐसे सब पुत्रनको मानती रही पुनः महाराज यथा हमारे पतिहैं तथा सबरानिनके हैं इत्यादि मैं भेद ईर्षा नहीं करती रही २ सब छँडाय केवल आपनै पति मानि कबहूं न कहिये अर्थात् अपना परारी फोरतोरकी बात कबहूं नहींकहा भाव जो महाराज हमारे पुत्रको राजदेना लिखिदिये रहैं त्यहि बलते हमारा पद सब रानिनते ऊँचाभयारहै तेहिबलते केवल आपना पतिमानि हमको सबश्रेष्ठता मांगना योग्यरहै ताकोहम कबहूं नाम नहीं लिया छलछांडि सहज स्वभाव महाराज की आज्ञामें रही अरु नृप उरमलीन अर्थात् हमारी दिशिते जो महाराज उरमें छल राखेरहे सो तौ उघरैचहै सो अब प्रसिद्ध भया अब मोकोसब शत्रुइ देखाता है काहेते अबतक यहहाल किसी ने

नहीं मोसों कहा अरु सब रचना ह्वै चुकी अब तेरे मुखते सुनेउँ ताते जगमें मेरीहितू एकतुहीहै तवतो कहे इत्यादि सत्यमानिरानीकहे ३।१५॥

मू०। कहिसुखायरानीबदन जनिमनकरसिमलीन। द्वैवरतेरेनृप
चहैं लेहिमांगिपरवीन १ लेहिमांगिपरवीनदेखिदृढवचन
नडोलै। रामविपिनसुतराज्यसत्यकरिनृपसनबोलै २ राम
विपिनजबजायहैं भरतभूपहोईसदन। सवतिहृदययहि
भाँतिदहि कहिसुखायरानीबदन ३।१६॥

टी०। रानिबदन सुखायकहि शोकते मुख रूखाकरि जबरानीकैकेयीने अधीरवचनकहे तब मंथराबोली मन मलीन जनिकरसि हे महारानीजी मनमें उदासीनतानलावौ तुम्हारीविपति मिटनेकीसहजही उपायहै काहेते तेरे द्वै वर नृपचहैं अर्थात् देवासुर संग्राममें देवनकी सहायताहेत संवरनामे दैत्य ते युद्धकरि दशरथजी घायल ह्वै मूर्च्छितभये तहां तुम साहस करि महाराजको रथभगाय बचाइ लिया जब सावधानभये तब तुमको द्वैबरदान देनेको कहे सो थातीहै हेपरवीन परमचतुर सोई वरदान अब मांगिलेहि १ कैसी प्रवीनता चातुरीके साथ मांगिलेहि देखिदृढ वचन न डोलैं अर्थात् जबरामसपथ सहित त्रिवाचकबोलैं इत्यादि सत्यब्रतदृढपुष्ट देखि तब माँगना जामें पूर्वकहे वचननको बदलि न सकैं तबक्या मांगना राम बिपिन बनबास करैं तथा सुत आपने पुत्र भरत को राज्य इत्यादि सत्यकरि नृपसन बोलै अर्थात् महाराजको सत्यब्रत दृढकराय तबतुम भी सत्यहीवचन बोलना भावकैसहू समुझावैं परन्तु आपने वचनकीहठ न छोड़ना नातरु प्रयोजनकछु भी न होयगो अरुअपयशी ह्वै जाउगी २ भरत कोराज्य तथा चौदह बर्ष रामको बनबास मांगना काहेते बारह बर्ष तक राज्यको दावा रहता है चौदहबर्षमें सोभी न रहैगो अरु इहां मंत्री सेनप प्रजा इत्यादिभी भरतकेसम्मतमें ह्वैजायँगे इसहेतु जबरामबिपिन बनको जाय हैं अरु भरत भूपराजा ह्वै सदनघरमें रहैं तब अकंटक पुत्रकी राज्य बलते जाको जैसा चहौ तैसाही दुखसुखदेउ इसीभांति सवतिको हृदय दहि मनभावत दुखदेउ इत्यादि जब रानीसुखाय मुख अधीर बचन कही तब मंथरा समुझाय धीर्य करायो ३।१६॥

मू०। मनप्रतीतिरानीभईलईसीखउरमानि। जोकछुमनरघुपति

चहैं सोईसत्यउरआनि १ सोईसत्यउरआनि कोपकेभवन सिधाई । दुर्गतिकरितनदशा मनहुंयमपुरतेआई २ दशा मनहुंनृपमरणकी धरणिकुलक्षणकीमई । देविकुरीतिसुप्रीतिसिखमनप्रतीतिरानीभई ३ । १७ ॥

टी० । मंथराके बचन सुनि रानी कैकेयी के मनमें प्रतीति भई ताते वाको सिखावन उरअन्तरते पुष्ट करि मानिलई यद्यपि कैकेयी कुलवंती सुशीला उत्तम पतिव्रतारही ते बिनाबिचार किहे दासीके बचन कैसेसत्य मानि लिये तापर कहत जो कछु रघुनाथजी मनते चाहतेहैं सोई सत्यउर आनि सोईबात सत्यकरि उर अन्तर में दृढआय जातीहै भाव और कौन ऐसा समर्थ है जो झूंठ करिसकै १ रामइच्छा ते सोई बात सत्य उर में आनि कोपके भवन सिधाई कैकेयी कोपभवन को चली तहांजाइ तनकी दशा दुर्गतिकरि भाव बसन भूषण उतारि बारछोरि सर्बांगमें धूरि लगाय महामैले फटेबसन पहिरि कैसी कुरूपता दर्शितभई मानहु यमपुरते आई अर्थात् भयंकर क्रोधितरूपते मानो मृत्युआई २ किसकी मृत्युहोइगी मानहुँनृप दशरथके मरण की दशा बनाई इसदिशा ते निश्चय प्राणहरि लेइगी कैसी दशाहै कुलक्षणकी मयी धरणि भूमिका बनी है अर्थात् जो सौभाग्निनी सहजही सिंदर बेसरि चूरी कर्णफूलादि शृंगार नहीं धारण किहेरहततौ पतिकी आयू क्षीणपरती है अरु कैकेयीतौ कुलक्षण जो विधवाके लक्षण हैं तिनमयी भूमिका बनिबैठी काहेते देविकुरीति सुप्रीति सिख अर्थात् मंथरा दासीहै स्वामी कैसा सिखावनदिया यह लोकवेदरीतिते बाहिर ताते कुरीतिके वचनहैं ताते वाके वचनकीप्रतीति न करनारहै पुनः पतिते विरोध करावती है ताते अनहित मानि वापर क्रोधकरना उचितरहै परंतु देवीशारदाकी प्रेरणाते कुरीति करनेवाली मंथरामें सुंदर प्रीति मानि वाके सिखावनकी प्रतीति रानीके मनमेंभई ३ । १७ ॥

मू० । कानकरहियहकर्मबलक्यहिजगव्यसनाहिंलीन । पवनडगायोकाहिनहिंकोदुखदुखीनदीन १ कोदुखदुखीनदीनमोह मदक्यहिनहिंबाध्यो । तृष्णाज्वरनाहिंजरयोकामशरकाहिन साध्यो २ काहिनसाध्योक्रोधदलक्यहिनछल्योतरुणीतर

ल। चितचिन्ताब्यालिनियथाकानकराहियहकर्मबल ३।१८॥

टी०। शुभाशुभ कर्मनको जो बलहै यह कानहीं कराहि भाव कर्मनको फल जब उदयहोताहै तब उचित अनुचित सबकार्य जीव करिडारता है यथा पतिको संगत्यागि सती जानकीरूपधरि वनमें अकेले राजकुमारके पासगई पुनः जगमें क्यहिको यमनहींलीन भावलोकमें देहधारी ह्वै कौन मृत्युसे बचिरहा तथा पवन काहिनहिं डगायो अर्थात् प्रचंडवायुकी ठोंकर लागेते नर पशु पक्षी तृण वृक्षादि सब डोलिजाते हैं तथा दुखरुज वियोग हानि दरिद्रतादि दुखपरे पर को दुखीदीन पौरुषहीन नहीं ह्वैजाताहै १ यथा दुखपरेपर कोनहीं दुखीदिन होताहै तथा मोह जीवकी अज्ञानता पुनः मदजाति विद्या महत्त्व धनादि पाय चितउन्नतकरना इति मोहमद क्यहिनहिं बांध्यो कोनहीं मायाफंदमें फँस्यो पुनः इंद्रीद्वारा विषयनकी अत्यंत प्यास इति तृष्णारूप ज्वर क्यहिनहिं जारयो भाव विषय आशामें कौनजीव नहीं तप्तरहताहै २ पुनः कामदेवने क्यहिकोशर बाण नहींसाध्यो भाव सुंदर युवतीदेखि कोनहीं कामवश ह्वैजाताहै तथा क्रोधको दलसेना यथा मनुस्मृतौ॥ पैशून्यंसाहसंद्रोहईर्ष्यासूयार्थदूषणम् । वाग्दण्डंचपारुष्यंक्रोधजोपिगणोष्टकः॥ इत्यादि काहिनसाध्यो किसकोनहीं स्वाधीनक रिलियो तथा तरुणी तरल युवावस्थाकी स्त्री चंचल क्यहिनहीं छल्यो किस को ज्ञान नहीं नष्ट करिदियो तथा चिंता व्यालिनि अर्थात् राजाको कोप शत्रुकीभय कार्यादि किसी वस्तुकीहानि प्रिय वियोग दरिद्रता इत्यादिमें भय सहित सुधि बनीरहना चित चिंतारूप सर्पिनि किसको नहीं खाया इत्यादि यथासब निश्चय होतेहैं तथा यह कर्म सबलहै ताके बशते जीव क्यानहीं करिडारता है ३।१८॥

मू०। अवधपुरीअमरावतीबाजैंबिपुलबधाव। सबकेउरआनंद अतिरामतिलकसतिभाव १ रामतिलकसतिभावसांझ समयानृपपायो। सरलसुहृदनृपहृदयकैकयीगृहचलिआयो २ आयोसुनिरिसिकेसदनबदनपीतभयछावती। अवधनाथसुरपतिसरिसअवधपुरीअमरावती ३।१९॥

टी०। अमरावती जो इन्द्रपुरी ताहीतुल्य शोभाखानि अयोध्या तामें विपुल बधावा घरघरमें बहुती बधाई बाजिरही हैं काहेते राम तिलक

संतिभाव अर्थात् प्रातःकाल निश्चय रघुनन्दनको राज्याभिषेक होयगो यह विचारि सबके उरमें आनंद परिपूर्ण है १ सत्यभावते रामतिलककी सब सामग्री साजि नृपदशरथ महाराज जब साँझसमय पायो तब सरल सुहृद नृप हृदय अर्थात् सहजसुभावै तेसबते मित्रता राखतेहैं ऐसा कोमल दशरथ महाराजको हृदय है ताते निश्शंक कैकेयीके गृह मंदिर को चलिआयो २ जबमहाराज कैकेयीके मंदिरको आये तहां दासिनते रिसके सदनसुने भाव कैकेयी कोपभवनमें गई यह सुनतही वदन पीतभयछावती भय जो डर सो सर्वांगमें छायगया तातेसुख पेरप रि गया भावकामकी वेगतें स्त्रीकी रिस न सहिसके अरु महाराज कैसे हैं अवधनाथ सुरपति सरिसभाव इन्द्रकी तुल्य बल तेज प्रतापवंत हैं तथा सब शोभा ऐश्वर्य युत अयोध्या अमरावतीके तुल्य है ३ । १९ ॥

मू० । सोदशरथकम्पहिहियेकामप्रतापबलीन । जाकीबशत्रय
लोकमहँक्यहिअनर्थनाहिंकीन १ क्यहिअनर्थनहिंकीनच
न्द्रसुरपतिगतिदेखौ । नृप दिलीपमुनिशम्भुययातिहिचित
अवरेखौ २ चितअवरेखहुकामबलतीनिलोकभेदितकिये ।
ताकोशरनृपउरगड्योसोदशरथकम्पतहिये ३ । २० ॥

टी० । जे ऐश्वर्यते बल प्रताप बीरताकरिकै इंद्रकी तुल्यरहे सो दशरथ स्त्रीकी रिससुनि हियेते कम्पहि हृदयमें अत्यंत डरमानि सर्वांग कांपि उठा ऐसा कामदेवको प्रताप बलीन बलवान्है काहेते कामको प्रतापबलीन जानिये कि त्रयलोकमहँ जाकेबशह्वै क्यहि नहीं अनर्थकीन अर्थात् तीनिहूं लोकनमें सुर मुनि नर नागादि को ऐसा धीर्यवंत समर्थ है जो कामके वशह्वै अनुचितबात नहीं करि डारा १ क्यहि नहीं अनर्थकीन अर्थात् कामबशते अनुचितबात सब समर्थन करिडारेहैं ताकीप्रमाण चंद्रसुरपति गतिदेखौ दोऊको अनर्थकरना प्रसिद्धहै अर्थात् देवनकेगुरू बृहस्पति तिनकी स्त्रीको चंद्रमा आपनीस्त्री बनायलिया इसीते कलंकीभया तथा सुरपति इंद्रने गौतमकी स्त्री अहल्यासों छलसों रतिकीन्हे तिनको ऋषि शापते सहस्रभग धारनापरा इति दोऊकी दशा प्रसिद्ध देखिये पुनः नृप दिलीप मुनि विश्वामित्र तथा शंभु शिवजी ययातिहि चितअवरेखौ इत्यादि कामबशते जो अनर्थ कीन्हे सो चितते विचारि देखौ अर्थात् राजा

दिलीपकी स्त्री ऋतुस्नान कियारहै ताको रतिदान देनेहेतु कामबश जाते रहैं राहमें कामधेनु मिली ताको प्रदक्षिणा प्रणाम नहींकीन्हे जब चले गयेतब कामधेनु शापदिया ताते पुत्रनभया सोकारणजाने तब बहुतकाल कामधेनुकी सेवाकीन्हे तब पुत्रभया तथा मुनि विश्वामित्र ब्रतधारण किहे तपस्याकरतेरहैं तेअप्सराकोदखि कामवश वाकेसाथ भोगकरि तपो-व्रत भंगकरिदिये तथा शंभु भगवानको मोहनीरूप देखि कामबशह्वै पक-रनेको धाये बीजपतितह्वैगया पुनः राजा ययाति कामबशते पुत्रसों युवा-वस्थामांगे इत्यादिको विचारकरौ २ इत्यादि चित्रअवरेखौ भाव चितरूप भीतिपर इन चरित्रनको लिखिराखौ काहेते कामदल कामदेवकी सेना यावत् विषयव्यापारहै सो तीनिहूंलोक वासिनको भेदिताकियो कामबा ण सबके उरमें घावकीन्हें है ताको शर नृपउर गड्यो ताही कामदेव को बाण महाराजौके उरमेंगडा सोईकारणते दशरथ कांपतेहैं ३।२०॥

मू०। देखिजायरानीबिकलभूमिशयनतनदीन । पटपुरानसूखे अधरनयनअरुणरँगपीन १ नयनअरुणरँगपीनमनहुँदु देशाअनैसी।बिपतिनारिकेरूपकुमतिजासिप्रकटतितैसी २ प्रकटतिवचनबदनमहँकुमतिसाजधरिछलकुथल।भूपसभ यपैठेभवन देखिजायरानीविकल ३।२१॥

टी०। दशरथ महाराज मंदिरमेंजाय देखा रानी कैकेयी बिकल भूमि मेंशयन भूमिमेंपरी दीन दुखितकी ऐसीदशा तनमेंकिहे कौनभांति पटपुरा ने पहिरे अधर ओठ सूखिगये हैं पीनरंग अरुणनयन अर्थात् क्रोधते पुष्ट ललामी नेत्रनमें है १ कैसे अत्यंत नेत्र लालि हैं मानहु अनैसीन कारी दुर्देशा अर्थात् बिधवापनकी दुखददशा बनायेहै कौनभांति बिपति नारि केरूप भावजब युवाअवस्थामें पतिमरिजानेकी विपति परती है तासमय जो नारिके रूपमें जैसी दुर्दशाहोतीहै तैसीदुर्दशा कुमतिते कैकेयी प्रकट कीन्हेहै अर्थात् पतिके जीवतही तनमें बिधवाकी दशा प्रकटकरिलिया २ पुनः कुथल छलधरि कुमतिसाज बदनमहँ वचन प्रकटति अर्थात् कुथल कुत्सितस्थान जो हृदय तामें छलधरे पुनः कुमतिसाज कुबुद्धिते प्रबंधबांधे हुये अर्थात् मंथराके सिखानेते जो रामराज भंगकीनचाहत इति कुमति साजके बचन छलसाहित मुखते भाषत है इत्यादि जब भूप दशरथ सभ-

य डरसहित भवनकेभीतर पैठे जायकै देखाविकल भूमिमेंपरीहै ३ । २१

मू० । क्रोधकौनकारणकियो गजगामिनिवरनारि । ज्वइमांगासि सोइदेउँतोहिं कामादिकफलचारि १ कामादिकफलचारि तोहिंपरतीतिसदाई ।तेरेसुखकेहेतुतिलककोघरीशोधाई२ घरीशोधाईतिलककी अवधलोगसुनिसुनिजियो । करिप्र बोधनृपपाणि गहि क्रोधकौनकारणकियो ३ । २२ ॥

टी० । महाराज बोले हेगजगामिनि बरनारि श्रेष्ठपतिव्रता कौनकारण क्रोधकियो भावहमतौ तुम्हारी अनुकूलहैं तौ मानकरनेते क्याप्रयोजनहै काहेते अर्थ धर्म कामादि चारिहूफलमें जोईमांगु सोईबस्तुतोकोदेउँ ताते प्रसन्नतापूर्वक वार्त्ता करु स्वाधीन पतिकाको रिसानेते क्या अधिकलाभ है १ पुनः जिस सनेहते मैं तोको कामादि चारिहु फल देसक्ताहौं ताकी तोकोप्रतीति भी सदाईहै भावमेरी अनुकूलता सदाएकरस तोपरहै सो तू भली भांतिते जानतीहै पुनः तेरेही सुखकेहेतु रघुनन्दनके राजतिलक हेतु घरी शुभ मुहूर्त्त शोधाई सोकाल्हि बनीहै भावजो तू जानतीहोइ मोसों न कहे न पूछे छलते राज्य देतेहैं सो नहीं तेरेही सुखके हेतहै अर्थात् पूर्व अनेकबार तू कहिचुकी है कि रघुनंदनको राज्याभिषेक करि देउ ताही अनुकूलमें अबहींघरी शोधाई है अब तोसों कहतो सोतू पूर्वही रिसानीहै सो या समय रिसानो तेरेयोग्य नहींहै २ काहेते या समयतोको रिसानो उचित नहींहै कि जब रघुनंदनके तिलकहेतु मैं शुभघरी शोधाई ताको सुनि सुनि अवधलोगजियो अयोध्याबासी सब आनंदभये अर्थात् सबकी इच्छा यहीहै इत्यादि समुझाय प्रबोधकरि नृपपाणि गहि दशरथ महाराज हाथ पकरि कैकेयी सों कहतेहैं हेप्रिये तुम कौनकारण क्रोध कियो ३ । २२ ॥

मू० । उठिबैठीबोलतभई करिकटाक्षमुसुकाय । भूपनजानैसुहृद हृदि नारिचरितकेभाय १ नारिचरितकेभाय विधिहुनहिं जाननहारे । द्वैवरथातीदेहुऔरहमतजेतुम्हारे २तजेतुम्हा रेदानिता कहौंशपथखाँचौनई । फिरिनटरैकहिउच्चरौं उठि बैठीबोलतभई ३ । २३ ॥

टी॰। उठि बैठी कटाक्षकरि मुसुकाय बोलतभई महाराजके बचनसुनि कैकेयी भू शयनते उठी भूषण बसन साजि सुंदरी शय्या पर सन्मुख बैठी नेत्रनकी कटाक्ष पैनीचलाय पुनः मुसुकाय कामोद्दीपन कराय तब बोलतभई अरु भूप सुहृद हृदि दशरथ महाराजको हृदय मित्रता भरा कोमल ताते नारि चरितके भाव न जानै अर्थात् तीय चरितको भावार्थ जो छल चातुरी मीठे बचन कहि स्वाधीन राखि प्राणघात दंडदेना सो महाराजनहीं जानतेहैं १ महाराजतौ शुद्ध कोमल हृदय सबको मित्र जानतेहैं तिनकी कौन गनतीहै नारिचरितके भावनको जाननहारे बिधि हू नहींहैं भाव जिनकी छल चातुरी ब्रह्मौ नहीं जानि सकेहैं सोई छल चातुरीकरि कैकेयी बोली कि हमारी थाती द्वैबरदेहु और तुम्हारे सब हमतजे अर्थात् देवासुर संग्राममें जो द्वै बरदान देतेरहौ सो हमथाती राखा सोतौ आजु हमकोदेहु और जन्मभरेके दिये यावत् तुम्हारे बचनहैं तिनसबको हम छोड़िदिया इन बचननमें जो छल चातुरीहै सोतौमहाराज समुझे नहीं अरु जो सहज भावार्थहै सोईसमुझि प्रसन्नह्वैगये क्या समुझे कि औरतौ सब बचन सामान्य हैं परंतु ब्याहके पूर्वजो लिखि दियारहै कि कैकेयीके पुत्रको राज्य देयँगे ताके साक्षी बशिष्ठ अरु गर्गाचार्य ताते वह बचन बड़ा सबलरहा सो तौ छाँड़ेन देतीहैं तौ रामराज्य की बाधक नहींहै तौ और दोबरदानचहै सो माँगिलेइगी तौ कछु हानि नहीं है इति समुझि महाराज प्रसन्नरहे अरु यामें कैकेयीने क्या छल चातुरीकिया कि जो पूर्वकरारपत्रको बचन मैं छाँड़ि न देउँगी तौ मेरी दिशिते महाराज अशंक न होइँगे तौ या समय बरदान देनेसाफ न होइँगे अरु जो मैं करारपत्रको दावाभी करौंतौ भरतको राज्यभी देवैंतौ रघुनंदनबनको तौ न जाइँगे इस चातुरीते पूर्व सब दावात्यागि बरदान मांगना पुष्टराखे २ सोई कहत तजे तुम्हारे दान्यता अर्थात् पूर्वजो तुममें दातव्यता रही तामें यावत् बचनदान देराखा सो और तुम्हारेबचन सब तजे छांड़ाजो द्वैबरदान देनेको कहिराख्यो सो जो अब देनेको कहौतौ नई शपथ खाँचौ भावकहौकि राम शपथ है हम देइँगे इत्यादिकहौ तब मैं माँगौंगी काहे कहिके बचन फिरि नटरै बदलि न जाउ तबमैं उच्चरौंवर मांगनेके बचन कहौ इत्यादि उठिबैठी तब कैकेयी बोलतभई ३ । २३ ॥

मू॰। शपथसत्यलखिकाहचलिवचनअमंगलमूल। देहुएकबर

प्रथमयहभरतराज्यअनुकूल १ भरतराज्यअनुकूल दूसरो माँगहुँसाईं । चौदहवर्षविशेषि रामबनमुनिकीनाईं २ मुनि कीनाईंजाहिंबन काल्हिरामतौअतिभली। मोरमरणअपनो अयश शपथसत्यलखिकहिचली ३ । २४ ॥

टी० । सत्य शपथ लखि अमंगलमूल बचन कहिचली अर्थात् जब महाराज कहे कि राम शपथ मोकोहै जो मांगि है सोई देउँगो इत्यादि शपथ सत्य देखि भाव न बचन टरैंगे ऐसा बिचारि अमंगलमूल अनर्थ उत्पात होनेकी जर ऐसे भयंकर बचनकहिचली क्या कही प्रथम एकबर यहदेहु कि अनुकूल प्रसन्नतापूर्बक भरतको राज्यदेहु १ अनुकूलह्वै भरतको राज्यदेहु पुनः हेसाईं दूसरौबरमांगतहौं बिशेषि मुनिकीनाईं अत्यंतउदासीन बेषते चौदहवर्ष राम वनबासमेंरहैं २ पुनः दृढ़ता यापर ऐसीहै कि मुनिकी नाईंकाल्हिही रामबनकोजाहिं तबतौ सबैबात अत्यंतभलीहै अरुजो ऐसा नकरौगे तौ मोरमरण अर्थात् जो मैंमांगिचुकी सोनभया तौ केवल वेस्वार्थ वृथा अपयशीहै कौनमुख लोकको देखावौंगी ताते आपनेहिहाथ आपनेप्राण घातकरौंगी तामें आपनोभी अयश बिचारिये अर्थात् वचनदैकै पुनः न देना यह असत्य पुनः मेरीहत्या इत्यादि आपहूको अयश होइगो इत्यादि कुबचन सत्यशपथ लखि कहि चली ३ । २४ ॥

मू०। सुनिभूपतिउरअतिदल्यो बज्रहृदयजनुलाग । मुखसुखान लोचनसजल प्राणबिकलभयभाग १ प्राणविकलभयभाग मूँदिराखेद्वउलोचन । शोकदाहउरदहत कहतकछुबनत नशोचन२ बनतनशोचनमुखवचनमनहुप्रेतकर्मनिछल्यो। धुनतशीशव्याकुलशिथिलसुनिभूपतिउरअतिदल्यो३।२५

टी० । सुनि भूपति उर अतिदल्यो कैकेयीके कराल बचन सुनतही महाराज दशरथको उर अत्यंत करिकै घायलभयो कौनभांति जनु हृदयमें बज्रलाग ऐसी व्यथा छातीपरभई ताते मुख सुखायगया लोचन सजल नेत्रनमें आंसु जल भरिगयो प्राण विकल भयभाग अर्थात् धर्म सनेह दोऊ जातदेखि ताहूपर अयशकीभय डरमानि प्राण तनमें विकलह्वैभागा चाहत १ भयते बिकल प्राण तनछोड़ि भगाचाहत ताते दोऊ लोचन

नेत्र मूंदिराखे काहेते शोक दाह उरदहत दुखरूप अग्नि के तापते हृदय जराजात पुनः शोचन दुखपूर्वक उरमें तर्कना करत मुख ते कछु कहत नहीं बनत २ अंतरैमें पश्चात्ताप करत ताते मुखते बचन कहत नहीं बनत काहेते मनहु प्रेत कर्मनिछल्यो अर्थात् यथा कोऊ प्रीतिपूर्वक प्रेतको बशकरिबेको कछु पूजादि करतेमें कछु क्रिया बाचादि चूकातौ वही प्रेत प्राणघातक दंडदेनेलगा तथा कैकेयी में प्रीतिकरि महाराज पश्चात्ताप करते हैं ताते शिथिल सर्वांग ढीले परिगये व्याकुल शिरधुनत मूंड़पीटतेहैं काहेते कैकेयीके बचनसुनि भूपउर अतिदल्यो ३ । २५ ॥

मू० । भयेबिकलसुनिनृपकहा बचनलगेजिमिबान । सत्यसंधता मनकिये कह्योदेनबरदान १ कह्योदेनबरदान बचनकि नकह्योसँभारे । कौशल्यासुतसुवन भरतनाहिंसुवनतुम्हा रे २ भरतसुवनपठयेकुथलरामातिलकआनँदमहा । साधेउ छलतसफललहौ भयेबिकलसुनिनृपकहा ३ । २६ ॥

टी० । बचन जिमि बाणलगे सुनि नृप कहा बिकलभये अर्थात् कैकेयी कहत हे महाराज मेरे बचन यथा बाण आपुकेलगेतौ मेरे बचन सुनि काहेते बिकल भये याको कारण कहौ पूर्व मनमें सत्यसंधता किये बरदान देने कह्यो अर्थात् हम सत्यसंधहैं जो कहो सोईकरी ऐसे सत्यबादी मनतेबने मोको बरदान देनेको कह्यो १ जो पछि दुख होनारहैतौ जब मोको बरदान देने को कह्यो तब किनकाहे नहीं संभारे बचनकह्यो भाव बचनमात्र उदारबने रह्यो देनेके समय सूम होतेहौ तौ पूर्वक्योंनहीं बिचारि लिह्यो काहेते कौशल्यासुत सुवन कौशल्याके पुत्रतेतौ तुम्हारे पुत्रहैं तथा मेरे उत्पन्नभयेते भरत तुम्हारे पुत्र नहींहैं भाव क्या कौशल्या तुम्हारी ब्याहीहैं मैं दासीहौं वा कौशल्यामें पुत्र तुमसों भया मैं किसी यारते पैदा करिलिया जो मेरेपुत्रको अनादर करतेहौ २ काहेते अनादर जाना भरत सुवन पठये कुथल अर्थात् मेरे पुत्र भरतको कुठौर पठाये अर्थात् बली दुष्टनसों युद्धकरिबे हेतु रणभूमिको पठायो जामेंउहैं मारि-डारेजायँ अरु इहां महा आनंद सहित रामको राजतिलक देतेहौ इति छलसाध्यो तसफललहौलेउ भावमेरे पुत्रको कुठौर पठायो अरु मोसे

छल राखि जैसाकाम किहेउ सोई फल अघायकै लेउ हे नृप मेरे वचन सुनि क्यों बिकलभये ३ । २६ ॥

मू० । नयनउघारेनृपकहत समुझिप्रियाबरमाँगु । भरतभूपको तिलकपुरतामेंलगैनदागु १ तामेंलगैनदागु रामबनपठव तिकाहे । कौनलागअपराध रामसबसाधुसराहे २ साधुस राहेनारिनर अबअचर्यछातीदहत । तातेसमुझिबिचारि करु नयनउघारेनृपकहत ३ । २७ ॥

टी० । नयन उघारे नृप कहत पूर्व शोकते मूंदेरहे सोधीर्यकरि बामांगि जानि नेत्रखोलि महाराज कहत हे प्रिया जो तुम्हारी योग्यहोई सोसमु- झिबिचारिकै बरमाँगुतौ पुरमें भरतभूपको तिलक तामें दागु न लगै अर्थात् दूसरा बर जो और कछुमांगु तौ अवधपुरमें भरतैको राज्याभिषेक करिदेउँ सो कबहूं किसीभांति खण्डित न ह्वैसकै अकंटक राज्यकरैं १ भरतको जो मैं राज्यको तिलक करिदेउँ तौ तामेंदागु नहींलागैगो भावदूसरा कोऊ दावा नहीं करिसक्ताहै तौ रामको काहेते बनको पठावती है काहेते सबसरा है राम साधुहैं ताहिकौन अपराधलाग अर्थात् प्रजा पुरजन मंत्री मित्रादिसबै प्रशंसा करतेहैं कि रघुनन्दन परमसाधुहैं तिनतेरो क्या अपराधकियो जो बनको पठावती है अरु बिनअपराध साधुको दण्डदेना उचितनहीं २ अयोध्याकी नारी तथा नरसबै सराहतरहे कि राम परमसाधु हैं तथा अब तक तोहूंसराहतरही अबअचर्य छातीदहत भाव अब बनको पठवततामें मेरीछाती जरीजात तोको ऐसे बचन कहना बड़ाआश्चर्य है भाव तू इस लायककी नहींहै ताते आपनीयोग्य समुझि बिचारि कार्यकरु जामेंतोको अयश न होइ इत्यादि नेत्रउघारे महाराज कहते हैं ३ । २७ ॥

मू० । येनबचनटरिहैंनृपतिमरहुउजरिपुरजाय । अयशअवधि बिधनाकरहिअघरबिबंशनशाय १ अघरबिबंशनशायहो यपुरकालहवाले । कलहकपटकीआगिअवनिभगिजायप ताले २ भगिपतालअवनीघटैरबिशशिरेंगहिंउलटिगति । बिधिहरिहरआपुहिकहैंयेनबचनटरिहैंनृपति ३ । २८ ॥

टी० । कैकेयी कहत हे नृपति महाराज ये मेरेकहे वचन हैं ते न टरिहैं

चहै तुम मरिजाहु चहै अवधपुर उजरिजाय पुनः अयश अवधि बिधना करहि विधाताचहै मोको अपयश की मर्यादाहद बनाय देवै तथा अघ रबिबंशनशाय मेरेपापते चहै सूर्य्यबंशभरि नाशह्वैजाय १ रबिबंशनशाय चहै पुरकाल हवालेहोय अर्थात् मेरे महापापते सूर्य्यबंश भरि नाशहोय अथवा अत्यन्त महाभारी पापलागै जाके प्रभावते अवधपुरभरि काल के बशहोय सबै पुरजन मरिजायँ पुनः कलह जो परस्पर अत्यन्त बिरोध के व्यापार पुनः छल चातुरी ते कार्य साधन जो कपट इत्यादि अधर्म्म अनीतिरूप आगि लागते अवनि पृथ्वीचहै पतालै भागिजाय २ अवनि इहाघटै खण्डित परै अथवा इहांते भागि पृथ्वी पातालमें घटैजाय स्थित होवै पुनः रबि शशि उलटीगति रेंगहिं अर्थात् चहैं सूर्य्य अरु चन्द्रमालौटि पीछेकोचलैं पुनः बिधि हरि हर आपुहिकहैं अर्थात् मेरेहीबचनद्वारा लोकमें उत्पत्ति प्रलयहोते देखि लोकसाधक ब्रह्मा बिष्णु महेश तीनिहू आपुइ मोसोंकहैं कि रघुनन्दन को बनका न पठौ तबहूं मेरेबचन न टरैंगे यामें सरस्वती उक्तिहैयथा ॥ चौ० ॥ रामकीनचाहैं सोहोई । करैअन्यथा असनहिं कोई ॥ भावयह सबकार्य रामइच्छाते होता है ताको मेटनेवाला कौन है पुनः कैकेयीके बचन में धुनियह है कि केवल आपुके दुखहोनेते त्रैलोक्य को महादुख छूटता है सोऊबात धर्मवन्तन करनाउचित है ताके बचन न टरैंगे ३ । २८ ॥

मू० । अनलचंदवरषैकबहुँ शीतलसूरजहोय । शेषतजेंधरनीधरन समुदबिनाजलजोय १ समुदबिनाजलजोय शंभुशिर चंद्रप्रजारै । तिमिरदहैरविरूप वृद्धकरदंडहिडारै २ दंड हिविधिजगसृष्टिसब नाशयणमिटिजाहिंकहुं । येनवचन नरपतिटरैं अनलचंदबर्षैकबहुँ ३ । २९ ॥

टी० । पुनः कबतक मेरे बचन न टरहिंगे सो सुनिये चन्दकबहुंअनल बर्षै अर्थात् जो सदाशीतल अमृत बर्षताहै सोऊचंद्रमा चहै कबहूं उष्णह्वै अग्निबर्षै तथा जो सदाउष्णहै सोऊसूर्यचहै कबहूंशीतलहोय पुनः धरनी जो पृथ्वी ताको जेसदा शीशपरधारणकिहेहैं तेऊशेष चहैं कबहूं धरनीधरन तजैं भूमि शीशते डारिदेवैं पुनः जो सदा जलते परिपूर्ण रहता है सोऊ समुद्र चहै कबहूं बिनजल जोय देखिपरै १ यथा समुद्र सूखा देखिपरै

तथा चन्द्र शम्भु शिरप्रजारै अर्थात् माथमेंबसा सदा शीतल किहेरहत सोऊ चंद्रमा अग्निरूप ह्वै चहै कबहूं शिवके शीशको प्रकर्पकरि जरायदेवै पुनः रबिसूर्य ते सदा तिमिर अन्धकार को नाशकरते हैं सो तिमिर चहै कबहूं रबिरूप को दहै भस्मकरिदेवै तथा वृद्धकर संसार को बढ़ावनेवाले ते चहैं दण्डहि डारै संसारपर दण्ड करनेलागें २ सबसृष्टि को जगमें वृद्ध कर्त्ता बिधि जोब्रह्मा ते चहैं संसारपर दण्ड करहिं पुनः जे सदा अखण्डहैं सोऊ नारायण चहैं कबहुं मिटिजायँ इत्यादिक कबहूं चन्द्र अनल ह्वैं परन्तु हे नृपति ये मेरे बचन न टरिहैं इति कैकेयी दृढ़कहा ३ । २९ ॥

मू० । राज्यनचाहैंभरतपुरलागोतोहिंपिशाच । मोरिमृत्युबोलत बचनतवमुखचढ़िशिरसाँच १ तवशिरचढ़िकरिसाँचराम नृपहोवहिंभारी । तुहिकलंकदुखमोरमिटहिकबहुँकनहिंना री २ नारिकरिचितचाहिकैबचनमोरजियजानिफुर । राम भूपसेवकअनुजराज्यनचाहैंभरतपुर ३ । ३० ॥

टी० । भरतपुरकी राज्य न चाहैं महाराज कैकेयी प्रतिकहत किकछु भरत तौ अवधपुर की राज्य होना चाहते नहीं यह तोहि पिशाचलगो है भाव तेराभी ऐसा कुटिल हठी स्वभाव नहींरहै सो जो कुटिल हठधरे है सोतेरे कोई भूतलगा है ताकी बशहै काहेते मोरिमृत्युसाँच शिरचढ़ि तव मुख बचन बोलत मेरी मृत्यु सत्यही तेरे शीशपर चढ़ी बैठी है सोई तेरे मुखद्वारा येबचन बोलत है भाव मेरा काल तोसों सब कहाय रहा है १ मेराकाल तेरे शिरपर चढ़िसत्यही मेरेप्राण लेइगो पुनः राम भारी नृप होवहिं मेरे मरेपीछे रघुनंदन महामंडलेश्वर राजा ह्वै हैं परंतु हेरीनारी तोहिकलंक अरुमोरदुख येदोऊ कबहूंनहीं मिटिहैं २ हेनारी मोर बचन जियफुरजानि पुनःचितचाहिकै करि अर्थात् जोमैं कहतहौं सोई निश्चय करिकै होइगो इति मेरे बचन जीवते साँचेजानिले पीछे आपने चितसों विचारिकै जोभावै सो यश अयश करिले पुनः रामभूप अनुज सेवक मेरे मरेपीछे रघुनंदन राजाह्वैहैं भरतादि तीनिहुंभाई उनके सेवकबने रहिहैं काहेते भरततौ पुरकी राज्यचाहतै नहींतौ कैसे और ह्वैसक्ताहै ३ । ३०॥

मू० । बसीअवधनृपरामहैंयहजानतसबकोय । मोरमरणभोभा

मिनीयहसुखलख्योंनसोय १ यहसुखलख्योंनसोयसत्य जियजान्यसुभामिनि । मीनजियैबिनुबारिरामबिनजियोंन यामिनि २ जियोंनयामिनिदिनबृथाजानिमरणपरिणामहै। तूअभागिनीतनुलियोबसीअवधनृपरामहै ३ । ३१ ॥

टी० । नृपरामहैं अवधबसी यहसबकोय जानत कैकेयीप्रति महाराज कहत कि अबतौ तू उजारे देती है परंतु अयोध्यापुर पुनः बसी पुरजन प्रजादि सबैकोऊ यहबात जानतेहैं कि पुरके राजाभी रघुनंदनै हैं अर्थात् जो तेरेबचन अनुकूलबनौको जायँगे तौ राज्याभिषेक तौ भरत अंगीकारै नकरैंगे तौ रघुनंदनकी आज्ञातेचहै सो भाय राजकाजकरै परंतु राजाकरि रामैको मानैंगे परंतु हेभामिनि कोपवंती मोर मरणभो ताते न यहसुख लख्यों नसोय नकार दीप देहरी न्याय है अर्थात् रघुनंदन बनगये तौ मेरा मरण निश्चयभया ताते यथा यह सुख न देखने पायो तथाबनते लौटि आये पर जब रघुनंदनको राज्याभिषेक होइगो सोऊन देखउँगो १ यथा तेरी कुमतिते यहराम राज्याभिषेक सुख न देखनपायों तथा जब राज्य तिलकहोइगो सोऊ न देखौंगो परंतु हे भामिनि यह मेराबचन सत्यकरि जीवते जान्यसु कया सत्य जान्यसु मीनबिनु बारिजियै अर्थात् बिनाजल मछरी चहै जियै परंतु रामबिनु मैं यामिनि रातिभरि न जीवत रहिहौं २ जियों न यामिनि रातिभरि न जीवत रहिहौं कदाचित् रातिभरि रहि जाउँ तौ दिनभये पर जीवन बृथाहै ताते परिणाम अंतमें निश्चय मरण जानिले ताते तू अभागिनी तनलियो अर्थात् रघुनंदनको बनपठै कलंकी भई राम विरोधी जानि भरतौ तेरामुख न देखैंगे अरु मोको मारिवि- धवापन लेइगी इत्यादि इसकुलमें तू अभागी तनुलियो अरु अयोध्या पुनः बसी राम तौ राजा हैं नैहैं ३ । ३१ ॥

मू० । रामरामकहिनृपगिरयोकुमतिनमानीबात । अवधबधावअनन्दबड़नींदनलागीरात १ नींदनलागीरातकालिहशुभघरी सुहाई । देख्योजायसुमन्तभूपगतिमतिबिकलाई २ मति बिकलाईदेखिकैलखिकुचालआतुरफिरयो । आयोरामलिवायकैरामरामकहिनृपगिरयो ३ । ३२ ॥

टी० । जबकुमति कैकेयी बात न मानी हठ धरेरही तब निश्चय अनर्थ जानि नृप दशरथ महाराज राम राम कहि भूमिपर गिरयो मूर्च्छित ह्वैगये अरु अवधपुरमें बड़ाआनंद है ताते घरघर बधावन बाजाकीन्हे उत्सव देखन अभिलाषते रातिभरि किसीके नींदनहीं लागी जागतै बीति गई १ काहेते रातिभरि किसीके नींदनहीं लागी कि काल्हिसुहाई सुंदरि मनभाई राम राज्याभिषेक की शुभघरी है इस अभिलाषते कोऊ नहीं सोया प्रभात भया वशिष्ठादि सबकाम काजी द्वारआये तबौ महाराज न उठे तबमुनि विस्मयसहित सुमंतको भीतर पठाये मंदिरमें जाय सुमंत भूप की गति मति विकलाई देख्यो अर्थात् दुखते बुद्धि विकल मूर्च्छित भूमिमें परे २ मतिकी विकलाई महाराजकी दुर्गति देखिके कुचाललखि आतुर फिरयो अर्थात् मनसों विचारि लिये कि रामराज्य होनेमें कैकेयी कछु बांधाकिया अबकछु पूछनेको समय नहीं है अबरघुनाथजीको बुलाय लावौं तिनकी आज्ञाते कामकरि सक्तेहैं इस विचारते शीघ्रही लौटे भाव रानीके प्रेरणाते महाराज कछु अमंगल आज्ञा न देदेवैं अरुजो रघुनंदन को मनोरथ देखेंगे तौराज्याभिषेक करिलेवैंगे रानी क्या करिसकी है इस विचारते लौटे जाय रघुनंदन को लवाय लैके पुनः मंदिर को आये तबौ देखे नृपदशरथ जी भूमिपै गिरेपरे हैं राम राम कहि रहेहैं देह की सुधि नहीं है ३ । ३२ ॥

मू० । पितुउठायबोलेवचन नृपतिलीनउरलाय । नयननीरधारा धसै वचनबोलिनहिंजाय १ वचनबोलिनहिंजाय रामपूछी महतारी । कहतिकठोरकुबैन कथाकरणीकटुभारी २ कटु भारीसोहेतुसुनि तनप्रसन्नकहमृदुरचन । लघुउपदेशात दुखमहा पितुउठायबोलेवचन ३ । ३३ ॥

टी० । पिताको उठाय रघुनंदन वचन बोले भावकौन कारण आपु को महादुख है सो कहिये ताकीउपायकरौं तबनृपति दशरथजी रघुनंदन को उरमें लगायलीन करुणा सनेहते तनबिह्वल कंठारोधते वचन नहीं बोलिजात अरु नयननीरधारा धसै नेत्रनसों आंसु जलकीधारा वहत १ जबदेखे कि पिताते नहीं वचन बोलेजाते हैं तबरघुनाथजी महतारी कैकेयीते पूछे अर्थात् हेमाता कौन कारण पिताको दुख है सोकहु तब भारी

कटुकरणी की कथाहै सोकठोर कुबैन कहति आपनी अत्यंत कुटिलकर्त्त-व्यता को जो चरित्र है सो कठोर उरकैकेयी कुवचन कहिसुनाई अर्थात् मेरे पुत्रको बिदेशपठै मोसों छलराखि तुमको तिलकदेते रहैं अरुपूर्व मोको दोवरदान देनेको कहेरहैं सो अबमैंनेमांगा भरतको राज्य अरु चौदह बर्षतुमको बनबास इसीते महाराजको दुखहै काहेते उधर धर्मजात इधर तुम्हारा सनेह नहीं छोडिसक्ते हैं जोतुम खुशीते बनको चलेजाउ तौसब दुख मिटिजाय २ जो भारी कुटिलकरणी को हेतुहै सो सुनिकै पुनः तन प्रसन्न मृदुरचनाके वचनकहे अर्थात महाराज को दुखित देखि ताको तौ दुख मनमें है परंतु आपने बनजाबे में हर्ष ताते तनप्रसन्न है पुनः कोमल रचनाते वचन कहत कि लघुछोटा उपदेश तामें इतनाबड़ा महादुख महाराज क्यों करतेहो इसभाँति पिताको उठाय रघुनंदन वचन बोलतभये अर्थात् पिताको उचित है कि पुत्र को उपदेशदै सत्य शौच तप दानादिमें जो बड़ेभारी श्रद्धा श्रम संकटके व्यापार हैं तिनपर आरूढकरै अरु जो चौदहै वर्षको बनबास इसथोरे धर्मोपदेशमें ऐसा दुखकरना धर्मवंतनको उचितनहीं काहेते देखिये आपहीके वंशार्य हरिश्चंद्र सर्बसराज कोशदै डारे स्त्री पुत्र आपनी देहतक बेचिडारे अरु प्रसन्नै बनेरहे यह धर्मवंतन की रीति है ताते हर्ष सहित बनजानेकी आज्ञादीजिये इति कोमल रचना वचन है ३ । ३३ ॥

मू० । राउरचरणप्रतापते बनमुदमंगलमोहि । मुनितीरथदेवन दरश मोरपर्महितहोहि १ मोरपर्महितहोहि जातदिनबिल मनलागै । आतुरऐहौंअवधिधरन पुनिचरनसभागे २ धरनचरनपुनिआयहौं आयसुदेइयआपते । कुशलक्षेमघर आयहौं राउरचरणप्रतापते ३ । ३४ ॥

टी० । रघुनाथजी कहत हेमहाराज हर्ष सहित बनजानेको मोकोआयसुदीजिये काहेते यामें श्रमथोरी अरुआनंद सहित लाभबड़ी है अर्थात् आपुको धर्म मेराभी धर्म पुनः राउर आपुके चरण प्रतापते मोहिं बनमें मुद मानसीआनंद तथा मंगल प्रसिद्ध उत्सव बनारहैगो काहेते मुनिनको समागम तीर्थस्नान बास देवनके दर्शन इत्यादि मेरे हित हैं परमोत्तम १ मेरापरमहित होइगो पुनः आपहू को बड़ा दुखनहीं काहेते राजकाज तौ

भरत करबै करैंगे अरु जो चौदह वर्षको मेरावियोगहै सो दिनबीति जात बिलम नहींलागते हैं भावकछु जानि न परैगा अरु चौदह वर्षबीति जायँ गे तब अवधिअंत आतुर शीघ्रही आयहौं कौनहेत सभागै पुनःचरण धरण हेतआपनी सहित भाग्य पुनः आपुके पदकमलनको प्रणाम करिवेहेत २ आपुके पदकमलको प्रणामकरिबे हेतपुनः इहां आयहौं ताते आपुते आ-नंद सहित आयसुदेइ ये शोक न कीजिये आपुके चरण प्रताप ते कुशल क्षेम सहित बनते घरको पुनः आयहौं ३ । ३४ ॥

मू० । उत्तरकढ़ेउनभूपमुख रामधरेनृपपाँय । कुमतिकठोरकुवच नकटु मातुकहतमुसक्याय १ मातुकहतमुसक्याय हृदय छोड़तनाहिंराजा । करिप्रबोधशिरनाय विपिनकीसाजिस माजा २ साजिसमाजप्रसन्नमुख गहेमातुपदप्रेमसुख । राम चलतव्याकुलगिरयो उत्तरकढ़योनभूपमुख ३ । ३५ ॥

टी० । रामनृपपाँयधरे भूपमुख उत्तर न कढ़ेउनृपदशरथ महाराजके पाँय पकरि रघुनाथ आज्ञामांगे परन्तु महाराजके मुखते उत्तरु कछु न निसरि सकेउ तबमातु कैकेयी कुमतिवाली कठोर हृदयहै जाको ताने कटु कुव-चन मुसक्यायकैकहत भाव तुमधर्म्म राखाचहौतौ वनकोजाउ राजा धर्म्म त्यागेहैं ताते छिनके ऐसेविलाप करतेहैं तौ ये तुमको वनजानेको न कहैंगे कुमति याते कहे जो प्रीतिमें विरोधमाने तथा रघुनन्दन ऐसेसुपुत्रकोवनको पठवत अरु महाराजके प्राणजाते हैं ताहूपर मुसक्यात ताते कठोरहृदय है पुनः पतिको अनादर ताते कुबचनहै अरु रघुनन्दनको वनगवन किसी को नहींसुहात सोई कहत ताते कटुबचनहै १ कुमतिकठोर मातुतौ कटुक वचन मुसक्यायकै कहत अरु राजादशरथ रघुनन्दन को हृदय में लगाये हैं ते छोड़तनहीं तब रघुनाथजी प्रबोधकरि आपु धर्म्मवन्तहै मेरे धर्म्म में क्योंबाधक होतेहौ भाव मैं काहूभांति नहींरुकिसक्ताहौं इत्यादि समुझाय पुनः शिरनाय प्रणामकरि विपिन समाज वन जावेकी साजसजे २ वन समाजबल्कलादि बसनसाजि प्रसन्नमुख सुखप्रेमसहित जाय मातुकौश-ल्याके पदगहे प्रणामकीन्हे अरु इहां रघुनाथजी के चलतसमय महाराज के मुखते उत्तर कछु न कढ्यो जवावतौ कछु न दैसके परन्तु वियोग दुखते विकल ह्वै भूमिपै गिरे ३ । ३५ ॥

मू० । मातुगोदमोदतिभरे कहतिवचनआनंद । कालिहितिलक नृपसुखसज्यो कितिकबारसुखबृंद १ कितिकबारसुखबृंद लाभलोचनसबलूटी । सिंहासनासियसहित निरखिरविश तद्युतिछूटी २ रविशतद्युतिछूटीअवधि मधुरलालभोजन धरे । न्हायखाउबड़बारभो मातुगोदमोदतिभरे ३ । ३६ ॥

टी० । मातुकौशल्या रघुनन्दनको गोदभरे मोदति मनमें आनन्दित हैं पुनः आनन्दमय बचनकहत हेपुत्र कालिहनृप अवधेश महाराज तुम्हारे तिलकहेतु सुखसाज सज्यो सो सुखवृन्द कितिकबार अर्थात् जाको देखि सबके समूह सुखहोई सो लग्न कौनसमय में है भाव आजु कौन समय तुम्हारा राज्याभिषेक होइगो १ सुखको वृन्दसमूह लाभसो लोचन नेत्रन द्वारा सब पुरबासी लूटी सो घरी केतनीबार है अर्थात् कौनबार राज्याभिषेक को आनन्दको उत्सव सब नेत्रन भरिदेखैंगे जासमय जानकीसहित भूषण बसन सजि तुम सिंहासनपर आसीनह्वैहौ तबरविशत द्युतिछूटी अर्थात् सौसूर्य्यकैसी प्रकाश तनतेप्रकटह्वै सर्वत्र फैलिजाई तासमय निरखि सबशोभा लूटैंगे २ शतरबिद्युति वा समयमें छूटी सो अयोध्याभरे में प्रकाशित रही पुनः हेलालमधुर भोजनधरे हैं सो न्हायखाउ बड़बारभै बड़ी देर ह्वैचुकी अबशीघ्र स्नानकरि भोजनकरौ इत्यादि मोदसहित गोदमें भरे माता कौशल्याजी कहती हैं ३। ३६ ॥

मू० । राजविपिनकोम्बहिंदयो जहांमोरबड़काज । राउरचरणप्रतापते कुशलआइहौंसाज १ कुशलआइहौंसाज मातुआशिषम्वहिंदीजै। जातदिवसनाहिंबार हर्षिमनआयसुकीजै २ आयसुकीजैहर्षिकै मातुचरणप्रभुशिरनयो । कहमृदुदुहु करजोरिकै राजविपिनकोम्वहिंदयो ३ । ३७ ॥

टी० । जबकौशल्याजी राजतिलक की घरीपूछे तापर रघुनाथजीकहत हे मातु अबतो पितामोहिं बिपिनबन को राजदियो है जहां मुनि मिलन तीर्थबास देव दर्शनादि मेरा भी बड़ाकाज है भाव बनबास में मोको कछु दुख न बिचारिये पुनः राउरचरण आपु के पदकमल प्रतापते सब उत्तम साज समाज सहित कुशल सहित घरको लौटिआयहौं १ साजसहित

कुशल पूर्व्वक आयहौं ताते हे मातु अबमोहिं आशीर्बाददीजै अरु दिवस जात बारनहीं लागत अर्थात् चौदहैवर्षकी अवधिहैसो वीतिजात जानिन परैगी ऐसा बिचारि हर्षि प्रसन्नता सहित आयसुकीजै बनजाने की आज्ञा करिये २ हर्षि आयसुकीजै ऐसा कहि मातु चरण प्रभु शिरनयो माताके पाँयनकों प्रणामकरि पुनः रघुनाथ जी दुहुकरजोरि मृदुकह दोऊ हाथ जोरि कोमल बचनतेकहे कि मोकोतौ अबपिता बनकी राज्यदिये ताते आपहू आज्ञादीजै ३ । ३७ ॥

मू० । सहमिसुखानीसुनिवचन सियाधरेपगआय । रामबुझाई जानकी विपिनविपतिसबगाय १ विपिनविपतिसबगाय सुनतलक्ष्मणउठिधाये । कहिकहिविविधप्रकार लषणासि यप्रभुसमुझाये २ समुझायेप्रथमहिसिया करिविवेकवन प्रियसदन । उत्तरकछुकनसियदयो सहमिसुखानीसुनि वचन ३ । ३८ ॥

टी० । रघुनन्दनके बचन सुनि कौशल्याजी सहमि सुखानी अर्थात् प्राणघात सरिखे दुखते देह चेष्टारूखी परिगई धर्म में बाधाजानि कछु कहिनसकीं ताहीसमय आय सीयपगधरी जानकीजी सासुके पांयगहे भाव प्राणनाथके साथ जानेहेतु मोको भी आज्ञादीजै सो देखि विपिन बिपति सबगाय रामजानकी को बुझाई अर्थात् वर्षा हिमि आतप सहन नांगपाये संकट कंकर भूमि चलन फल भोजन भूमि शयन व्याघ्र राक्षसादिकी भय इत्यादि बनकी सब बिपति बखानकरि रघुनन्दन जानकी जीको समुझाये भाव तुम बनको नचलौ १ जानकीजी प्रति वनकी सब विपति गावतैरहैं ताही समय बनगवनको हाल सुनतही लक्ष्मणजीउठि धायेआय हाथजोरि खड़े भये तब बिबिध अनेक प्रकारके बचन यथा लौकिक धर्म सहित घरकोसुख तथा बनकोदुख इत्यादिकहि लषणसीय दोउनको प्रभु समुझाये २ प्रथमै श्रीजानकी जी को समुझाये भाववन में महाबिपत्ति तहां न जाउ मेरे कहेते सुख पूर्बक घरमेंरहौ सासु श्वशुर की सेवाकरौ इत्यादि सुनि किशोरीजी बिबेककरि देखे तब सदन जो घर ताते बनप्रिय लाग अर्थात् बिचार कीन्हेते बिनापति को घर दुखदायक

लाग अरु पतिसंगते बन सुखदायक लाग इसबिचारते ढिठाईहोत जानि जानकीजी उत्तरतौ कछु न दिये परंतु बियोग कारक स्वामीके बचनसुनि सहमि डरायकै सूखिगई भावबियोग होनचाहत २ । ३८ ॥

मू० । धरिधीरजकहजानकीमनसमुझियरघुराय । कंटकबनदावा अनल अनिलव्यालदुखदाय १ अनिलव्यालदुखदाय व्याघ्रबृकअहिगजघेरे । सूकरभालुपिशाच बिषमबनभय बहुतेरे २ बहुतेरेउत्पातजे उरनदहैभयआनकी । प्रभुवि योगछातीदहै धरिधीरजकहजानकी ३ । ३९ ॥

टी० । बनमें यावत् बिपत्ति रघुनंदन दिखाये तिनकोपति बियोगदुख के आगे तुच्छ देखावने हेतु धीरजधरि जानकीजी कहत हे रघुराय मेरी बात मनते समुझिये जो आपनेकहा कि मारगमें कंटकहैं बनमें दावानल लागतीहै अनिल पवन अर्थात् भयंकरआँधी वा लूक जाड़ तथाव्याल जो सर्पादि दुखदायक हैं १ यथा पवन सर्पादि दुखदायक तथा व्याघ्र अरु बृकजो भेड़हा तथा अहिगज दुष्टहाथी घेरतेहैं अहि यद्यपि सर्पैको नामहै परंतु अहिगजकहे दुष्टहाथीको बोधहोताहै यथा ॥ व्यालोदुष्टगजेसर्पेखले श्वापदिसिंहयोरितिविश्वमेदिनी ॥ तथा सूकरभालु जो रीछ पिशाच जो भूत वैतालादि बिषम कठिन बनमें बहुतेरे भय भयंकर डरहैं २ जे बहुतेरे उत्पात सो आनकी भय उर न दहै अर्थात् जे बनमें बहुतसे दुख दायक उत्पातहैं तिन औरनके डरते छातीनहीं जरतीहै परंतु हेप्रभु आपुको बियोगतौ छातीजारतहै तौ इसकी समान और दुखकहांहै इत्यादिधीरज धरिकै जानकीजी कहे भाव आपुके संगबनैमें सुखहै ३ । ३९ ॥

मू० । विपिनआपुसँगअतिसुखी डासिपाततरुछाह । गिरिगण सरिसरवरमुदित क्षुधातृषितनहिंदाह १ क्षुधातृषितनहिं दाह निरखिपदकमलतुम्हारे । श्रमपथतनकनलेश सकल विधिप्रभुरखवारे २ प्रभुरखवारबिचारिये तजेजीवजानिय दुखी । त्यागियमोहिंविवेककरि विपिनआपुसँगअति सुखी ३ । ४० ॥

टी० । किशोरी जी कहत हे प्राणनाथ आपु के संग विपिन वनमें मैं अत्यंत करिकै सुखी रहौंगी काहेते तरुछाह पात डासि वृक्षकी छाह में कोमलपात बिछाय तापर बैठे शयनकीन्हे परम आनंद रहौंगी यथा पुष्प शय्याकी समान तथा गिरिगण पर्वत समूहतेई उत्तम मंदिर समान मानौंगी तहाँ कंदमूल फल उत्तम भोजन तथा सरिजो नदी अरु सरवर तड़ाग उत्तम तिनमें सुधासम जलपाय मुदितमनते आनंदित रहिहौं क्षुधा तृषित नाहिंदाह अर्थात् कन्दमूलफलखाये क्षुधाभूख न सताई सर सरितनमें जलपानकरि तृषित पियासी न रहब वृक्षछाया में दाह घामादि न लागी पहाड़ गुफनमें जल बयारिबाधा न करि सकी १ यथा क्षुधा तृषा दाह न होई तथा हे प्रभु आपुके पद कमल निरखि पथश्रम तनकनलेश पन्थ चलिबे में परिश्रम थोरहूते थोरा किंचित् न होई तनक कही अल्पथोरा लोकप्रसिद्ध है तथा लेशकही अत्यन्त अल्प यथा ॥ लवलेशकणाणवः अत्यल्पे इत्यमरः ॥ अर्थात् सामान्य प्रतिव्रतन की लोकमें सनातनते रीति चलिआई है कि पतिके वियोगमें जीवतही तन अग्नि में भस्मकरि देवेमें नेकहूश्रम नहींमानती हैं पतिकेसंग परलोकहू में जातीहैं अरु मेरा तौ जीवन आपुके देखेमात्र है तौ प्रियके संयोग में किसी भांति श्रमहोई नहींसक्ता है पुनः आपुमहाराज कुमार ते तौ पैदर चलने हिमिजल आतप क्षुधा तृषादि सहनेमें कठोरहौ ताते आपुको तौ श्रम न होइगो अरुमैं आपुकी दासी ह्वैकै सुकुमारी हौंसंगचलिबेमें मोको श्रमहोइगी ऐसा रसाभासबचन सुनैमें नहीं आवत्ता है कि स्वामी कठोर अरु सेवकसुकुमार यह लोकबेदरीति प्रतिकूल बचन आपुकेकहिबे योग्य नहींहै तातेयही निश्चयजानिये कि जो बातआपही करौगे सोबातकरनेमें मोको श्रमको लेश न होइगो पुनः सकलविधि प्रभुरखवारे अर्थात् राक्षस व्याघ्र वाराह गजादिकी जो भयहैं सोतौ सबविधिते मोको रखावने वाले बीर धुरीण धनुर्बाण धारण किहे आपुमेरे साथही हौ तब मोको कौनकी भयहै २ हे प्रभु जो आपु रखवार साथही हौ तौ बनमें तो परम आनन्द है पुनः आपु बिचारिये तजे जीवजानिये दुखी अर्थात् जो सुखी रहने हेतु मोकोघरमें त्यागि आपु बनैचलेजाहु तौ मेराजीव महादुखी जानिये भाव प्राणघातको दण्डहै अरु आपुके संगबनमें मैंअत्यन्त सुखीरहौंगी इत्यादि तौ मेरा बचन है अरु आपुस्वामी हौ आज्ञा शिरपर है जो कहौ सो करौं

परन्तु बिबेककरि मोहिं त्यागिये भाव प्राणरहतें देखिये तौ त्यागिजाइये वा प्राण राखनो न चाहिये इति बिचारकरि त्यागिये २ । ४० ॥

मू० । प्रभुमुखपरनाहिंप्रण करौंउत्तरदीन्हेपाप । तजौतौकहाबसा यपियसमुझिबिचारियेआप १ समुझिबिचारियेआपप्राण तनत्यागिनिवारौं । प्रभुसंगजाइहधायदेहघरराखियडारौं २ राखियडारौंदेहघरबहुतकहतपातकडरौं । सत्यमंत्रमनद ढधरयोप्रभुमुखपरनाहिंप्रणकरौं ३ ॥ ४१ ॥

टी० । आपके बचनको उत्तरदीन्हे मोकोपाप है ताते हे प्रभु आपुके मुखपर मैं प्रणनहीं करौंगी अर्थात् घरमें रहने को सुख सासु श्वशुर की सेवा इत्यादि सामान्यधर्म्म यावत् बचन आपुने कहे तिनको जोमैं पतिव्रत धर्म्म वेदशास्त्र प्रमाणते उत्तरदे आपुके बचन खण्डन करिदेउँ तौ मोको बड़ापापलागै काहेतें जिसधर्म्मके बलते मैं प्रत्युत्तरकरौं तौ आपुको उत्तर देनेमात्रही ते पतिब्रत धर्म्मैं निर्मूलनाश होता है काहेते जो स्त्री क्रोधबश प्रौढ़त्ताकरि पति सों प्रत्युत्तर करती है ताही पापते निषिद्ध पशु योनिमें जन्मपावती है यथा ॥ शिवपुराणे ॥ उक्ताप्रत्युत्तरंदद्यात् यानारी क्रोधतत्परा । शरभाजायतेग्रामे शृगालीनिर्ज्जनेचने ॥ इत्यादि बिचारि हे प्रभु आपुके मुखपर सन्मुख मैं अपना प्रण नहीं प्रकट करिसक्ती हौं काहेते जो कुछुबात पूंछौ ताको मीठे बिचनते उत्तरदेना उचितहै अरु जो आज्ञादेउ ताको मानिलेना उचित है ताते जो कहौ सोई करौं परन्तु हे पिय आपु समुझि बिचारिये अर्थात् जो कुछु करिबेयोग्य होय सो बिचार करि समुझिकेकार्य्य कीजिये अरु जो तजौ तौ कहा बसाय अर्थात् जो बिचार कुछु न करौ केवल मोको त्यागिके चलेजाउ तौ मेरा क्या अख्त्यार है १ ताते आपु समुझि बिचारि कार्य कीजिये केवल त्यागिकै न चलेजाइये नातरु तनत्यागि प्राणनिवारौं अर्थात् पयानके साथही आपनी देहत्यागि प्राण दूरिकरिदेउँ तेतौ प्रभुसंग धायजायहैं अरु देहघरराखियडारौं अर्थात् बियोग दुखके आगे देहको सुख यथा निरुज सुखपूर्बक जीवनो तथा घरको सुख परिवारको सन्मान भोजन बसन इत्यादि पर धूरिडारि प्राण आपुके संगही चलेजायँगे २ जो आप सुखबतावते हौ त्यहिदेह घरपर तौ मैं राख डारिहौं अरु बहुतकहत पातकडरौं आपुसों बहुतीबातैं करतमें पापहोनेको

डराती हौं ताते सत्यमंत्र दृढउरधर्यो अर्थात् वियोगहोतही प्राणत्यागि देना इति सत्यमंत्र सोतो पुष्टकरि मनमें धारणकिहेहौं परंतु प्रभुके मुख पर नहीं प्रणकरतीहौं ३ । ४१ ॥

मू० । तुमलक्ष्मणमानौकही रामसिखावनदेत । मातपितापुरशोचसब नाशहुबसौनिकेत १ नाशहुविघ्नअनेक अवधपुर भरतहुनाहीं । भूपबृद्धनरनारि दुखितममदुखमनमाहीं २ दुखमनकोदूषणतजो मानिमंत्ररांखौसही । दूषणदेइहिमोहिंनर तुमलक्ष्मणमानौकही ३ । ४२ ॥

टी० । श्रीरघुनाथजी सिखावनदेते हैं कि हेलक्ष्मण तुमतौ मेरीकही बातमानौ भाव जो जानकी नहीं मानतीहैं तौ पतिकोसंयोग सेवनै स्त्रिनको मुख्यधर्महै पुनः इनते पुरको तथा राजकाजभी कछु नहींह्वैसक्ताहै अरु तुम सबकार्य करिसक्ते हौ पुनः मेरे आज्ञापाल बंधुहौ ताते जो मैं कहौं सोमानौ क्यामानौ निकेत जो घर तामेंबसौ अरु माता कौशल्यादि पिता दशरथ महाराज तथा पुरवासी जन इत्यादिको जो शोच मेरे वियोगको पश्चात्ताप सो सबनाशहु सबको समुझाय धीर्यदीन्हेउ १ पुनः चौर ठग अन्यायकर्ता शत्रुघात इत्यादि अनेकविघ्न राज्यमेंहोते हैं तिनको नाशहु संभारसहित राजकाज देखहु काहेते अवधपुरमें भरतौ नहीं हैं अरु भूप दशरथ महाराज ते वृद्ध अरु मेरे वियोगते विकल तथा पुरके नरनारीभी सबै दुखितहैं काहेते ममदुख मेरे वियोगकोदुख सबकेमनमेंहै तिनकिसीको कुछ कियानहोइगो ताते राजधानी सूनी न करनाचाहिये इसहेतु अवश्यरहौ २ पुनः दुखमनको दूषणतजौ अर्थात् मेरे वियोगको जो दुख तुम्हारे मनमें है सो नीति धर्मते दूषण है अर्थात् शून्यराज्य छोडि जो मेरे संग चलेजाउगे इहां प्रजनको दंडादि जोकछु राजकाज बिगरिजायगो ताकोपाप तुमकोहोइगो इसहेतु वियोग दुख मनमें न राखौ मेराकहा मंत्रसही सांचामानि जो कहौं सोइकरौ काहेते मोहिं नर दूषण देइहि अर्थात् जो मैं तुमको साथलैजाउँ तौ लोग मोको दोषलगावहिंगे ताते हेलक्ष्मण तुम मेरी कहीबातमानहु घरमें रहौ ३ । ४२ ॥

मू० । प्रभुवनमेंहौंघररहौं आयसुतज्योनजाय । प्राणवायुममवशनहीं देहकहौतहँजाय १ देहकहौतहँजाय भारयहकापर

डारो । मैंसेवकशिशुकुमति चरणरजसेवनवारो २ सेवन वारोरजचरण धर्मनीतिमगकिमिलहौं । अवधकाजमेरोक हा प्रभुवनमेंहौंघररहौं ३ । ४३ ॥

टी० । आयसु तज्यो नहींजात परंतु प्रभुतौबन में अरु हौं घरमेंरहौं लक्ष्मणजी कहत हेप्रभु आपुकी आज्ञातौ त्यागि नहींजात जो कहौ सोईं करौं परंतु यहौतौ अनुचितहै कि स्वामीहैकै आपुतो बनमें बासकरो अरु सेवकहै मैं घरमेंरहौं सुखभोगकरौं यहयद्यपि शोभानहीं परंतु आज्ञा अवश्यकीनचाहौं सो देहको जहांकहौ तहांजाय परंतु प्राणबायु ममबशनहीं अर्थात् देहतौ आज्ञानुकूल घरमेंरही परंतु प्राणपवन मेरे बशमें नहीं जो राखिसकौं भाव प्राण आपहीके साथ चलेजायँगे १ प्राणतौ आपुकेसाथहौ जैहैं देहको जहांकहौ तहांजाय परंतु यह राजकाजको भार कांपरडार तेहौं भाव यहभार उठाववेयोग्य मैं नहीं हौं काहेते राजकाजको भारतौ राजा नीति धर्मवंत सुबुद्धी उठाइसक्ते हैं अरु मैं आपुके चरणरजको सेवनवारौ शिशु कुमति सेवकहौं अर्थात् बाल निर्बुद्धी आपुको सेवकहौं २ एकतौ निर्बुद्धी दूसरे बालक तीसरे आपुके चरणरजको सेवनवारो सेवक तौ धर्म नीतिमग किमिलहौं नीतिपूर्वक धर्मकी मार्ग मैं कहांपैहौं जापर आरूढ़ है ताहीराह औरेन को चलाइहौं ताते यहकाज मेरेयोग्य नहीं है तौ अवधकाज मेराकेहा अयोध्याजीमें मेरा रहनेको क्याकाम है कछु भी नहींतौ आपु स्वामी बनकोजाउ मैं सेवक घरमें कैसेरहौं ३ । ४३ ॥

मू० । मातुचरणरघुवरनयेबिदामाँगिकरजोरि । अश्रुधारधाईधरणिमाताकहतिबहोरि १ माताकहतिबहोरिकठिनउरफाटत नाहीं । ठाढ़ीदेखतनयन रामसुतकाननजाहीं २ काननजाहुबिशेषिकैसबकेसुखसुकृतिगये । भेटिलायउरयहकह्यो मातुचरणरघुबरनये ३ । ४४ ॥

टी० । करजोरि बिदामांगि मातुचरण रघुवरनये श्रीरघुनाथजी मातु कौशल्याके पाँयनको शीशनवाय प्रणामकरि पुनः हाथजोरि बनजानेहेतुबिदामांगे तबमाता बहोरिकहत अश्रुधारा धरणिभूमिकोधाई अर्थात् कौशल्या

जी पुनः कछुबचन कहनेलगी ता समय ऐसाकरुण प्रेमउमगा कि नेत्रन ते अश्रु जलकी ऐसी धारावही जो तनपर वसन फोरिआइ भूमि पर गिरी १ माता क्या वहोरि कहती हैं कि कठिनउर मेरी छातीऐसी कठोरहै कि ऐसेहू समयपाय फाटि नहींजाती है काहेते रामसुत काननजाहीं सो ठाढ़ीनियनन देखत रघुनन्दन ऐसे उत्तम पुत्र वनवास को जातेहैं तिनकी मातामैं ऐसीनिठुरहौं कि ठाढ़ि नेत्रनते देखतीहौं इसीसमय छातीफाटि जानाचाहियत रहै २ काननजाहु विशेषिकै अर्थात् हे पुत्र जो माता पिता की आज्ञापालन उत्तम धर्म्म व्रत धारणकिहेउ तामेंबाधा करना अधर्मिन को कामहै अरु धर्म्मवन्त सहायकरतेहैं इसहेतु मैंकहतीहौं कि जो घरीभरे में जानाहोइ तौ इसीक्षणजाउ परन्तु सबके सुकृत गये अर्थात् महाराज अरुमैं तथा परिवार पुरजन इत्यादि पूर्व बडी पुण्यकीन्हे ताते आपु की प्राप्तभिई अब सब की पुण्याय चुकिगई ताते तुम्हारा वियोगभया इत्यादि जब रघुनाथजी माता के पाँयन को प्रणामकीन्हे तब कौशल्याजी उर में छाती में लगाय भेंटि यह पूर्ववत् बचनकहे ३ । ४४ ॥

मू० । गुरुपाँयनपुरसौंपिकै लीनलषणसियसाथ । चलेभूपमंदिरजहां बिदाहेतुरघुनाथ १ बिदाहेतुरघुनाथ रायउठिहृदय लगाये । नयनधारअन्हवाय रामबहुबिधिसमुझाये २ समुझायेनृपरामबहु सियाप्रेमउरतोपिकै । लषणभेंटिभूपति गिर्यो रामचलेगुरुसौंपिकै ३ । ४५ ॥

टी० । पुरसौंपिकै गुरु पाँयनपरि इतिशेषः अर्थात् अवधपुर को सब कार्यको संभारसौंपि भाव यावत् भरत न आवैं तावत् सबबात के रक्षक आपही हौ इत्यादिकहि पुनः गुरुबशिष्ठजी के पाँयनपरि प्रणाम करिकै लषण सिय साथलीन पुनः जहां मन्दिरमें भूपदशरथ महाराज हैं तहां को बिंदाहोनेहेतु रघुनाथजीचले १ जब बिदाहेतु रघुनाथजी आये तब राय दशरथ उठिकै रघुनन्दन को हृदय में लगायलीन्हे नयनधार अन्हवाय करुणावशते नेत्रनते आँशुन की धारवही त्यहिकरिकै रघुनाथजी भीजिगये पुनः घरमें रहने हेतु रघुनन्दन को बहुत बिधिते समुझाये अर्थात् सबसभा के बीचमें मैंतुमको राज्यदेने को कहिचुका सोतौ राज्यतुम्हारी हैचुकी अबमेरे राज्यकहां है जो कैकेयी के वचनपूरेकरौं इसहेतु यहवचन त्यागि पूर्वको मेराबचन प्रमाणकरि आपन राज्याभिषेक करायलेउ इत्यादि २ इसी

भाँति नृपदशरथ महाराज रघुनन्दनको बहुत समुझाये तथा उरप्रेमतो-पि सियाको समुझाये उरते समूह प्रेमप्रकट दर्शाय घरमें रहिजाने हेतु जानकीजी को बहुत समुझाये जब न रघुनाथैजीमाने न जानकीजीमाने तिन दोऊको भेंटि पुनः लक्ष्मणको भेंटि मूर्च्छितह्वै भूपदशरथजी भूमिपै गिरयो तबमहाराजौ को गुरुबशिष्ठको सौंपि भावपिताकी खबरिराख्यो ऐसाकहि रघुनाथजी बनकोचले ३। ४५ ॥

मू० । करिप्रणामरघुपतिचले त्यागिअवधसुखमूल । सबकोसार सँभारकरिमेटिमोहमयशूल १ मेटिमोहमयशूल लोगसब ब्याकुलभागे । रामबिरहकीआगि नारिनरउठिसँगलागे२ सँगउठिलागेनारिनर कालकर्मगुणदलदले । शिरधरिशानि बखानिकटु करिप्रणामरघुपतिचले ३ । ४६ ॥

टी० । सुखमूल लौकिक पारलौकिक सबसुखन की जर अयोध्याजी ताकोत्यागि पिताको प्रणामकरि रघुनाथजीचले कौनभाँति मोहमय शूल मेटि सबको सारसँभारकरि अर्थात् मोहममता करि जो सबको बियोगते दुखरहा ताहेतु बिबेकमय वचनकहि सबको धीरजदिये पुनः भोजन बस-नादि सबकी जीविका की सुधिराखना इत्यादि सबको सारको सँभार करि कामदारनको सौंपि १ मेटिमोहमय शूल अर्थात् रघुनाथजीतौ अपने बियोग दुखको मोहमय शूल बिचारि ताके मिटावने हेतु बिबेकमय बचन कहि धीरजदीन्हे भाव देह सम्बन्धको सनेह सोईमोह दुखदायक है याको त्यागि सत्यसारगहो इसीउपदेशते लोगन धनधाम स्त्री पुत्रादिमें जो सनेह रहा सोई मोहमय शूलजानि ताहीकोमेटि भाव देह सम्बन्धिन को सनेह त्यागि पुनः सत्यसार रामरूपकी प्राप्ती तामें बियोगहोत सो न सहिसके तौ व्याकुल ह्वै घरबार छोड़ि सबभागे काहेते रामवियोग जनित बिरहरूप अग्नि सहिनसके ताते पुरकेनरनारि सबउठि संगलागे रघुनंदनके साथही चले २ काहेते नारिनर प्रभुकेसंग लागे काल कर्म गुणदल दले अर्थात् अयोध्याजी में आपत्काल आया ताहिसमय सबके कुत्सितकर्म उदय भये तिनकी संधिपाय तीनिहूं गुण प्रबलपरे यथा रामराज्यसुनि पुरजन सतोगुणी रजोगुणबश महाआनंद रहे जब कैकेयीमें रजोगुणचाहते तमो-गुण उदयभया ताहीते सबउपद्रव है जब हितकी हानिदेखे तब कैकेयीपर सबै तमोगुणकरे इत्यादि काल कर्म गुणनके दल अनेकभांति के अनर्थ

तिनकरिकै दले सब मर्दितभये ताको दूषण भार रानी कैकेयीके शिरधरि ताहीकोकटुबखानि बहुभांति कुबचनकहिभाव कुटिल कुमतिवंशकी कुठारी जो सबकोदुखदै आपु सुखीरहाचाहत तौ हमलोग इसपुरैमें नरहैंगे इत्यादि कहि जासमय प्रणामकरि रघुनाथजी चले तबै पुरबासी संगलागे ३।४६॥

मू०। भूपबुलायसुमंतको सिखदैदयोपठाय। सुनतसचिवआतुर चल्यो स्यंदनतुरतबनाय १ स्यंदनतुरतबनाय विनयकरि रामचढ़ाये। तमसातीरनिवास प्रथमदिनरघुपतिआये २ प्रथमलोगतजिप्रभुउठे सचिवसाधिरथतंतको। गयेराम जियजानिसब संगबुलायसुमंतको ३। ४७॥

टी०। जब रघुनाथजी चले तब भूप दशरथ महाराज सुमंतको बुलाय सिखावनदै रघुनंदनके पासको पठैदये अर्थात् रथचढ़ाय लैजाउ वन देखाय गंगास्नानकराय चारिदिनमें लौटारिलायो इत्यादि सिखायपठाये सुनत सचिव आतुरचल्यो महाराजकी आज्ञा सुनतही सुमंत शीघ्रही चले तुरतही स्यंदनबनाये घोड़ानाहि रथसाजे १ तुरतही स्यंदनबनाय निकटलैजाय बिनतीकरि रामचढ़ाये लषण जानकीसहित रघुनाथजीको सवारकराये चले प्रथमदिनआय रघुनाथजी पुरते षट्कोशपर तमसानदी के तीर निवासकिये रातिबासकीन्हे २ प्रथम लोगतजि प्रभुउठे अर्थात् दिनभरेके भूखे श्रमित सब जब सोयगये तब अर्द्धरातिको सबलोगनको त्यागि लषण जानकीसहित रघुनाथजीउठे रथपर सवारह्वै सुमंतसों कहे कि ऐसी युक्तिसों हांकौ जामें पुरजन न जानिपावैं सोसुनि सचिव रथ तंतको साधि अर्थात् घोड़ेनकीबागे थांभि धीरातेचलाय जब दूरिगये तब बेगते हांकिदिये जब सबलोगजागे शून्यदेखे तब जीवते जानिलिये कि सुमंत को बुलाय संगलै रघुनाथजी बनको चलेगये इति निराश ह्वै लौटिआये ३। ४७॥

मू०। रामबिरहदावाअनल भयोअवधबनघोर। पुरबासीखगमृगभयेरहैंसुखीसबठौर १ रहैंसुखीसबठौरकेकयीभईकिराती। ज्वालबईचहुँओर जरतिनिशिदिनतनछाती २ अवधिमेघकीआशउर रहिनसकततपकाठिनथल। सोउपायव्रतजपसुहृद रामविरहदावाअनल ३। ४८॥

टी० । अवध बनमें रामविरह दावाअनल घोरभयो अवधपुररूप बन में रघुनाथजी के वियोगते जनित विरहरूप दावाअग्नि भयंकर उत्पन्न भयो काहेते पुरबासीजन सबठौर आपनेघरनमें सुखीरहैं तेई खग पक्षी तथा मृगादिभये १ तेई पुरजन खग मृगवत् सबठौर सुखीरहैं तहां कैकेयी किरातिनिभई काहेते ज्वालबई चहुंओर अर्थात् रघुनंदनको बनबास नहींदिया मानौ अयोध्याजीमें चारिहूओरते कराल अग्निके ज्वाला अंकुरितकरिदिया ताहिकी आंचमें निशिदिन तन छाती जरत रातिउदिन सबकेतन जरत ताहूमें छाती अधिकजरत २ तहां अवधि मेघकी आशते उर नहीं रहिसकत अर्थात् चौदहबर्षबादि पुनः रघुनाथजी मिलिहैं इत्यादि वादेकी बिश्वास सोई मेघहै ताप्रभु मिलनकीआशा सोजलवृष्टि होनहार यद्यपि है परंतु थलमें तपकठिनहै ताते उर रहिनहीं सकत अर्थात् अयोध्याथलमें विरहकी ऐसीप्रचंड तपनिहै तासों हृदय जरिजानेते बचि नहींसकत सोई तन बचिबेको उपाय चांद्रायणादि ब्रत मंत्र जपादि करते हैं काहेते सुहृद मित्र रघुनंदनको विरह दावानल है ३ । ४८ ॥

मू० । रामगयेसुरसरिनिकट केवटपरमहुलास । वचनसुमंतबुलायकै बोलेरामप्रकास १ बोलेरामप्रकाश तातअबअवध सिधावै । पितुपदगहिममओर कुशलसबबिधिसमुझावै २ समुझायेकहिकोटिबिधि तदपिपर्योसंकटबिकट । चलेक मैंबशसचिवपुर रामगयेसुरसरिनिकट ३ । ४९ ॥

टी० । सुरसरि निकट रामगये केवट परम हुलास सुरसरि जो गंगाजी ताके निकट जब रघुनाथजीगये प्रभुकोदेखि केवटके उरमें परमआनंद उमगो भाव अब मैं कृतार्थ होउँगो तबरघुनाथजी सुमन्तको आपने निकट बुलाय प्रकाशबचनबोले अर्थात् जो बचनमें अभिप्राय छिपीहोइ सो परछिन्न बचनहै अरु जहां अभिप्राय प्रसिद्धहोइ ताकोप्रकाश बचनकही सो साफखुले बचनकहे १ क्या प्रकाशबचन रघुनाथजीबोले हे तात सुमन्त अबअवध सिधावौ अर्थात् बिनचौदहबर्ष पूरेभये हमतौ घरको जायँगेनहीं अरु भरत घरमें नहीं महाराज दुखित राजकाज कौन सँभारैगो ताते रथ लैकै आपुशीघ्रही अयोध्याजीको जाउ अरु ममभेरी ओरते पिताकेपदगहि पाँयपकरि बहुबिधि कुशल समुझायो भाव मैं बनमें खुसीहौं किसीबातकी चिंता न करिहैं इत्यादि मेरी ओरतेकहि तुमअनेक भाँति समुझाय धीरज

करायउ २ यद्यपि कोटिन बिधि समुझाये तदपि विकट संकट परयो श्री रघुनाथजी धर्म्म नीतिमय करोरिन भांतिके उपदेश वचनकहि वहुतसमुझायेतदपि रघुनन्दनको छांड़िअकेले अयोध्याजीकोलौटतमेंसुमन्तकोमहा कठिन संकटपरयो न चलिसके आज्ञामानिथँभे कर्म्मवश महादुखितसचिव सुमन्त अवधपुरको चले अरु रामगये सुरसरि निकट पारउतरिवे हेतु रघुनन्दन गंगातटगये ३।४९॥

मू० । माँगीनाउनिहारिकैरामकहेमृदुबैन । सुनतबातकेवटकहै सुनियेराजिवनैन १ सुनियेराजिवनैनरावरीपदरजखोंटी । मानुषउड़िउड़िजातकाठकीगतिहैछोटी २ गतिहैछोटीमोरिप्रभुबातकहौंडरडारिकै । रजमानुषकरमूरिकछुमागहुनाउनिहारिकै ३ । ५० ॥

टी० । निहारिकै राम मृदुबयन कहे नाउमाँगी केवटकी दिशिदेखिकै रघुनाथजी कोमल वचनकहि नाउमांगे भाव हे भैया केवटहमको पारउतारिबेहेतु किनारे नाउलावौ सो सुनि केवटकहत हे राजिवनयन भाव कृपारूप मकरन्दभरे कमलसम आपुके नेत्रहैं सोई कृपादृष्टि मेरे वचन सुनिये १ क्या राजिवनयन सुनिये रावरी पदरजखोंटी आपुके पाँयनकी धूरिखोटी अर्थात् परहानि करनहारीहै काहेते जाके छुवतसंते जो मनुष्य उड़िउड़ि जातेहैं जे सबल कठोर पाषाण रूपतेरहे तौ काठकी गतिछोटी है भाव सूखाकाठ हलुका तथा जलमें रहे कोमल ह्वैरहाहै ताके उड़िजाने में कौनबिलम्बहोइगी २ पुनः हेप्रभु मोरिगतिछोटी मेरीजीविका थोरिही है ताते डरडारि आपुको डरत्यागि अभयह्वै साँचीबात कहतहौं रजमानुष करमूरि आपुके पाँयनकी धूरिनहीं है पाषाण काष्ठादि अन्यवस्तुनको मनुष्यकरिदेनहारी कछुमूरिहै ताकेछुइगये नाउकैसे रहिसकी इत्यादि निहारिकै भावमेरी यही ते जीविकाहै सो विचारि देखिकै तवनाउ मांगौ भाव जामें मेरी हानि न होवै ३ । ५० ॥

मू० । तरनिहोयमुनिकीघरनिमरैसकलपरिवार । कोटिकरौवाननछरौकहौबचनशतबार १ कहौवचनशतवारनाउनाहिंतुम्हैंछुवाऊं । अपनेकुलकीहानिहोयजोतुम्हैंचढ़ाऊं २

तुम्हैंचढ़ाऊंनाथजबचरणप्रछालौंनिजकरनि । बिनधोये नचढ़ायहौंतरनिहोयमुनिकीघरनि ३ । ५१ ॥

टी०। क्यामेरीहानिहै कितरनिनाउ मुनिघरनिहोय आपुकेपाँयनकी रज लागे जो मेरीनाउभी मुनिकी स्त्री ह्वैजाय तौ सकल परिवारैमरै नाउखोय गये विनाजीविका भूखते मेरासब परिवारै मरिजाय यहहानि बिचारि जो आपु शतसौबार आनै कोकहौ तथा बान न छरौ बाननते मोको मारौ इत्यादि कोटिन उपाय करो तबहूंमैं आपनी हानि न करिहौं १ जो सौ बारकहौ तबहूं आपुको नाउ न छुवैहौं काहेते जो तुम्हैं चढ़ावौं तौ आपने मेरे कुलकी हानिहोय अर्थात् आपुके पदछुवतही रजके प्रभावते नाउतौ मुनिपत्नीह्वै उड़िजाय तौ मेरेपरिवारकी जीविकाकी हानिहोय इसहेतु कि-सीभाँति नाउपर न चढ़ायहौं जबतक पाँयनमें धूरिलागिरही २ हे नाथ जब निज करनि चरण प्रछालौं अर्थात् आपने हाथन आपुके पाँय धोयडारौं रज न लागि रहिजाय तब आपुको नाउपर चढ़ाऊं अरु विनापाँय धोये नाउपर न चढ़ायहौं काहेते रजलागिजाय तौ मेरीतरनि नाउसोऊ मुनि घरनि मुनिकी स्त्री ह्वैजायगी ३ । ५१ ॥

मू०। चरणप्रछालबिलंबकहरामकह्योमुसक्याय । पानीआन्यो दुहुंकरनिधर्योकठौताआय १ धर्योकठौताआयपाँयपु निधोवनलाग्यो । देवनबर्षेफूलकहतयहिसमकोभाग्यो २ यहिसमबड़भागीकहाशिवविरंचिपदकमलचह । धन्यध न्यकहिसकलसुरचरणप्रछालकुटुंबसह ३ । ५२ ॥

टी०। प्रेम परमार्थयुत अटपटी बाणीसुनि श्रीरघुनाथजी मुसक्यायकै कह्यो कि चरणप्रछाल बिलंबकह अर्थात् शीघ्रपाँयधोउ बिलंब न करु इति आज्ञापाय केवट पानीभरा कठौता दुहूंहाथन गहिआन्यो आय प्रभुके आगे धर्यो १ जलभरा कठौता लैआय आगे धर्यो पुनः प्रभुके पाँयधोवन लग्यो ता समय इंद्रादि देवन प्रथमतौ फूलबर्षे पुनः कहत यहि समको भाग्यो यहि केवटके समान बड़ी भाग्यवाला लोकमेंदूसरा कोऊनहींहै २ काहेते केवट बड़ा भाग्यवाला है कि जिन पद कमलनकी शिव ब्रह्मा-दिक चाह करते हैं तिनहूं को प्राप्ती दुर्घट है सोई रघुनाथजी के पद कमलनको कुटुंबसहप्रछालत परिवार सहित केवट धोयरहाहै तौ या-

कसिमान बड़ाभागीकोऊ कहां है इत्यादि कहि सकलसुर सब देवता धन्य धन्य केवट को कहि रहेहैं भाव कुपात्रते सुपात्र ह्वैगया ३ । ५२ ॥

मू० । कीनपारपरिवारकोचरणसुधाजलप्याय । पीछेपारउतारियोनिजकरकोशलराय १ निजकरकोशलरायउतरिसियसहितबहोरी । केवटलीनबुलायलेहुउतराईथोरी २ उतराईथोरीलहौतोहिंभयोश्रमपारको । दीनदेखिम्वहिंदीनबहुपारकीनपरिवारको ३ । ५३ ॥

टी० । पाँय धोय चरणसुधा चरणामृत जल प्याय आपने परिवार भरेको केवटने भवसागरके पारकीन पीछे निजकर आपनेहाथ नाउ खेय कोशलरायको भी गंगापार उतारियो १ पारजाय सिय लषण सहित नाउते उतरि बहोरि कोशलराउ निजकर अर्थात् किशोरीजीकी मुद्रिका आपने हाथमेंलैके पुनः केवटको आपने निकट बुलायलीन मुद्रिका दिखाय कहे कि थोरी उतराई लेहु २ काहेते थोरी उतराईलहौ लैलेहु तोहिं पारको श्रमभयो हमको पार उतारनेमें तोको बड़ी परिश्रमपरी इसहेतु उतराईलेहु सो सुनि केवट कहत हे महाराज मोहिं दीन देखि बहुदीन अर्थात् धर्म श्रद्धादि पौरुषहीन दीनजन देखि आपुने मोको बहुत कुछ दीन क्योंकि महापापी अधमजाति सो मेरे परिवारको सहित मोकोभवसागरके पार करि दीन्हेउ तौ मोको क्या चाही ३ । ५३ ॥

मू० । तेपदधोयेआजुमैंशिवबिधियोगकमाहिं । जिनचरणनकोशेषश्रुतिबरणतनिशिदिनजाहिं १ बरणतनिशिदिनजाहिंप्रकटकीन्हीजिनगंगा । अशरणशरणपुनीतपगनिकोबिरदअभंगा २ बिरदअभंगप्रमाणकोधोयेजनकसमाजमैं । सकलसिद्ध सिद्धनदईतेपदधोयेआजमैं ३ । ५४ ॥

टी० । केवट कहत हे महाराज काहेते आजु मैं बहुत कछु पायों कि आजु मैं ते पदधोये जिनकी प्राप्तीहेतु शिव तथा विधि ब्रह्मायोगकमाहिं अर्थात् यमनियम आसन प्रत्याहार प्राणायाम ध्यान धारणा समाधि इत्यादि क्रियाकरि जिनपाँयनमें मनथिर करतेहैं पुनः शेषादि कविश्रुतिवेदइत्यादि जिन चरणनको प्रभाव बर्णनकरतसंते निशिदिन जाहिं अर्थात् आदि कालते सदा रातिउदिन बखान करतै बीततताहूपर अंततहीं पावते हैं १

शेष श्रुति आदिकनको बर्णनकरत निशिदिनजात तथा जिनचरणन गंगा प्रकट कीनी जो लोक पावन कर्ता हैं पुनः अशरण को शरण पतित पुनीत इति पगनको अभंग बिरद नाशरहित बानाहै अर्थात् जाको शरण राखने वाला कोऊ नहींहै यथा सुग्रीव बिभीषण इत्यादिकनको अभय करि शरणमें राखना पुनःजो धर्म कर्मतेच्युत ऐसे पतित अपावनन को पुनीत पवित्र करत यथा अहल्या दण्डकवन इत्यादि शरण राखनो पुनीत करनो जिन पदनको बिरदजो बाना सो अभंग कबहूँ मिटता नहीं सदा एकरस बना रहताहै २ सोई पाँयन को जो अभंग बिरदहै ताकी प्रत्यक्ष प्रमाण देखिबेको जनकमहाराज मड़येतर बिवाह समयमें देवता मुनिनकी समाजमें धोये तहां सुर मुनि आदि सबै प्रशंसा पूर्बक जय जय कार करतेरहैं सो सबै सुने पुनः सकल सिद्ध जननको जिन सिद्धि दई अर्थात् जिनकी आराधनाकरि बहुतजन आणिमादिक सिद्धीपाय सिद्धभये जिनके प्रतापते तेई आपुके पदआजु मैं धोये तौ कौन पदार्थ मोको नहींलाभ भई अर्थात् सबपाय चुका ३ । ५४ ॥

मू० । बिमलभक्तिबरदैचलेराम लषणसियसंग । बनगिरिसरिसरग्रामपुरदेखतमृगजुबिहंग १ देखतमृगजुबिहंगग्रामपुर निकसहिंजाई । देखिकहहिंनरनारिरामसियसुंदरताई २ रामसियासहअनुजयुत देखिभागतिनकेभले । प्रेमनेम जपयोगफलबिमलभक्तिबरदैचले ३ । ५५ ॥

टी० । जबकेवटने उतराई नहींलिया तबबिमलभक्ति अर्थात् बासना रहित शुद्ध आपनासनेह इति बिमलभक्ति बरदानदैकै लषण सिय संगले कै रघुनाथजीचले तहांमारगमें जो बन तथा गिरिजो पहाड़ सरिनदी सर तड़ाग तथाग्राम छोटागाँउ पुरबड़ागाँउ इत्यादि देखत पुनः मृगजो हन्ना पाठा झाखा पुष्कलकादि खग शुक सारिका कोकिल पारावतादि यावत् पक्षी मृगबिहंग जो मिलत तिनको देखतसंते चलेजात जब ग्राम अथवा पुरके निकटजाय निसरतेहैं तबरामसिय सुन्दरताई देखि नरनारि कहहि अर्थात् मनोहर श्यामगौर रूपनमें सर्वांग सुठौर बनेहैं जिनके ऐसे रघुनंदन जनकनंदनीकी सुंदरताई देखि गाँवनकी स्त्री तथा पुरुष सब परस्पर वखान पूर्वक वार्ता कहते हैं २ सियासह राम लषण युत देखि तिनकेभाग

भले हैं अर्थात् लक्ष्मण जनकनंदनी सहित श्रीरघुनाथजी को जो कोऊ राहजातमें देखा ताके बडेभाग्य उदयभये अर्थात् वै परमपदके अधिकारी रामानुरागी ह्वै गये काहेते प्रेमनेम सहित जो मंत्र जपयोगाभ्यास त्याहि कीन्हे को फल जो बिमल भक्ति शुद्ध रामसनेह सोई वर सब को दै चलेगये ३ । ५५ ॥

मू० । एककहतमुखचन्दसोंभामिनिभावतमोहि । कलाकोशश शिशीतकरसीताकलितसजोहि १ सीताकलितसजोहि श्यामरेखाशशिमाहीं । सियमुखपरलटश्यामसुभगवरण तकविताही २ वरणतकविमृगअंककहियहमृगनयनअनं दसो।तापहरतयहशशिमुखीएककहतमुखचंन्दसो३।५६॥

टी० । ग्रामकीस्त्री पुरुष परस्पर वार्त्ताकरतमें किशोरीजीकी शोभावर्णन करत यथा सखी प्रति एकसखी कहत हेभामिनि मोहिं भावत मुखचंद सो अर्थात् सीताजीको मुख चंदकी समान मोको नीकलागत काहेते शशि जो चंद्रमा सो कलाकोश षोडशकलाको भराखजाना है पुनः शीत कर शीतलता करने वाला है तथा कलितस सुंदरता सहित सीताको जोहिदेखु अर्थात् चंद्रमामें षोडशकला हैं तामें चौदह प्रसिद्ध अरु दो गुप्त हैं तथा किशोरीजीके मुखमें द्वै ओठ द्वै कपोल द्वै श्रवण द्वै वरुनी द्वै भृकुटी दश ये अरु माथ शीश नासिका ठोढ़ी इति चौदह प्रसिद्ध अरु दंतावलि रसना द्वै गुप्तइति सर्वांग सुंदरि सोई षोड़शौ कला हैं यथाचंद्र शीतकर तथा किशोरीजी को क्षमावंत शीतल स्वभाव है १ पुनः सीता कलितसजोहि जानकीजीकी सुंदरता सहित देखौ शशि माही श्यामरेखा है अर्थात् यथा चंद्रमामें श्याम चिह्न देखि परता है तथा श्रीजानकीजी के मुखपर छूटे बारनकी लट श्याम सुभग सुंदरिहै ताहीको कवि श्याम रेखाकरि बर्णते हैं २ वर्णत कवि मृग अंककहि अर्थात् चंद्रमा को कवि जन मृगांक करि बर्णन करते हैं भाव चन्द्रमा के अकोरामें मृगहै तथा यह मृगनयन अनंदसो अर्थात् मृगके ऐसे याके नेत्रहैं सो सदा आनंद रहत पुनः यह शशिमुखी ताप हरत अर्थात् चंद्रमा एकलौकिक ताप हरत अरु यह चंद्रमुखी दैहिक दैविक भौतिक तीनिहू तापै हरत ताते एककहत याको मुख चंद्रमासमहै ३ । ५६ ॥

मू०। एककहतिमुखकमलसोऔरनपटतरताहि। अरुणसुवासि तअतिमृदुलसोसियमुखअवगाहि १ सोसियमुखअवगाहिशीतसुतवहयहसीता। कबिबरणतहैंवाहियहिमुखसुयशपुनीता २ सुयशपुनीतादुहुनकोभ्रमरमित्रयुगसुथलसो। औरकहाँउपमालगैएककहतिमुखकमलसो ३। ५७॥

टी०। एक कहति मुख कमलसो है अर्थात् एकसखी बोली कि तुमते कहत नहींबना काहेते चंद दिनमें मंद घटत बढ़त कलंकी राहुते दुखित रोगयुत ताते चंद्रमा उपमान योग्य नहीं है जानकीजी को मुख कमल समानहै ताहि पटतर ताहि मुखकी समता योग्य और कछु नहीं है काहे ते कमल समहै अरुण सुबासित अति मृदुल अर्थात् यथा कमल अरुण लालरंगको होत तैसेही मुख अरुण यथा कमलमें सुंदरिबास अरु मृदुल कोमलहोत तथामुखोंमें सुगंध अति मृदुल है सो सियमुख अवगाहि अर्थात् मुखपर अगाधजल सम शोभाभरी है तामें नेत्रनद्वारा बुद्धिते गोता लगाय नीकी भाँति समुझिदेखु १ सो सियमुख अवगाहन करि नीकी भाँति निहारिदेखु तौ वह शीतको सुतपुत्रहै अर्थात् जलपंकसहित जहाँ शीतलता होतीहै तहांकमल उत्पन्न होताहै तथा यह सीता जो हलताके ठोकरलागेते महीते उत्पन्नभईहै पुनः वाहि कमलको यश उत्तमकबि जन बर्णन करत अरु याहि सीता के मुखको सुयश पुनीता सुंदर पावनयश वेद पुराण बखान करत २ इस विचारते कमल अरु किशोरीजीको मुख दुहुनको पुनीत पवित्रयश है तथा भ्रमरमित्र अर्थात् कमलको सनेही भ्रमर रसलोभी सदा कमलको रसपान करता है तथा इहां रघुनन्दन को मन लोभी भ्रमर है जानकीजीके मुखको शोभारस सदा पान करता है पुनः युग सुथल सो दोउनको वासस्थल सुंदर है अर्थात् कमल सुंदरे तालमें बसत तथा जानकीजी मिथिला अवध सुंदरे स्थानमें बसती हैं इत्यादि योग्यता बिचारि एककहत कि सीता को मुख कमलसोहै और बस्तु ऐसी कहाँहै जो उपमालागिसकै ३। ५७॥

मू०। सीतामुखसोमुखकहो कमलचंद्रसोनाहिं। कमलमंदहैरज निद्युतिचंदमंददिनमाहिं१ चंदमंददिनमाहिंराहुहिमिशत्रु सदाई। सीतामुखअरिनाहिंलोकतिहुँखोजहुजाई २ लोक

तिहुँमहँविदितहैघटैबढैनिशिदिनलहौ । कमलचंदपटतर
कहाँसीतामुखसोमुखकहौ ३ । ५८ ॥

टी० । कमलचंद सो नाहिंसीता मुखे सो मुखकहौ कमल ऐसो वा चंद्र ऐसो नहीं कहिबो उचित है काहेते चंदकमल में दूषणहै ताते सीता के मुखकी समताको सीतैकोमुखहै दूसरानहीं यहअनन्वयालंकारहै क्या दूषण है कमल रजनि मंद है अर्थात् कमलदिनै भरि प्रफुल्लित प्रकाशमान रहत रातिको मन्दपरत संपुटित ह्वैजात तथा चंद्रमाकीद्युति प्रकाश सो दिनमें मंदह्वैजात १ एकतौ कमलरातिमेंमंद चंद्रदिनमेंमंद पुनः राहु हिमि शत्रुसदाई अर्थात् चंद्रमाको राहुसदा शत्रुबनाहै तथा कमलको हिमि पाला सदाशत्रुबनाहै अरु सीताकेमुखको अरिशत्रु कहौंनहींहैजाय तिहुलो कखोजहु ढूंढिदेखहु कहौं न ठहरी २ पुनः चंद्रमा कृष्णपक्ष भरि घटत है शुक्लपक्ष भरि बढत है अरु यह निशिदिन लहौ अर्थात् जानकीजीको मुख रातिउ दिन एकरस सदा प्रकाशमान लहौ देखिलेउ ताते कमल अरु चंद्र पटतर समता देबेयोग्य कहांहै ताते सीतामुख सम सीता को मुखै कहौ और नहीं है ३ । ५८ ॥

मू० । एककहैंपुरधन्यहैमातुपितापुनिधन्य । जिनदेखेतेधन्यहैंज
हाँजातधनधन्य १ जहाँजातधनधन्य विटपगिरिसारिसर
जेतेखगमृगनिरखतधन्यबसतथलबैठततेते २ बैठततेते
संगहँसिबोलताचितवतधन्यहैं । धन्यपंथवनधन्यहैंहमदे
खतअतिधन्यहैं ३ ॥ ५९ ॥

टी० । एक कहत वह पुर धन्यहै पुनि मातु पिता धन्य अर्थात् चौथी एक उत्तम ग्रामवधू कहतीहै हे सखीजनौ तुम वृथाही बकतीहौ क्षणमात्र यह अपूर्ब लाभहै ताते थिरह्वै मनुलगाय नेत्रनभरि देखिलेउ ये अपूर्व अनूपरूप जहां उत्पन्न भये वह अवध जनकपुर धन्य कृतार्थरूपहै पुनः जिनके ये पुत्र पुत्री ह्वै उत्पन्न भये यथा कौशल्या सुमित्रा सुनयना तथा दशरथ जनक इत्यादि धन्य कृतार्थ रूप हैं पुनः सहवासी वा आवत में मगबासी वा पथिक इत्यादि जेजन इनको नैत्रनभरि देखेते धन्यपरम पदके अधिकारी भये पुनः जहां को ये जातहैं जिस ठौर यहधन पांवैंगे वा जे देखैंगे ते सब धन्य कृतार्थ होयँगे १ जहांकोधन यहखोजात तह

के बिटप वृक्ष गिरिपर्बत सरिनदीसर तड़ागइत्यादि जे इनकेअंगमें स्पर्शा दिहोवैं सो सब धन्यहोयँगे तथा खग पक्षी मृगादि जे इनको देखतते धन्य हैं पुनः जहांबसत अथवा बैठत तेते सबथलधन्यहैं २ यथाजेजे थलमेंबैठत तेतेधन्यहैं तथाजे इनकेसंगरहैं वा जासों हँसिबोलैं वा जाकीओर चितवत ते सब धन्य जामेंचलत सोपंथधन्यहै जहांबासकरैं सोबनधन्यहै अरु हम जे नेत्रनभरि देखतीहैं तेसब अत्यंतकरिकै धन्य परम कृतार्थभई ३।५९॥

मू० । रामलषणसीतासहितदेखिप्रभावप्रयाग । न्हायदानदीन्हे द्विजनप्रीतिसहितअनुराग १ प्रीतिसहितअनुरागदर्शसु खसबहिनपाये । दुखसुखसबकोदेतआपुऋषिआश्रमआ ये २ आश्रमआयेसुनतऋषिभरद्वाजआनंदलहित । आ सनआदरमुनिकरयोरामलषणसीतासहित ३ । ६० ॥

टी० । लषण जानकीसहित श्रीरघुनाथजाय प्रयागजीको प्रभावदेखे भाव गंगा यमुना सरस्वती माधव अक्षयवट इत्यादि सब सबल समर्थ हैं तिनको देखि माहात्म्यकहि पुनः प्रीतिपूर्बक स्नानकरि अनुरागसहित द्विजन प्रयागवार ब्राह्मणको दानदीन्हे१ प्रीति अनुरागसहित रघुनाथजी के दर्शनकोसुख सबहिनपाये अर्थात् जहां जोदेखा सोई प्रयागबासी प्रेमा- नंदके बशभया जाको वियोग ताकोदुख जाकोसंयोग ताकोसुख इति दुख सुख सबकोदेतसंते आपु श्रीरघुनाथजी ऋषिके आश्रमको आये २ सीता लषणसहित रघुनंदन आश्रमको आये ऐसाबचन किसीके मुखते सुनत- हीं ऋषि भरद्वाज आनंद लहित परमानंदपाये प्रभुको प्रणामकरते देखि आशीर्बाददै उरमेंलगाय आसनदै बैठाये पुनः लषण जानकीसहित रघु- नंदनको मुनि आदरकरयो अर्थात् प्रीतिपूर्बक स्वागतपूंछि अर्घ पाद्य आ- चमन कंद मूल फलादि भोजनकराये ३ । ६० ॥

मू० । रामतुम्हारेदर्शतेयहफलप्रकटदिखात । नेमप्रेमजपयोग तपतीरथब्रतदुखगात १ तीरथब्रतदुखगातआजुसबसुफ लहमारे । राउरआगमलहतनयनमुखसुखदनिहारे २ सु खदनिहारेसुखभयोतीरथराउरपरशते । भयोमोदमंगलप रमरामतुम्हारेदरशते ३ । ६१ ॥

टी० । अब भरद्वाजस्तुति प्रशंसापूर्बक प्राथनाकरतेहैं हेरघुनंदन तुम्हारे

दर्शपायेते यहफल प्रकट देखात कौन फल प्रत्यक्ष देखिपरता है यथा शौच संतोष तप स्वाध्याय ईश्वरप्रति सनेह इत्यादि नियम तथा ईश्वर के गुणबिचारि प्रीतिउमँगि विह्वलहोना इति प्रेम विधिवत् मंत्रकी जप पुनः आसन प्राणायाम ध्यानादि अष्टांगयोग पंचाग्नि जलशयनादि तप तीर्थाटन चांद्रायणादि व्रत इत्यादि यावत् गात देहको दुखदेना १ तीर्थ व्रतादि यावत् देहको दुखदै आपुकी आराधनाकीन सो हमारे आजु सब सुफलभये अर्थात् सब साधनको सुंदरफल पायगये काहेते राउर आगम लहत आपुके आवतसंते परिपूर्ण लहतनामप्राप्तभया क्याप्राप्तभया सुखद परमसुखको देनहारा आपुकोमुख सोनयननसोंनिहारे इच्छापूर्वकदेखे २ सुखदेनहारा आपुको मुखनिहारेते परमसुखभयो पुनः आउरपरशते आपुके अंगस्पर्शते तीर्थ प्रयाग परमपावनभया पुनः हे रघुनंदन तुम्हारे दर्श भये ते क्षेत्रभरे में परम मंगल प्रसिद्ध उत्सव तथा मोद सबके मन में आनंदभयो ३ । ६१ ॥

मू० । भोरप्रयागनहायकैरामलषणसियसाथ । चलेमनोहरमन
हरनवंदिचरणमुनिनाथ १ वंदिचरणमुनिनाथमदनरति
ऋतुपतिमानो । ब्रह्मजीवकेमध्यलसतमायाछविजानो २मा
याछविमयदेखिधौंउमाशंभुगणनायके । चलेकिधौंसुरपति
शचीभोरजयंतलिवायकै ३ । ६२ ॥

टी० । भरद्वाजके आश्रममें रातिभरि बासकीन्हे भोर प्रयागनहाय त्रिवेणीजीमें स्नानकरिकै लषण जानकीको साथलैकै रघुनाथजी मुनिनाथ भरद्वाजके चरणबंदि प्रणामकरि पुनः मगवासिनके मनहरिलेनेहेतु मनोहर अत्यंत सुंदर तीनिहूं स्वरूप चित्रकूटको चले १ मुनिनाथ के चरण बंदि जब प्रयागते आगेचले तब राहमें तीनिहूं स्वरूप कैसे शोभितहोत मानो मदन अरु रति पुनः ऋतुपति हैं अर्थात् तीनिहुंस्वरूप सर्वांगशोभा भरे कैसे देखात ताकी उत्प्रेक्षाकरत कि आगे रघुनाथजी नहीं हैं श्याम सुंदरस्वरूप मदन कामदेव है तथा बीचमें जानकी जी नहीं हैं हेमवरण सुंदर सुकुमार स्वरूप रति कामकी पत्नी है पुनः पीछे लक्ष्मणजी नहीं हैं सुंदर गौरबर्ण शुद्ध पावन मन सर्वांगप्रसन्न ऋतुपति बसंतऋतु है तीनिहूं मूर्तिमान् लोक जननको मनमोहिवेहेतु चलेहैं यह उपमा शृंगाररस मेंकहे ताते नहीं मनभाई काहे इहां मुनिनकैसो वेष शृंगारमें नहींशोभा

देत ताते ऐश्वर्य दर्शाय शांतरसमें अर्थकरत कि जिनको स्वरूप स्वभाव वेप पावन पुनः दर्शमात्रते सुलभ जीवनको उद्धारकरने हेत कैसे मूर्ति मान् चले जाते हैं जानौ ब्रह्मजीवके मध्यमें माया छबिलसत अर्थात् आगे रघुनाथजी मूर्तिमान ब्रह्महैं पाछे लक्ष्मणजी मूर्तिमान् दिव्यजीवहैं तिनके मध्यमें मूर्तिमान् मायाहै सो छबि शोभा देरही है परंतु वेदांत मतते ब्रह्म जीवके मध्यमें माया अशोभित है अरु इहां शोभित कैसे कहे तहां माया तीनि हैं एक अविद्या जो ब्रह्मजीवते अन्तर करावत ताते अशोभित है दूसरी विद्या मायाजीवको ब्रह्मते सम्बन्ध करावत ताते शोभित है पुनः तीसरी माया आह्लादिनी जो जीवके अन्तर ब्रह्मकाप्रकाश करत ताते अति शोभितहोत इत्यादि यथा अविद्या ब्रह्मजीवके बीचमें अशोभित है तथा इहां माधुर्यलीलामें प्राकृत दृष्टि देखते विशेष उदासी वेपके बीचमें स्त्री अशोभित है अर्थात् वेपकी शोभा नहीं है पुनः ऐश्वर्यलीलामें विवेक दृष्टिते देखे यथा ब्रह्मजीवके बीचमें विद्या माया शोभित है तथा तीनिहूं स्वरूप लोकोद्धार हेत कैसे चलेजात यथा जीव भक्तिके पीछे लाग अरु भक्तिजीवको लिहे ब्रह्मको मिलावने जात सो प्रसिद्ध सबको उपदेशत है पुनः यथा आह्लादिनी ब्रह्मजीवके बीचमें अतिशोभित तथा ऐश्वर्य माधुर्य मिश्रितलीलामें सनेह दृष्टिते देखे इहां राम साकेत विहारी जे ब्रह्मा दिकनको प्राप्ती अगमहै तेई प्रभु दयादृष्टिते राजकुमार रूपह्वै पुनः सबको सुलभ प्राप्तहोने हेतु तापस वेषबनाये थोरेही सनेहते सबको उद्धार करने हेतु विचरते हैं यथा प्रेमाभक्ति जीवको सहज सनेहते ब्रह्ममें लगाये हैं इति ब्रह्मजीवके मध्य माया छबिलसत शोभादेरही है २ ब्रह्मजीवके मध्य छबिमय मायादेखिये किधौं शंभुगणनायकके मध्य उमाहै अर्थात् ब्रह्मजीव मायाकीभी उपमानहीं मनभाई काहेते शांतरस लोकते उदासीन रहत पुनः ये उपमान परलोकैके कल्याण कर्त्ता हैं अरु राजकुमारतौ लोक परलोक दुहूंदिशिके कल्याण कर्त्ता हैं ताते करुणा रसमें अर्थकरतकि जीवन को दुखित देखि तिनपर करुणाकरि अर्थात् जीवनके दुखते आपहू दुखितह्वै उनको दुखशीघ्रही मिटावने हेत शिवगणेशके बीचमें पार्वती हैं तेभूतलमें विचरतसंते दयादृष्टिते सबको तीनौ तापहरत तापस वेपतेदर्शदै उपदेशत भावविपय त्यागि परलोक साधौ पुनः दर्शनते पापहत किधौं शची इंद्राणी अरु जयंतको संगलिवाय लैकै सुरपति इंद्रभोरहीचले अर्थात् करुणा रसमें तौ चेष्टाउदासीन होतीहै इनकी चेष्टातौ प्रसन्नहै पुनः

यह वेपहू अनित्य अर्थात् प्रयोजनमात्र चारिदिन को हैपुनः नरहैगो अरु वीरता बेष नित्यहै सोवर्तमानहै तातेवीररसमें उपमा कहत कि सहायता हेत आपने पुत्रजयंतको संगलिये पुनः पतिव्रता संगरहते पतिको तेजप्रताप बढ़ताहै इसहेत इंद्राणी को संगलिये इंद्रदुष्टन को वधकरिबे की प्रतिज्ञा करि प्रयागराजमें स्नान वासकरि शुद्धह्वै विषयत्यागि तापसवेषमें वीरवेषकिहे प्रातःकालही शुभ मुहूर्तमें चलेहैं २ । ६२ ॥

मू० । पंथचरितसियरामकोसबसुखमंगलदाय। रामलषणसियद् र्शतेखगमृगसुखीसुभाय १ खगमृगसुखीसुभायपर्मपदके अधिकारी । कोनलहैसुखसकलसुखदवरवदननिहारी २ वदनानिहारिसप्रेममयभयोपर्मसुखधामको । गिरितरुख गमृगनारिनरदेखिचरितसियरामको ३ । ६३ ॥

टी० । सियरामको पंथचरित सबसुख अरु मंगल दायकहै अर्थात् वनमार्गमेंजातसंते जनकनंदनी रघुनंदनको माधुर्यलीलाहै सोलोकपरलोकादिसबभांति को सुख तथा मंगलप्रसिद्ध उत्सव इत्यादिको देनहाराहै काहेते रामलषण सियदर्शते अर्थात् ऐश्वर्य गुतमाधुर्य रूप रघुनंदन जनकनंदनी लषणलालतीनिहु स्वरूपन के दर्शनपायेते चैतन्यमनुष्यनकी कौनकहै खगमृग सुखीसुभाय अर्थात् जे महाअज्ञ पक्षी अरु मृगा तेऊ सहजसुभावते रामसनेही ह्वै परमानंदपाये १ खगमृगादि सहजसुभाव कैसे सुखीभये परमपदरामसमीपप्राप्ती के अधिकारीभये जो पशुपक्षिनकी यह दशा है तौसकल सुखद बरवदननिहारिकै कोनलहै सुख अर्थात् सबभांति को सुख देनहारा बर बदनश्रेष्ठ मुख नेत्रनभरि निहारि देखन संते को परम आनन्द नहीं पावत भाव देखतही सब आनन्द पावत २ सप्रेममय वदन निहारि परम धामको सुखभयो अर्थात् सुन्दर श्यामतनमें मुखचंद्र पर दृष्टि परतही प्रेम उत्पन्नह्वै सर्वांगमें भरिपूरिगया सोई प्रेममय हृदय सहित चकोरवत् नेत्रनते मुखचंद्र निहारत सन्ते परमपद मुक्ति स्थान प्राप्तिको सुखभया कौनकौनको सोकहत गिरिपर्वत तथा तरुवृक्ष इत्यादि यावत् स्थावररहे तथा खग पक्षी मृगादि यावत् जड़जीव तथा नरनारी इत्यादि सब सियरामको चरित देखि जीवन्मुक्त आनंदपाये ३ । ६३ ॥

मू० । बालमीकिआश्रमगये सियालषणरघुराय । आयेमुनिवर

मिलनको भेटेहृदयलगाय १ भेटेहृदयलगाय पूजिपरिपूर णकीन्हे । आसनआदरदेय फूलफलअंकुरदीन्हे २ अंकुर दीन्हेअमियसम अस्तुतिआनँदमनभये । सकलसिद्धसा धनसुफल बालमीकिआश्रमगये ३ । ६४ ॥

टी० । श्रीजानकी लषण सहित रघुनाथजी बालमीकिजी के आश्रम कोगये सोदेखिमुनिनमें वरश्रेष्ठ जोबालमीकिते मिलनको आगे आये प्रणाम करत देखि रघुनंदन को हृदयमें लगाय भेटे १ बालमीकिजी रघुनन्दनको हृदय लगाय भेटि कुशलपूछि पुनः पूजिपरिपूर्णकीन्हे षोडशोप्रकारपूजन करिपरिपूर्ण प्रसन्न किन्हे कौनभाँति आदर आसनदेय अर्थात् आसन दैबैठारि आदरसहित अर्घ पाद्याचमनादि करिफूलफल अंकुरादि भोजनदीन्हे २ कैसे फलफूल अंकुरादिदीन्हे अमियसम स्वादिष्ट पुष्टकारक तिनको भोजन कराय पुनः प्रभुकी स्तुतिकरि प्रसन्न देखि मनते आनंदभये क्या जानि आनंदभये कि जपतपादि सकल साधनकी सिद्धि जो ज्ञान सो सफलभयो इति बालमीकिके आश्रमगये ३ । ६४ ॥

मू० । जाकेहितमनगोत्रासितसाधतसाधनधाम । मोहमदादिक गुणतजैअहनिशिजागतयाम १ अहनिशिजागतयामजाप तपयोगबिरागे । मानसब्रह्मनिरूपरहतनिशिदिनअनुरागे २ निशिदिनअनुरागेरहेज्ञानध्यानमंदिरलहित । सोप्रत्य क्षमूरतिलखिजाकेहितमनगोत्रासित ३ । ६५ ॥

टी० । जाकेहित जापरब्रह्मके प्राप्तीहित मनगोत्रासित उज्ज्वल अर्थात् सब इंद्री चित्त बुद्धि अहंकार इत्यादि जो मनको परिवारहै ताको सित करि अर्थात् विषयमें लागे इंद्रीमलिन होतीहैं तिनकीविषयछुड़ाय उज्ज्वलकरि अंतरमें लौकिक वासना मलताको रोकि उज्ज्वलकरि इति सम दमादिकरि मनकोगोत्त सितकरि साधन धामजो मुमुक्षु अर्थात् मुक्तिकी चाह करनेवाला चैतन्य देहधारी सो साधत विवेक बिरागादि साधन करते हैं पुनः मोह मदादिक गुणतजै अर्थात् मोहजो अज्ञानता ताके उपजनेके जो कारण यथा शब्द स्पर्श रूप रस गंध मैथुनादि विषया शक्ती तथा कामक्रोध लोभ मदादि तथा रजोगुण तमोगुण इत्यादि त्याग करै पुनः अहनिशि जागतयाम अहदिन निशिराति ताकेयाम पहर अर्थात् रातिउ दिनके आठौपहर जागते चैतन्य रहतेहैं १ कौनभांति रातिउदिन

आठौयामजागते हैं जाप तप योग बिराग विधिवत् मंत्रगायत्री प्रणवादि कोजाप तथा तपस्या पुनः यम नियम आसन प्रत्याहार प्राणायाम धारणा ध्यान समाधि इति अष्टांगयोग तथा विराग संसारसुख को त्याग इत्यादि साधनमें लगेरहते हैं तिन करिकै मानस ब्रह्मनिरूप शुद्धमन में विज्ञान पूर्वक ब्रह्मविचार में निशिदिन अनुरागेरहत रातिउदिन ब्रह्मविषे अचल प्रीति राखेरहत २ निशिदिन अनुरागेरहैं कौनभांति ज्ञान ध्यान मंदिरलसित ध्यानरूप मंदिरमें ज्ञानरूपते शोभादेतेहैं जो परब्रह्म सो प्रत्यक्ष मूरति लखी नेत्रनभरि देखा जाकेहेतु मन गोत्रसित उज्ज्वलकरतेहैं ३ । ६५॥

मू० । रामकह्योकरजोरिकै मुनिनायकसुनिबैन। आश्रमपावन दीजिये जहाँकरौंशुचिअयन १ जहाँकरौंशुचिअयन दिवसकछुतहाँबिताऊँ । जानतकारणसकल कहाकहिप्रकटजनाऊँ २ प्रकटजनाऊँआश्रमन देहुमुनीशनिहोरिकै । चलियकृपाकरिदेहुमुनि रामकहेउकरजोरिकै ३ । ६६ ॥

टी०। करजोरि रामकह्यो मुनिनायक बैनसुनि अगस्त्यसो श्रीरघुनाथ जी हाथजोरि कह्यो हे मुनिनायक मेरे वचन सुनिये पावन आश्रम दीजिये आश्रम निवास करिबेयोग्य पावन पवित्र भूमिका बतायदीजिये जहां शुचि अयनकरौं पवित्र आश्रमरचौं १ शुचि अयनकरौं जहाँ तहाँ कछुदिवस बास करि बिताऊँ पुनः सकल कारण मेरे वनआयबेको सबकारण आपु जानतेहौ ताते प्रकटकरि कहा जनाऊँ अर्थात् सबतौ हाल आपुजानतेहौ तौ किस हेतु प्रसिद्ध कहि औरनहुको जनावौं भाव आपनी ऐश्वर्य गुप्त राखा चाहतहौं २ प्रकट जनाऊँ आश्रमन अर्थात् जौने कार्यहेतुआयों सो तौ मैं नहीं जनावताहौं परंतु जहाँ जहाँ बास किहेते कार्यहोनेको कारण सहजही बँधिजाय सो सो आश्रमनको आपुते जनावताहौं आपनाप्रयोजन जनाय स्थान पूंछताहौं निहोरिकै आपुसों निहोरा करावतहौं हे मुनीश देहु अर्थात् कृपाकरि आश्रम बतायदेहु इत्यादि श्रीरघुनाथजी हाथ जोरिकहे कि हे मुनि चलिये कृपाकरि देहु हमारे साथ चलिकै कृपाकरि आश्रमको ठौर बताय देहु ३ । ६६ ॥

मू० । सुंदरगिरिगिणसरितबनदीखजायमुनिसंग । कहतमहातमपमैथल देखिहोयदुखभंग १ देखिहोयदुखभंगसुखी

मृगबनचारी। तरुवरफलितविभाग सुधासमसुंदरबारी २ सुंदरजलथलनिरखियह चित्रकूटमंगलभरित । पावनक-रियविहारथल सुन्दरबनगिरिगणसरित ३ । ६७ ॥

टी० । मुनि संगजाय सुंदर गिरिगण सरित बनदीख वाल्मीकि मुनि के साथ चित्रकूटमेंजाय गिरिगण समूह पर्वत सुंदर तथा सरित मंदाकिनी नदी तथा बन इत्यादि सब देखे कि परम रमणीकहैं पुनः वाल्मीकि जी चित्रकूटको माहात्म्य कहतेभये परमउत्तम जो थल देखि दुख भंगहोहि ऐसा परमोत्तम स्थान है जाके दर्शनमात्र ते जीवन को भव दुख नाश होत१ जाकोदेखि दुखभंगहोत ताते खग पक्षी मृगादिक यावत् बनचारी बनबासी हैं ते सब सुखी हैं पुनः तरुवर फलित विभाग तरुवृक्ष वरश्रेष्ठ ते विभाग नाम अलग अलग ठौर ठौर फलिरहे हैं तथा बारि सुधा सम सुंदर नदिनमें जल अमृत सम स्वादिष्ट पुष्ट रुजहर्त्ता शीतल देखत में सुंदर अमल २ सुंदर जल तथा थल भूमिका भी सुंदर इत्यादि निरखि अर्थात् देखिलीजिये यह चित्रकूट मंगल भरित प्रसिद्ध उत्सवते परिपूर्ण है इत्यादि मुनि कहत हे रघुनंदन यह सुंदर बन गिरिगण पहार समूह सरित जो नदी इत्यादि आपुको विहार स्थलहै ताको पावन करिये अ-र्थात् बासकरि किंचित्काल विहारकीजिये ३ । ६७ ॥

मू० । रामलषणआश्रमकरयो चित्रकूटसियसंग । मनहुविपिनै बसितपकरत रतिऋतुराजअनंग १ रतिऋतुराजअनंग रामलखिसुखबनचारी। भरिभरिदोनासफल भेटधरिबदन निहारी २बदननिहारिनिहारिसब मगनसदनमंगलभरयो। विपिनभयोकासदसुखद रामलषणआश्रमकरयो३ । ६८ ॥

टी० । वाल्मीकि मुनिकी आज्ञानुकूल लषण जानकी संग सहित श्री रघुनाथजी चित्रकूटमें आश्रमकरयो पर्णशालरचि बासकीन्हे कैसे शोभित होतेहैं यथा रति कामकी स्त्री पुनः ऋतुपति जो वसंत पुनः अनंग जो कामदेव इत्यादि विपिन बनमें बसि तपकरतेहैं अर्थात् जानकीजी मानों रति हैं श्रीरघुनाथ जी नहीं हैं मानों कामदेवहै लक्ष्मणजी नहीं हैं मानों बसन्तऋतुहै सौंदर्य्यताते रूपनकी उत्प्रेक्षा अरु उदासी वेषते तपस्याकी उत्प्रेक्षाहै १ रतिसम जानकी ऋतुराजसम लक्ष्मण तथा अनंग कामसम

रघुनाथजी तिनकोलखि सुख वनचारी अर्थात् सबंधु प्रियायुत रघुनाथजी को देखि वनबासी कोलकिरातादि सब परम सुखीभये तातेसफल दोना सुन्दर मूलकन्द फलन सहित दोना भरिभरि भेटहितलाय प्रभुके आगे धरि सन्मुखखड़े सब प्रभुको वदन चन्द्रचकोरवत् निहारिरहे हैं २ वदन प्रभुकोमुख निहारि निहारि सब कोलकिरातादि प्रेमानन्दमें मगनहैं पुनः सदन जो उररूप मन्दिर तामें मंगल उत्सवभरेहैं भाव ऐसा आनन्दभये कि रघुनन्दनआय बनमें वासनहीं किये मानों हमारे घरमें ब्रह्माण्डभरेको मंगल भरिभयोआय ऐसे वनबासी हर्षितभये इत्यादि जबते राम लषण आश्रम करयो लषण जानकीसहित श्रीरघुनाथजी इहां पर्णशाला बनाय जबते बासकीन्हे तबते विपिन जो बन सो कामद सुखद भयो अर्थात् मनोकामना परिपूर्ण देनहारा सुखदायक भयो ३ । ६८ ॥

मू० । अबसुमन्तअवधहिचले रामबिदाजबकीन । हयनचल हिंरघुबरबिरह सचिवभयोदुखदीन १ सचिवभयोदुखदीन शिथिलरथहाँकिनआयो । बिकलबिषादनिहारि अवध केवटपहुँचायो २ केवटगृहआयोबहुरिसाँझपायअवसरभ लोहानिगलानिबिहालउरअवसुसंतअवधहिचले ३।६९॥

टी०। श्रीरघुनाथजी चित्रकूटमें पहुँचिगये यह चरितकहि पुनः इधरको चरित कहत अब जा भाँति सुमंत अयोध्याजी को चले सो सुनिये जब श्रीरघुनाथजी बिदाकीन तब सुमंतअवधकोचले तो परंतु हय जो घोड़ेते हांके ते नहीं चलत राम वियोग दुखभरे अशक्ति भये तथा रघुवर विरह दुखते सचिव दीनभयो अर्थात् रघुनंदनके वियोग जनित विरह दुखते सुमंतौ दीन महादुखित पौरुष हीनभये १ कौनभाँति सचिव दुखदीन भयो शिथिल रथ हाँकि न आयो ऐसे सब अंगढीले परिगये जाते रथ हाँकत न बना इति बिषाद मानसी दुखकरिकै सुमंतको विकल निहारि केवट अवध पहुँचायो अर्थात् निषाद राज ने चारिदूत अरु सारथी साथ करि रथ सहित सुमंत को अयोध्याजी के निकट तक पहुँचाय दीन्हे २ पुरनिकटते सुमंत सों विदा ह्वै केवटगण आपने गृह घरको आयो तब सांझ समय जामें कोऊ मिलै न इति भले अवसर पाय हानि रघुनंदन के बियोगते गलानि शोकते विकल अब सुमंत अवधहि चले महादुख अवधपुर के भीतर राजद्वारको चले ३ । ६९ ॥

मू० । कहुसुमंतकहँरामसिय उठेबिकलनरनाह । सचिवहृदय भेटेउनृपति नयननीरप्रबाह १ नयननीरप्रबाह सचिवसनबोलिनआयो । रामसियासंदेश सकलमुखकहन न पायो २ कहननआयोमुखबचन ब्रह्मरंध्रपथकढ्योजिय । लषणरामसियरामसिय कहुसुमंतकहँरामसिय ३ । ७० ॥

टी० । सचिवको आगमनसुनतही नरनाह दशरथमहाराज बिकलउठे पुनःबोले हेसुमंत कहु रामसिया कहाँहैं भाव लौटिआये कि बनकोचले गये इतिबताउ इतिकहि पुनः प्रणाम करते देखि नृपति दशरथजी सचिवको हृदयमें लगाय भेटे अरु नयनन नीरप्रबाह करुणा प्रेम उमगा ताकी वेगते नेत्रनसों आँसुजल जलकी प्रबाह धाराचली १ उहाँते तौ दुख पीड़ित औबैभये इहाँ महाराजकी दशादेखि अधिक बिह्वलभये ताते इनकेभी नेत्रनते आँसु जलकी प्रवाह धाराचली अरु सचिव सुमंतसन बोलि न आयो कंठारोधनते पुष्टाक्षर बचन न कढ़िसके ताते श्रीरघुनंदन जनक नंदिनीको संदेश कहाहुआ हाल सो मुखते कहन न पायो २ जनक नंदिनी रघुनंदनजो संदेश पितातें कहिवेको सुमंतते कहिदियेरहें सोंहाल सुखाग्र वचन सब कहन न पाये अधकहतही ब्रह्म रंध्रपथ जियकढ्यो शीशमध्य जो छिद्र जो खालते ढका रहत ताको ब्रह्मरंध्र कही ताहीपथ रास्ता ह्वै खाल फोरि महाराज के प्राण निसरिगये कौनभाँति जबमहाराजपूंछे हे सुमंत कहु रामसिया कहाँहैं तापर जब सुमंतकहे कि रघुनंदन नहीं लौटे यह सुनतही लषण रामसिय रामसिया ऐसा कहि प्राण त्यागिदिये सुमंत अधकहतही रहिगये ३ । ७० ॥

मू० । भूपभवनरोदनपर्‌यो रानीपुरनरनारि । अवधनाथअथयो मनहुँ रबिनिशिअवधनिहारि १ निशिसमअवधनिहारिगारिसबकुमतिहिदेई । बिपतिबियोगकुयोग कलहदढ़दीन्हेसिनेई २ दीन्हेसिसबकहँदुसहदुख ज्यहिकेकरतबनृपमर्‌यो । हायहायलायोनगर भूपभवनरोदनपर्‌यो ३ । ७१ ॥

टी० । महाराजकेमरतही भूपभवन राजमंदिरमें रोदनपर्‌यो काहेते या- [illegible]नी तैसे औरी जे पुरकी स्त्रीरहीं तेसबै रोवनलागीं काहेते अवधनाथ रवि[illegible]हुँ अथये अवधपुर देशमें प्रकाश कर्त्ता दशरथ महाराज सूर्यवत्

रहे ते मरणरूप अस्ताचल को गये ताते मानहुँ निशि अवध निहारि अयोध्याजी में मनहु रात्री कैसो अंधाकार देखा तो १ सोईनिशि अयोध्याजीमें देखिकै कुमतिजो कैकेयी ताको सबगारी देतेहैं काहेते कलह जो परस्पर बिरोध तथा कुयोग अति आनंद समय रघुनाथको वन पठावना ताते बियोग पाय सबको विपत्ति इत्यादिकी दृढकरि पुष्टनेइ दीन्हेसि २ जो सहि न जाय ऐसा दुसह दुख सबैपुरवासिन को दीन्हेसि औरन के दुखकी कौनकहै ज्याहिके कर्त्तव्य ते नृप दशरथमरे ताते नगरवासीसबै हायहाय धुनि लायेहैं राजमंदिरमें रोदनै पराहै ३ । ७१ ॥

मू० । राखिभूपतनकरियतन कहवशिष्ठसमुझाय । दूतपठाये भरतपहँ आतुरचारबुलाय १ आतुरचारबुलाय भूपगति प्रकटेहुनाही । गुरूबुलायेभरत वेगिलैगमनेहुताही २ गवनकीनिशिरनायतव हयगतिमारगसुनिवचन । मुनिबुझायरानीसकल राखिभूपतनकरियतन ३ । ७२ ॥

टी० । नावमें मृतक तनधरि तामेंतेल भरिदिये इत्यादि यत्नकरिभूप दशरथ जीको तनराखि भाव यावत्भरत आवैं तावत् शरीर ऐसेहीबनारहै इसहेतु यत्नतेराखि पुनः वशिष्ठ जी आतुरचार बुलाय तिनसों समुझाय कहि दूत भरत पहँ पठाये आतुरचार शीघ्रचलनेवाले चारगुप्तपुरुष अर्थात् हरकारा तिनको एकांत में बुलाय राजनीतिकी रीति कहि समुझायदीन्हे तिनदूतनको भरतजी के पहँ पासको काश्मीर को पठाये १ आतुरचार शीघ्रचलनेवाले हरकारनको बुलाय क्या नीतिसमुझाये कि भूपगति प्रकटेहुनाही अर्थात् भूपदशरथ के मरने को हालकहूँ प्रकटेहुनहीं काहूसों कह्यो न पुनः उहाँभीजाय यही कहियो कि गुरुबुलाये भरत अर्थात् भरत को गुरुवशिष्ठ ने बुलाया है ऐसा कहिताहिलै वेगिगमनेहु भरत शत्रुहन ताहिसंगलै वेगिगमनेहु शीघ्रही चलेआयहु २ वशिष्ठजीके वचन सुनितव माथनाय हयगति मारग गवनकीन हय घोडे तिनकी गतिअत्यन्त वेगते मारग रास्तेमें गवनकीन चले अरुइहां सुनिसकलरानी बुझाये कौशल्यादि सबरानिनको समुझाय धीर्यकराय भूपतन यत्नसोंराखे ३ । ७२ ॥

मू० । गुरुसँदेशआयेभरत अशकुननगरनगीच । श्वानशृगालउलूकखर बोलतअशुभकुनीच १ बोलतअशुभकुनीच

भरतमतिगतिथितिनाहीं । भरतदेखिनरनारि बामदाहिन चलिजाहीं २बामअवधपुरदेखिकै दुखज्वरसोंछातीजरति। धरतपाँवँडगमगपरत गुरुसँदेशआयेभरत ३ । ७३ ॥

टी०।दूतकाश्मीर पहुँचि वशिष्ठजीकी आज्ञासुनाये इतिगुरुवशिष्ठको सँदेश सुनि भरतआये जब अवधनगरके नगीचपहुँचे तब अशकुनदेखे कौन अशकुन श्वानजो कुत्ता शृगालजो स्यार उलूकजो घुघुवा खरजो गदहा इत्यादि कुत्सितनीच पशुपक्षी अशुभ अमंगल वचनबोलत १ कुनीचजीव अशुभ बोलत तिनको सुनि देखिकै भरतकी मतिकी गति थितिनहींबुद्धि बिचारते उरअंतरमें थिरता न रही बुद्धि भ्रमितभई काहेते भरत को आवत सन्मुखदेखि नरनारि पुरके पुरुष स्त्री सन्मुख कोऊनहीं आवता है कोऊबाम कोऊदहिने चलेजाते हैं कोऊ कुशलभी नहीं पूछताहै ताते बुद्धिसंभ्रमभई अंतरमें भय उत्पन्नभई २ काहेते भयउपजी अवधपुर बाम देखिकै पुरजननकी टेढ़ीदृष्टि देखे ताते दुखरूप ज्वरते छातीजरति अर्थात् राम कृपापात्र अवधबासीजन जे सदाहमपर अनुकूलरहैं तेप्रतिकूल देखिपरते हैं तौ याकोकारण भलानहीं है इसदुख तापते छातीतप्तभई ताते पाउँ धरत सोडगमग परत ऐसी भयसमाय गई कि जहाँ पग धरत तहाँ नहीं परत मारग छोंड़ि बिलगपरत इसभाँति गुरुको सँदेश सुनिभरतजी अवधपुरको आये ३ । ७३ ॥

मू० । भूषणभाजनसाजिकै सुतआगमनविचारि ।लैआईकेकय सुतासुतआरतीउतारि १ सुतआरतीउतारिभायद्वउभ्रमते भूले । पियोनजलथलबैठिशूलकेअंकुरशूले २ अंकुरशूल विचारिकै कुशलपूंछिनिजराजिकै । बोलीसुतदाहकवचन भूषणभाजनसाजिकै ३ । ७४ ॥

टी० । सुतआगमन बिचारि पुत्रभरतको घरको आवनजानि भूषण भाजन साजिकै तनमें वसन भूषण पहिरि भाजन कंचनथारमें दीपदधि रोचन दलमूल फूल फलादिमंगल पदार्थसजिकै केकय भूपकी सुतापुत्री कैकेयीलैआई सुतपुत्र भरतकी आरती उतारी १ कैकेयी तौ भूषण वसन सजे प्रसन्नमन पुत्रकी आरती उतारत अरु भरत शत्रुहन दोऊभायभ्रम तेभूले अर्थात् और तौ सबदुखित उदासीन देखिपरे अरु अकेले कैकेयी

प्रसन्नहै तौ या में क्या कारणहै इत्यादि बुद्धिमें भ्रमभया ताते ऐसाखेद भया जातेदेहकी सुधिभूलिगई मार्गते प्यासे यद्यपिरहे परंतु बुद्धि भ्रमते जलनहीं पियो थल बैठक स्थानपर बैठेरहे शंकाकरि शूलपीरा के अंकुर उरमें ऐसेउठे ते शूले पीरा करनेलगे कठिन दुखदायक शंकाते तर्कणा होनेलगी २ शूल के अंकुर उरमें उठत विचारिके भरतजी निज राजिकै कुशलपूंछे भाव महाराज के राजकाजमें सबकुशल है सो सुनि सुतदाहक आपनेपुत्रके उरमें दाहताप उपजावनेवाले वचन कैकेयीबोली भूषण भाजन राज्याभिषेक हित पुनः साजिकै भाव शीघ्रही राज्याभिषेक होवै ३ । ७४ ॥

मू० । कुशलराज्यसबकाजमैं राख्योंपुत्रसुधारि । भईमंथरापरम हित दुखदूषणसबजारि १ दुखदूषणसबजारि राजसबतु म्हरेजाग्यो । कंटकभेसबदूरि अगमवरनृपसनमाँग्यो २ अगमसुधारीबातमैं नृपसुरपुरसुखसाजमैं । कलुकविगा र्योविधियहै कुशलराज्यसबकाजमैं ३ । ७५ ॥

टी० । पुत्रकोदाहकरनेवाले क्यावचन कैकेयीबोली हेपुत्र राज्यमें कुशल है पुनः तुम्हारे हेतु राज्यके सबकाज मैं सुधारिराख्यों है अरु मंथरा भी तुम्हारी परमहितकर्त्ती भई तानेदुःख दूषणादि सब जारिदिया अर्थात् राम राज्यभये तुमको सेवकाई करनापरता सोदुख अरु जो तुम विग्रहकरते तौ तुमको लोग दूषण देते इत्यादिकन को मंथराने युक्तिसों भस्म करि दिया १ सो दुख दूषणादि सब जारिकै तुम्हारी राज्यके सब अंगसो जाग्यो सहजही उदितभयो काहेते अगमवर नृपसन माँग्यो अर्थात् जामें काहू की गम न रहै ऐसे अगमहै वरदान मैं महाराजते मांगि लिहेउँ ताते तुम्हारी राज्यके यावत् कंटकरहैं तेसब दूरिभे ताते अकंटक राज्यकरो २ काहेते अकंटक राज्यकरौ अगम बात मैं सुधारी अर्थात् बंधु विरोध पितु आज्ञा भंग इत्यादि करना तुमको अगमरहै नहीं करिसक्तेरहौ सो सबमैं सुधारि दीन्ही ताते अकंटक राज्यकरौ परन्तु सुखसाज में नृपसुरपुर अर्थात् तुम्हारी राज्यके यावत् सुखके साजरहैं सो तौ सबबने हैं तामें जो महाराजौ होते तौ अधिक आनन्द रहै परन्तु नृपसुरपुर महाराज तन त्यागि देव लोकको गये तातेतुम्हारे सुखसाजमें यहै कलुकबात विधाताने

बिगारिदियो भाव महाराज अकेले नहींरहे यही हानिहै और तुम्हारी राज्य के सब काज में कुशलहै २ । ७५ ॥

मू० । रामलषणसियबनगये मरेभूपत्यहिशोच । तुमकहँराज्य विलासअब कीजेछाँड़िसकोच १ कीजेछाँड़िसकोचहोत सबविधिकोकीनो । मरनजियनजगरीतिलेहुपुरराज्यनवीनो२ राज्यसुनतव्याकुलगिर्‌यो रोदनकरिमुर्च्छितभये । तातातहातातकहि रामलषणसियबनगये ३ । ७६ ॥

टी० । मेरे वरदानद्वारा सिय लषण सहित रामबनको गये त्यहिशोच ते भूप अवधेश मरे पुनः तुमकहँ राज्य बिलास राज्यपद को सुख यह दूसर बरदान मांग्यों ताते अबसब को सकोच छाँड़ि राज्यसुखकीजे १ काहेते सकोच छाँड़ि राज्यकीजे होत सब बिधिको कीनो अर्थात् उचित अनुचित यश अयश जो कछु कार्य जनद्वारा होता है सो बिधाता के प्रेरणाते होता है अर्थात् जो बिधाताने चाहा सो भया तामेंमेरा तुम्हारा कछु दोष नहीं जो कछु होनहाररहै सो भया पुनः मरण जियन जगरीति अर्थात् जो महाराज मरिगये ताको भी शोच न करौ काहेते जो संसारमें उपजताहै सो आयुर्बलमात्र जीवताहै अन्तमें सबैमरिजात इतिलोकरीति बिचारि पितुमरणको शोचत्यागि पुरको नवीनोराज्यलेहु अर्थात् प्राचीन रीतिते तुमको राज्य न मिलती अब मेरेद्वारा तुमको राज्य पावने हेतु बिधाताने नवीनयुक्ति बांधिदिया ताते हर्षित राजकरौ २ राम बनगये तुम राज्यकरौ इति कैकेयी के बचन सुनतही महादुखते व्याकुलह्वै रोदनकरि भरत गिरयो मुर्च्छितभये कौनभांति रोदनकरि यथा तातताततात हा पितामैं न देखनपायो इतिरोदनकरि भूमिपरगिर्‌यो पुनः हायमेरेहेतु रामलषण सिय बनगये ऐसामैं अभागी असकहि शोकते मुर्च्छितह्वैभये ३ । ७६ ॥

मू० । परेनकीरामुहँजर्‌यो वरमांगतजड़तोहिं।कुमतिकठोरननृप लखीमिथ्याजन्ममोहिं १ मिथ्याजन्ममोहिं बाँझतूभईनकाहे।ऐसीकुमतिकठोर कर्मकरिमोउरदाहे २ दाहेउरखलबचनमुखरामबिपिनकहमनधर्‌यो । कौतूकाकेरूपधरपरेनकीरामुखजर्‌यो ३ । ७७ ॥

टी० । पुनः धीर्य धरि भरतबोले हे जड़भाव तोको आपना हिताहित

हानिलाभनहीं सूझिपरताहै तौ ऐसेघोरअपराधकोफलतोकोक्योंनमिला काहेतेमेरेहेतु राज्ययहवरमाँगतमें तेरेमुखमें कीरानपरे पुनःरामवनजाहिं ऐसावरमाँगत आगि नउठी तेरामुख जरिनगया पुनः तेरीकुमति अर्थात् वृथाही घरमें विरोध तथातेरे उरकी कठोरता अर्थात् रघुनंदन ऐसे उत्तम पुत्रको वनवासदै हर्षितरहना इतितेरी कुमति कठोरता नृप न लखी महाराज पूर्वही न परखिलिये जोतोको प्राणघातक दंडदेते सोसाधुस्वभाव महाराज कैसेजानैं पुनः मरणकाल विधाता ने बुद्धि हरिलिया पुनः तो को जो ऐसाकरना रहै तौ मोहिंमिथ्या जन्मे भावमें रामसेवक ताकी मातातू रामविरोधी ऐसाहोना उचितनहींरहै अर्थात् मेरेमनकीरुचिविना विचारि लिहे तू ऐसाअनर्थ करि अपनाको अरु मोको वृथाही कलंकी बनायलिया ताते मोको वृथाही जन्मे तूबाँझकाहेनभई अर्थात् चतुर्थांश पायसभाग तू क्यों अंगीकारकिया तू अर्द्धभागमाँगती जो महाराज इनकारकरते तबजो तेरेपिताको लिखा या दशरथ महाराजको लिखावशिष्ठ गर्गाचार्य की साक्षीत्याहि करारपत्रपर हठिकरि अर्द्धभागमाँगती जोमहाराज देतेतब अंगीकार करती तबतेरेही उदरते रघुनंदन उत्पन्नहोते अरु पछिजाको चतुर्थांश देते तारानीते मैं पीछे उत्पन्नहोता तबतेरे पुत्रभाइनमें बड़े रघुनंदन को राज्यहोती मैं सेवकाई करता इत्यादि तोकोपूर्वही करना रहै तबतेरे को कुछभी कलंकनहोता काहेते जो प्रथमही अर्द्ध भाग महाराज तोको न देतेतौ तूकुछभी भागनलेती तबमहाराजैकोअयश होता तोको कुछ अयशनरहै इसभाँतितू बाँझकाहे नहींभई सोतौ किया नहीं तबतौ पतिव्रता बनिपतिकी आज्ञामाना कुलवंतीह्वै कुलकी प्राचीन रीतिधारण करि पिताको लिखाया समयपत्र खारिज करिदिया कुलरीति ते मुख्यरानी कौशल्याको मानि पूर्व बडाभाग देवाये आपुछोटी बनिछोटा भागलिहे पुनः रघुनंदन को राज्याभिषेक देनेको तू अनेकबारमेरे सन्मुख महाराज ते कहे इत्यादि छोटीबनि छोटाभागले छोटाभाईकरि मोको उत्पन्न किहे अरुजन्मभरि पतिव्रता कुलवंती बनीरही अरुअब मेरेसूनेमें तूऐसी कुमति कुबुद्धि धारण किया भावमेरे पुत्रको राज्यहोवै इतिकुमति ते कठोर कराल पापमयी कर्मकरि भावरघुनंदनको राज्यसमय वनवास पठायपतिके प्राणघात किया अवधवासिन को वियोग दुखदिया इतिकठोर कर्मकरि मेरेउरमें कठिनदाह किहे २ काहेते मेराउरदाहे कि हे खलदुष्टे मुखबचनते रामविपिनकह प्रणधस्यो अर्थात् रघुनंदन निश्चय वनको

जाहिं ऐसीप्रतिज्ञाकिहे ताते तूकोहै काकेनिमित्त यहरूपधर अर्थात् राक्षसी पिशाची पूतना चामुंडायोगिनी यक्षिणी इत्यादि यावत्हिंसकी हैं तिनमें तू कोहै सो कौनके नाशकरिबे हेतु छलते यह मनुष्यरूप धारण किया है जोऐसी कराल अपराधकरि तेरेमुखमें कीरानपरे तथाजरचोन ३। ७७॥

मू०। पीतमभारतनहिंडरी बनपठयेसियराम। प्रेतपिशाचिनि रूपतू भईकहांकीबाम १ भईकहांकीबाम रामत्वहिंअन हितलागे। जोहासिसोउठिबैठु ओटतजिआँखिनआगे २ आँखिनआगेतेटरै धिक्मैंजन्म्योंज्यहिघरी। रामसुवनप ठयेबनहिं पीतमभारतनहिंडरी ३। ७८॥

टी०। काहेते तेरे रूपमें सन्देह होती है कि पीतमभारत नहिं डरी प्राणप्यारे पतिको मारिडारतमें डरनहीं मानी अर्थात् बिधवापन लोकमें अयश पतिद्रोहते यम साँसाति इत्यादिते अभयह्वै हठिकरि पतिके प्राणलिया तथा सियराम ऐसेउत्तमपुत्र पतोहू तिन्हैंबेअपराध बनकोपठये तातेसन्देहहै कि तू कहांकी किसप्रेतकी पिशाचिनी रूपहै सो मनुष्यकी बामभई १ कहांकी पिशाचिनि है मनुष्य बामभई जो त्वहिंराम अनहितलागे भाव महादुष्टाहै तौतौ रघुनन्दनते बिमुखभई परन्तु अबक्या ह्वैसक्ताहै ताते जो हसि सोहसि क्याकरौं परन्तु उठुआँखिन आगेकोठौरतजि ओटजायबैठु भाव मेरेसामनेते उठिजा तेरामुख देखने योग्यनहीं है २ हेदुष्टे मेरी आँखिनआगेतेटरै पुनः तेरेउदरते जन्म्यों ताते मैंभी धिक्हौं जिसघरी जन्म भया सोभी धिक् है काहेते जो तू रामसुवन रघुनन्दन ऐसे पुत्रको बनहिं पठाये तथा पीतम भारत न डरी ताके उदरते मैं जन्म्यों ताते मोको भी धिक्कार है ३। ७८॥

मू०। आईदुखदायिनितिया नाममंथराजाहि। भूषणभारशृंगा रितन रिपुहनलखिचपचाहि १ रिपुहनलखिचपचाहि दौरिपगकूबरमारचो। परीधरणिधरिकेश घसीटततनक नहारचो २ तनकनहारचोबीरतब भरतजायरक्षणकिया। उठेत्यागिकुलदाहिवी आईदुखदायिनितिया ३। ७९॥

टी०। जोसबके दुखको कारणहै ऐसी दुखदायिनि तियाजाहि मंथरानाम है सो आई भरतको आवनसुनि राज्यको कारण आपनाको जानि हर्षी

ताते तनको शृंगारि अर्थात् उबटि मंजन करि वारगुहि सेंदुरलगाय अं-
जनमिस्सी लगाय पानखाय पुनः भूषण वेंदा बंदी बेसरि ताटंकमाल
बाजू कंकण मुद्रिका रसना पायलादि भूषण भारलादि भावकुरूप तनमें
भूषण अशोभित ताते भारसोलादे ताको रिपुहनलखि शत्रुहनजीश्रावत
देखि पुनः चषचाहि नेत्रनसों सर्वांग भूषण वसन नवीन भलीभाँतिते
देखि १ सब अनर्थको कारण जानि पुनः नवीन शृंगार नेत्रनभरि देखि
शत्रुहन उठिदौरि पगहुमकिकै लाततताकेकूबरपर मारे ताकेलागेते धरणि
परी भूमिमें गिरिपरी पुनः केश धरिघसीटत अर्थात् जब अरोचक वचन
कहि बिलाप करनेलगी अर्थात् भलाकरत बुराफलमिला सो सुनि अधिक
क्रोधभया ताते शिरके बारगहि आँगनमें घसीटा कीन्हे तनकनहारे
अमते नछाँडे २ जब बीर शत्रुहन तनक नहारे अपनी ओरते नछाँडे
तब भरतके दयालागि ताते जाय रक्षण किया छँड़ायदिये इतिजब दुख-
दायिनी तिया मंथरा आई तब कुलदाहिवी रघुकुलमें दाहकरने वाली
कैकेयीको त्यागि उठे कौशल्या पासगये ३ । ७९ ॥

मू० । उठतकौशलागिरिपरीं भरतदेखिउठिदौरि । लीन्हेहृदय
उठायकै आँगनगिरींबहोरि १ आँगनगिरींबहोरि रोय
दीन्होंदुहुंभाई । मातुलगाईकण्ठ अश्रुधारानहवाई २
नहवायेचषनीरते बीरभरतधीरजधरी । विकलभरतसमु
झावती उठतकौशलागिरिपरी ३ । ८० ॥

टी० । भरतको आवत देखि उठिदौरीं बलहीन दुर्बलदेह ताते उठते
कौशल्याजी गिरिपरीं पुनः उठिकै चलीं आँगन में बहोरि गिरीं तब
भरत उठायकै प्रणाम कीन्हे तब माता हृदय में लगाये १ प्रथम
उठतैगिरीं उठिचलीं आँगनमें पुनःगिरीं सो कौशल्याजीकी दशादेखिकै
भरत शत्रुहन दुहुंभाई रोइदीन्हे तब माता कंठलगाये पुनः आँसुनकी
धाराते अन्हवाये २ चषजो नेत्रताके नीरते अन्हवाये अर्थात् ऐसेप्रवाह
धारा आँसुबहे जासों भरत शत्रुहन भीजिगये इस भाँति उठत कौशल्या
गिरिपरीं परंतु भरतको विकल देखि माता समुझावती भईं तब भरत
वीरभी धीर्यधरी ३ । ८० ॥

मू० । अंचलनयनलगायकै आँसूपोंछतिमात । तोहिंबिनासुत

यहदशा उठननपैयतगात १ उठननपैयतगातरामसिय
बनहिंसिधाये । पुरपरिजनभेबिकल लषणसियबहुसमु
झाये २ बहुसमुझायेनहिंरहे रामचलेसँगलायकै । सुनत
भरतजलसोंभरे अंचलपोंछतिधायकै ३ । ८१ ॥

टी०। माता कौशल्या आपनाअंचल भरतकेनयननमें लगाय आंसूपोंछत पुनःबोलीं हेसुत पुत्रतोहिं बिना मेरी यहदशा भई गातदेह ऐसी अबल ह्वैगई जासों उठन न पैयत गिरिपरतीहौं भावजो तुम इहाँहोते तौ यह दशा नहोने पावती १ कौनकारण गातसो उठननपैयत है रामसियवन- हिं सिधाये जनकनंदिनी सहित रघुनंदन बनकोचले तब पुरबासी परि- वारजन सबबियोगदुखते बिकलभये अरु लषणसियसंगलगे तिनकोरघु- नन्दन बहुत समुझाये भाव घरमें रहौ बनको न चलहु २ रघुनन्दन बहुतकुछ समझाये परन्तु दोऊ न घर में रहे तब दोऊको संगलायकै रघुनंदनचले इति सुनतभरतकेनेत्रआँसु जलसों पुनः भरिभये तबधायकै पुनः मातुअंचल ते पोंछती है ३ । ८१ ॥

मू० । मातुजगतजन्म्योंबृथा भईनकेकयिबाँझ १ रामसियाअ
प्रियभयो अयशमूलजगमाँझ १ अयशमूलजगमाँझ
जासुहितयहगतितोरी । जन्मतहत्योनमोहिंदेतिविषमाहु
रघोरी २ माहुरदैमारयोजगतकुलकुठारिउपज्योंयथा । नृ
पगतियहरघुपतिविपिनमातुजगतजन्म्योंवृथा ३ । ८२ ॥

टी० । हे मातु मैं वृथाजगमें जन्म्यों अरु कैकेयीबाँझ न भई काहेते रामसिय अप्रिय भयो मेरे हेतु रघुनन्दन जनकनन्दिनी जाको शत्रुवत् देखाने ताहीते जगतमाँझ अयशमूल अर्थात् सबजगभरे में अपयशको कारण कहावैगी १ काहेते अयशमूल जगमाँझ भई जासुहित यहगति तोरी ज्यहिकैकेयीके हितहोनेहेतु हे मातातोरि यहदशाभई कि पुत्रबियोग दुखतेअबल दुर्बलशरीर ऐसाभया कि उठतमें गिरिपरतीहौ इस पश्चा- त्ताप अयशादि शूलनते अबमोको मारिसि तौ जन्मतही मोहिं न हत्यो उसीसमय न मारिडारी कौनभांति बिषमाहुर घोरिदेति संखिया आदि बिष हरदिहा आदि माहुरबाँटि दूधमें मिलाय पिआयदेती तबै मरिजाते तौ यह करालदुख क्यों देखना परता २ अबमाहुरदै सबजगतको मारयो

अर्थात् मोकोराज्यनहींदिया मानो सबसंसारैको माहुरदिया ताते मैं यथा कुलको कुठारउपज्यों अर्थात् जो मैंन होतातौ कुलको ऐसादुखक्योंहोता काहेते नृपदशरथकी यहगति भाव रामवियोगते प्राणैत्यागे पुनः रघुपति बिपिन बनकोगये ताते हेमाता मैं वृथैजगमें जन्म लीन्हेउँ ३ । ८२ ॥

मू० । सुरगुरुद्विजपातकपरैं जोजानतयहबात । बालबालवधअघ अयशगायगोठपुरघात १ गायगोठपुरघातमीतनृपमाहुरदीन्हे । परधनपरतियहानिपरै अघगोवधकीन्हे २ गोबधनिंदावेदकी परअपकारीअघकरै । जोजननीजानहुँ तनक सुरगुरुद्विजपातकपरै ३ । ८३ ॥

टी० । अबभरतजी सौगंदकरतेहैं हेमाता कैकेयीकी यावत् कर्त्तव्यता हैं यहबात जोमैं जानतहोउँ तौ सुरदेवता गुरु द्विज ब्राह्मणइत्यादि वध करिबेको पातकपाप मोकोपरै पुनः बाल जो स्त्री बालरु तिनकेबधको अघ तथा अयश लोक में निन्दा तथा गायरहने को गोठ मनुष्य बासको पुर इत्यादिको घात अग्निआदिलगाय नाशकरिबेको जो अघहोवै १ यथागाय गोठ पुरको घात तथा मीत अरु नृपराजाको माहुर दीन्हेते जो पापहोत अथवा प्रधन परस्त्रीहरिलेनेते अथवा परहानि किहेते अथवा गोवधगाय मारेते जो अघ पापहोता है २ यथा गोवध वा वेदकी निन्दा अथवा पर अपकार परार हितको होत हानि करिदेना इत्यादि जो अघकरै इनयुत सुरगुरु द्विज पातक मोकोपरै हेजननी माता यामें जोतनक थोरहू हाल जो मैं जानत होउँ ३ । ८३ ॥

मू० । परघरअग्निलगावहीं कुपथपंथपगदेयँ । बलकरितियपर धनहरैंरणभगिअपयशलेयँ १ रणभगिअपयशलेयँमातुपितुविप्रनमानैं । हरिहरपदतेविमुख भूतप्रेतनउरआनैं २ उरआनैंतीरथकुकृतनिजकुटुम्बतृणलावहीं । जोजानौंतो अघपरैं परघरआगिलगावहीं ३ । ८४ ॥

टी० । जेपराये घरमें आगि लगायदेतेहैं अथवा कुपन्थपथपददेयँ कुमारग चलतेहैं अर्थात् चोरीठगी आदि कुकर्म्मकरतेहैं अथवा परधन परस्त्री बलकरि हरैं अर्थात् जे जबरइन छीनिलेते हैं पुनः रणभागि अपयश लेयँ अर्थात् शत्रुके सन्मुखजाय जे क्षत्री रणभूमिते भागिआय अयशलेते हैं १

रणतेभागि अपयशलेयँ तथा मातुपितु बिप्र न मानैं महतारी बाप ब्राह्म-णादि गुरुजननको कुवचनकहि अनादरकरते हैं अर्थात् लोकधर्म्मत्यागे हैं तथा हरिहर पदते बिमुख अर्थात् लौकिक सुखहेतु मनलगाय शिवकेपद कमलसेवनचाहियें तथा पारलौकिकसुखहेतु मनलगाय हरिभगवान्केपद कमलसेवनचाहिये तिनकात्यागिभूतप्रेत न उरआनैं अर्थात्मारण उच्चाटन आकर्षण उद्वेपण मोहन बशीकरणइतिषट् प्रयोगादि अभिचारसिद्धिपावने हेतु भूतप्रेतादिको न्यासध्यान मंत्रजप पूजादिजेकरतेहैं तिनको जैसाअप-राधहोत २ तथा तीरथकुकृत उरआनैं अर्थात् तीरथमें जाय परस्त्री प्राप्ती की उपाय वा परधन हरणकी उपाय इत्यादि कुकर्म्म उरमें लावते हैं तिनको जैसापाप लागत अथवा निजकुटम्ब तृणलावहिं आपनीबड़ाईके आगे परिवारभरेको तिनुकासम तुच्छकरि गनतेहैं इत्यादि तथा परघर में जे आगिलगावहिं तिनको जैसाअघ पापलागता है तैसेही अधमोहिं परपै पापलागै जोकैकेयीके कर्त्तव्यमें कछुभीहालजानतहोउँतौ ३।८४॥

मू० । लोभमोहफाँसेरहैंसाधुसंगनाहिंलेयँ । मीतविप्रकुलकष्टल खिअशननीरनहिंदेयँ १ अशननीरनहिंदेयँकूपसरबाग विध्वंसैं । तनपोषकबिनतोषअहतविषधनपरअंसैं २ पर अंशैंजेनितधरैं कुबचनबोलिछातीदहैं । तिनकीगतिबि धिदेहुजग लोभमोहफाँसेरहैं ३ । ८५ ॥

टी० । जे लोभ मोह फाँसेरहैं लालच अज्ञानताकी फसरीगरेमें डारे रहतेहैं अर्थात् देहव्यवहारैके मानबश लाभहेतु अनेक छल कियाकरते हैं पुनः साधु संग नाहिंलेयँ साधुनके संगहु जातेहैं तबहू साधुन के गुण नहीं लेतेहैं भाव ऊपरते बातैंकरतेहैं अंतर दुष्टता बनीरहतीहै कौनभाँति यथामीतजो सदा हितकर्त्ता बिप्र ब्राह्मण जो धर्मोपदेशक लोक त्रिवर्ण पूज्य कुलकेजन इत्यादिको कष्टलखि रुजपीडित दरिद्र दुखित देखि तिनको अशन नीरभोजन जलादि नहीं देते हैं १ ऐसे निर्दयी कि श्रेष्ठ जननको कष्टौदेखि भोजन जलादि नहीं देतेहैं पुनः कूपसरबाग बिध्वंसैं अर्थात् ऐसे उपद्रई कि कुवाँताल बागादि परस्वारथी बस्तुको नाशकरि देतेहैं पुनः तन पोषक बिनतोष भोजन आदि उत्तम बस्तु जहाँतक होइसो आपही खायँदूसरेको न पूंछैं ताहूपर संतोष नहीं जहाँलौपावैं सो बटोरि धरिलेवैं कौनभाँति परअंशैं परारहिस्सा जो बिषवत्धनहै ताहू

को ग्राहत वटोरि धरिलेतेहैं लालचते ऐसे असंतोषी २ परअंगें पगार हिस्साजे वरवस वटोरि नित्यही धरिलेतेहैं पुनः कुवचन बोलि छातीदहैं अर्थात् उदासीन अरिमित्रकोऊ होइ जिनसों वार्त्ताकरैं तासों ऐसे कटु बचन बोलैं जामें वाकी छाती जरिउठै ऐसे जे लोभमोहमें फँसेरहते हैं तिनकी परलोकमें जो दुर्गति होतीहै सोईगति विधाता मोहिं लगमंदहु जो कैकेयीके कर्त्तव्यकी वात मैं नेकहू जानत होउँतौ ३। ८५॥

मू०। तेनरजगहोतैमरैं करैंजन्मभरिपाप। रणमंडलअपयशलहैं देहिंविप्रगुरुताप १ देहिंविप्रगुरुताप वसतघरलाय उजारैं। संतसभानहिंबैठि मृषामुखवचनउचारैं २ मृषा साखिजगउच्चरैं नित्यरारिउठिगृहकरैं। रामसियाज्यहिप्रिय नहीं तेनरजगहोतैमरैं ३। ८६॥

टी०। ते नरऐसे मनुष्य जगमें पैदा होतही मरैं कैसे नर जे जन्मभरि पापकरैं जबते पैदाभये तवते परस्त्री पर धनहरण जीवहिंसा परहित हानि परअवगुण प्रकट करन इत्यादि पापकर्म करते जन्मबीतिगया पुनः रणमण्डलते भागे औ रणको जुझाय अपयशलहैं आपने बचावने हेतु अयश लैलेतेहैं अथवा विप्र गुरु तापदेहिं ब्राह्मण गुरु इत्यादि सत्पुरुषनको अनेकभांतिते दुख ताप देतेहैं १ अनादर ताड़न कुवचनादि ते विप्र गुरु आदिकनको ताप देतेहैं तथा औरनको घरसुवास वसत देखि चोर डाकू आगि आदि लायउजारि देतेहैं अरु जन्मभरि संतनकी सभा में कबहूं नहीं बैठे पुनः मृषा झूंठ बोल मुखते उच्चारते हैं अर्थात् औरके कार्य बिगारिबे हेतु झूंठी साखी देतेहैं २ यथा मृषा झूंठी साखी जग में उच्चरैं बोलतेहैं तथा प्रातउठि नित्यही गृहमें रारि घर में वादाविवाद कलहकरतेहैं तथा राम सिया ज्यहि प्रियनहीं जिनको श्रीरघुनंदन जनकनंदिनी नहीं प्रियलागते हैं ते नर जगमें पैदाहोतही मरिजायँ भाव ऐसे जीवनते मरण भला है ३। ८६॥

मू०। तुमसुतशपथनखाँचियो रामप्राणप्रियतोहि। तुमरामहिं अतिप्रियसदा विधिगतिबाँकीहोहि १ विधिगतिबाँकी होहि देहुदूषणजनिकाहू। कर्मप्रधानाकिसानवबै लुनियत

स्वयलाहू २ बयोलूनियतजगतमें भूपमरेहमबाँचिये ।
रामचलेप्राणनचले तुमसुतशपथनखाँचिये ३ । ८७ ॥

टी० । कौशल्याजी बोलीं हे सुतपुत्र तुम शपथ न खाँचिये किसहेतु सौगंदैं खातेहौ काहेते तोहिं राम प्राणप्रिय अर्थात् तुमकोतौ रघुनंदन प्राणनसम प्यारेहैं तौ तुमसों ऐसीबात कैसे ह्वै सक्तीहै तथा हेभरत तुम-हूंतौ रघुनंदनको सदा अतिप्रिया अत्यंत प्यारेहौ यामें कछुहानि नहीं ह्वै सक्तीरहै यह बिधि गति बाँकीहोय बिधाताकी जोटेढ़ीगतिहै अर्थात् शुभा-शुभ कर्मनको फल जो कछु लिखि देताहै सो निश्चय होताहै १ जो बिधिकी बाँकी गतिहै सोईहोहि ओहीभया ताते काहुहि दूषण जनिदेहु अर्थात् मंथरा वा कैकेयी इत्यादि किसीको दोषनहींहै काहेते प्रधानकर्म सोई क्षेत्रहै तामेंजीव किसान जो शुभाशुभबवै सोयलाहु लुनियत अ-र्थात् जोजीवजैसा शुभाशुभ कर्मकरताहै ताहीअनुकूल सुखदुखफललाभ पावताहै २ बयोलूनियत जगत्में अर्थात् संसारमें जीव जैसा कर्म करत सोई दुख सुख भोगत देखिये भूपमरे हमबाँचिये अर्थात् महाराज वियोग होतही प्राण त्यागि सब दुखते छुट्टीलिये अरु हम बचिरहीं ताते अनेक दुख देखती हैं काहेते जब रामचले तब हमारे प्राण न चले यह हमारे कर्मनको फलहै ताते किसीको दोष नहीं अरु तुमको तौ रघुनंदन प्राण प्यारे हैं ताते तुम पुत्र शपथ न खाँचौ ३ । ८७ ॥

मू० । बड़ेभोरमुनिआयगेबैठेहिरैनिबिहानि । भरतबुझायवशिष्ठ
मुनिभूपक्रियाबिधिआनि १ भूपक्रियाबिधिआनिदाहसर
यूतटदीन्हो । रानिनकरप्रबोधभरतपाँयनपरिकीन्हो २
पाँयनपरिकिरिकर्मसबातिलअंजलिकृतरायके । भरतासिखा
येमृतकरमबड़ेभोरमुनिआयके ३ । ८८ ॥

टी० । बैठेहि रैनि बिहानि कौशल्या ढिग भरत बार्त्ताकरत संतेबैठेही राति बीतिगई बड़े भोर मुनि आयगे अर्थात् भरतको आवन सुनि कार्य समय जानि वशिष्ठ आदि मुनिगण आय राजद्वारमें सब एकत्र ह्वै बैठे पुनः वशिष्ठ मुनि भरतको बुझाय अर्थात् शोक त्यागि जो अब उचितहै सो करौ इत्यादि समुझाय पुनः क्रिया विधिभूप आनि जैसी वेदमेंक्रिया की विधिहै ताहीरीतित्ते अदग्ध भूमि शोधि विल्वहरि क्षेत्रको भूप दशरथ

को मृतक शरीर आनि तहाँ क्षौर स्नान नवीन वसन परिधान इत्यादि कीन्हे १ क्रियाकी विधिते भूप मृतकतन आनि सरयू तीर चितालगाय दाह दीन्हो तासमय रानीभी भस्म ह्वै जातीं परंतु भरतजी पायँन परि रानिनकेर प्रबोधकीन्हे अर्थात् रघुनंदनके दर्शन तिनको राज्याभिषेकराज्यमें अनेक आनंद देखनेहेतु तनको राखौ इत्यादि समुझाय धीर्यकराय राखि छाँडे २ पायँपरि समुझाय मातनको राखिकै पुनः भरतजी दाह क्रियादि सब कर्मकरि पुनः रायके तिलांजलि कृतकरत भये अर्थात् महाराजके तृप्तहोनेहेतु तिलांजलि देतेभये इत्यादि बड़े भोर मुनिजन वशिष्ठादि आयकै मृतक कर्म भरतजी को सिखाये ३ । ८८ ॥

मू० । हयगयमणिभूषणदये सिंहासनमहिसाज । धेनुबसनआयुधचवँरछत्रपात्रशिरताज १ छत्रपात्रशिरताजस्वमतिगतिमुनिजसभाषी । शतशतकीनविधानभरतकरणीअभिलाषी २ करिकरतूतिप्रमाणजस सबप्रकारविधिवतभये । शुद्धसिद्धकरिकाजसबहयगयमणिभूषणदये ३ । ८९ ॥

टी० । दशगात्र षोड़शी सपिंडी वृषोत्सर्ग विधिवत् करि पुनः महापात्रको दान कहत हय घोड़े गय हाथी हीरा मुक्तादि मणी कंचन मणि जटित भूषण इत्यादि दिये पुनः सिंहासन अरु महि भूमि ग्रामादि तथा औरहू जो साज यथा सवत्स धेनु दुशाला जामा धोती पटुका उपन्ना पागादि रेशमी जरतारी इत्यादि वसन तथा धनुषबाण तूणीर खड्गादि आयुध चमर छत्र तथा रसोईके भोजनके जलपीवेके इत्यादि सबविधि के पात्र तथा शिरताजकिरीट १ छत्रपात्र शिरताज आदिकौन विधिदान्हे मुनि स्वमतिजस भाषी वशिष्ठजी आपनी मति अनुरूप जहाँतक कहतभयेतामें भरतजी ऐसी करणीकी अभिलाषा कीन्हे जोकि शतशत विधानकीन अर्थात् जो बिधान एकबार करने को वशिष्ठजी कहे ताको सौसौ विधान ते कीन्हे यथा जहाँ एक गोदान बताये तहाँ सौ गौवैं हर्ष सहित दीन्हे इत्यादि सबजानौ २ वेदप्रमाणते जससुने सो सबविधिवत् करतूतिकरि एकदेनेके जगह सौ सौ हयगय मणि भूषणादि दये इसभाँति सबकाज सिद्धकरि शुद्धभये महाराजको क्रियाकर्म करि छुट्टीपाये ३ । ८९ ॥

मू० । शुद्धभयेमुनिवरगये जहाँराजदरबार । नगरमहाजनविप्र

जन सचिवसुभटसरदार १ सचिवसुभटसरदार बोलि पठईसबरानी। भरतशत्रुहनसाथ बोलिलीन्हेमुनिज्ञानी २ मुनिज्ञानीबैठारिढिग मधुरबचनबोलतभये । राजसभादरबारसब शुद्धभयेमुनिवरगये ३ । ९० ॥

टी० । जब भरतजी शुद्धभये तब राजदरबार कचेहरीके मंदिर को मुनिवरगये अर्थात् मुनिनमें श्रेष्ठ जो बशिष्ठते सभामंदिरको आये पुनःनगर महाजन अवध पुरवासी धनवंत बुद्धि बिद्यावंत यावत् उत्तम चतुरजन रहे तथा बिप्र ब्राह्मण वेदाभ्यासी सचिव सुमंतादि यावत् मंत्रीरहे तथा सुभट यावत् सेनापतिरहे तथा सरदार यथा दीवानखजानची तहसील दारादि १ सचिव सुभट सरदार तथा कौशल्यादि सब रानिन को बुलाय पठये पुनः भरत शत्रुहन दोऊजनेनको साथै मुनिज्ञानी बशिष्ठजी बोलि पठाये २ सुनि ज्ञानी बशिष्ठजी सबसमाज को ढिग बैठारि मधुर श्रवण रोचक मीठे बचन बोलत भये इसभाँति शुद्धभये पीछे राजसभा जनन सहित मुनिवर दरबार गये ३ । ९० ॥

मू० । नृपतिप्रेमपूरणकियोत्यहिकोशोचियनाहि । जाकोयशशशिशर्दकोकोनहिंदेखिसिहाहि १ कोनहिंदेखिसिहाहिभोग सुरपतिसमकीन्हो । रामबियोगकृशानुप्राणत्यहित्टणधरिदीन्हो २ रामलषणतुमशत्रुहनचारिसुवनलखिजगजियो। बिछुरिगयोसुरलोकबरनृपतिप्रेमपूरणकियो ३ । ९१ ॥

टी० । बशिष्ठजी मधुर बचनते भरत को समुझावते हैं नृपति प्रेम पूर्णकियो अर्थात् बियोगमें प्रेमकी दशदशाहोतीहैं ॥ यथारसिकप्रियायां ॥ दो० ॥ अभिलाष शुचितागुण कथनस्मृति उद्वेगप्रलाप । उन्मादव्याधि जड़ता भयहेतु मरण पुनिआप ॥ इत्यादि यावत् सुमन्त नहींआये तबतक मिलनकी आशाते नवदशा रहीं जबसुमन्त लौटि आये आशा टूटि गई तब प्रेमकी दशईदशा पूर्ण किये अर्थात् प्राणत्याग दिये त्यहिको शोचिय नाहिं त्यहि दशरथमहाराजके मरनेको शोच करना व्यर्थ है काहेते जाको यश शर्दकोशशि जिनदशरथ महाराजको कैसाअमल प्रकाशमान उज्ज्वलयश है यथा शर्दऋतुको पूर्णचन्द्रमा जाकोदेखि कोनहीं सिहाहि अर्थात् दशरथको यशदेखि सुरनर नागादिको नहीं अभिलाप करता है भाव हम

कोभी ऐसाही यशमिलै १ जिनमहाराज को यशदेखि कोनहीं लजचात पुनः सुरपति जो इन्द्र तिनकी समान जिनलोक में सबंग भोगसुख परिपूर्ण कीन्हे पुनः रामवियोग कृशानु अर्थात् रघुनन्दनके वियोग जनित विरहरूप प्रचण्ड अग्नितेहि पर प्राणरूप तृण धरिदीन्हें अर्थात् रामवियोगमें तृणवत् प्राणत्यागिदीन्हे २ पुनः हेभरतजी जिनदशरथ महाराजके पुत्र रघुनंदन लषणलाल तथा तुमअरु शत्रुहन इत्यादि चारि सुवन अर्थात् एकते एकउत्तम ऐसेचारि सुवनलखि जगजियो चारिहु पुत्रनको देखतसन्ते जगमें जीवतरहे पुनः बिछुरिनृप वियोगभये पर दशरथमहाराज प्रेमपूर्ण कियो पुनः वर सुरलोक गये अर्थात् समूहप्रेम ते पुत्रनको देखतसन्ते जीव न रहा जबतुम शत्रुहन ननेउरेगयउ अरु राम लषण वन को गये चारिउ पुत्रनको वियोगभया तबप्रेम पूर्णकिये अर्थात् तनैत्यागि दिये पुनः उत्तम देवलोकगये अर्थात् उत्तम यशसहित लोकपरलोकदोउ जगह जिनको सुखपूर्ण तिनको शोच व्यर्थ है ३ । ९१ ॥

मू० । रामस्वभावसनेहकोकहियकौनविधिगाय । पितुआयसु तुरतहिंउठेसबपुरजनसमुझाय १ सबपुरजनसमुझायसियालषणहिंसमुझायो । प्राणतजौंयहजानिसंगकरिशोच नआयो २ शोचनआयोभूपकोभूपतिवचनअछेहको । धर्मशीलगुणकोकहैरामस्वभावसनेहको ३ । ९२ ॥

टी० । पुनः रामस्वभाव तथा सनेह अर्थात् रघुनन्दन को शीलवन्त जो सहजस्वभाव है तथा छोटे बड़े सबसों यथा एकरस सनेह राखते हैं ताको कौनविधिते गायकैकहिये अर्थात् बुद्धिनिद्या ननवाणीते कहिवेकी गति नहींहै काहेते जे पितु आयसु पिताकी आज्ञा सुनतहि तुरतहि उठे अर्थात् ऐसाशीलवन्त सुलभ स्वभाव कि पूर्व पिताकी आज्ञासुनते तुरतहि उठि संयम व्रतादिकीन्हे तामें राजपावनेकीहर्ष न कीन्हे पुनः प्रात पिता की आज्ञासुनि तुरतही उठिवनको तयारभये तब कछुशोक न माने पुनः सनेहते सब पुरजननको समुझाये १ सब पुरवासिनको समुझाय धैर्य पुनः सिय लषण जबसंगै तयारभये तिनकोभी बहुतसमुझाये परन्तु प्राण तजौं यह जानि अर्थात् दोऊजन की यहीप्रतिज्ञा रही कि जो संग न लै जैहौ तौ हमप्राण त्यागिदेइँगे यह निश्चयजानि संगकरिलेनेमें शोच न आयो और बनिबेबिगरिबे को विचार नहींकीन्हे सहजही संगलैलीन्हे २ पुनः

भूपतिके अछेह बचनको गहि भूपको भी शोच न आयो अर्थात् खण्डित होनेको छेहकही जो अखण्डहै ताको अछेहकही सोई जो महाराज कहेहैं यथा ॥ चौ० रघुकुलरीति सदाचलिआई । प्राणजाहिं बरुबचननजाई ॥ इत्यादि जो महाराजको अछेह अखंड वचन अर्थात् जो तीनिहु काल में सत्यहै ताको दृढगहि बनकोचले पुनः दशरथ महाराजके वियोगदुःख अथवा प्राणत्याग इत्यादिको शोचनहीं मनमें आने काहेते सत्यसंध को वचन न जानेपावै तौ शोक प्राणहानि कछु चीज नहीं है याते शोचरहित हर्षित बनकोचलेगये ताते धर्म शीलतादि गुण तथा रघुनंदनको स्वभाव सनेह इत्यादिकनको कौन कहिसक्ताहै किसकी ऐसी मतिहै २ । ९२ ॥

मू० । कठिनकेकयीकाकहौं कहतहुकहीनजाय । कुमतिकुआगि बरायकै दीन्हीअवधलगाय १ दीन्हीअवधलगाय राम सियबनहिंसिधाये । पुरपरिजनसबशोच भूपहठिप्राणप ठाये २ प्राणगवाँयेभूपबर भावीगतिकोनाहिंदहौं । बिधि बिधिताअतिकठिनहै कठिनकेकयीकाकहौं ३ । ९३ ॥

टी० । पुनः वशिष्ठजी कहत कि जैसी कठिन कैकेयी है ताको क्या कहौं काहेते कहतहु कही न जाय अर्थात् जो किसीकी समता कहा चाहिये तौ याकी योग्य उपमा नहीं ढूँढ़मिलती है यथा ॥ नीतिशास्त्रे ॥ एते सत्पुरुषाःपरार्थघटिकाःस्वार्थविरोधेनतु।सामान्यस्तुपरार्थमुद्यमभृताःस्वार्थविरोधेनतु ॥ तेममिानुषराक्षसाःपरहितंस्वार्थायनिघ्नंतुये।येतुघ्नंतुनिरर्थकाःपरहितंतेकेनजानीमहे ॥ अर्थात् जे स्वार्थ हेतु औरको कार्य नाश करतेहैं ते मनुष्य राक्षसके तुल्यहैं अरु जे विनास्वार्थ पराया कार्य नाश करतेहैं तिन मनुष्यनको नहीं जानतेहैं वेकौनहैं इत्यादि कहतनहींबनत किसकी उपमा दीजिये काहेते कुमतिरूपी कुत्सित् अग्नि बरायकै अवध में लगायदीन्ही अर्थात् वृथाही बैरमानि हठिकरि महाराज सों वरदान माँगि शोकरूप प्रचंड अग्निवत् अवधपुर भरेमें सब नर नारिन के उरमें महादाह पैदाकरि दीन्हेसि १ अयोध्याजी में कैसी आगि लगायदीन्हेसि राम सिय बनहिं सिधाये वरदान सुनि लषण जानकी सहित रघुनंदन बनको गये तिनके वियोगते पुरजन परिवार जननके मनमें शोच भया अरु भूप दशरथ महाराज अत्यंत दुःखकरिकै हठि बरबस प्राण रघुनंदन के साथही पठाये २ वरभूप श्रेष्ठ महाराजै जब प्राण गवाँये तब भावी

गति को न दहै भावी-होनहार ताकी गति जो काल की कुचाल रूप शोक अग्नि है तामें को नहीं तप्त होता है ताते विधि की विधिता ब्रह्मा की लिखी जो प्रारब्धहै सो अत्यंत कठिन है भाव विना भोगे छूटि नहीं सक्ती है अर्थात् जो कर्म जीव करता है ताको फल अवश्य भोगनापरता है यथा ॥ मिताक्षरायां ॥ नोऽभुक्तंक्षीयतेकर्म्मकल्पकोटिशतैरपि । अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्म्मशुभाशुभम् ॥ इत्यादि विचारि सज्जन अशुभकर्म नहीं करतेहैं अरु कैकेयी जैसी कठिन है जैसे कुल विरुद्ध कर्म किया सो क्या कहौं २ । ९३ ॥

सू० । भूपबचनप्रियप्राणनहिं भरतसुनोसतिभाव । सोफुरकी जियशिरधरिय धर्मस्मृतिश्रुतिगाव १ धर्मस्मृतिश्रुतिगाव तजेरघुबरज्यहिलागी । मातुसचिवपुरलोग जरतज्वर नाशहुआगी २ नाशहुआगीअवधकी अवधिलगेनृप राज्यलहि । दोषनकलुसानसकरौ भूपबचनप्रियप्राण नहि ३ । ९४ ॥

टी० । पुनः वशिष्ठजी बोले हे भरत अब सत्यभावते जो करना उचितहै सो सुनिये भूपदशरथ महाराज को आपने वचनै प्रिय रहे प्राण नहीं प्रियरहे सो फुर कीजिये शिरधरिये अर्थात् महाराजकी जो आज्ञा है ताको शिर धरौ यथा रघुनंदन वचन सत्यकरिबे हेत वनगमन शिरधरे तथा तुम राज्याभिषेक शिरधरि महाराजको वचन सत्य कीजिये सोऊ कैसा उत्तमहै धर्म्म स्मृति श्रुति गाव अर्थात् धर्मशास्त्र वेद यही बातकहि रहाहै कि पिताकीआज्ञा करनाचाहिये १ जो बात धर्म्मशास्त्र अरु वेदगावत पुनः जेहिलागि रघुवर तजे जौने वचनकी सत्यताहेतु दशरथ महाराज रघुनंदनको त्याग किये ऐसा वचन प्रिय ताको सत्यकरो पुनः मातु कौशल्यादिक तथा सचिव सुमंतादि तथा पुरके सबलोग इत्यादि सब शोक ज्वरकरिकै जरतेहैं तिसआगिको नाशहु अर्थात् धर्म नीतिते राज्यकरि सबको धैर्य दै दुःख भुलाय देहु २ सबकी आगि कौनभांति नाश करहु अवधि लगे अवधनृप राज्यलहि अवधि चौदह वर्ष तक यावत् रघुनंदन न आवहिं तबलगि महाराजाकीदीन्ही राज्य अंगीकार करहु जबरघुनंदन आवहिंगे तबउनको सौंपिदिहेउ तुम लेवकाई कीन्हेउ इसविचारते दोष न कछु मानसधरौ मनमें कछु दोषन बिचारो केवल महाराजको वचन

सत्यकरौ काहेते जिनको प्राणनहीं प्यारेहैं केवल आपने वचनन की स-त्यता प्रियहै इसहेतु सत्यकरौ ३। ९४॥

मू०। कहतकौशल्यापाँयपरि पूतसुनहुगुरुबात। भूपमरेरघुपति गयेतुमयहिविधिकदरात १ तुमयहिविधिकदरातअवधउत्पातविचारौ। कालकर्मगतिवामकुदिनमुखकीजियकारौ२ कीजियगुरुआयसुमुदितपुरपरिजनशिरभारधरि। पालिशोचसबकोहरौकहतकौशल्यापाँयपरि ३। ९५॥

टी०। पाँयन परि कौशल्या कहत हेपूतगुरु की बातसुनहु आपत्काले मर्यादा नास्ति॥ यासमयमें अत्यंत आर्त्त हैं ताते कौशल्याजी भरतके पाँ-यनपरीं ताको हेतु यथारघुनंदन धर्मधुरीण पिताकी आज्ञाते वनको गये तथाराम भक्ति धर्मते लषणौ चलेगये तथाभरतौ रामभक्त हैं सोई दृढ़ करि येभी न चलेजायँ इसभयते आर्त है पाँयनपरीं पुनः लौकिक धर्म बिचारि पिताकी आज्ञानहीं प्रधानकीन्ही गुरुकोबचन प्रधान कीन्ही इस हेतु कहत हेपुत्र यह उत्तम धर्महै ताते गुरुकी बात सुनहु वशिष्ठ जी को बचन अंगीकारकरहु भाव राजकाज देखहुकाहेते भूपमरे पुनः लषण स-हितरघुपति वनकोगयेरहे तुमसो यहिबिधि कदरात अर्थात् राज्यनहींलीन चाहतेहौ १ हेपुत्रतुम यहिविधि कादरता धारण करतेहौ सोभलीबात्तनहीं है काहेते अवध उत्पात बिचारौ अर्थात् बिनाराजाकी भयचोर ठग अभि-चारी शत्रुआदि अयोध्याजीमें अरु राज्यभरे में अनेक उपद्रव करैंगे ताते कालकर्मकी जो बामगति टेढ़ीचाल ताते जो कुदिन हैं तिनको मुखकारो कीजिये अर्थात् कराल कालआये जो असत्कर्म्म उदयभये तिनके प्रतापते जो कुदिन लोगनके दुःखदायकदिनहैं तामें अपनी शक्तिबलते सुखदायक आचरणसाजि कुदिनके मुखमेंस्याही लगाइदेउ भागिजाइ २ ऐसाबिचारि गुरुआयसु मुदितगुरु वशिष्ठ जो आज्ञादेवैं सो आनंद सहित कीजिये कौन भाँति पुरजन परिवार जननकोभार सबकीरक्षाको व्यापार आपनेशिरपर धरिपालनकरि सबको शोचहरहु ऐसा उपायकरौ जामेंसबको दुःखभूलि जायइति बचन कौशल्या जी पाँयनपरि कहतीहैं ३। ९५॥

मू०। भरतनयनधाराचलीसुनिगुरुजननीबैन। हाथजोरिबोले मधुरजलउमड़ेद्वौनैन १ जलउमड़ेद्वौनैन सीखभलि दीन्हगोसांई। मातुकहेउउपदेशमोहिंपरदयासदाई २ द

यांसदाईतेकहतसचिवमातुगुरुहितभले। उतरदेतपातक लहौंभरतनयनधाराचले ३ । ९६ ॥

टी० । गुरुजननीके वचनसुनि भरतनयन धाराचली अर्थात् गुरुवशिष्ठ कहे कि राज्याभिषेक लै पिताको वचन सत्यकरहु ताहीको कौशल्यौ जी पुष्टकीन्ही सो सुनि अयोग्यता विचारि भावजो कैकेयीकृत कलंकहै सोई पुष्टहोता है पुनः गुरुजनन को उत्तर भी न देतवना दोऊसंकट तेऊनि करुणारसपूर्णते शोकस्थायी प्रसिद्धभई ताते भरतजी के नेत्रनते आँशु जलकीधारा चली इसभाँति दोऊ नेत्रनते जलउमडेउ पुनः हाथजोरि मधुरवचनवोले १ दोऊ नेत्रनते जलउमडेउ पुनः वोले कि हेगोसाईं आपुने तौ मोकोभली सिखावन दीन तथा मातुभी जोकहे सोभी उत्तम उपदेश है यहकाहेते कहे मोहिं पर दया सदाई दोऊ सोपर सदा एकरस दयाराखते हैं अर्थात् मेरे दुःखके निवारण करनहारे हैं २ सबै सदा दया राखते हैं ताते सचिव सुमंतादि मंत्री सब तथामाता कौशल्या अरु गुरु वशिष्ठ इत्यादि सबमेरे भलेहितकी वातकहते हैं अर्थात् पिताकी आज्ञा पुनः परिवार प्रजनको पालन ताहूमें सबको संमत पुनः जबरघुनंदन आवैं तब उनको सौंपिदै सेवकाई करना इसमें कछु दूषणनहीं यह स्वामिही को कार्यहै तातेभलै उपदेशहै यही मानाचाहिये क्योंकि उत्तरदेत पातकलहौं अर्थात् सबके वचन काटि डारनेवाला जो उत्तर देउँ तौ गुरु जननसों प्रौढ़ताईते पापलागे इसहेतु भरतके नयननतं धारावही ३।९६॥

मू० । पाँयनपनहींनाहिंधरीरामविपिनाकियगौन । भूपमरेप्रणपूर करि ताकोशोचवकौन १ ताकोशोचवकौनघावयहनीक्षण लाग्यो । यहैपीरनितदहत रयनभरिशोचनजाग्यो २ शो चनजाग्योंनिशिसबै जातिसबैछातीजरी । रामलषणकटि पटतजेपाँयनपनहींनाहिंधरी ३ । ९७ ॥

टी० । प्रथम सबको समाधानकरि पुनः पश्चात्तापपूर्वक भरतजीवोले प्रण पूरकरि भूपतिमरे ताको कौनशोचवहै रघुनंदनमें साँचा प्रेमरहा अवलोकनते जीवतरहे बियोग न सहिसके प्रेमकी पूर्णताकरि तनुत्यागि सुरलोक गये रामलषण ऐसे पुत्र वर्त्तमान तिन दशरथ महाराज को कौन शोचकरनाहै ताते यहशोचहै कि रघुनंदन पाँयनमें पनहीं नहींधारण कि हे

बसनभूषण बाहनकी कौनकहै नाँगेपाँयन बिपिन गौनाकिय बनको चलेगये मेरेसुखपूर्वक अकंटकहेतु यह तीक्ष्णकारी घावमेरेलागोहै इसके आगे महाराजको जो मरनाहै ताको कौनशोचहै १ जो मेरेसुख हेतु रघुनंदन बनको गयेयहै पीर नितदहत छाती जारत ताही शोचन रातिभरि जाग्यों २ शोचनि जाग्यों निशिकाहेते रातिभरि नींदनहीं परत पश्चात्तापते सबै छाती जरीजाति काहेरामलषण कटिपटतजे लषणलाल सहित रघुनंदनजामा पागादिको कहै कटिपट तजे धोतीतकत्यागि वल्कल बसन धारण किहे पाँयनमें पनहींधरे नाँगे पाँयनगये ३ । ९७ ॥

मू० । प्रातकालकरिहौंयहैसुनहुसत्यसबबात । धर्मजायजगअयश
शलहिनरकहुदुखसहिगात १ नरकहुदुखसहिगातजन्म
भरिसंकटहोई । सबदुखदौंवादहौंअनलबरुडारहुकोई २
डारहुकोयजुबालज्वरसकलदोष दुखभरिरहै । जाहुँअनु-
जयुतबिपिनकहँप्रातकालकरिहौंयहै ३ । ९८ ॥

टी० । सबसमाज भरिमेरी सत्यबात सुनहुजो मेरेमनमें है यहैकाल्हि प्रातःकालकरिहौं तामें यहांतक निश्चयहै कि चहैधर्मजाय जगमें अयश लहि अर्थात् संसार में अपयशपावौं पुनः अंतमें नरकहु दुःख सहिगात देह में यमसाँसति सहिहौं १ नरकहुको दुःख देहते सहौं तथाचहै जन्मभरि रुज बंधनादि संकट होवै कैसहू संकटहानि बियोग दरिद्रता शत्रुबंधन ताड़नादि सबप्रकारके दुःखरूप दावानलमें दहौंजराकरौं अथवाबरु कोई अनल अग्निमें डारि देवै २ अथवा डारहुकोयजुबालज्वर अर्थात् वात पित्त कफादि अन्य यावज्ज्वरहैं ते स्वाभाविक प्राणघातक नहींहोतेहैं अरु जो बालपूतनादिकरि ज्वरहोताहै सो प्राणघातक है सोऊ बालज्वर चहै कोऊ मोपर डारिदेवै इत्यादि सकलप्रकारकेदोष दुःखन करिकै भरिरहौं इत्यादि चहै जो होवै परंतु प्रातःकाल यहैकरिहौं कि अनुजयुत विपिन कहँ जाहुँ शत्रुहन सहित बनको रघुनाथजी के पासको जैहौं ३ । ९८ ॥

मू० । शरणसामुहेदेखिकै रघुपतिकरिहैंछोह । शीलस्वभावसु
स्वामिकोसमुहेजनपरमोह १ समुहेजनपरमोह रामसिय
बामनकाहू । मैंशिशुसेवकनीच कुमतिउरप्रकटेउँताहू २

प्रकटेउविधिअघअयशले नीचदासशिशुलेखिके। राम
सियाकरिहैंकृपाशरणसामुहेदेखिके ३ । ९९ ॥

टी० । जब छलछांडिदीन अधीनह्वै सन्मुखजैहौं इतिशरणसामुहे देखिकै रघुपति छोहमया करि हैं काहेते सुस्वामि रघुनंदनको शीलस्वभाव है अर्थात् नीच ऊँच सबको आदरमानदेतेहैं अरु सामुहे जनपर सोह जोजन मनबचन कर्मते सनेहपूर्वक सन्मुख रहत तापर साँची प्रीति करतेहैं १ सन्मुख जनपर साँची प्रीति करते हैं पुनः रामसिय काहूको वाम हैं नहींहैं अर्थात् रघुनंदन जनकनंदनी भूतमात्र पर कृपादृष्टि राखेहैं अन-कृपा किसी पर नहीं है अरुमैं यद्यपि उरमें कुमति प्रकटेउँ ताहूपरशिशु नीच सेवकहौं अर्थात् उरअंतरमें यद्यपि वहुत विधिकी कुबुद्धि प्रसिद्ध किहेउँ ताहूपर बालक सहजही अज्ञहोतेहैं ताहू पर नीचसेवक उत्तमता कैसेबनै इति विचारि क्षमा करिहैं २ प्रकटेउ विधि अघअयश अपराध अयश बिधाताने मेरेहेतु प्रसिद्ध कीन्हेउ अर्थात् सेवकके सुखहेतु स्वामी बनकोगये इतिपाप पुनः स्वामीकी राज्य सेवकनेलिया इति अयशको बिधाता मेरेहेतु कैकेयी द्वारा प्रसिद्ध किया परंतु नीचदास शिशुलखिकै आपना नीचादास मोको बालकविचारि शरणसामुहेदेखिकै जनकनंदनी सहित रघुनंदन मोपर कृपाकरि हैं ३ । ९९ ॥

मू० । भरतवचनलखिरबिजगेरामबिरहनिशिपाय । भूपमरणकै कयकुमतितिमिररहेउपुरछाय १ तिमिररहेउपुरछायसुखि सोवतनरनारी । लषणसियाकोबिरहव्याघ्रधकगर्जतभा री २ गर्जतभारीभयाविकलतारागणमुनिद्विजलगे । दुख दसेजसोवतबिकलभरतबचनलखिरबिजगे ३ । १०० ॥

टी० । जोकहे कि प्रातहोतही रघुनंदन के पास कोजैहौं इति भरतजीके बचन को रबिवत् लखि उदित देखि सोवतसे लोगजगे जागिउठे कैसे सब सोवत रहे रामबिरह निशिपाय यथा रातिको सबलोग सोयजाते हैं तथा इहां रघुनंदन की बिरहरूप रातिपाय अवधवासी जन सोयगये रहैं रातिको अन्धकारहोत इहांक्या है कैकेयी कुमति भूपमरण सोई तिमिर अन्धकार पुरमें छायरहेउ अर्थात् कैकेयी कुबुद्धी करि रघुनंदनको बनवास दिये पुनः भूपदशरथजी मरे इति दोऊभाँतिको महादुःख सोई अन्धकार

सरीखे पुरजननके बाहेर भीतर भरि पूरिगयो १ रघुनंदनको बनगवन भूप मरण तिनको वियोग दुःखरूपा तिमिरअन्धकार पुरमेंछायरहेउ तासोंमूर्च्छित जो पुरकेनरनारी सोई मानहुंसोवतेहैं पुनःरात्रीकोबनतेनिसरि बाघ भेड़हादिगर्जताफिरतेहैं तथा इहांलपण जानकीकेबियोगते जोबिरहहै सोई व्याघ्रवृक भेड़हा सोईभारी भयंकरशब्दते गर्जतेहैं तिनकी भयलगी है २ भारीशब्दते गर्जते हैं ताते भयडरकरिकै सब पुरजन बिकलहैं पुनः रात्रि में नक्षत्र रहतेहैं इहां तारा नक्षत्रगण सम मुनिबाशिष्ठ द्विजअपर ब्राह्मण लगे नक्षत्रसम लघुप्रकाशवन्त लागतेहैं इसभाँति दुखद बियोग सेजपर पुरजन सोवतेरहे ते भरतके वचनरूप रबिउदयदेखि जागिउठे ३।१०० ॥

मू० । सबकेमनसबसुखभयोभरतभलोमतकीन । दुखसमुद्रबूड़
तसकलज्यहिअवलंबनदीन १ ज्यहिअवलंबनदीनसभा
सबउठिभेठाढ़े । रामचंद्रसियदर्शमंत्रनरबारिधिबाढ़े २
बारिधिबाढ़ेलोगसबभरतमंत्रसबहीलयो । साजिसाजिबा
हनचलेसबकेमनसबसुखभयो ३ । १०१ ॥

टी० । सब अवधबासिनके मनमें सबभाँतिको सुखभयो काहेते भरत जी भलोमत कीन काहेते दुःखरूप अगाध समुद्रमें पुरजन बुड़तरहैं तिन सकलको ज्यहि अवलम्बन दीन ज्यहि भरतने रामढिग गमनरूप जहाजते अनुकूल षचनरूप बहते पकरि सबको बचायराखे १ ज्यहिभरतने ऐसा अवलम्बन आधारदीन जाके बलते सबसभाजन उठि ठाढ़े भये काहेते रामचन्द्र सियदर्श आशरूप मंत्रकोबलपाय नरबारिधि बाढ़े मनुष्यनमें आनन्द समुद्रसमउमँगा २ काहेते सबलोगनमें आनंदसिंधुबाढ़ेउ भरतजीको मंत्र सबहिनालियो भाव बनको गवन सबके मनते भावा इस हेतु सबपुरबासिन के मनमें सब भाँतिको सुखभयो ताते रथ बाजिआदि बाहनसाजिसाजि सबैअवधबासी बनकोचले तयारीकरनेलगे ३।१०१ ॥

मू० । भरतसाजसाजतभयेमातुसकलपुरलोग । चलेचित्रकूट
हिभरतकृशतनरामबियोग १ कृशतनरामबियोगचलेस
जिसाजसमाजे । पाँयनपनहीत्यागिशीशनाहिंभूषणराजे २
भूषणसाजेत्यागिकैभायमातुसँगसबलये । रामप्रेमपूरण
भरेभरतसाजसाजतभये ३ । १०२ ॥

टी०। भरतजी रथवाजि गज पैदर पालकी इत्यादि सबसाज साजत भये पुनः कौशल्यादि सकलमाता अरु पुरके लोग स्त्री पुरुष सब इस भाँति भरतजी चित्रकूटको चले परन्तु रघुनन्दनके वियोग दुःख करिकै तनकृश देहदुर्बल ह्वै रहीहै १ राम वियोगतेतनकृश अरु वाहनादि राजसी साज सजि सेवक सुभट सचिवादि सबसमाज साथ लिहे परन्तु आपु कैसेचलेकि पाँयनते पनहींत्यागि नांगेपाँयन पैदर पुनः शीशनहिंभूषणराजे शीशताजआदि कछुभी भूषण तनमें नहींदेखात सादेवेष २ भूषणकी जो साज किरीट कुण्डल माल केयूरादि सो सब त्यागिकै पुनः भायशत्रुहन तथा कौशल्यादि सबमातन को संग लिये अरु रघुनन्दनके प्रेम करिकै परिपूर्णभरे इसभाँतिते भरतजीप्रभुपासजानेहेतु सबसाजसाजे ३।१०२॥

मू०। तमसातीरनिवासकरिप्रातसमाजसमेत। सुरसरिदेखीजा यतबकेवटकहतसचेत १ केवटकहतसचेतभरतसेनासँग लीन्हे। समुझिनिषादविचारिकपटअंतरमहँदीन्हे २ अं तरकपटविचारिकैसजगहोउसबघाटधरि। रामजानिवन भरतसाजितमसातीरनिवासकरि ३।१०३॥

टी०। प्रथमदिनचले तमसानदीतीर रातिकोवासकरि प्रातभये सेवक सचिवादि समाज समेत चलेजाय सुरसरिगंगाजीकोदेखा भाव नगिचाने तब सचेत सजग ह्वैकै केवट आपनी समाज में कहताभया १ सचेत है क्या बात केवटकहत कि भरतजी तौ चतुरंगिणीसेना संगमें लीन्हे आवते हैं सो निषादराज बिचारकरि समुझिलीन्हे कि अन्तरमें कपटदीन्हे हैं अर्थात् मुनिवेषते रघुनन्दन बनवासमें हैं तिनके मिलनहेतु जो भरतजाते होते तौ एकाकी उदासीन चलेजाते अरु जो राजसी साज सेना सहित चले तौ अंतरमें कपटलिहे हैं वैरभावते जाते हैं इति विचारि समुझि लिया २ सोई समुझि निषादराज कहत कि हे सुभटौ भरतके अन्तरको कपट बिचारिकै सब घाटधरि सजग होहु अर्थात् किसी घाटपर उतरि न जानेपावैं बिनायुद्धजीते काहेते कि तमसातीर निवासकरि ऐसेवेगते चले कि इहांपहुँचिगये तातेयही निश्चयहै कि रघुनन्दनको अकेलेबनमें जानि तिनको मारनेहेतु सेनासजिकै भरतचलेहैं यामेंसंदेह नहींहै ३।१०३॥

मू०। रामकाजजूझहुसुभटभरतरामकेभाय। मैंसेवकरघुवीरको

लोहेदेहुँअघाय १ लोहेदेहुँअघायसुभटविनकटकनिहारौ । हयगयरथजलबोरिपाउँपीछेजनिधारौ २ पाउँनपीछेकउध रहुरामकाजअरुगंगतट । मोरनिहोरविचारिकैस्वामिका जजूझहुसुभट ३ । १०४ ॥

टी० । निपादराज आपनी सेनाते कहत हे सुभटहु उत्तम बीरहु रघुनन्दनके काजहेतु आजु सन्मुख संग्राम में जूझहु काहेते भरत तौ रघुनन्दन के छोटेभाईहैं अरुमैं रघुबीरको सेवकहौं परन्तुआजुभरतकोयुद्ध विषे लोहते अघायदेहौं भावनिश्शंक सन्मुख युद्धकरिहौं १ कौनभाँति लोहेते अघवाय देहौं सुभटबिन कटकनिहारौ अर्थात् ऐसा ढूंढिढूंढि मरिहौं कि सेनामें सुभट उत्तम बीर न देखिपरि हैं पुनः हय जो घोड़े गय जो हाथी रथादि जलमेंबोरिडारिहौं अर्थात् तीनिओरते गाँसिहौं ताते गंगाजीमेंबूड़ि मरैंगे पुनः हे सुभटहु पीछेपाँउ जनिधारौ सन्मुखैयुद्धकरौ २ काहेते पाछे पाँउ न धरौ यासमयमें जयपावना अथवा जूझिजाना दोऊ परमउत्तम हैं काहेते जयपाये लोकमें सुयश अरु स्वामीको कार्य पुनः सन्मुख जूझे सुरलोक प्राप्ती पुनः गंगातट रामकार्य्य हेतु मरण परमोत्तम ते उत्तमता पायहौ पुनः मोरनिहोर बिचारिकै स्वामी रघुनन्दन के कार्य्य हेतु सुभटौ जूझौ ३ । १०४ ॥

मू० । पहिरतअगरीधनुधरतभईछींकगतिबाम । सगुनसगुनियाकहिचल्योसगुनसुमंगलधाम १ सगुनसुमंगलधामभरतनहिंकपटकुचाली । राममनावनजाहिंसंगलैमातुसुचाली २ संगमातुगुरुसचिवसबलोगरामशोचनिजरत । सहसाकर्म्मनकीजियेपहिरतअगरीधनुधरत ३ । १०५ ॥

टी० । अगरी झिलम पहिरत पुनः धनुधरत हाथ में धनुष लेत समय बामगति बामओर छींकभई ताहिसमयसगुन बिचारनेवाला सगुनिया सगुनका फल कहिचल्यो बखान करनेलगा कि सगुनसुमंगलधाम है अर्थात् जो बामदिशिमें छींकभई है याहिसगुन को फल मंगलानन्द करनहारा है १ सगुन सुन्दर मंगल को धाम मंगलन को भरा मंदिर है ताते निश्चयजानौ कि न भरतकुचाली हैं भाव कुमार्ग पर भूलिहूकैपाँउ न देहँगे अरु न मनमें कपटराखे हैं भाव शुद्धसनेह ते रामसेवक बनेहैं

पुनःसुचालीमातु जो कौशल्यासुमित्रादितिनको संगलै राममनावनजाहीं रघुनन्दनको लौटारि लाववनेहेतु चित्रकूटको जातेहैं मातादिके रक्षा हेतु सेनासंग लिहे २ सेनायाते साथलिहे कि संगमें सबमाता हैं पुनः गुरु बशिष्ठ सुमन्तादि सचिव दर्शहेतु जाते हैं ताते भीर अधिकहै ते सब राम शोचानि जरत अर्थात् माता गुरु सचिवादि सहित भरत रघुनन्दन के वियोग जनित विरहाग्नि तापते सब आपहीततहैं तिनसों युद्धकरने हेतु जो तुम अगरी अर्थात् झिलम पहिरते हौ अथवा धनुप धारण करते हौ बिना बिचारि लिहे मित्रको शत्रु बनायलेना यह सहसा कर्म है सो न कीजिये भावविचारपूर्वक कार्यकरना चतुरजनकोकार्यहै ३ । १०५॥

मू०। समुझिभेटनृपलैचलेखगमृगधनपटमीन। मिलनसाजस बसंगलियपुरजनपरमप्रवीन १ पुरजनपरमप्रवीनमिल्यो मुनिवरकहँआगे। रामसखासुनिभरतचलेमिलनेरथत्या गे २ रथत्यागेकेवटकह्योनामजातिपुरअनभले। भरत चल्योउमँगतनयनसमुझिभेटिनृपलैचले ३ । १०६ ॥

टी०। नृप समुझि भेटलैचले भरतजी राजाहैं तिनसों खालिहाथ न मिलना चाहिये यह विचारकरि भेटकी सामग्रीलै निपादराज चले क्या सामग्री खग कोकिल मोर चकोरादि पक्षी पुनः हरिण पुष्कलकपाटा झाँखादि मृगमणि स्वर्ण आदि धन दुशालादि पट मीन सगुनहेतु इ-त्यादि सब मिलनकी साज अरु विद्या बुद्धि वार्तादिमें जे परम प्रवीन ऐसे पुरवासी जननको भी संग लिये १ परम प्रवीन पुरजननको संगले निपादराज आगेजाय मुनिवर वशिष्ठजीकहँ मिल्यो अर्थात् आपना नाम कहि दूरिहीते दंड प्रणामकीन्हे तब वशिष्ठजी भरतसों बताये कि रघुनंदन को प्रिय सखा निपाद यही है इति रामसनेही सखासुनि भरत रथ त्यागे रथते उतरि निषादके मिलनहेतु चले २ जब भरत रथ त्यागे मिलन हेतु चले तब साष्टांगप्रणाम करतसन्ते केवटनाम जातिपुर इत्यादि अन-भले कह्यो यथा हे महाराज नीचजाति मैं निपाद गुह अपावन मेरा नाम शृंगवेरपुरको पालनहारहौं भावशृंग तीक्ष्णवेरमें भी काँटाऐसेतुच्छ ग्रामको पालनहार इत्यादि नाम जाति पुर इत्यादि एकहू मेरे भलेनहीं हैं ऐसा प्रसिद्ध करि कह्यो भाव रामसनेही तौ ऊँच नीच बहुत हैं ऐसा न होइ रामसखा सुनि उत्तम जाति मानि मिलैं पीछे मेरा कुल करतूति

जानि पश्चात्ताप करैं इसहेतु पूर्वही आपने सब अवगुण प्रसिद्ध कहि दिया सो सब सुनि लिये तिनको कुछ भी न माने भरतजी चले निकट जाय बाँहगहि उठाय रामसनेही समुझि आँशू नयननते उमँगत भेटे उरमें लगायमिले पुनः निषाद नृपभरतकोलैके पुरकोचल्यो २।१०६॥

मू०। भरतकुशलपूँछीसबैकेवटबिनतीकीन्ह। अबपदरजलखि कुशलसबप्रभुदर्शनजबदीन्ह १ प्रभुदर्शनकेलहतसकल दुखदूरिपराने। चलियेअपनेपुरहिरामजससेवकजाने २ सेवककहेउपुकारिमैंमातुनिलखिसादरजबै। दैअशीषजनु लषणसमहेतुकुशलपूछीसबै ३।१०७॥

टी०। देश कोश पुत्र परिवार इत्यादि सबभांतिकी कुशल भरतपूछे भाव सर्वांग ऐश्वर्य देह संबंधी कुशलपूर्वक हैं सो सुनि केवट विनती कीन हे प्रभु जब आपु आय दर्शनदीन तौ आपुके पाँयनकी धूरि देखि अब कुशलभई १ काहेते अब कुशलभई प्रभु दर्शनके लहत हेप्रभु आपुके दर्शन पावते सन्ते लौकिक पारलौकिकादि सब प्रकारके दुख दूरिपराने दूरिको भागिगये भाव कुटिल कर्म सर्वनाशह्वैगये अब कहाँते दुःखआवैगो जस रामसेवक जानें तस आपने पुरहि चलिये अर्थात् यथा रघुनंदन आपना सेवक जानि इहाँ वास विश्राम कीन्हें तथा आपने सेवकको पुर आपना जानि इति आपने पुरहि आपहू चलिये २ जब भरतजी पुरको चलना मंजूरकीन्हें तब मातनि लखि कौशल्यादि मातनकी पालकी आवत देखि जबै सादर सहित आदर पुकारिकै कह्यो कि मैं आपुको सेवक निषाद प्रणाम करताहौं इति सुनि जनु लषणसमजानि हेतु सनेह पूर्वक अशीष दैकै पुनः सबै विधिकी कुशल पूछे ३।१०७॥

मू०। सबसुपाससबकोभयोसुरसरिभरतअन्हाय। रामसखासे वाकरीसबकोबासदिवाय १ सबकोबासदिवायरथानिसबत हाँगवाँई। एकहिखेवापारकियेकेवटउतराई २ उतराईस बसेनयुतचलेप्रागसारगलियो। रामदर्शलालचहृदयस बसुपाससबकोभयो ३।१०८॥

टी०। भरत सुरसरि अन्हाय प्रथम समाज सहित भरत गंगाजी में स्नान कीन्हे पुनः सबको सब सुपास भयो अर्थात् आसन भोजन पान

समय अनुकूलमनभावत सबको मिल्यो कौनभांति सबको बासदैवाय पुनः रामसखा निषादराजने विधिवत् सेवाकरी अर्थात् उनमंदिर बहारि लीपि पोति तिनमें रानिनको वासदै तहाँ निषादराजकी स्त्री जन सेवामेंरहीं तथा बारहदरीआदिमें शत्रुहनादि रघुवंशिन को बासदीन्हे तहाँ गुहके बालकादिसेवामेंरहे हरिमंदिरमें वशिष्ठआदिको बासदिये तहाँ गुह के बंधुवर्ग सेवामेंरहे वृक्षनतर साफबहारि जलछिरिकि तहां सचिवसेनापादिकोबासदिये तहांगुहके सचिवादि सेवामेंरहे बागैसाफकरि तहां सेना को वासदिये तहां गुहके सेनप सेवामें रहे वनमें हाथी घोड़ा वृषभादि पशुनको बासदिये तहां गुहके सेवक सेवामेंरहे जो सभामन्दिर रहै तहां भरतजी को वासदै निषादराज आपु सेवामें रह्यो १ विधिवत् यथा योग्य सबको बासदिवाय भोजनपान अंगसेवादि सबभाँति सेवकाईकियो इसीभाँति तहां शृंगवेरपुर में रयनि गवाँई राति विताई भोरभये चले तहाँ रातिभरे में इतनीनावें मँगायलिये जामें समाज सहित भरत को केवट उतराई निषादराज ने ऐसा शीघ्रही गंगापार उतराय दिया जो एकहीं खेवाते पारकिये २ इसीभाँति सबसैन्ययुत सेना सहित भरत को पार उतराई पुनः आगेचले प्रयाग मारगलियो प्रयागकीरास्तापकरि इस भाँति शृंगवेरपुरवासमें सबकोसुपासभया पुनः रामदर्श लालचहृदयरघुनाथ जीको देखनेकी अभिलाष सबकेउरमें है तातेशीघ्रचले ३ । १०८॥

मू० । न्हायप्रयागप्रणामकरिदानदीनसुखपाय । भरद्वाजआश्रमगयेमिलेपूजिबैठाय १ मिलेपूजिबैठायकह्योहमसबसुधिपाई । कसनकरहुयहभरतप्राणसमप्रियरघुराई २ प्राणसमानसनेहपदतजिगलानिजानिहृदयधरि । निशिऋषिकीनसुपाससबप्रातनहायप्रणामकरि ३ । १०९ ॥

टी० । प्रणाम करि प्रयागन्हाय सुखपाय दानदीन प्रयागमें पहुंचि प्रथमतौ भरतजी प्रणामकीन्हे पुनः त्रिवेणीजीमें स्नानकीन्हे आनन्दभये पुनः हय हाथी स्वर्ण मणि आदि ब्राह्मणनको दानदीन्हें पुनः भरद्वाज मुनिके आश्रम को गये प्रणाम कीन्हे मुनि भरतको हृदयमें लगायमिले पुनः आसनदै बैठारि षोड़शोपचार पूजा करि महोभाग्यमाने १ मिलि पूजि पुनः बैठारि कह्यो कि हेभरतजी हमसब सुधिपाई सबहालपूर्वही जानिचुके अर्थात् आपनेधर्मते प्रतिकूल कलंकी राज्यमानि माता पिता

को बचन नहींमानेउ तथा अनुचित बिचारि बशिष्ठादिके बचन खण्डन करिडारेउ स्याबासिहै तुम्हारी बुद्धिको अरु दृढभक्तिको हेभरत तुमकोतौ रघुनन्दन प्राणनसम प्रियहैं तौ असकस न करहु अर्थात जो रामानुराग दृढहै ताके बलते क्योंन ऐसे आचरण करौ २ प्राणसमान सनेहपदकैसे प्राणसमप्रिय रघुराई हैं रघुनन्दनके पदकमलनमें दृढसनेह राखेहौ ताते माता के करतबकी ग्लानि भी तजिये जनि हृदयधरि उरमें ग्लानि न राखिये इसभाँति बार्त्ताकरि पुनः निशिरातिको भरद्वाजऋषि भरत को सुपास कीन अर्थात् आसन भोजनपानादि अपूर्वदीन्हे इति सब भाँतिते सुपास कीन्हे रातिभरि बासकीन्हे प्रातःकाल समाज सहित त्रिबेणी में नहाय मुनिके प्रणामकरि भरत आगेचले ३ । १०९ ॥

मू० । राम्नामरिसनाललितध्यानरामसियरूप । श्रवणकथारघु पतिसगुणहृदयचरित्रअनूप १ हृदयचरित्रअनूपपरतपग मगडगडोलैं । शिथिलसनेहगँभीररामसियमुखभरिबो लैं २ मुखभरिबोलैंरामसियपंथअपंथहुनिश्चलित । बर्षत सुरजयजयकहतरामनामरसनाललित ३ । ११० ॥

टी० । कैसे भरतजी चलेजात रामनाम ललित रसना में तथा राम सियरूप ध्यान में ललित कहे सुन्दरता सहित राम नाम यथा ॥ रामायरामभद्राय रामचन्द्रायवेधसे । रघुनाथायनाथाय सीतायाःपतये नमः ॥ इत्यादि माधुरी सहित जो रामनामहै ताको रसना जिह्वाकरिके उच्चारण करते हैं पुनः सब इन्द्री व मनादि की वृत्ति बटोरि एकत्र करि अन्तरमें स्थिर राखना ताको ध्यान कही यथा ॥ योगशास्त्रे ॥ तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम् ॥ तिसध्यानमें जनकनंदनी सहितरघुनंदन को रूपकिहे तथाश्रवण कथावशिष्ठादि पौराणिक हरिकथा कहतजाते हैं ताको कानदिये सुनतजात पुनः रघुपति सगुण अनूपचरित हृदयमेंधरे अर्थात् कृपादया करुणाशील उदारता सौलभ्यतादि उत्तम गुणनसहित जो श्रीरघुनाथजी के अनूप उपमा रहित चरित यथादया करि ऋषि मखरक्षण अहल्या तारण करुणाकरि धनुभंग कृपाकरि निषादको बड़ाई देना इत्यादि जिनकी उपमायोग्य अन्यके चरितनहीं हैं ऐसे अनूपचरित गुणनसहित अंतरमें चिंतवनकरतजाते हैं १ प्रभुको अनूप चरित हृदय में चिंतवन करते हैं ताते मगमें पग डगमगडोलैं अर्थात् रास्ते में जात

समय जहां पांव धरते हैं तहां नहीं परता है हालिडोलिके अन्तग परता है कौनकारणते गंभीर सनेहते शिथिल हैं अर्थात् अंतर में रामसनेह बड़ाभारी है ताते सर्वांग ढीलेपरिगये पुनः रामसिय मुखभरि बोलैं प्रेमसहित ऊँची श्वासयुत सीताराम ऐसा नाम मुखभरि उच्चारणकरत जात १ प्रेमभरे श्रीरघुनंदन जनकनंदनी दोऊनाम मुखभरि बोलतजात ताते पंथ जो सुंदर रास्ताहै अपंथ जहां वन नदी नारादि विषम ताते रास्ता नहींहै इत्यादि सुपथ अपथ सर्वत्र निश्चलित प्रेमकी प्रबलताते सीधीराह कहीं नहीं चलिसकैहैं अर्थात् सुपथतौ प्रेमते भूलिजातहैं अरु अपथ में तौ रास्तै नहींचलैं कैसे तहां देवता रास्तावतायदेतेहैं अरु फूल वर्षि जयजय करतेहैं काहेते जो रसनाकरिकैभरतजी ललित रामनाम कहत जातेहैं ताते देवता जयजय करतेहैं २ । ११० ॥

मू० । सुन्दरवनगिरिगणमुदित मृगविहंगकपिभाल । प्रमुदित प्रजासमाजसब राजासुखदसुकाल १ राजासुखदसुकाल सकलतरुफलसुखदायक । सुधासरिससरिवारि कर्मअघऔगुणखायक २ औगुणछलदलदपटदुरिकपटढिरदकेहरिविदित । केवटभरतबताइयोसुंदरवनगिरिगणमुदित ३ । १११ ॥

टी० । गिरि जोपर्वत तथा वनसुन्दरहै तहां कपि जो बानर भाल जो ऋक्ष हरिणादि मृग तथा विहंग सारस हंस चक्रवाक कोकिल मोर चकोर शुक सारिका पारावतादि यावत् पक्षी इत्यादि मृग विहंगादि गण समूह झुंडते सबमुदित आनन्द सहित कैसे बसते हैं यथा सुखद राजा सुकालपायकै प्रजासमाज सब प्रमुदित रहत अर्थात् जब नीति धर्मवंत राजा भया पुत्रवत् प्रजाको पालन करता है ताके प्रभावते सुन्दरि वर्षा अन्नकी पैदावारी वृक्षसफल गौवनके अधिकदुग्ध इत्यादि तौ होतेहैं अरु अवर्षण महँगी रुज चौर अग्नि परचक्र इत्यादि नहींहोतेहैं इत्यादि सुखदायक राजा तथा सुन्दरकाल सुसमय पायकै प्रजालोग परम आनन्द रहतेहैं तैसे वनमें खग मृग आनन्द हैं १ कौनकारण मृग विहंग आनन्द हैं इहां सुखद राजा श्रीरघुनाथजी हैं ताहीते वनमें सुकाल भी है कौन भाँति सकल तरुफल सुखदायक सबभाँतिके वृक्ष फलिरहेहैं तिनकेफल स्वादिष्ट पुष्टकारक समूह हैं तिनको सब इच्छापूर्वक खातेहैं तथा सरि

जो मन्दाकिनीनदी है तामें सुधासरिस बारि अमृत सम जल स्वादिष्ट शीतल पुष्ट पुनः पावन प्रभाववंतकैसाहै कर्म अघ औगुणखायक अघ जो पाप तिनमय हिंसा परहानिआदि यावत् असत्कर्म हैं तथा तमोगुण ते क्रोधादि रजोगुणते तनपोषकतादि जो अवगुण इत्यादिको खायलेत अर्थात् दर्शस्नानपानते अघकर्म औगुणनाशह्वैजात सुंदर सतोगुणी स्वभाव ते सत्कर्म करनेमें मनलागत २ कैसे अघकर्म अवगुणको खायकहैं यथा छल कपटादि यावत् अवगुणनके दलसमूह सोई द्विरद हाथिन के झुंडहैं तिनपर मंदाकिनी कैसी हैं विदित केहरिदपट प्रसिद्ध सिंहसम दपटत भक्ष जाकोपावत ताको खायजात नातरु सबदेखतही भागिजातेहैं इत्यादि प्रभाव सहित सुन्दरबन गिरिपर्वत गणादि तिनको मुदित आनन्द मनते केवटने भरतसों बुझायो समुझायकह्यो ३ । १११ ॥

मू० । नाथबिटपबटतरुतरेकीनछावनीराम । सियाबनाईबेदिका
निजकरललितललाम १ निजकरललितललामरामशुभ
आश्रमनीको । मुनिगणकहतपुराणसुनतदिनकरकुलटी
को२ दिनकरकुलमंडनमहीदुखखंडनकहिजयहरे । रामसि
यालक्ष्मणलखोनाथबिटपतरुबटतरे ३ । ११२ ॥

टी० । रघुनन्दनकोवासस्थान केवटभरतकोदेखावत हेनाथ पाकरिजामुन तमाल रसाल विटप देखिये तिन चारिहुके बीच में बटतरु बरगदकोवृक्ष है ताकेतरे राम छावनीकीन रघुनाथजी पर्णशालाछाय बासकीन्हे ताके आगे सीय निजकर जानकीजी आपने हाथन ललित ललाम वेदिका बनाई सुंदरि विचित्र भूषित चौतरिया बनाई १ आपनेही हाथ सुंदरि विचित्र वेदिका बनाई ताते राम आश्रम शुभनीको अर्थात् किशोरीजी के हाथबनाहै ताहीते रघुनाथजीको वासको आश्रम शुभमंगलकारी देखतमें नीक है तहां बैठि मुनिगण अत्रिआदि समूह मुनिबैठे पुराणन की कथा कहत ताको दिनकर कुलटीको सुनत दिनकर सूर्य्य तिनके कुलमें टीका अर्थात् श्रेष्ठ जो रघुनाथजी ते बैठिसुनते हैं २ दिनकर कुलमण्डन सूर्य्य वंश के भूषण पुनः महि दुखखण्डन भूमिभरेके दुःखनाश करनहारे ऐसे हरे हरि श्रीरघुनाथजी की जयहोय ऐसाकहि पुनः निषाद कहत हे नाथ इन विटपन के मध्य बटतरुतरे रघुनन्दन जनकनन्दनी लक्ष्मण को लखौ अर्थात् तीनिहु स्वरूप बैठेहैं देखो ३ । ११२ ॥

मू० । जायभरतपाँयनपरेत्राहित्राहिभगवन्त।अशरणशरणप्रता
पजगआदिमध्यनहिंअन्त १ आदिमध्यनहिंअन्तप्रणतज
नरक्षकस्वामी । शीलस्वभावबिचारिशरणपदरजअनुगा
मी २ अनुगामीशिशुऔगुणी धायआनिप्रभुपदधरे ।
त्राहित्राहिरक्षकप्रभोजायभरतपाँयनपरे ३ । ११३ ॥

टी० । भरतजाय रघुनाथजी के पाँयनपरे दण्डप्रणाम करतसंते बोले हे भगवन्त त्राहित्राहि भाव कैकेयी कृत पापन ते सभीत हौं मेरी रक्षा करौ कैसे भगवन्त ऐश्वर्य्यवन्त हौ अशरणको शरण में राखनेवाले ऐसा प्रताप जगमें बिदितहै अरु आदि मध्य अन्तनहीं है अर्थात् जाको शरण राखनेवाला कोऊ नहीं है ऐसे अशरण को आपु शरण में राखि अभय करतेहौ ऐसा आपुका प्रताप तौ जग में सबै जानते हैं भाव वेद शास्त्र पुराणगावत पुनः आदिमें क्या करिआयो अथवा कबते हौ पुनः मध्यमें क्या करतेहौ वा कैसेहौ तथा अन्तमें क्याकरौगे वा कबतक रहौगे इत्यादि कोई नहीं जानताहै १ आदि मध्य अन्ततौ आपुको नहींहै परंतु हे स्वामी प्रणतजनरक्षकहौ अर्थात् जो भयातुर नम्रतापूर्वक शरण आवत त्यहिजनकी रक्षा करतेहौ पुनः नीच ऊंच जो कोऊ सन्मुख आवत ताही को आदर बड़ाईदेतेहौ इतिआपुको शीलमयस्वभावजानिकै शरणपाल वि चारिअनुगामी आपुको अनुचर जोमैं सो आपुके पदरज की शरणहौं भाव यथा पदरज लागेते अहल्याकोकलंक नाशभया तथा पदरजप्रगावते मेरा भी कलंक दूरि कीजिये २ अनुगामी अर्थात् आपुके पीछे फिरनेवाला सेवक ताहूपर शिशुबालक सो औगुणी अर्थात् यावत् उपद्रवभया ताको कारण मैहींहौं इति अवगुणको मूल ताते औगुणीहौं ताते धाय धायकै प्रभुपद धरे भाव जोबराबरी को भायहोय वा पद पवादामें बराबरिहोइ सो बाधा करै ताको उचितहै यथा देवासुर सदा परस्पर विरोध करते हैं अरु जो सेवक अथवा बालक स्वामीको बाधकहोई सो अवगुणी कहावता है सोई अवगुण मिटावनेहेतु आपुके पदकमलगह्यो ताते हेप्रभो त्राहित्राहि रक्षाकीजिये ऐसा कहतसन्ते भरत जाय प्रभुके पाँयनपरे ३ । ११३ ॥

मू० । भरतप्रेमरघुबरशिथिलउठेशरीरबिसारि । धनुपतीरपटारि
रमुकुटजटादयेछिटकारि १ जटामुकुटछिटकारिनयनउमँगे

जलधारा । दुहुँकरलियोउठायमगननहिंदेहसँभारा २ देहसँभारविचारतजिभायलायउरमेंबिकल । देखिदशासुरगणत्रसितभरतप्रेमरघुबरशिथिल ३ । ११४ ॥

टी० । भरत प्रेम रघुबर शिथिल भरतको प्रणाम करतेदेखि अन्तरते जो प्रेमउमँगा त्यहिकरिकै रघुनाथजीको सर्वांग ढीलापरिगया ताते शरीर की सुधि बिसारिउठे कौनभाँति धनुप कहाँगिरा बाणकहाँ गिरे ओढ़नेको पट बल्कलादि कहाँगिरा शीशमें बँधेमुकुट ते छूटि जटा छिटकारिदिये १ मुकुटके जटा छिटकारि दिये पुनः दोऊ नयनन ते आँशू जल की धारा उमँगी बहिचली इत्यादि प्रभुको देहकी सँभारतौ नहीं है परन्तु दुहुँकर लियोउठाय प्रभु दोऊहाथन गहि भरतको उठाय लिये २ देहकी सँभार को बिचार तजि कौन अंग कैसाहै क्या करना चाहिये इतिविचार त्यागि बिकल भाई को उरमेंलायलिये अर्थात् ग्लानि अरु बियोग दुःखते व्याकुल भाई भरतको देखि प्रभु शीघ्रही उरमें लगाय बियोग ताप बुझाय ग्लानि पै सावधानता दिये तासमय भरत के प्रेमते रघुबर शिथिल यह दशादेखि सुरगण त्रसित लौटि जानेकी भयमानि डरे ३ । ११४ ॥

मू० । छोड़िनभावतशिथिलद्वउभायप्रेमपरिपूरि । मनबुधिचितहितलायकैकरिकुतर्कसबदूरि १ करिकुतर्कसबदूरिरामपुनिकेवटभेटे । लषणभरतपुनिमिलेशत्रुहनउरदुखमेटे २ मेटिदुसहउरदाहदुखभरतशीशपदधरेद्वउ । सकलसभामुनिगनमगनछोड़िनभावतमगनद्वउ ३ । ११५ ॥

टी० । भरत तथा रघुनंदन तेदोऊभाय प्रेमकरिपरिपूर्ण भरेहैंताते शिथिलसर्वांगढीले परिगये मिलनसमय छोड़ना नहीं भावत पुनः ऐसे हित पूर्वक मनबुद्धि चितलायकैमिले जातेसबतर्क दूरिकरिदिये अर्थात् भरत केमनोरथ अनुकूल सनेहसहित रघुनाथजी मिलिजो कुतर्कणारहै तिन कोमिटायदीन्हे अंतरमें संतोषकराये १ भरतकीसब कुतर्कणा दूरिकरि पुनः रघुनाथजी प्रणामकरतदेखि केवटको भेटे निषादको उरमें लगाय मिले पुनः लपणको प्रणामकरतेदेखि उरमेंलगाय भरतमिले तथा रघुनंदन लषण दोऊजनेमिलि शत्रुहनको वियोगदुःखमेटे २ जबप्रभुके दोऊ पदनमें भरत शीशधरे तबै प्रभु भरतकी दुसह उरकीदाह दुख मेटिदिये

दुसहजो सहिनजाय ऐसीजो उरमें वियोगते जरनिरहै पुनः विमुखताको जो दुःखरहै सोसव प्रणामकरतही प्रभु मिटायदिये ताते आनंदयुत प्रेम परिपूर्णभये अरु रघुनंदनतौदेखतही प्रेमानंदवशभये इतिदोऊभाइ प्रेम में मगन बूड़ेरहैं ताते मिलतमें छोड़िवो नहीं भावतरहा सोदशा देखि सकल मुनिगण प्रेममें मगनभये ३। ११५ ॥

मू० । केवटगुरुआगमनकहिरामउठेसवसंग । धरेजायमुनिपद कमलभेंटेमुनिधरिअंग १ भेंटेमुनिधरिअंगचलेआश्रमहि लिवाई।मातनभेंटेआयमनहुशिशुधेनुतुराई २ धेनुतुराई गतिमिलीसियसासुनकेचरणगहि । रोदनकरतविलापक रिकेवटगुरुनृपमरणकहि ३। ११६ ॥

टी० । भरत शत्रुहन केवटये तीनिहीजने प्रथम आश्रमको आयेरहैं ते सब मिलिचुके नवकेवट गुरुआगमनकहि अर्थात् केवटने कहा हे महाराज वशिष्ठ सवमाता पुरजन सबै आयें हैं सो सुनि रघुनाथजीउठे तिनकेसंग सबैउठे आगेजाय मुनिपदकमलधरे प्रणामकीन्हे तब मुनि अंगधरि भेंटे उरमेंलगाय मिले १ अंगधरि मुनिकोभेंटि आश्रमको लवायलेचले पुनः रघुनंदन आय कौशल्यादि मातनको भेंटे प्रणामकरिमिले कौनभांति म-नहु तुराई धेनुको शिशु यथा शीघ्रकी वियाई गायको बछवा मिलत ऐसे हर्षते मिले २ तुराई धेनुगति पुत्रनको मिली तथा सीयआय सासुन के चरणगहि जानकीजीआय कौशल्यादि सासुनके यथायोग्य पद वंदनकरि आशीर्बादपाये जव सब मिलिकै वैठे तब केवट अरु गुरु वशिष्ठ नृप दश रथ महाराजके मरनेको हाल कहिदीन्हे ताते राम जानकी लपण तथा रानिन सहित सब समाज विलाप करि उच्चस्वर गुण वर्णनपूर्वक रोदन करत ३ । ११६ ॥

मू० । भयेशुद्धमुनिवचनकहिभरतरामसवभाय । सवसमाजक रुणाहरषमातुसचिवऋषिराय १ मातुसचिवऋषिरायभ रतविनतीउठिकीन्ही । श्रीरघुवरसर्वज्ञसकलगतिमतिरति चीन्ही २ मतिगतिचीन्हिसनेहसवअवश्यकरियस्वइआ जुलहि । चलियअवधनृपताकरियभयेशुद्धमुनिवचन कहि ३।११७॥

टी०। मुनि बशिष्ठ समयअनुकूल वचनकहि महाराज के मृतक कर्म व्यापारमें लगाये सो बिधिवत् करि पुनः भरतादि सबभाय सहित रघुनाथजी शुद्धभये तासमय कौशल्यादिमातु सुमंतादि सचिव इत्यादिसब समाजके मनमें करुणासहित हर्षहै अर्थात् महाराजकोमरण रघुनंदनको बनवास इसकारण करुणा अर्थात् दुःखहै पुनः रघुनंदनके समीप प्राप्त हैं ताते हर्षहै १ पुनः माता सचिव ऋषिराज इत्यादि सबको सम्मतलैकै समाजमें उठिकै भरतजी रघुनंदनसों बिनतीकीन्ही हेरघुबर आपु सर्वज्ञ हौ ताते सकल जननके मतिकी जो गति बुद्धिकी अनुकूलता तथा रति जैसी आपुमें प्रीति है इत्यादिको चीन्हते हौ भाव सबकी बुद्धि आपुकी प्रीतिते परिपूर्ण है २ सबके मतिकी गतिमें सनेहचीन्हि अर्थात् जो सब की बुद्धिमें आपुको सनेह परिपूर्णहोइ तौ सबकोजो मनोरथहै सोई आजु लहि ग्रहण करि अवश्य वही कार्य्य करिये क्या ग्रहण करि कार्य्य कीजिये अवध चलिय नृपताकरिय अयोध्याजी को लौटि चलिये तहाँराज्याभिषेक ग्रहणकरिये पुनः महाराज पदको जो व्यापार है सो कीजिये इत्यादि बचन शुद्ध भये परमुनि बशिष्ठ भी कहे भावजो भरत कहैं सो कीजिये ३ । ११७॥

मू०। आयसुनृपबनकोदयोसोईधरिशिरआज । तुमकोपितुपुरकोदयो पूरणराजसमाज १ पूरणराजसमाजहमहुँतुमआयसुकीजे । पालियपितुकोबैनजन्मअभिमतफललीजे २ अभिमतफलतिनजगलह्योपितुआयसुजिनशिरलयो । बचननखंडितसोकरौआयसुनृपबनकोदयो ३ । ११८॥

टी०। भरतप्रति रघुनाथजी कहत नृप बनको आयसु दयो दशरथ महाराज मोहिं बनबास करने की आज्ञादियाहै सोईआजु शिरधरि करना चाहिये भावपिताकी आज्ञामानि बनेमें रहना चाहिये पुरको जानाअनुचित है यथामोको बनकी आज्ञादिये हे भरतजी तथा पितु पुरको राज समाज पूर्ण तुमको दिये अर्थात् अवधपुरकी राज्यसमग्र पिताने तुमको दिया १ यथा हमकोबनबास तथा तुमकोपुरकोपूर्ण राजसमाजदिया ताते हमहूँ तुमहूंदोऊजने पिताकोआयसुपालनकीजै काहेतेदोऊजनपितुकोबैन बचनपालिये जन्म अभिमतफललीजै मनुष्यजन्मधरेको जोउत्तममनोरथ फल अर्थात् लोकमें सुयश परलोकमें शुभगति सुखपूर्वकजीवन इतिला-

भखीजै २ काहेते लाभखीजे यहीलोक विदित वेदको सिद्धांत है कि जिन पितुआयसु शिरलयो तिनहीं जन जग में अभिमत फललह्यो अर्थात्जिन जनन पिताकी आज्ञा शीशपरधरि अंगीकारकीन्हे तिनहींजनन लोक परलोकमें मनभावत लाभपाये ऐसाविचारि जो नृपदशरथ महाराज मोको वनबासको आयसु दियो सो बचन खंडितनकरौ पिताको वचन भंगकरि पुरको लौटने को न कहौ ३ । ११८ ॥

मू० । जोश्रुतिकहतसुसत्यहैभरतकहतकरजोरि । पितुआयसु शिरराखियेपरमधर्मशतकोरि १ परमधर्मशतकोरितदपि पितुतियवशहोई । सन्निपातअतिवातवारुणीसेवतसोई २ सेवतसोईरोगवशवचनकुयोगअपत्यहै । समुझिनाथकी जैउचितजोश्रुतिकहैसोसत्यहै ३ । ११९ ॥

टी० । स्वामी के बचनते प्रतिकूल उत्तर सेवकको अनुचित है तिस क्षमाहेतु हाथजोरिकै भरत कहत हे नाथ जो श्रुतिकहै सो सत्यहै जोवेदते प्रमाण होय सोई सत्यधर्म है ताते शतकोरि परम धर्म पितु आयसु शिर राखिये सौ करोरि उत्तम धर्म्मसम पिताकी आज्ञाहै ताको शीशपरधरि अंगीकार कीजिये १ पितुआज्ञा सौ करोरि परम धर्म्म सम यद्यपि है तदपि जो पिता स्त्रीके वशहोइ भाव अपनी इच्छाते नहीं कहत न वेदधर्म बिचारत उचित अनुचित जो स्त्री वतावत सोई पिता कहै अथवापिताके सन्निपात भयाहोय अथवा अतिवात अर्थात् उन्माद भयाहोय अथवा सोई पितावारुणी सेवतहोइ अर्थात् मदिरापान करताहोइ २ सोईवारुणीसेवतहोइअथवाकिसीरोगके वशहोइ इत्यादि कारणते जो वचनतेकुयोग अपत्यहै वैबचन कुयोगते उत्पन्न होतेहैं ऐसे वचनजो पितौकहै तिनको यथार्थ न मानिये बिचारकरि प्रमाण करना चाहिये ताते हेनाथ पिताके बचननमें समुझि विचारकरि जो उचितहोइ सोकीजिये भावस्त्रीकेवश ह्वैजो वचनते प्रामाणिकनहींहैं तिनको न अंगीकारकरौ अरुजो सावधानी में तुमको राज्यदेने को कहे सो प्रमाणकरौ इति विचारि उचित कीजिये अरुजो श्रुतिकहै सोतौ सत्यहै तामें विचारतौ करनाचाहिये ३ । ११९ ॥

मू० । प्रभुरुखलखिमनप्रणकियोगयेगंगकेतीर । जलउठायसंकल्पकरिजोनचलैंरघुबीर १ जोनचलैंरघुबीरदेहतृणसम

तजिडारौं। तनमनअर्पितदेखिगंगातियवेषसुधारौ २ वेष सुधारीएकमुखढिगउपदेशसुधारियो। सुनुबिबेकरामानुजे प्रभुरुखलखिप्रणमनकियो ३। १२०॥

टी०। प्रभुको रुखलखि गंगतीरगये मन प्रणाकियो रघुनंदन प्रभुको रुखदेखि लिये किअयोध्याजी को न जायँगे ताते भरत मंदाकिनी गंगाके तीरजाय मनमें प्रणकिये कौनभाँति जल उठाय हाथमें लै संकल्प करि कहे कि जो रघुबीर न चलैं १ जो रघुनाथजी अयोध्याजी को न लौटिचलैं तौ देहतृणसम तजिडारौं तिनुकाकी समान देहत्यागिदेउँ इतिसंकल्प करि प्रणकिये सोतनमनअर्पित देखि अर्थात् प्रभुकेबिनालौटे ताकेहेतुमनकरिकै तनकोअर्पणकियेहैं भावतनत्यागकिया चाहतेहैं इति भरतजीको प्रणदेखि गंग तियवेष सुधारौ मंदाकिनीगंगास्त्रीरूपते मूर्त्तिमान् प्रकटभईं २ वेषसुधारी एकमुखगंगाजीस्त्रीको वेषकारिपुनःभरतकोमुखआपनामुख एक कीन्हे अर्थात् सन्मुख बैठि ढिगउपदेश सुधारौं भरत के निकट बैठि उपदेश करने लगी क्या गंगा कहत हे रामानुजे रघुनंदन के छोटे भाई जोतुमने प्रभुको रुखलखि मनमें प्रणकियाहै ताको विवेक सुनिये अर्थात् बिना बिचार प्रणकीन्हेउ ताते बिचार सुनिये सोकीजै ३। १२०॥

मू०। सत्यसच्चिदानंदहरिरामसकलसुरईश। ताहिनसुतभ्राता गनौसर्वोपरिजगदीश १ सर्वोपरिजगदीशशंभुबिधिहरिकारणकर। पदपतालशिरगगनलोककरउरगिरिसरवर २ गिरिसरवरधरअंगसबभरणहरणथितिपूरिभरि। हठनकरौआयसुधरौब्रह्मसच्चिदानंदहरि ३। १२१॥

टी०। रामसकल सुरईश सत्चित् आनंद रूपहरिहैं भरतसों मंदाकिनी कहत कि रघुनाथजी सबदेवन के स्वामी कैसे ईश्वर हैं सत्यत्रयकाल में एक रस चित् सदा एकरस ज्ञान अखण्ड आनंदरूपहरि हैं ताहिसुत भ्रातानगनौ हे पुत्रभरत तिनरघुनंदन को आपनै भाईकरिकै न गनौकाहेते जगत् के ईश सब संसारभरे के पालनहारहैं १ सर्वोपरिजगदीश सर्वईशनके परे जगत्के पालनहार पुनः शंभु विधिहरि कारणकर ब्रह्माबिष्णु शिवकारण जो आदि प्रकृति इत्यादि सबके उत्पन्न करनहारे हैं पुनः ब्रह्मांडसब जिनको विराट् रूपहै कौनभाँति पाताल जिनके पदहै गगन

आकाश जिनको शिरहै लोककर लोकपाल जिनके करहाथ हैं तथा गिरि जो पर्वत सरवर जोसागरश्रेष्ठ२ गिरिसागरं धरजो पृथ्वी इत्यादि तवअंग जानिये पुनः भरण जो लोकनको पालन हरण जो प्रलयथितिजो उत्पत्ति इत्यादि करनेवालेते भूतमात्रमें सर्वत्र भरिपूरिरहेहैं इति ब्रह्मसच्चिदानंद हरिजानि रघुनंदनको आयसु शिरधरौ जोकहैंसोकरौ हठनकरौ३।१२१॥

मू०। जनपालनखलगणदहनचलेविपिनसुरकाज । महीदेवश्रु
तिद्विजबिकलमुनिपालनतपसाज १ मुनिपालनतपसाज
जातदशकंठहिमारैं । करिप्रमाणनिजकर्मअवधपुरतिलक
सुधारैं २ तिलकराजलीलाकरहिंमहीमोदसुखनिर्बहन। उ
ठहुरामआयसुकरौसुरपालनखलगणदहन ३ । १२२ ॥

टी०। आपने जननको पालनहार तथा खलगण दुष्टसमूहनको दहन जरायदेनहारे श्रीरघुनाथजी सुरकाज विपिनचले देवनको कार्य करने हेतु बनकोचले काहेते बनैचले मही पृथ्वी पापते गरुवातीहै देवनके लोक छूटेपरेहैं श्रुति वेद धर्म लुप्तभया ताते विकलहैं तथा मुनि यज्ञादि सत्कर्म नहीं करने पावत इत्यादिकनको पालन हेतु तपसाज तापसी वेषतेजाते हैं १ मुनिनको पालनहेतु तपसाजतें दशकंठहि मारनजात सवंश रावण को नाश करने हित जात सोई निजकर्म प्रमाणकरि जोकछु कियाचाहते हैं सो आपने कर्म सांचेकरि पुनः लौटिआय अवधपुर में तिलक सुधारैं राज्याभिषेक अंगीकार करिहैं २ तिलक सुधारि पुनः राजलीला करहिं राजनीति धर्म सहित उत्तम चरित कराहिंगे कौन हेतु महीमोद सुख निर्ब-हन पृथ्वीभरेमें आनन्द सुख सहित जीवनके निर्वाह हेतु ताते हे भरत उठहु जनपालन खलगण भस्मकर्त्ता जो रघुनाथजी तिनको आयसु करौ आज्ञामानौ ३ । १२२ ॥

मू०। शुभआननसुनिकैभरत मगनभयेसुखवंद । भईअटाटिअ
शीशदेश्रवणसुधाशुभछंद १ श्रवणसुधाशुभछंदभरतआ
नंदसिधाये । श्रीरघुवरपदकमलप्रेमधरिशीशनवाये २
शीशनायबिनतीकरी देहुपादुकाशिरधरत । करतअटन
तीरथबिपिन शुभआननसुनिसिखभरत ३ । १२३ ॥

टी०। शुभआनन गंगाजीको मंगलकारी जोमुख त्यहि करिकै उत्तम

वचन सुनिकै भरतचंद सुखमें मगन गुप्त आनन्दमें बूडिगये अर्थात् माधुर्य में ऐश्वर्य बिचारि अंतर में प्रेमानंद भरिगया तब मंदाकिनी भरत को श्रवण सुधा शुभछंद अशीशदै अदृष्टिभई सुनत में अमृत सम श्रवण रोचक पुनः शुभछन्द मंगलमय आशयहै जामें यथा ॥ अभिप्रायश्छन्द आशयः इत्यमरः ॥ अर्थात् सुनतमें काननको अमृतसमप्रिय तथा अभिप्राय लोक मंगलकारी ऐसेबचनकहि आशीर्बाददै गंगाजी अन्तर्द्धानभईं १ हे पुत्र रघुनन्दनकी आज्ञापालो इतिसुनतको श्रवणनको सुधासम तथा रावणको मारि भूभार उतारि सुरसाधु मुनिनको पालन करि वेदकोधर्म थापैंगे इति शुभछन्द मंगलकारी अभिप्राय सो बचनसुनि आनन्द सहित भरत सिधाय उठिचले आय श्रीरघुनाथजी के पदकमल प्रेमधरि प्रेम सहित पाँयपकरि पुनः शीशनाये प्रणामकीन्हे २ प्रभुपद कमलनमें शीश नाय पुनः भरत बिनतीकरी हे नाथ प्राण अवलम्ब हेतु पादुका खराऊं देहु तिनको पाय शीशधरत प्रभुकेदीन्हे पादुका भरत शिरपर धरिलीन्हे इति शुभआनन लिख मंगलकारी गंगाजीके मुखते सिखावनसुनि भरत संतोषकरि बिपिन तीरथ अटनकरत चित्रकूट बनमें यावत् तीर्थरहे तिन को देखत फिरतेहैं कहूं स्नान कहूं आचमन कहूं दर्शन करतेहैं ३।१२३॥

मू० । मगनसमाजसमेतसोचित्रकूटबनदेखि।सुखदरामबरबदन लखिजीवनसफलबिशेखि १ जीवनसफलविशेषिभरतश्री रामबुलाये । बिदाहेतुगुरुबचनकहेसबकहँसमुझाये २ स बप्रबोधभेंटोमिलेचलेसमाजसगेहसों।अवधिआशपुरबास करिमगनसमाजसनेहसों ३ । १२४ ॥

टी० । सो भरतजी समाजसमेत मगन प्रेमप्रबाहमें बूडे चित्रकूटको बन समग्र देखि पुनः रामबदन सुखदलखि रघुनाथजीको मुखचंद नयन चकोरनको सुखदेनहारा ताको देखिकै जीवन सफल विशेषि जीवन जन्मको विशेषि सफलमानते १ भरतसहित पुरजनतौ श्रीरघुनाथजको मुख देखतसंते आपना जीवन बिशेषि सफलमानतेहैं भाव प्रभुको छांडि पुरको जाना नहीं भावता है इत्यादि बिचारि श्रीरघुनाथजी भरतको निकट को बुलाये पुनः बिदाहोने हेतु गुरु बशिष्ठसों बचनकहे भाव अब समाजसहित अयोध्याजीको जाइये तथा भरतादि सबपुरबासिन कहसमुझाये धैर्य्यकराये २ प्रभुके बचनसुनि सब प्रबोधकरि मिले भेंटे पुनः

ससमाज गेहकोचले समाजसहित भरत अयोध्याजीको चले घरकोआये रामसनेहसों सब समाज मगन सनेहमें बूडे अवधि जो चौदहवर्ष तादि रघुनाथजी आवहिंगे यहि आशते पुरमें वासकरि दिन वितावते हैं प्रति दिन सनेह बढ़तहै ३ । १२४ ॥

मू० । रामभरतकेप्रेमकोकोकविवरणतपार । नेमक्रियादृढ़धर्मव्रतकर्म्मपरमआचार १ कर्मपरमआचारवरणिसहसानन हारे । मतिजड़वरणहिंकाहमशकनभअंतविचारे २ मशक अंतकिमिपावइगगनउड़ैकरिनेमको । तुलसिदासशठक्यों कहैरामभरतकेप्रेमको ३ । १२५ ॥

टी० । श्रीरघुनंदन तथा भरतजीको प्रेम अपार समुद्रसमहै तहां को ऐसासमर्थ कवि है जो वर्णनकरतसंते पारपावहि काहेते जो दृढ़ नेम लिहे जो क्रिया पुष्ट नियमसहित जो सत्क्रिया करतेहैं तथा परमधर्मको जो व्रतधारण कर्म है अर्थात् अहिंसा सत्य पावनतादि पुष्ट नेमसहित जप तप पूजा पाठादि करतेहैं इति दृढ़ नियम क्रियाहै तथा परमधर्म जो रघुनंदन में सेवक सेव्यभाव तामें अनन्यता व्रतमें जो कर्महैं यथा श्रवण कीर्तन स्मरण सेवन अर्चन वंदन दास्यता सख्य आत्मनिवेदनादि इत्यादि यावत् आचरण लोगनमें हैं १ भरतादि पुरवासिनमें परम धर्म कर्मादि यावत् आचारहैं तिनको वर्णनकरतमें सहसानन हजारमुख हैं जाके ऐसे जो शेषजी तेऊहारिगये अंतनपाये ताको जड़मतिमूढ़ विषयी जीव कहा बरणिसकै काहेते विचारे मसाको कहौं नभ आकाशको अंत मिलिसक्ताहै २ नेमको करिकै भाव मैं अंतलैलेहौं इति दृढ़धरि जोमसा गगन आकाशको उड़ै तौ किमि अंतपाइसकै किसीभांति गति नहीं है तथा रघुनंदन अरु भरतजी के प्रेमको तुलसीदास शठ क्यों कहै अर्थात् विषयी प्राकृतजीवमें ऐसीगति कहांहै जो कहिसकै ३ । १२५ ॥

मू० । बसेअवधपुरलोगसबभरतबसेपुरत्यागि । नंदिग्रामखनिअवनिथलव्रतमुनिनिशिदिनजागि १ निशिदिनमुनिव्रत साधिपादुकानृपकरिसेवै । राजकाजशुभसाजकरतपूजतद्विजदेवै २ देवमनावतअवधिहित रामसमागमहेतयक्य ।

तुलसिदासमुनिव्रतधरे बसेअवधपुरलोगसब ३ । १२६ ॥

इतिश्रीतुलसीदासकृतेकुण्डलियारामायणेअयोध्याकाण्डं समाप्तम् २ ॥

टी० । कौशल्यादि माता गुरु सचिव पुरवासी इत्यादि सबत्तौलोग अवधपुरमें बसे आपने घरनमें वासकीन्हे अरु भरत कलंकी राज्य बिचारि अवधपुर त्यागि बिलगबसे कौनठौर नंदिग्राममें अवनिथल खनि भूमिमें साढ़ेतीनि हाथगहिरगुफाखोदि तामेंबसे मुनिन कैसोव्रतकरि निशदिन जागि अर्थात् जटा बल्कल बसन फल भोजन ब्रह्मचर्य सहित रातिउदिन जागते हैं १ कुशासनपर बैठे मुनिन कैसो ब्रतसाधे रातिउदिन जागते हैं पादुका नृपकरि सेवै प्रभुके खराउनको सिंहासनपर धरे तिनहींको राजा मानि सेवन पूजनकरते हैं अरु राजकाज को यावत् व्यापार है सो शुभ साज जामें प्रजनको कल्याणहोइ ऐसे विधानते करतेहैं पुनः द्विजब्राह्मण तथा देवनको भी पूजतेहैं २ पूजनकरि देवनसों अवधिहित मनावत कि राम समागमकबहोई भाव देवनसों माँगत कि कुशल पूर्वक कबरघुनाथ जी मिलिहैं इसभाँति गोसाईंजीकहत कि अवधपुरमें सबलोग मुनिनकैसो ब्रतधारण किहे बसेहैं ३ । १२६ ॥ कुंडलिया ॥ परमातमपरब्रह्मजो सुखसमुद्रपरधाम । सर्वोपरिपररूपत्यहिकहिनसकतयशनाम ॥ कहिनसकतयशनामनेतिश्रुतिशास्त्रपुरानै । पदबंदतबिधिशंभुध्यानयोगजिनआनै ॥ आनभांतिजोअगमसुगमकरिभावप्रेमकर । बैजनाथसोप्रकटछटाकिछबिफटिकशिलापर १ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियबल्लभपदशरणागतबैजनाथबिरचितेकुंडलिकारामायणप्रदीपिकाटीकायांअयोध्याकांडसमाप्तम् २ ॥

अथारण्यकाण्डप्रारंभः ॥

कुण्डलिया ॥

मू० । फटिकशिलासुंदरसुखद बैठेसियरघुवीर । सुमनलषणआनहिंसुभग सुरभितसुमुखसमीर १ सुरभितसुमुखसमीर रामसियभूषणसाजे । अंगअंगप्रतिरुचिरकामरतिलखिछबिलाजे २ लखिलाजेरतिकामतनइंद्रसुवनभरमेंदुखद । परब्रह्मश्रीरामसिय फटिकशिलासुंदरसुखद ३ । १ ॥

टी० । दो० ॥ उरधरि श्रीरघुवीरपद गुरुपदरज शिरधार । तिलकरचौं आरण्य को निजमतिकी अनुसार १ सुंदरसुखद जोफटिक शिलाहै तापर सिय रघुवीर बैठे कामद गिरिते अग्न्येयदिशि मीलभरेपर मंदाकिनी की धाराके बीचमें धवलरंग पत्थरको जो फटिक शिलाहै सो सुंदर अर्थात् समथर चिक्कन श्वेत चमकदार इतिसर्वांग सुठौरबना पुनः सुखदायकअर्थात् समीपही धवल जलभरा चारिहु दिशि ललितवृक्ष लतापल्लवितफूले फले वितानसे तने झूमिरहेहैं तिनपर अनेकभाँतिकेपक्षी भाँति भाँति बोलिरहेहैं तहाँमृगझुंड घूमते हैं शीतलमंद सुगंध पवन बहिरही है इत्यादि सुखद है तापर जनकनंदनी सहित रघुनंदन बैठेहैं तिनकी आज्ञाते लषण समीर सुमुख सुरभित सुमन आनहिं जिनके सुमुख सन्मुख ते समीर जो पवनसो सुरभित सुगंधित आयरही है ऐसे सुगंधित सुमन जो फूल रंगरंगके लक्ष्मणजी लै लै आवते हैं १ जिनके सुमुख सन्मुख ते समीर सुरभित पवन सुगंधित आवतीहै ऐसे बहुरंग फूलनके भूषण बनाय रघुनंदन जनकनंदनी परस्पर साजे बनाय पहिराये अर्थात् वटपत्रको आधारदै ताके किनारन में कलीसीकै मध्यमें विविधरंगफूलनसों विचित्र बेलिबूटा बनाय तापर अभ्रक पत्रसी दीन्हे इसीभाँति अर्द्धचंद्र किरीट टीका बंदी कर्णफूल पदिकहार बाजू केयूर कंकण पहुँची आरसी रसना जेहरिपगपान हंसकादि रघुनाथ जी बनाय जानकीजीको पहिराये तथा त्रिखंड किरीट कुंडल पदिकहार कंठा केयूर पहुँची मुद्रिका काँची

नूपुरादि जानकीजी वनाय रघुनन्दनको पहिराये तथा सफेद सिंगरफ हरतार जंगालादि सो तिलक मकरपत्र पत्रभंग कपोल पत्रादि श्रृंगार कीन्हें इत्यादि नखते शिखपर्यन्त अंग अंगप्रति रुचिर सुन्दर शोभा दैरहे हैं जिनकी छवि लखि देखिकै काम रति लजात आपनी शोभा तुच्छ मानत २ लखिसाजे रति कामतन अर्थात् श्रीराम जानकी नहीं हैं काम रति हैं ते नवीन रीतिते आपने तनको साजे हैं इत्यादि इंद्रसुवन भरमे-उइंद्रको पुत्र जो जयंत ताके इसभाँति को भ्रमभयो ताते दुखददुखदेन-हारा शत्रुवत् बनिगयो जासमय परब्रह्म श्रीराम जानकी सुन्दर सुखद फटिक शिलापर बैठे हैं तबै जयंत दुखदभया सो आगे कहते हैं ३ । १ ॥

मू० । समुझिमनुजअवगुणकरयो हत्योचोंचतनकाग । रुधिर देखिशरसुमनकोकीन्हक्रोधकरित्याग १ कीनक्रोधकरित्यागलोकलोकनभ्रमिआयो।मतिगतिविह्वलाविकलमोहमाया भरमायो २ मोहअंधनारदलख्यो पायसीखपायँनपरयो। आहित्राहिरक्षाकरोसमुझिमनुजअवगुणकरयो ३ । २ ॥

टी० । मनुज समुझि रघुनन्दनको मनुष्य विचारि जयंतने अवगुण अनीति करयो क्या अवगुण करयो काकतन चोंचहत्यो कौवाको तनधरि जानकीजीके पांयमें चोंचमारयो तेहि जनित रुधिरदेखि क्रोधकरि सुमन को शरत्यागकीन जानकीजीके पांयते रक्त बहतदेखि प्रभु जानिलिये कि जयंत हमासबल देखने हेतु दुर्भाव कियाहै यह विचारि क्रोधकरि सुमन शर फूलनको बाण तापर छांडे मानसमें सींकबाण लिखाहै सोभी गाँडर को फूल है अभिप्राय यह कि कोमल बाणत्यागे १ जब प्रभु क्रोधकरि त्याग कियोसो बड़ेवेगतेधांवाताकी भयतेभागइंद्रपुर,कैलास, सत्यलोक इत्यादि लोकलोकनभ्रमिआयो कहीं बचारा न देखा न ताते भयतेमतिविकलबुद्धि व्याकुलह्वैगई पुनः श्रमते गतिविह्वल अर्थात् अत्यन्तथकिजानेतेभागनेकी गतिन रही कौन कारणते मोहमाया भरमायो प्रभुकीअविद्या मायाने मोह केवशकरि भरमावत फिरयो अर्थात् अज्ञानते ईश्वरमें मनुष्यभाव मानि विरोधकिया इसकारण विकलह्वै भागनापरा २ मोहवशते अंध विचार नेत्रहीन नारद लख्यो जयंत को देख्यो तिन पुकारि कह्यो कि अनंत कहीं न बांचिहै ताते रघुनंदनकी शरणजा इत्यादि नारदते सिखावन पाय आय प्रभुके पांयनपरयो कौन प्रकार जयंत बोल्यो हे रघुनाथजी

आपु को प्रभाव मैं नहीं जानता रहौं मनुज समुझि अवगुण कर्यो मनुष्यजानि दुर्भाव कीन्हेउ आपुकी शरणहौं त्राहि त्राहि रक्षाकरो अर्थात् आपु दयासिंधुहौ मेरे प्राण वचावो ३ । २ ॥

मू० । एकआंखिकरिप्रभुतज्यो कर्मकीनबड़घोर । कृपानिधानस मानकोप्रणतपालबरजोर १ प्रलतपालबरजोरचरितसुर नरमुनिगावैं । चित्रकूटबससुखदजानिसबआश्रमआवैं २ आश्रमविदितविचारिकै विपिनसाजसबतनसज्यो । अत्रिजहाँआश्रमगयेचित्रकूटथलप्रभुतज्यो ३ । ३ ॥

टी० । यद्यपि जयंतने वड़ाघोर कर्मकीन भाव भागवतापराध क्षमा करिबे योग्यनहीं है वाकोवध करनैउचितरहै परंतु एकआंखिकरि प्रभुतज्यो अर्थात् प्रभुको वाण अमोघहै वृथानहीं जाइ सकत इसहेतु एकनेत्र हीन करि त्यागिदिये ताते कृपानिधान रघुनंदनकी समानवरजोर प्रणतपाल कोहै जो भूतमात्र रक्षा करिवेको आपहीको समर्थ मानना सोई कृपा है यथा ॥ भगवद्गुणदर्पणे ॥ रक्षणेसर्वभूतानामहमेवपरोविभुः । इतिसाम र्थ्यसंधानंकृपासापारमेश्वरी ॥ इतिकृपाभरे निधानस्थान जो रघुनाथजी तिनकी समान प्रणतपाल शरणागतको पालनेवाला वरजोर श्रेष्ठ वली दूसरा कौनहै एक रघुनाथैजी हैं १ कैसे वरजोर प्रणतपालहैं जिनको प्रणतपालताबरजोरीकोचरित सुर देवता नर मनुष्य मुनि व्यास वाल्मी- क्यादिगावतेहैं चित्रकूट सुखदजानि वस सुखदायक स्थानजानि चित्रकूट में रघुनंदन वासकीन्हेरहैं परन्तु निकटजानि यावत्संवंधी सनेहीरहैंते सबै प्रभुकेआश्रमको सदैआवैं यह वाधाविचारे २ आश्रम विदित विचारिकै भाव मेरा वास सब जानतेहैं ताते अधिक भीरहोई यह विचारि फूलादि भूषण त्यागिकै विपिनवनकी साज वल्कलादि सब तनमें सब मुनिवेष साजे तब चित्रकूट थल स्थान प्रभु तज्यो उठि आगेको चले जहां अत्रि मुनि वास किहे रहैं त्यहि आश्रम को प्रभुगये ३ । ३ ॥

मू० । ऋषिअनंदभेंटतभये देखिलषणसियराम । आसनबैठारे मुदित पूजेअभिमतकाम १ पूजेअभिमतकामजानकीलि नबुलाई । अनसूयापटदीननित्यनूतनसुखदाई २ सुखदा

यनउपदेशदै पतिव्रतधर्मनिसबदये । आदरअस्तुतिमुनि
करीऋषिअनंदभेंटतभये ३ । ४ ॥

टी० । लषण जानकी सहित रघुनन्दनको प्रणाम करते देखि ऋषि अत्रि आनन्द ह्वै हृदयमें लगाय भेंटतभये पुनः मुदितमन आनंद सहित आसनदै प्रभुको वैठारे अभिमत कामपूजे अर्थात् मनोवांछितफल पूर्ण करिपाये भाव जप योग तप साधन जिसहेतु करतेरहे सोई प्रभुके दर्शन प्रसिद्धपाये १ यथा रघुनाथजी को पाय मुनि अभिमत कामपूजे तथा मुनि पत्नी अनसूया जानकीजीको बुलायलीन निकट बैठारि आदर पूर्वक नितनूतन सुखदाई पटदीन जोसदा नवीनबनेरहैं अरु सबऋतुनमें सुख देनहारे ऐसे दिव्य पट पहिरनेको दीन २ प्रथम सुखदेनहारे अनकेउत्तम उपदेशदीन्हे पुनः पतिव्रत उत्तम मध्यम नीच अधमादि जो धर्म है तिन सबको बिधिवत् बिस्तार सहित उपदेशदये इत्यादि ऋषि आनंद सहित भेंटि पुनः मुनि आदरकरि पूजनादिकरि प्रभुकी स्तुतिकीन्हे व अत्रिमुनि आदर स्तुतिकीन्हे अन्यऋषि आनंदते भेंटतभये ३ । ४ ॥

मू० । बिदाअत्रिसोंप्रभुभयेसियालषणरघुराय । चलेविपिनआ
गेसुखदमहामुदितमनपाय १ महामुदितमनपायसकलमु
निभयेसुखारी। निर्भयजपतपकराहिंयोगमखहोमबिचारी२
होमविचारिसँभारिहरिआशिषआदरसोंदयो । मंगलमय
काननभयोबिदाअत्रिसोंप्रभुभयो ३ । ५॥

टी० । अत्रिमुनिसों प्रभु विदाभये पुनः जानकी लक्ष्मणसहित रघुनाथजी बिपिन बनमें आगेचले तिनहिं सुखदपाय सब मुदितमनभये अर्थात् सुखदेनहारे रघुनंदनको पाय बनवासी मुनि मनते महा आनंद भये १रघुनंदनकोपाय कैसे महामुदितमनभये मुनिजनसुखारीभयेराक्षसनकी भयमिटिगई तातेनिर्भयह्वै मंत्र जप तपस्या अष्टांगयोग मख जोग यज्ञ साधारणहोम इत्यादि विचार पूर्वक करतेहैं २ विचार पूर्वक होमादि करते हैं पुनः हरिसँभारि आदर सों आशिषदये अर्थात् ईश्वररूपविचारि आदर सहित पूजनादि करतेहैं माधुर्यरूप देखि आशीर्वाद देतेहैं इत्यादि जब अत्रिमुनिते विदा ह्वै प्रभु आगे चले तब कानन बन मंगलमय भयो ३ । ५ ॥

मू० । बधिविराधमगसुखभये देखिजायसरभंग । परिपूर्णछविलखिरामक्षनिप्रेमप्रफुल्लितअंग १ प्रेमप्रफुल्लितअंगजोरिकरविनयबड़ाई । करिनिहोररचिचिताअग्निचढ़िदीनलगाई २ दीनअग्नितनअर्पिके रामलषणसियउरलये । गयोधामश्रीरामलखिबधिविराधमगसुखभये ३ । ६ ॥

टी० । विराधवधि मगसुखभये मग रास्तेमें विराधनामे राक्षस मिला ताको मारि बन बासिनको अभय कीन्हे ताते सब मुनिनको सुखभयो पुनः जाय सरभंग ऋषिकोदेखे ते सरभंग रामकी परिपूर्ण छवि लखिअंग प्रफुल्लित भये रघुनंदनको सर्वांग सुंदर स्वरूपदेखि मुनि के प्रेमउमगा ताते देह में रोमांच कंठारोधन नेत्र सजलह्वैआये १ प्रेमते सर्वांग प्रफुल्लित पुनः कर दोऊ हाथजोरि प्रभुकी विनय बड़ाई स्तुति प्रशंसादि कीन्हे पुनः निहोरकरि अर्थात् जबतक तनत्यागि आपुकोमिलों तबतक कृपाकरि इहांरहौ इतिकहि पुनः चितारचि तापरचढ़ि अग्निलगायदीन्हे भस्म ह्वैगये २ दीन अग्नितनअर्पिके आगीमें देह जरायदीन्हे देह अग्नि कोदैकै पुनः दिव्यरूपते राम लषण सिय उरलये लषण जानकी सहित रघुनंदनको ध्यान उरमें धरे हरिधामको गये इत्यादि विराधको मारे पर मगमें श्रीरघुनाथजीको देखि सबके मनमें सुखभयो ३ । ६ ॥

मू० । मिलेसुतीक्षणधायकैपुलकनयनजलधार । ज्यहिविधिशिवयोगीशमुनिध्यावतहृदिआगार १ हृदिमंदिरध्यावतसदाआयेतेबनआजुहैं । देखौंनयनसनेहभारमूरतिसुखरघुराजहैं २ अंतर्य्यामीधारिमनमूरतिनेहलगायकै । रामजगाये प्रेमपरिमिलेसुतीक्षणधायकै ३ । ७ ॥

टी० । प्रभुको आगमनसुनि प्रेमते तनपुलकि नेत्रनसों आंसुजलकी धारबहत इसी दशाते सुतीक्षण मुनिधायकै मिले क्या विचार करिधाये ज्यहि प्रभु को विधि जो ब्रह्मा शिव तथा योगेश्वर मुनि इत्यादि हृदि आगार ध्यावत हृदयरूप मंदिर में ज्यहि स्वामी को रूप सदा धारण किहेसेवनमें लगे रहतेहैं १ ब्रह्मा शिवादि जिनको सदा हृदयरूप मंदिर में ध्यावते हैं ते प्रभु आजु बनको आयेहैं तिनको सनेह भरिनयनन देखों क्योंकि रघुराज सुखमूरतिहैं अर्थात् आनंदमूर्त्ति रघुनाथजीको प्रीति पूर्वक

आजु नेत्रन भरि देखिहौं इत्यादि अभिलाप करत चल्यो शुद्ध हृदय में ध्यान थिर ह्वै गयो २ कैसे ध्यान थिरभयो अंतर्यामीमूर्तिमें सनेहलगाय कै मनमें धरिलियो अर्थात् जीवके अंतर जो प्रभुको अंतर्यामी रूप बसा है ताहीमें दृढ़ सनेह लगाइ सोई रूपमनमें धरि आनंदमें मगन ह्वैगयो इति ध्यानमें थिर देहकी सुधि बिसारि राहमें बैठिगयो जब रघुनाथजी जायकै जगायो तब प्रभुको देखि उठि प्रेमते परिपूर्ण सुतीक्षण धायकै रघुनाथजीको मिल्यो ३ । ७ ॥

मू० । संगगयोमगमेंचल्यो जातलखतप्रभुरूप । ऋषिअगस्ति आश्रमगये हर्षिसकलसुरभूप १ हर्षिदेखिसुरभूपमिले मुनिभागबखान्यो । आसनआदरपूजिवेदप्रतिमतिप्रभु जान्यो २ जानठानिसुखमानिप्रभुमधुरवचनबोल्योभल्यो । शुभअस्थानबताइये संगगयोमगमेंचल्यो ३ । ८ ॥

टी० । आश्रमको आनि पूजन स्तुति करि पुनः सुतीक्षण प्रभुकेसंग गयो अगस्तिके आश्रमको संगचल्यो राहमें प्रभुकोरूप लखत देखत चले जात इसभाँति सकल सुरभूप ब्रह्मा शिवादि सब देवनकेदेव श्रीरघुनाथ जी अगस्तिऋषिके आश्रमको गये १ सुर भूप देखि मुनि मिले भाग बखान्यो देवनकेदेव रघुनाथजीकोदेखिअगस्तिमुनि उठिकै हृदयमें लगाय मिले कुशल पूछि आपनी भाग्यकी प्रशंसाकीन्हे यथा मेरी बड़ी भाग्य उदय भई जो आपुआय दर्शनदीन्हेउ पुनः आसनदै बैठारि आदरते पूजि वेद प्रति मति प्रभु जान्यो वेद प्रतिपादित जो परब्रह्म स्वरूप सोई बुद्धि ते जाने माधुर्यमें नहीं भूले २ जान ठानि प्रभुके ऐश्वर्य रूपको प्रसिद्ध मुनि वर्णनकरनेलगे इत्यादि जो मुनि आपना जानपनाठाने ताकोसुख मानि प्रसन्नह्वै पुनः ऐश्वर्यछपाय माधुर्य भूपितकरिबे हेतु प्रभु मधुरवचन भलो बोले हे मुनि हमको वासकरिबेहेतु शुभमंगलीक अस्थानबताइये इत्यादि चरित देखिबे हेतु सुतीक्षण प्रभुकेसंग मग में चलेगये ३ । ८ ॥

मू० । शुभगोदावरिसरितवरसुंदरबटसुखधाम । पंचवटीआश्रम करियअतिपावनश्रीराम १ अतिपावनश्रीराम हर्षिमुनि राजबताई । शुभथलतरुमगदेखि कुटीमंगलमयछाई २

मंगलमयकल्याणथल रामलषणसियशुभचरित । कहत
ज्ञानवैराग्यजनु शुभगोदावरिवरसरित ३ । ९ ॥

टी० । वासहेतुस्थान मुनिवतावत शुभमंगलरूप गोदावरी सरितनदी वर श्रेष्ठ ताकेतट सुखकोधाम सुंदरवट बरगदकोवृक्षहै अर्थात् गोदावरीतट जो पंचवटी करि विदितहै सो अतिपावन अत्यंत पवित्र भूमिका है तहां हे श्रीराम आश्रम करिये १ अतिपावन थल जब मुनिराज अगस्ति ने बताई सो सुनि श्रीराम हर्षि आनंद ह्वै चलेतहां मगरास्तेमें शुभथल मंगलीक भूमिका अरु वट तरुवृक्ष देखि ताहीठौर मंगलमय कुटी छाइ वासकीन्हे २ काहेते मंगलमय कुटीहै एक तौ थल वह भूमिका कल्याण करनहारी है पुनः राम लषण सिय शुभचरित लषण जानकी सहित रघुनाथजी जो चरित कीन्हे सो भी कल्याण कर्त्ताहैं कैसे तीनिहुजन श्रेष्ठ नदी गोदावरी तट शोभित होत जनु ज्ञान वैराग्य अरु भक्ति मूर्त्तिमान् है ऐसा कवि कहते हैं ३ । ९ ॥

मू० । ज्ञानभक्तिवैराग्यजनुकीविधितियसुतआप । महादेवगि
रिजागणपलीन्हेकरशरचाप १ लीन्हेकरशरचाप मदन
रतिऋतुपतितीनो । परमारथअरुयोग प्रीतिजनुनरतन
कीनो २ नरतनकीनोबीररसशान्तऔरशृंगारभनु । कमठ
शेषसुरधेनुकी ज्ञानभक्तिवैराग्यजनु ३ । १० ॥

टी० । पंचवटीमें प्रभु आसीन तीनिहु रूपनकी कवि अनेक उपमा दै वर्णन करत तहां प्रथम शांतरसमें उपमाकहत श्रीरघुनंदन जनकनंदनी लषणलाल तीनिहूं शुद्धस्वरूप मुनिवेषकिहेदर्श स्पर्श भाषणमात्र जीवन को कल्याणकरनहारे कैसे शोभितहोतेहैं जनु ज्ञान भक्ति वैराग्यहैं अर्थात् यथा ज्ञानहोना दुर्घटहै अरु जामें ज्ञानआवतसो जीवतुरतही मुक्तहोत तथा साकेतबिहारी के दर्शन ब्रह्मादिको दुर्घट तेई प्रसिद्ध दर्शमात्रते जीवको कल्याण करतेहैं ताते रघुनंदनको ज्ञानकी उत्प्रेक्षाकीन्हे पुनः भक्ति ऊंच नीच जीवमात्रको सुलभ उद्धारकरनहारी है तथा किशोरीजी जीवमात्र को सुलभ उद्धारकरनेहेतु सदा दयादृष्टिराखेहैं काहेते किशोरीजीकी प्रार्थनाते प्रभु माधुर्यरूपते सुलभ जीवनको उद्धारकरते फिरते हैं इसहेतु किशोरीजीको भक्तिकी उत्प्रेक्षाकीन्हे पुनः वैराग्य संसारसुख को तुच्छ मानि छुड़ाय परमेश्वरकी सन्मुखकरत तथा लक्ष्मणजी सब सुखत्यागि

शुद्ध रघुनंदनकी सेवा में लगेहैं ताते लक्ष्मणजी को विरागकी उत्प्रेक्षा कीन्हे यह उपमा नहीं मनभाई काहेते ज्ञान भक्ति विरागतौ परलोकही के सहायकहैं लोकके सहायकनहींहैं अरु रघुनंदनतौ लोक परलोक दोऊ के हितकर्त्ता हैं ताते वात्सल्यरस में उपमाकहत कीधौं तिय सुत बिधि आपु स्त्री सरस्वती पुत्र मनु स्वायंभू सहित ब्रह्मा आपहीहैं अर्थात् यथा ब्रह्मा पुत्रवत् सृष्टि उत्पन्नकरतेहैं विधिवत् कर्मनको फलदेतेहैं तथा प्रभु सुर नर नागादि उजरे लोकनको बसावते हैं अरु सज्जननको सुख दुष्टनको दुखदेते हैं इसहेतु प्रभुको ब्रह्माकरि कहे पुनः यथा सरस्वती बुधि विद्या अमलकरि जीवनको वेदशास्त्र सिद्धांत दर्शाय धर्म्म कर्मनकीरीति सिखावत तथा जानकीजी परमसुकुमारी राजकिशोरी ते बनवासहू में अनेकदुःखसहि पतिकी सेवैमें आनंद हैं इति पतिव्रतदर्शाय सबजीवन को धर्ममें बुद्धिलगावती इसहेतु जानकीजीको सरस्वतीकरि कहे पुनः यथा मनुमहाराज बिधिवत् धर्मको पालकरि प्रजनकोभी धर्म में आरूढ़ कीन्हे पुनः अंतमें ऐसा परमधर्मगहे कि ईश्वरको स्वाधीन करिलीन्हे तथा लक्ष्मणजी जन्मतही रामसेवा धर्मको दृढ़ गहि औरनको आरूढ़ कराये अब सबसुखछांडि वनवासमें सेवाकरते हैं इति परमधर्म धारण करि राम जानकीको स्वाधीनकिहेहैं इसहेतु लक्ष्मणजीको मनुकरि कहे यहू उपमा नहीं मनभाई काहेते ब्रह्मा सरस्वती स्वायंभू स्वामिवत् उत्पत्ति उपदेशकर्त्ता हैं मित्रवत् किसी के नहीं हैं अरु रघुनंदन जीवमात्रके सुहृद हैं ताते करुणारसमें उपमाकहत करशर चाप हाथनमें वाण धनुष लीन्हे महादेव अरु गणपति तिनके संग गिरिजाहैं अर्थात् यथा सेवकको दुःख महादेव नहीं सहिसक्ते हैं बेलपत्र अर्क धतूरके फूलै पाय प्रसन्नह्वै वाको निहालकरिदेतेहैं तथा जो आरतजन जो एकवार प्रणामकरि कहै कि मैं शरणहौं ताहूको प्रभु अभयकरिदेते हैं इसहेतु रघुनाथजीको महादेवकरि कहे पुनः यथा गिरिजा ग्रामग्राम लोगनकी रक्षाकरती हैं तथा जानकीजी जीवनकी रक्षाहेतु प्रभुसहित लोकमें बिचरती हैं ताते जानकीजीको गिरिजाकरिकहेपुनः यथा गणेशजी सुमिरणमात्रजीवनके मंगल कर्त्ता हैं तथा लक्ष्मणजीके आचरण सुधिकरतही मंगलहोत ताते लक्ष्मणको गणेशकरि कहे यहौउपमा नहीं मनभाई काहेते शिव अमंगल वेष गिरिजा अर्द्धांग गणेशको पशुवत्मुख अरु ये तीनिहूं रूप अत्यंत स्वरूपवंतहैं १ ताते शृंगाररस में उपमाकहत कि कर शर चापलीन्हे मदन अरु

ऋतुनके पति वसंतऋतु तिनकेसाथ रतिहैं अर्थात् रघुनाथजी कैसे शो-भितहैं यथा श्यामसुंदरस्वरूप धनुषबाणलिहे सबकोमनमोहिवेहेतु मूर्त्ति-मान् कामदेवहै तिनकेसमीप जानकीजी कैसी शोभितहोती हैं हेमवरण सुंदर सुकुमार स्वरूप रति कामकी पत्नीहैं तिनसमीपउत्तमसेवक लक्ष्म-णजी कैसे शोभितहोते हैं सुंदर गौरवरण शुद्ध पावन मन सर्वांग प्रसन्न वसंतऋतुहै इति तीनिहूं संग मूर्त्तिमान सबको मन मोहिलेनेहेतु प्रसिद्ध हैं यहूउपमा नहीं मनभाई काहेते काम रति बसंततौ जीवनको भवसा-गरमें डारनेवालेहैं अरु रघुनंदन तौ तीनिहूं स्वरूप जीवनको उद्धारकर नहारेहैं ताते दासरसमें उपमाकहत कि परमार्थ अरुयोग तथा प्रीति ये तीनों जनु नर मनुष्यकोतन धारणकीन्हे हैं अर्थात् परमार्थ कहीपरलोक साधनतामें चारिभेद प्रथम लोकते विराग दूसर विवेक असार त्यागि सार ग्रहण करना तीसर षट्सम्पत्ति यथा वासना त्यागशम है इन्द्रियनको रो-कनादमहै धर्मानुष्ठान तपहै दुख सुख सम जानना तितीक्षाहै गुरु वेदांतमें विश्वास श्रद्धाहै चित्त एकाग्रता समाधानहै पुनः चौथमेरी मुक्ति निश्चय होवै यह मुमुक्षुताहै यथा तत्त्वबोध प्रकरण वेदांते साधन चतुष्टयंकिम । नित्यानित्यवस्तुविवेकः इहा मुत्रार्थफलभोगविरागःशमदमादिषट्संपत्तिः मुमुक्षुत्वंचेतिसयथा नित्यस्त्वेकं ब्रह्मतद्व्यतिरिक्तं सर्वमनित्यं अयमेवनि त्याऽनित्यवस्तुविवेकः १ विरागःकः इहस्वर्गभोगेषु इच्छाराहित्यं शमद-मादिषट्संपत्तिःकाशमोदमस्तपस्तितिक्षाश्रद्धासमाधानंचेतिशमःकःमनो निग्रहः दमःकःचक्षुरादिवाह्येंद्रियनिग्रहःतपःकिम् स्वधर्म्माऽनुष्ठानमेव तितिक्षाकाशीतोष्णसुखदुःखादिसहिस्नुत्वम् श्रद्धाकीदृशी गुरुवेदान्तवा क्येषु विश्वासःसमाधानंकिम् चित्तैकाग्र्यम् मुमुक्षुत्वंकिम् मोक्षोमेभूयादि तीच्छाएतत्समाधानचतुष्टयवन्तस्तत्त्व विवेकस्याऽधिकारिणोभवंतितत्त्व विवेकःकःआत्मासत्यस्तदन्यत्सर्वंमिथ्येतिइत्यादि परमार्थमें विवेकविरा-गशमदमादियावत् लक्षणहैं ते सबप्रभुमें वर्तमान देखिपरतेहैं ताते रघुनं-दनकैसे शोभितहोतेहैं जनु राजकुमार रूपधरे परमार्थ हैं पुनःयोगमें आठ अंगहैं यथा झूठ न बोलै हिंसा न करै परस्त्री त्याग चोरी न करै विषय त्याग इति यमहै १ पावनता संतोष तपस्या सद्ग्रंथावलोकन ईश्वर में सनेह इति नियमहै २ दाहिन पद वाम जाँघपै वामपद दाहिनी जाँघपर धरि सीधे बैठना वज्रासनहै आगे टिहुनी झुकाय बीचमें एँड़ीपर एँड़ीधरे सीधी देहराखना कमलासनहै इत्यादि चौरासी आसनहैं ३ एक श्वासा

वंदकरि प्रणवोच्चारण सहित श्वास खैंचना दोऊ श्वासा वंदकरि थाँभे रहना जब न थँभै तब दूसरे ते छोडना इति प्राणायामहै ४ इंद्रिय विषय वासना त्यागि चित्त थिर राखना प्रत्याहारहै ५ अंतर्नाभी देशपै चित्त स्थिर राखना धारणाहै ६ नाभि देशमें ईश्वरमें चित्त लगायेरहना ध्यान है ७ ध्यानमें देहकी सुधि भूलिजाना समाधिहै ८ इत्यष्टावंगानि यथा पातंजलेययोगशास्त्रे। यमनियमासनप्राणायाम प्रत्याहारधारणाध्यान स-माधयोष्टावंगानि तत्राहिंसासत्यास्तेय ब्रह्मचर्य्यापरिग्रहायमाः १ शौच संतोपतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानिनियमाः २ तत्रस्थिरसुखमासनम् ३ तस्मिन्सतिश्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः ४ स्वविषयास-म्प्रयोगेचित्तस्यस्वरूपानुकारइवेन्द्रियाणास्प्रत्याहारः ५ देशबन्धश्चित्तस्य धारणा ६ तत्रप्रत्ययैकतानताध्यानम् ७ तदेवार्थमात्रनिर्भासंस्वरूपशून्य मिवसमाधिःइत्यष्टौअंगयोगकरनेकोप्रयोजनयहहैकि विपयविकारवासना-दि त्यागि शुद्ध मन सनेह सहित ईश्वरमें थिर राखना सो लक्ष्मणजीमें यथार्थही देखिपरताहै ताते प्रभुके समीप लक्ष्मणजी कैसे शोभित होते हैं यथा नर तन धारण किहे योगहै पुनः प्रीतिमें भी आठ अंगहैं यथा दो० ॥ प्रणय प्रेमआशक्ति पुनि लगनलाग अनुराग। नेहसहित सवप्रीति के जानव अंग विभाग। मम तव तव मम प्रणय यह सौम्यदृष्टि तिहिहो-इ। प्रीति उमग सो प्रेमहै विह्वल दृष्टी सोइ॥ चित असक्त आसक्ति स्वइ यकटक दृष्टी ताहि। बनीरहै सुधि लगनकी उत्कंठादृगमाँहि॥ जाकेरसमें लीनचित चोप दृष्टिसोइलाग। जासुप्रीतिमें चितरँगो मत्तदृष्टि अनुराग॥ मिलनि हँसनि बोलनि भली ललित दृष्टिसों नेह। प्रीतिहोय सर्वांगउर दृष्टि अधीन सनेह॥ तहाँ प्रणय अरु आसक्ती येदोऊ अहंकारकी विषयहैं प्रेम औ लगन मनकी विपयहैं लाग अरु अनुराग चित्तकी विषयहैं नेह अरु प्रीति बुद्धिकी विषयहैं इत्यादि अहंकार मन चित्त बुद्धि द्वारा सब विपय अनुकूलह्वै ज्यहि रसको अत्यंत भोगी ह्वै सर्वांग परिपूर्ण ह्वैजाय ताको प्रीतिकही यथा भगवद्गुण दर्पणे॥ अत्यंतभोग्यताबुद्धिरानुकूल्यादि शा लिनी। अपरिपूर्णरूपायासास्यात्प्रीतिरनुत्तमा॥ इत्यादि सर्वांगप्रीति जानकी जीमें परिपूर्ण है ताते प्रभुके समीप कैसी शोभित हैं यथा नारी तनधरे प्रीति है इन तीनों रूपनके दर्शमात्र से लोग संसारते विरागवान् ह्वै ईश्वर में प्रीति करि परमार्थ पथपर आरूढ होते हैं २ यहाँ उपमा नहीं मनभाई काहेते तीनिहूं परलोकै के सहायक हैं अरु रघुनंदन

तौ लोक में अनेकन को सहायताकरि दुष्टन को वध करते हैं पुनः सुंदरी स्वरूपवंत शुभगुणनयुत श्यामा पति अनुकूल पत्नी श्रीजानकीजी को संग तथा परमपावन शुद्ध सेवक बंधु लक्ष्मणजी समीप ताते अद्भुतरसमें उपमाकहत कि मानौ वीररस अरु शांतरस तथा शृंगाररस तीनिहूं नरतनु धारणकियेहैं येतीनौरस एकत्रहोना अयोग्यहै ते अनुकूलतासहित एकत्रभये यह आश्चर्यहै ताते अद्भुतरसमें उपमाजानब वीररस यथा स्थायी दो० ॥ सौर्जदानरुदयाबहुरि इनमेंएकतेहोइ । परमितचित्त विकारजो सोउछाहजियजोइ ॥ विभाव यथा ॥ अध्यवसायउछाहकोरुम विस्मैअविषाद । मोहाविनयबलवीरके येविभावअविवाद ॥ अनुभावयथा । धीरजवीरजशूरता अरुउछाहपरभाव । पराक्षेपदानरुविनय इतेवीरअनुभाव ॥ अर्थात् युद्ध दया दान धामादि में हर्षबनारहना सो वीररसहै सो पांचभांति बीरता रघुनाथजीमें परिपूर्ण हैं यथाभगवद्गुणदर्पणे ॥ त्याग वीरोदयावीरो विद्यावीरोविचक्षणः । पराक्रममहावीरो धर्म्मवीरःसदास्वतः ॥ पंचवीराःसमाख्याता रामएवसपंचधा । रघुवीरइतिख्यातिःसर्ववीरोपलक्षणः ॥ ताते रघुनाथजी कैसे शोभितहैं मानौ वीररस नरतनधरेहैं पुनः शांतरस यथा दो० ॥ कीनिर्वेदपरिपोषकै सबदोषनकैनाश । शांतकहावतरसनहैयामेंनाट्यविलाश ॥ दोषकामक्रोधादितहँआपतकविसरदार। वैराग्यादिविभावतहँविषयादोशविचार ॥ पुलकहर्षगद्गदबचनयेअनुभाव बिचार । आनंदाश्रुहिआदिपुनिहैअनुभावअपार॥उदाहरण यथा॥ येकामादिकबटपराडारिदेत्तदृढपासायहिसंसारअसारमेंहरिकीआशमदास॥इत्यादिलक्षण सब लक्ष्मणजीमें हैं तातेलक्ष्मणजीकैसेसोहतमनौ शांतरसनरतनधरेहैं पुनः शृंगाररस यथा॥रसकोजोकारणकहत सोविभावद्वैभाइ।आलंबनइककहतहैं उद्दीपनइकगाइ ॥ लखैजुनायकनायका मनमेंरसउपजाइ । आलंबनकविकहतहैं ग्रंथनकेमतपाइ ॥ पटऋतुरागसोहागअरु चित्त आनिरसभासु । बासवासजलवासपुनि उद्दीपनकहितासु ॥ विनाकहेआकारलखि हियेहेतुदर्शाइ । ताहीकोअनुभावकहि वर्णतहैंकविराइ ॥ स्तंभ कंपरोमांचअरु स्वरभंगस्वेदगनाव । विवरणआसूयाप्रलय आठौंसात्विक भाव॥बजिरूपसबरसनमेंथिरअस्थाईसोइ।जाकोजैरससंचरै सोसंचारीहोइ ॥ बुधिबिलासयुतजहँरहै रतिकोपूरणअंग । ताहिकहतशृंगाररस केवल मदनप्रसंग ॥ इत्यादि श्रीरघुनंदन जनकनंदनीके संयोगते सबअंगते शृंगाररस परिपूर्णहै ताते मानौ शृंगाररस मूर्त्तिमानहै यद्यपि शांतरस वीर

शृंगार दोऊको विरोधीहै एकत्र नहीं ह्वैसक्के हैं तथापि समय कारणपाय एकत्रभी ह्वैजातेहैं यथा दो० ॥ सीयनिकटशृंगारवर मुनिढिगशांतप्रमाण। खलविलोकिभोवीररस हर्षिलियेधनुबाण ॥पुनः॥ पितुआज्ञामुनिवेषकिय प्रियसनेहलियसाथ । सुरमुनिहितधनुबाणलिय बेगिहतनदशमाथ ॥ यहौ उपमा नहीं मनभाई काहेते शृंगारशांत जगत्के रक्षकनहीं क्योंकि आप-नेही आनंदके व्यापारमें रहतेहैं अरु वीर किंचित्सहायकहैं सोऊ तमोगुणी हैं अरु लषण जानकी सहित रघुनंदन जीवमात्रपर कृपादृष्टि राखते हैं ताते कृपा दया उदारतादि गुणनमें उपमाकहत कि रघुनंदन लषणलाल जनकनंदनीहैं किधौं कमठ शेष सुरधेनुहै अर्थात् कमठ जोभगवान् कच्छ-पअवतारहैं ते ऐसें कृपासिंधुहैं कि भूतमात्रको सुचित्तराखनेहेतु पृथ्वीको पीठिपर धरेहैं पुनः जब सिंधुमथत नबना देवता बिकलभये तब मंदरा-चल मथानीको आपनी पीठिपरधरे तथा रघुनंदन जीवमात्रपर कृपाकरि नररूपधरे पुनः देवनकेहेतु मुनिवेषधरि बनबासकिये ताते संदेहकरत कि रघुनंदनहैं किधौं कच्छपजीहैं पुनःशेषजीऐसीदयाधर्मको धारणकिहे जामें भूतमात्रको हितहै कौनभाँति कि नीचेतौ भगवान्की शय्या बनीहै ऊपर सहसफनसों छायाकिहे मुखसों गुण गानकरते हैं इति धर्म दर्शाय और-नौको धर्ममें आरूढ़ करतेहैं पुनः निर्हेतु जीवनको सुखदेने हेतु ऐसीदया धारणकिहे कि एकतौ भूभार थांभे पुनः आचार्यह्वै पातांजलि आदि अनेक ग्रंथ बनाय ताकी द्वारा जीवनको परमार्थ मेंल गावते हैं तथा लक्ष्मणजी प्रभुकी सेवकाई करतेहैं पुनः धनुष्बाण लिहे रक्षामें आरूढ़ रहतेहैं पुनः निषादराजको उत्तम उपदेश दीन्हे जाकोसुनि औरहू परमार्थपर आरूढ़ होते हैं ताते लक्ष्मणजी हैं किधौं शेषजी हैं पुनः कामधेनु कैसी है एकतौ क्षमावंत दूसरे ऐसीउदार कि मनोवांछित फल देती हैं जाके पुत्रै लोकको सब व्यापार करते हैं तथा जानकीजी परम क्षमावंत अरु उदार ऐसीकी सुलभजीव उद्धार हेतु प्रभुको भूमंडलको लाई राहराह जीवनको कल्या-ण करत फिरत पुनः जिनके पुत्र भक्तजन सब संसारको हित करते हैं ताते जानकीजी हैं किधौं सुरधेनु हैं यहौ उपमा नहीं मनभाई काहेते कच्छप जलचर शेष त्रियक् धेनु पशु स्वरूपतामाधुरीरहित अरु राज-कुमार परम रूपवंत माधुरीके भरे हैं ताते तीनिहुं स्वरूप कैसे शोभित होत जनु ज्ञान भक्ति वैराग्य तीनिहूं मनुष्य तनधरे लोकहूपरलोकते जीवको कल्याण करते हैं ३ । १० ॥

मू० । मनमोह्योमुखकहिवचन शूर्पणखालखिराम । मदनबाण उरमेंलगो सुनहुकुँवरघनश्याम १ सुनहुकुँवरघनश्यामसमों हिंदासीअबकीजै । हौंकुमारिछबिधामभगिनिरावणगनि लीजै २ रावणभगिनीजानिकै रमौसंगकरिकैसदन । सुख संपतिसिधिपाइहौ मनमोह्योमुखकहिवचन ३ । ११ ॥

टी० । शूर्पणखा रामलखि मनमोह्यो मुख वचनकह्यो शूर्पणखा राक्षसी रघुनाथजीको सुन्दर स्वरूपदेखि मनते मोहितभई ताते सुन्दर तनधरि मुखते वचन कहतीभई अर्थात् युवतिनके लज्जा अधिक होतीहै ताते जो मोहितभी होती हैं तौ प्रसिद्ध नहीं कहती हैं मनोरथकी चाल देखावती हैं भाव घूमिघूमि कटाक्ष करि देखना हँसना अथवा गूढ़ोत्तरदे उरकोहेतु जनावना इत्यादि युवतिनकी रीतिहै सोतौ नहींकिया कारते यहतौ वृद्धाहै ताते लज्जाहीन है पुनः कुरूपहै ताको कौनपूछै इस हेतु अन्तरमें वलहीन कटाक्षादि कैसेकरै अरु जो सुंदरि युवती वनीहै सोवनी वस्तुको वलनहीं झूठेको कौनवल इसहेतु निर्लज्जह्वै मुखते वचन कहत हे कुँवर घनश्याम सुनहु उरमें मदनवाण लग्यो सजल मेघवत् श्याम सुन्दर हे राजकुमार सुनिये मेरे उरमें कामको वाणलगा भाव आपको देखि मेरे उरमें अत्यन्त कामको वेगउठा है सो सहिनहीं जात इस हेतु मेरे वचन सुनिये अंगीकार कीजिये १ हे घनवत् श्यामकुँवर क्या सुनिये अब मोहिं दासीकीजै आजुते मोको गंधर्वी विवाहितापत्नीकरि जानिये काहेते कुमारिहौं पुनः छबिधाम पुनः रावणकी भगिनी गनिलीजै अर्थात् एकतौ कुमारीहौं अबहीं मेरा विवाह नहीं भया पुनः छविभरी मंदिरहौं मेरारूप सर्वांग शोभाते परिपूर्ण है पुनः राक्षसराज रावणकी बहिनिहौं येभीएक उत्तमगुण गनिलीजै अर्थात् कुमारी स्वरूपवंत उत्तम कुलकी कन्याहौं २ रावणकी वहिनि पावनजानि सदन करिकै घरमें पत्नीकरि स्वाधीन राखिकै मेरी सौंदर्यता विचारि रमौ सुखपूर्वक भोगकरो पुनः सुख संपति सिधिपाइहौ अर्थात् मेरी स्वरूपता अरु अनुकूलताते सुख पाइहौ पुनः मेरी भाग्यते संपति पाइहौ मेरी विद्याते सिधि पाइहौ इति मनते मोहितह्वै शूर्पणखा मुखते प्रार्थना पूर्वक वचन कह्यो ३ । ११ ॥

मू० । सत्यकहीवाणीमृदुलगजगामिनीविचारि । लषणकुमारोवि नतियामेरेसँगयहनारि १ मेरेसँगसुनिनारिलषणकीओर

सिधाई । लक्ष्मणकह्योसक्रोधलाजत्वहिंतनकनआई २ तनमनलाजनतोहिकछु करातिनिलजऔरेहिसकुल । गई रामपहँक्रोधकरिसत्यकहीबाणीमृदुल ३ । १२ ॥

टी० । विधवाहै वृद्ध कुरूपहै सो सुन्दर स्वरूप वनाये सोछल कुमारी वताये सोऊ झूँठहै अरु जो रावणकी बहिनि बताये सोसत्यहै ताहिवचन अनुकूल प्रभु उत्तरदेतगजगामिनीबिचारि मृदुलवाणी सत्यकही गजहाथी कैसो मंदगमन इति हे गजगामिनी तुम विचारिकै जैसा उचितरहै सो समुझिकै मृदुल कोमल वाणीते सत्यबातकह्यो काहेते बिनतिया लपण कुमारेहैं अर्थात् यथा तुम्हारापति मरिगया बिना पतिकी तुम कुमारी हौ तथा इनकीस्त्री घरमेंहै इहां स्त्रीबिना लपण कुमारे हैं तिनकेसंग बिवाह करौ अरु मेरेसंगतौ यह नारि है सो दोनारिनमें भोग में बाधाहोत ताते मोको सपत्नीजानि विनानारिके पाति लक्ष्मणके पासजा १ जब रघुनाथ जीकहे कि हमारे संग यह नारि है सोसुनि शूर्पणखा लक्ष्मणजीकी ओर सिधाई चलीजाइ आपना मनोरथकही सोसुनि सक्रोधसहित वचन लक्ष्मणजी कहे कि तोहिं तनकिउ लाज न आई भाव आपने पतिसों ऐसे साफवचन स्त्री नहीं कहतीहै तू ऐसी निर्लज्जहै कि विना चीन्हेजाने पर पतिनते प्रसिद्धभोग मांगतीहै तौ तेरेसमान मैं निर्लज्ज नहींहौं २ तोहिं तौ तनमनमें कछुलाज न तथा औरेहि निलजसकुलकरति अर्थात् मनमें लाजहोती तौ ऐसीवात न कहिसक्ती तथा जो तनमें लाजहोती तौ संकेतमें कहती तू मेरेसन्मुख रघुनाथजीते कहे उनकेसन्मुख मोसोंकहे ताते तेरे मन तनमें कछुभी लाज नहींहै ताते जैसी निर्लज्ज तूहै तैसेही सकुल आपनेही कुलकेसमान औरहूको करती है भाव आपनीसमान मोको भी निर्लज्ज बनावाचाहतीहै सो मैं तेरेयोग्य नहींहौं अरु रघुनंदन अयोध्याके महाराजहैं उनको सबसामर्थ्यहै चहैजेतेबिवाहकरैं पुनः तोहूं राजा की भगिनी है ताते राजैकेसंग तेरासंयोग चाहिये ताते उनहीं के पासजा मेरे सेवकके संग तेरा कौन प्रयोजनहै तोहूंको सेवकाई करनापरी इत्यादि सहितक्रोध लक्ष्मणजी मृदुल वाणीते सत्यबातकही सो सुनि यथार्थ मानि शूर्पणखा रघुनाथजीके पासको पुनःगई तबजैसे पूर्व कहेरहै तैसेही पुनः रघुनाथजी कहि लक्ष्मणजीके पासपठाये उन पुनः लौटारे ३।१२ ॥

मू० । हास्यसमुझिधावतभईरामवचनचितचाहि । धरेरूपपर्यंक

टविकटसभयासियामनमाहि १ सभयसियामनमाहिरामक हिलषणनिहारे।लक्ष्मणलाघवकाननासिकाकाटिनिवारे २ काटिनिवारेअंगशुभअशुभअमंगलमुखमई । खरदूपणाप हँगयविकलहाससमुझिधावतभई ३।१३ ॥

टी० । रामवचन चितचाहि हाससमुझि अर्थात् जो पूर्वकहे कि यथा तू कुमारीहै तैसेही बिनास्त्री लषण कुमारेहैं इति रघुनाथजीके वचननको अभिप्राय चित्तसों बिचारिलिया कि मेराछल जानिलिये अंगीकारतौकरैं गेनहीं अरु वृथाही दोऊ दौरावतेहैं इत्यादि हाससमुझि सक्रोध जानकी जीकी ओर धावतभई कौनभांति व्यंकट भयानक विकट टेढ़ा अर्थात् विषम भयानकरूप धरे घोर शब्दकरत धाई ताको देखि सीय मनमाहि सभय जानकीजी मनमें डरायउठी १ जब जानकीजी मनते सभयभई तब रामकहि लषण निहारे श्रीरघुनाथजी लक्ष्मणजीकी ओरदेखि श्रुति नासाखंडन संज्ञावचनकहे सोसुनि लक्ष्मणजी लाघव पटेबाजीते शूर्पण-खाके कान नासिकाकाटि निवारे दोऊअंग हनिकरिदिये २ शुभअंग नाक कान ते तौ काटिनिवारे हीनकरिदिये ताते अशुभ अमंगलमई मुखभया कुरूपता सहित विकल खरदूपणपहँगई सबहालकहे सोसुनि आपनोहास्य समुझि निशाचरी सेना प्रभुपर धावतभई ३ । १३ ॥

मू० । करिप्रबोधसेनासजीखरदूषणमनक्रोध । रामबुझायेलषण कोसियगिरिराखियशोध १ सियगिरिराखौशोधिदनुजसे नायहआई । भानुयानछपिगयेधूरिनभमंडलछाई २ छाय धूरिनभमेंरहीदुंदुभिदीरघअतिबजी । सीतहिराखौकंदरा करिप्रबोधसेनासजी३।१४ ॥

टी० । कैसे निशाचरी सेनाधाई शूर्पणखाकी दशादेखि खरदूषण के मनमें क्रोधभयो ताते समुझाय शूर्पणखाको प्रबोधकीन भाव तेरेविरोधि-नको अबहीं पकरे लिहे आवतहौं मनभावत दंड दिहिसु इति कहि पुनः सेना सजे ताकी आसार देखि राम लषणको बुझाये लक्ष्मणजी सों समुझायकै वचन रघुनाथजी कहे हे लक्ष्मण गिरि शोधि सियराखिये गिरि पर्वत ताको शोधिमवास ठौर ढूँढ़ि तहाँ लैकै जाय जानकी सहित रहेउ १ काहेते गिरि शोधि सियको राखौ दनुज सेना यहआई यहदेखि-

ये निशाचरनकी सेना निकट आयपहुँचिगई काहेते बाजी गज रथ पैदरों के पद प्रहारते जो धूरिउड़ी सो नभ आकाश मंडलमें छायरही ताते भानु यान छपि गयो सूर्यनको रथ छपिगयो नहीं देखि परता है २ यथा नभ आकाशमें धूरि छायरही तथा अति दीर्घ दुंदुभी बजी अत्यंत उच्चस्वरते ढंकादि बाजिरहेहैं ताते समुझिपरत कि शूर्पणखाको प्रबोधकरि खरादि सेना सजी है ताते पर्वत कंदरामें जानकीको लैजाउ ३ । १४ ॥

सू० । धरहुधायबोलेवचन लखिछबिदूतपठाय । नारिअग्रकरि मिलहुनृप कहेदूतयहआय १ कहेदूतयहआयरामत्यहि उत्तरदीन्हो । सुनिखरदूषणक्रोधसुभटलैदर्पितकीन्हो २ दर्पितडारहिंअत्रबहु धरिसशूलअसिशक्तिघन । मनहुमे घबर्षतअचलधरहुधायबोलेवचन ३ । १५ ॥

टी० । प्रभुके निकट आयकै खरादि वचन बोले कि हे सुभटौ धाय धरौ दौरिकै पकरिलेउ कब बोले प्रभुकी छवि लखि सर्वांग सुंदरता देखि संधिहित प्रथम दूत पठाय दूत आय रघुनंदनसों यहबात कहे कि नारि अग्र करि नृप मिलहु आपनी स्त्रीको भेट हित आगेकरि नृपराजाखरको मिलहु चलिकै हाजिरहोहु १ नारि अग्रकरि मिलहु यह बात जब दूत आयकहे राम त्यहि उत्तरदीन्हों त्यहि दूतको रघुनाथजी जवाबदीन्हे यथा हम क्षत्रियहैं मृगया करते हैं तुमसे दुष्ट मृगोंको मारने हेतुढूँढ़तेहैं जोबल होइतौ युद्धकरौ नातरु घरकोजाउ विमुख युद्ध हमनहीं मारैंगे इति प्रभु के वचन दूतनते सुनि खरदूषण क्रोधकरि सुभटलै दर्पितकीन्हो प्रचारि वीरनको अभिमानी बनाये २ दर्पित अभिमानभरे सशूल असिशक्तिघन धरि बहुअत्र डारहिंसहित त्रिशूल असि जो तरवारि शक्तिजो साँग इत्यादि घनधर बहुत धारण कीन्हे दर्पित अभिमानभरे बहुअत्र डारहिं बरछी साँग बाणादि बहुत हथियार प्रभुपर चलावते हैं मानहु अचलमेघ जल बर्षत ऐसेसमूह बाणादि चलाय रहेहैं इत्यादि युद्ध सहित खर वचनबोलेउ कि धाय धरहु दौरिपकरि लेहु ३ । १५ ॥

सू० । रामसाजिशारंगशरचलेविशिखजनुव्याल । कटेविकटख लउरचरणभुजमहिगिराहिंकपाल १ भुजमहिगिराहिंकपाल विकलभाजाहिंलखिशायक । खलदलसभयसशोकानिरखि

खरदूषणधायक २ धायक्रोधिशायकतजे रहेपूरिदिशिगग
नधर। सजिपावकशरजारितमरासमसाजिशारंगशर ३।१६॥

टी०। शार्ङ्गधनुपमें शरसाजि वाण जोरि रघुनाथजी छाँड़े ते विशिख वाणजनु व्याल सर्प फुफकारत चले तिनके लागेते विकट खलकटे टुंड दुष्ट बहुत कटिगये उरजो छाती तथा चरण भुजा कपाल जो खोपरी इत्यादिकटि कटि महि पृथ्वीपर गिरतेहैं १ भुज कपालादि महिमें गिरत तथा शायक लखिवाण करालदेखि विकलह्वै भागतेहैं इति सभयसशोक खलदल निरखि खरदूषण धायक सशोक अर्थात् घायलतेतौ दुःखसहित परे कहरत अरुजे वाणनकी करालता देखि कदरायगये तेसभय डरसहित भागेजाते हैं इत्यादि खलनकोदल विचलदेखि खरदूषण प्रभुकी सन्मुख धाये २ धाय क्रोधिशायक तजे दौरि क्रोधभरे प्रभुपर वाणछाँड़े ते धर गगनदिशि पूरिरहे पृथ्वीते आकाशतक सब दिशनमें भरिरहेहैं ताते अंध-कार ह्वैगया तब पावक शरसाजि तमजारि अग्निबाण चढ़ाय मारिदिये ताके ज्वालनते वाणनको अंधकार भस्म करिदिये इत्यादि रघुनाथजी शार्ङ्ग धनुपसें शरबाण साजि युद्ध करते हैं ३। १६ ॥

मू०। खलदलवृंदनिहारिकै प्रभुमनकीनविचार । रामरूपकीनो
कटक सबलरिमरयोअपार १ सबलरिमरयोअपार एकए
कनधरिमारैं । कौतुकलखिसुरमगनरामकोचरितनिहारैं २
चरितनिहारिपुकारिसुरवर्षिप्रसूनसुधारिकै । जयजयजय
महिभारहर खलदलमरननिहारिकै ३।१७॥

टी०। खलनको वृंद समूह दल निहारिकै प्रभु मनमें विचारकीन भाव दुष्ट बहुत अकेले युद्धकरते देरलागैगी ताते युक्तिकरिशीघ्रही माराचाहिये इति विचारि कटक रामरूपकीनो सेनामें यावत् सुभटहैं तिनको रघुनाथजी आपनासारूपबनायदीन्हेताते अपारअनगंत सेनासब आपुसैमें लरिमरयो १ अपार सेना सब कैसे लरिमरयो एक एकनधरिमारैं रामरूप आपुस में देखि एकएकको मारिदेतेहैं इसीभांति परस्पर युद्धकरतेहैं प्रभु अलगखड़े हैं इत्यादि कौतुक तमाशादेखि सुरमगन देवता प्रेममें बूड़ेहैं अरु रघुनाथ जीको चरित निहारै आनंदसहित देखतेहैं २ प्रभुको चरित निहारि जय जयकारपुकारि सुर इंद्रादि सुधारि सुमनवर्षि शुद्धमनकिहे प्रभुपरफूलव-र्षतेहैं कैसे पुकारतेहैं खलनके दलको मरन निहारिकै भाव कैसी युक्तिते

दुष्टनको नाशकरिदीन्हे इत्यादि देखिकै कहत महिभारहर पृथ्वीको भार हरणहारे प्रभुकी जयहोय जयहोय जयहोय ३ । १७ ॥

मू० । खरदूषणत्रिशिरापरेशूर्पणखालखिनैन । रोवतरावणकी सभाकहिकहिआरतवैन १ कहिकहिआरतवैन देशकी सुरतिबिसारी । शिरअरिडेराकस्योखबरिनहिंतोहिंसुरारी २ खबरिनतोहिंनिहारुम्वहिंअंगसकलशोणितभरे । जुरेजाय भ्रातासमरखरदूषणत्रिशिरापरे ३ । १८ ॥

टी० । खरदूषण त्रिशिरादि जूझिकै भूमिपरे तिनको शूर्पणखा नयन लखि आंखिन देखि निराश ह्वै लंकाको गई आरत वैन दुख भरे वचन कहि कहि रावण की सभामें रोवतहै १ कैसे आरतवैन कहि कहि रोवत है देशकी सुरति मुलुककी खबरगीरी बिसारिदिहे काहेते हेसुरारि देवनके शत्रुरावण तोहितौ खबरि नहीं अरु तेरे शिरपर अरिशत्रु आय डेराकीन्हे है २ आपने शत्रुकी तोहिं खबरि नहीं अरु शोणित रक्तभरे सकल अंग मोहिं निहारु अर्थात् अवधेश दशरथके पुत्र रामलक्ष्मण स्त्री समेतपंचवटीमें हैं ते तुम्हारी भगिनी जानि उपहासहेतु मेरी नाककान काटिलिये तापर क्रोधकरि भ्रातातुम्हारे भाई खरादि जाय राजकुमारन सों सन्मुख समर में जुरे युद्धकीन्हे ते खरदूषण त्रिशिरादि सबजूझे परेहैं भाव जिनको राम ऐसा नामहै तिन अकेले सबको मारिडारे इति शत्रुहैं ३ । १८ ॥

मू० । ताहिसंगबरभामिनीरतिरंभाछबिछीन । रमाभारतीशिवतियालागहिंसकलमलीन १ लागहिंसकलमलीनकोटिशशिसमद्युतिशोभा । खगमृगपशुजड़जीवबाहिलखिबिकलनकोभा २ विकलनारिनरमुनिमगनतजतयोगजपयामिनी । दामिनिवरणतद्युतिकहां ताहिसंगवरभामिनी ३ । १९ ॥

टी० । ताहिसंग वरभामिनी तिनराजकुमारके संगमें एकऐसीउत्तमस्त्री है जानेरतिकामकीस्त्री तथा रंभाअप्सरा इत्यादिकी छविजाने छीनिलिया है भाववाकी शोभा देखे रतिरंभामें नेकहू शोभानहीं देखातीहै तथा रमा जो लक्ष्मी भारती जो सरस्वती शिवतिया जो पार्वती इत्यादि सकल जाके आगे मलीन लागहिं भाववाकी प्रकाशमान शोभाको देखे रमा

भारती पार्वती धूमिली देखातीहैं १ काहेतेरमादि सकल मलीनन्नागती हैं कि वा युवतीमें जो शोभाहै सो कोटि शशिसमद्युति कोटिन चंद्रमासम प्रकाशमानहै पुनः चैतन्य के देखनेको कौनकहै खगजो मोर चकोर कोकिल कीर शारिका कपोतादि यावत् पक्षी तथामृग हरिणादि यावत् पशुहैं इत्यादि जड़जीव वाहि लखि वा युवतीको देखि विकल न कोभाको नहीं प्रेमसों विह्वल ह्वैजाताहै २ तथावाको देखि नारिनर सबप्रेमते विकल होतेहैं पुनः औरनकी कहांतक कहौं जाकोदेखि मुनि मगन प्रेममें डूबि जातेहैं ताते योग जप तजत भूलिजातेहैं यामिनी रातिभरि वाहीके चितवनमें बैठे रहते हैं ताते ताहि राज कुमार के संग जोबर भामिनी उत्तम युवतीहै ताको वरणत समता शोभा कहत दामिनीमें कहाँ द्युतिहै बिजुली में कहाँऐसी प्रकाशहै जो वाकीउपमादीजिये ३ । १९ ॥

मू० । अवनिअसुरखंडितकरैंप्रवलशत्रुबरिबंड । देखतबाल ककालसमअतिविशालभुजदंड १ अतिविशालभुजदंड मदनजनुवेषसँवारे । मुनिमनभयेअनंदविपिनविचरतभयडारे २ भयडारेमुनिजयकरहिंखलदलदलिसुरदुखहरें । भूपकुमारअपारछविअवनिअसुरखंडितकरैं ३ । २० ॥

टी० । पुनः शूर्पणखा रावण प्रति कहत कि वैराजकुमार तुम्हारे कैसे शत्रु हैं प्रबल प्रकर्ष करिकै वलीहैं पुनः बरिबंड तेजवंतहैं भाव ऐसे बली तेजवंतहैं कि अकेले अवनि असुर खंडितकरैं पृथ्वीभरेके दैत्य राक्षसादिकनको नाशकरिसक्तेहैं काहेते देखतको तौ बालक अवहीं थोरिही उमिरि है परन्तु कालकी समान अजित अरु विशाल वडेलम्बे पुष्ट जिनके भुज दंडहै १ कैसे अत्यंत विशाल भुजदंडहैं मदन जनु वेपसँवारे अर्थात् मानों कामदेव राजकुमार रूपधरि मुनि कैसो वेप बनायेहैं जिनकी सहायताको बलपाय मुनि अभय भये काहेते भयडारे राक्ससौको डरत्यागे आनंद सहित विपिन बिचरत बनमें घूमते हैं २ कैसे भयडारे जयकरहिं यह कहते हैं कि ये राजकुमार खल दल दलि सुर दुखहरें दुष्टराक्षसादिकी सेना सहित सबको मारिकै देवतनको दुखहरिलेइँगे इत्यादिकहि मुनि उनकी जयजयकार करतेहैं ऐसे भूपकुमारमें अपार छविहै जाको वखान करि कोऊ पार नहीं पाइसक्ताहै ऐसे सुंदर स्वरूपवंत अरु तेजवंत बली ऐसे हैं कि अवनि भूमिभरेके असुरनकोखंडित नाश करि सक्तेहैं ३ । २० ॥

मू० । करिप्रबोधरथचढ़िचल्योरावणमनअनुमानि । जहँमारी
चस्थानशुभमंत्रतंत्रमनठानि १ मंत्रतंत्रमनठानिगयोउठि
आदरकीन्हो । मारीचहुमनलख्योकछुस्वारथमनदीन्हो२
स्वारथघातविचारिजिमिअंकुशधनुअहिछलछल्यो । नवै
बिलारिबिचारिछलकरिप्रबोधरथचढ़िचल्यो ३ । २१ ॥

टी० । शूर्पणखाको समुझाय प्रबोधकरि पुनः रावण मनते अनुमानि
लिया राजकुमार नहींहैं परब्रह्महैं ताते हठि बैर करि मुक्तिलेउँ इति
विचारि रथ चढ़ि चल्यो जहाँ शुभस्थानमें मारीच मंत्र तंत्र मनठानि मन
लगाय मंत्र जप तंत्रनकी विधि सिद्ध करतारहा १ यद्यपि मंत्र तंत्र विधि
में मन लगाये बैठारहा परंतु जब रावण गयो ताकोदेखि मारीच उठि
आदर कीन्हो अर्थात् वंदनकरि स्वागत पूँछि आसनदै बैठारि पूजनादि
कीन्हेसि पुनः नम्रता सहित चेष्टादेखि मारीचहु मनलख्यो मनतेपरखि
लीन्हेसि कि रावण कछु स्वार्थमें मन दीन्हेहै तौतौ दुष्ट है नम्रताधारण
किहेहै २ कौनभाँति रावण स्वारथ रत नम्रहै जिमि स्वार्थघात विचारि
कै अंकुश धनुष अहि जो सर्प बिलारि छल हेतुनवै पुनः छल्यो अर्थात्
सुजन गुण पाय नवत वृक्ष सफलह्वै नवत पुनः दुष्ट जब किसीको घात
कीन चाहत तब नवत कौनभाँति यथा अंकुश नयकै हाथीको मान तूरि
देत तथा धनुष जब नवत तबै बाण प्रहारहोत सर्प जब नवत तबै काटत
बिलारि जब नवत तबै चोटकरत इत्यादि छलराखि नवतेहैं पुनः दूसरे
को छल्यो गाफिल करि घातकीन्हेउ तैसेही कछु घात विचारि छल राखे
कार्य साधनेको प्रबोधकरि रावण रथपर चढ़ि मेरेढिग चल्यो है ३ । २१ ॥

मू० । तातहेतुस्वारथकरौकथासमस्तसुनाय । हरहुँबामनृपतन
यकीबैरसकलबुझिजाय १ बैरसकलबुझिजायहोउमृग
कपटबनाई । भगिनीलखिदुखमोहिकरहुबनमोरिसहाई २
मोरिसहायबिचारिकै निजकुलमंगलमनधरौ । बातजात
घातकभयो तातहेतुस्वारथकरौ ३ । २२ ।

टी० । समस्त कथा सुनाय भाव दशरथपुत्र पंचवटीमेंहैं ते शूर्पणखा
को कुरूप किया पुनः सेन सहित खरदूषणको मारे इत्यादि सबकथा मा-
रीचते सुनाय पुनः रावण कहत हे मामा मारीच तातहेतु स्वारथ करौ

भाव मैं तुम्हारा बालकहौं ताके स्वारथ हेतु कछु परिश्रम करौं कौनहेतु परिश्रमकरौं जिस उपायते नृपतनयकी वाम हरहुँ जामें सकल वैर बुझिजाय अर्थात् मेरी बहिनिको कुरूपकिये भाइनको वधकिये यहवैर मेरे उरमें अग्निसम जरिरहाहै ताहेतु जो राजकुमारकी स्त्री मैं हरि लावौं तौ वैर बुझिजाय १ कौन भांति सकलवैर बुझिजाय हे मारीच कपट ते विचित्र देहबनाय तुम मृगहोहु उनकेलगे है निसरो जब वै तुम्हारे पाछे धावैं तब मैं उनकी स्त्रीहरिलेउँ इसभांति वनचिपे मेरी सहाय करहु काहेते भागिनी लखि बहिनि को कुरूपदेखि मोको बडादुखहै ताको मिटाइवे हेत अवश्य सहायकरौ २ बलबुद्धि सँभारिकै मोरि सहायकरौ काहेते मनमें निजकुलको मंगलधरौ अर्थात् मेरिहीवात रहेते तुम्हारे राक्षसकुल भरेमें मंगलानंद होयगो अरु जो ऐसानभया तौ एकतौ मेरीवात जातिहै दूसरे घातकभयो शत्रु सबल परिजाइँगे तौ राक्षसकुलभरेको घातकरेंगे सबको मारेंगे ऐसा बिचारि बालकके स्वारथ हेतु यहकार्य अवश्यकरौ ३।२२॥

मू० । सुनुसुतताहिननरगनौ मैंजानतबलताहि । बिनफरशरस्व हिंमारियो गयोंसमुदनिरवाहि १ गयोंसमुदनिरवाहिमारि ताड़कासुबाहो । भंज्योशिवकोदंड जनककन्यकाविवाहो २ जनकसमाजनृपालबहुमानमर्दिभृगुपतिहनो । ताहिवि रोधनकुशलहैसुनुसुतताहिननरगनौ ३ । २३ ॥

टी० । मारीच बोल्यो हेसुत ताहि त्याहि राजकुमारको बलमें जानत हौं सो मेरी बातको विश्वासकरौ ताहि नर न गनौ अर्थात् दशरथ नन्दन को मनुष्यनमें न गनौ कैसाबल उनमें है बिन फरशर स्वहिंमारियो बि- श्वामित्रकी यज्ञ रक्षासमयबिना गांसीकोबाण मेरेमारे ताकी वेगते समुद्र निरवाहिगयों उहांको उड़ा समुद्रकेपार आय गिरयों १ एकबाणकी वेगते मैंतो समुद्रके पार ह्वैरहयों अरु उहां ताडका तथा सुबाहोको मारिडारे अभयह्वै मुनियज्ञकीन्हे पुनः धनुषयज्ञ सुनि जनकपुरको गये तहां शिवको दंडभंज्यो अर्थात् जो त्रिलोकी वीरनते तिलभरि न उठा ऐसाग्रहकठोर जो शिवजीको पिनाक धनुष ताको तृणवत् तोरिडारे तब जनक कन्यको विवाहो जानकी आदि चारिहु कन्यनको चारिहुभाय बिवाहकीन्हे २ कैसे विवाहे जनकजीकी समाजमें नृपाल बहुराजा महाराज बहुत यहुरे रहे तिनको मानमर्दि सबको अभिमान नाशकरि पुनः भृगुपति हनो परशु-

रामको तेज बल नाश करिदिये ताहि तिनसों विरोधकिहे कुशल नहीं है भाव मारिडारै ते बचिहौं न ताते हे पुत्र ताहि राजकुमारको नर मनुष्य न गनो ईश्वर हैं ३ । २३ ॥

मू० । ज्ञानसिखावतमोहिंकहँमैंसुरनरबशकीन । उत्तरदेहिनउठिचलैडरडरातपुरतीन १ डरडरातपुरतीनसमुझिमनदेखिबिचारी । यहिमारेथलनरकरामकरसुरपदभारी२ सुरपदभारीपायहौंचल्योनायशिररामतहँ । रावणआतुरचढ़िचल्यो ज्ञानसिखावतमोहिंकहँ ३ । २४ ॥

टी० । रावणबोला कि तूमोको क्या ज्ञान सिखावताहै मैं अपने तेज बलते सुरनर देव मनुष्यादि सबको आपने बशमें करिलीन्हेउँ ताते उत्तर देहि न उठिचलै जवावदही न करु उठि मेरेसंग चलु काहेते डरडरात पुर तीनस्वर्ग भूपातालादि तीनिहूंलोकवासी सब मेरे डरते डेराते हैं तौ एक मनुष्यकी मेरे आगे क्या प्रशंसा करता है १ जब रावण अभिमान भरा बोला कि मेरे डरते तीनिहूं लोक डरते हैं सोसुनि मारीच समुझि मनते बिचारिदेखे भाव उत्तर देतही यहदुष्ट मारिडारी अरु उहाँगये माराजैहौं तौ इहां की मृत्युते उहांकी मृत्युभली है इति मनमें बिचारकरि समुझि लियो क्या समुझेउ कि यहिमारे थल नरकयहिदुष्ट रावणकेमारेपर मोको नरकस्थानमें वासकरना परी पुनः रामकर सुरपदभारी रघुनाथजीके कर हाथन जो माराजैहौं तब भारी सुरपद उत्तम देवनकोपद सत्यलोक वैकुण्ठादिमें वासपैहौं २ रघुनन्दनके हाथ मरेते भारीसुरपद उत्तम देवलोक पाइहौं यह विचारि नाय शिर राम तहँचल्यो मारीच शीशनवाय जहां रघुनाथजी हैं तहांको चल्यो इसभांति रावणकहे कि मोहिं क्याज्ञान सिखावताहै उठिचलु इसभांति मारीचको संगलै रथपरचढ़ि आतुर अति शीघ्रता सहित रावण पंचबटीको चल्यो ३ । २४ ॥

मू० । मायामयछायाकरीसियआयसुउरमानि । मृगदेख्योशुचिहेममयखचितरतनमणिखानि १ खचितरतनमणिखानि लखतजानकीसुखारी । यहिहातेसुंदरछालकरियप्रभुधनुशरधारी२ धनुशरधारीमनसमुझिजानतआगमकीघरी। चलेलषणसियसौंपिकैमायामयछायाकरी ३ । २५ ॥

टी० । प्रभुको आयसु उरते मानि सियमायामय छायाकरी जब रघुनाथजी कहेकि हे प्रिय तुम अग्नि में वासकरौ अब में निशाचर नरनाश करिहौं यह प्रभुकी आज्ञामनतेमानि किशोरीजी आपनी छायाको माया मय आपना स्वरूप करि राखि आपु अग्नि में प्रवेश कीन्ही तिस माया रूपते शुचि हेममयपावन सुवर्णमय मृग देख्यो कैसा हैमसद खचितरत्न मणिखानि पर्वतनकी खानिते हरितादि जो मणी निसरती हैं तिन रत्नन करि ताके सर्वांग खचित जटित देखाते हैं १ खानिकी मणी अथवा कैसे रत्नन सों खचित है यथा मणिनकी खानि है ताकोजानकी सुन्दरीलखत सुखपूर्वक देखती भई अर्थात् अद्भुतमृग देखि हर्षित भई ताते कहत हैं प्रभु धनुशरधारी यहिहति सुन्दर छाल करिये इस विचित्र मृगको मारि सुन्दर मृगछाला कीजिये २ धनुशरधारी श्रीरघुनाथजी आगम जो आगे होनहार है ताकी घरी जानत कि यही समयहै ताते मनते समुझिलिये कि यह मृगरूप मारीच है यह जानि जो मायामय छायाजानकी हैं तिन्हैं लक्ष्मणजी को सौंपि भाव इनको रखायो ऐसा कहि मृगके पाछे चले ३ । २५ ॥

मू० । मृगमारयोदूरीनिकरिरामकठिनशरतानि । हालक्ष्मणअथ मैंकह्योपीछेरामबखानि १ पीछेरामबखानिकहतजानकीवि चारी । कहीलषणसोंभ्रातभायतवसंकटभारी २ संकटवश सुमिरततुम्हैं जाहुतुरतधनुबाणधरि । असुरसैन्यअरिद लग्रसेमृगमारयोदूरीनिकरि ३ । २६ ॥

टी० । भागत संते वनमेंदूरि निकरि रामकठिन शरतानि रघुनाथजी कठिन करालबाण धनुपमें तानि मृगके मारयो मरतसमय मारीचअसमे तौ हा लक्ष्मण ऐसा शब्दकरिके पुकारिकै कह्यो पीछे रामबखानि पीछे रघुनाथजीको नाम मनै में बखानि प्रशंसा पूर्वक सुमिरण कीन्हो पीछे रामबखानिसि सोतौ सुनि नहींपरा अरु हालक्ष्मण यह आर्तनाद प्र- सिद्ध सुनिपरा ताको विचारि रघुनंदनको संकटवशमें समुझि जानकी कहत क्याकहत लक्ष्मणजीसों बातकही हे लषण भाय तब तुम्हारे बड़े भाईको कछुभारी संकटपरो २ ताते संकटवश तुम्हैंसुमिरत तुम्हारानाम लै पुकारते हैं ताते धनुषबाण हाथ में धारणकरि तुरतही जाहु सहायक होहु काहेते असुरसैन्य अरिदल ग्रसे असुर राक्षसी सेना लिहे अरि मारे

जिनको वधकिये तिनके भाई पुत्रादि प्रभुको घेरे हैं जहां दूरिजाय मृगा को मारिनिहै तहांको शीघ्रही जाउ ३ । २६ ॥

मू० । रामनसंकटकहुँपरै कालजुरैरणमाहिं । सकलसुरासुरलरि मरैंसमरजीतिहैंनाहिं १ समरजीतिहैंनाहिं शोचमनमांझ निवारौ । रामदीनताबचनबदनकबहूँनउचारौ २ कबहुंन संशयआनिये सत्यबचनमेरेधरौ । छलीवेषनिशिचरविपि न रामकबहुंसंकटपरौ ३ । २७ ॥

टी० । रामैसंकट कबहूं नपरै लक्ष्मणजी कहत हेमहारानीजी रघुनाथजीको कबहूं नहीं संकट परिसक्ता है जो काल रणमाहिं प्रभुके सन्मुख जुरै युद्धकरै ताहूको नाशकरिसक्तेहैं तहां और सुरासुर देवता दैत्य सकल लरिमरैं सब बटुरि प्रभुसों युद्धकरि चहैं जूझिमरैं परंतु समरमें प्रभुसों जीतिहैं नाहिं जीति कोऊ नपाई १ समरविषे प्रभुसों कोऊ जीतिहै नहीं ऐसा निश्चयजानि शोच मनमांझ निवारौ प्रभुको संकटहोनेको जोमन में शोचकरती हौ सो मिटायदेउ काहेते शोच निवारौ रामवदन दीनता वचन कबहूं नउचारौ रघुनाथजी आपने मुखते दीनता अधीरवचन कबहूं न पुकारिहैं २ हेमहारानीजी रघुनाथजीको संकट है ऐसी संशय मन में कबहूं न आनिये अरु मेरेकहे वचन सत्यकरि मनमेंधरौ जो यह आरत शब्द भयाहै सो विपिन बनमें निशिचर छली छल कपटते अनेकप्रकार को वेषबनाये फिरतेहैं तिनहिनको यहवचनहै सो कौन्यो छलहेतु पुकारे हैं अरु रघुनाथजी को कबहूंनहीं संकटपरो है यहसंदेह वृथै करतीहौ सो मिटाइदेउ ३ । २७ ॥

मू० । कह्योवचनसहिनाहिंगयोउठ्योरेखधनुखाँचि । यतीवेषद शकंठशठआयोसियढिगयाँचि १ आयोसियढिगयाँचि जानकीताहिबुलायो। देनलागिफलमूलदुष्टतबवचनसुना यो २ वचनसुनायसुखदकहिबँधीभीखनहिंकहुँलयो । मायीवशसियरेखतजिवचनकह्योनहिंसहिगयो ३ । २८॥

टी० । जानकीजी ऐसे कठोर वचन कह्यो जो लक्ष्मणजी ते सहिन गयो भावजो सहिलेते अरुजातेन तौक्यों विघ्नहोता पुनः प्रभुकी आज्ञा तेरहे कुछ अपराध भी नरहे परंतु सहिनगयो तातेउठे आश्रमके चारिहु

दिशिधनुपते रेखाखँचायचलेगये इहाँ सूनवीच देखि दशकंठशठ यती को वेषधरि आयो सियाढिग याँचि जानकीजी के पास भिक्षामांगे १ जब सिय ढिगयाँचनाकीन्हो ताहिजानकी बुलायो पुनः फलमूल भिक्षादेन लागि तब दुष्टरावण पुनः वचनसुनायो अर्थात् रेखाकी भीतरते भिक्षा देनलगी तापर रावण वचन सुनाये २ कैसे वचनसुनाये सुखद प्रियवाणीते कह्यो कि बँधीभिखनहिं कहुँ लयो आजुतक बँधीभिक्षा में नहींलिया है जो देनाहोय तौ रेखाके बाहर नाँघिदीजिये इतिसुनि भावी होनहार कर्मनके वश सियरेख तजि रेखानांघि बाहरआई तबरावणने ऐसे वचनकह्यो जो जानकीजीते सहि न गयो ३ । २८ ॥

मू० । रेखत्यागिसियजबगईरथपरलईचढ़ाय । गल्योगगनभय तेमगनइतउतदेखतजाय १ इतउतदेखतजायसियारावण जबजान्यो। कहतपुकारिकृपालनाथकहुँदूरिपरान्यो २ दूरि परान्योलषणकहँमोहिंदशाननहरिलई । परीविवशदशकं ठकेरेखत्यागिजबसियगई ३ । २९ ॥

टी० । रेखाको नांघि जब सिय बाहर आई तबरावणपकरिकै रथपर चढ़ायलई पुनः भय मगनडरसिंधुमें बूड़ा गगन आकाशमार्गते चल्यो भय बश इतउत सब दिशनको देखतजात भावपीछे कोउआवातो नहीं १ भय ते इतउत देखतजात अरुजब जानकीजी जान्यो कि यहलंकेश रावण है मोहिं हरेलिहेजाताहै तबपुकारिकै कहत हेनाथ आपुतो कृपालहौ भाव भूतमात्ररक्षा करिवेको आपहीको समर्थ मानेहौं अबमेरी रक्षाकीबार दूरि परान्यो कहौं दूरिचलेगयो २ जो आपुदूरिगयो तौ लषणतुमकहाँहौ इहाँ दशानन रावण मोकोहरेलिहेजात इत्यादि रेखानांघि जानकीजी जबबाहर गईं तबदशकंठ रावणके वशभई हरिलैचल्यो ३ । २९ ॥

मू० । रामरामकहिखगचल्योगृध्रजटायूदेखि । रोक्योरथरघुबर तियादशशिरहरीविशेखि १ दशशिरहरीविशेषिमारिरथ भूतलडारयो । सीतहिलईछुड़ायविकलदशशिरसहिपा रयो २ दशशिरपारयोभूमितलछत्रचूरडरथलहल्यो । मु कुटअस्त्रशस्त्रहिदपटरामरामसुनिखगचल्यो २ । ३० ॥

टी० । रावणवशजानकीजीकोदेखि जटायूनामेखगपक्षीगृद्धजातिरामराम

कहिचल्यो भावदुखित देखिधायो काहेते यह विचाऱ्यो कि रघुबीर की तियजनकनंदनी को विशेषि करिकै दशशिरहरी यहविचारि ताको रथरोक्यो १ जबदेख्यो कि विशेषि दशशिरहरीहै ताकोमारि रथतूरि भूमितल मेंडारिदियो पुनः दशशिर विकलमहिपऱ्यो रावण घायलमूर्च्छितह्वै भूमि पै गिरिपऱ्यो अरुजानकीजीको छुड़ाइलई २ कैसे दशशिरभूमितल गिरि पऱ्यो छत्रचूर उरथलहल्यो शिरपरको छत्रटूटिपरारावणकी छातीकाँपि उठी पुनः ऐसादपटि चरणचोंच प्रहारकीन्हो जाकीबेगते मुकुट गिरिगये तथा अस्त्रशस्त्र बाण त्रिशूलादि सबहथियार गिरिगयो इत्यादि रामराम सुनिखगचल्यो ३ । ३० ॥

मू० । अतिरिसरावणरणरच्योतीक्षणकाढ़िकृपान । दल्योपक्ष महिखगगिऱ्योकहिमुखकृपानिधान १ कहिमुखकृपानिधानसाजिस्यंदनसियलीन्ही । लैनभपथफिरिचल्योगीधबिकलगतिकीन्ही २ बिकलगतिकपिसियलखे नूपुरदैकपिकरसच्यो । तरुअशोकतररोखिकै अतिरिसरावणफिरिरच्यो ३ । ३१ ॥

टी० । सँभरिकैउठो अत्यंतरिसकरि रावणपुनः रणरच्यो युद्धकरनेलगे तब तीक्ष्ण कृपाण काढ़ि पैनी तरवारि निसारि पक्ष हत्यो पखनाकाटि डारेसि तब घायलह्वै कृपानिधान मुखकहि खग महि गिऱ्यो कृपागुणभरे रघुनाथजीको नाम सुमिरत संते पक्षी जटायू भूमिमें गिरिपरो १ जब मुखसों कृपानिधान कहि जटायू गिरा तबरावण स्यंदनसाजि सियलीन्हो रथ सुधारि तापर जानकीजीको चढ़ाय लीन्हेसि नभपथ आकाश मार्ग फिरिचल्यो अरु गीध विह्वल गति कीन्हो घायल करि जटायूको बेशक्ति करिदीन्हेसि उठनेकी गति न रही २ रावणके लिहेजात संते सियकी कपि सुग्रीव विह्वल विकलगति देखेते करुणा आई ताते राम राम उच्चारण कीन्हे तिनतन निहारि किशोरीजी कपिकर नूपुरदै सच्यो आपने नूपुर सुग्रीवके हाथपै डारिदियो ताही द्वारा मानौ साँचा सम्बन्धी बनाय दिये पुनः लंकामें लैजाय तरु वृक्ष अशोकतर जानकीजी को राखि सावधान ह्वै रावण फिरि अतिरिस रच्यो सक्रोध बैठो ३ । ३१ ॥

मू० । लषणबातनीकीनहीं बनसियआयेत्यागि। असगुनसमभन

होतअतिसियविनउरविरहागि १ सियविनउरविरहागि लषणपदगहिसमुभाये । शोचतआश्रमदेखिनयनउमड़े जलछाये २ उमड़ेजलछायेविकल खोजतगिरिवनसरम ही । रुधिरधनुषआगेपरयोलषणबातनीकीनही ३ । ३२॥

टी० । लक्ष्मणको आवतदेखि प्रभु कहत हैलषण सियको वनमें अकेली त्यागि भाये यहबात नीकीनहीं कीन्ही भाव किशोरीजीको कोउहरि लैगया काहेते ममपन अति असगुनहोत मेरेमनमें भयउदासी पश्चात्तापादि अत्यंत करिकै असगुनहोतेहैं पुनः सियविन उरविरहागि विना जानकी मेरे उर अंतरमें विरहरूप अग्नि प्रचंड दुःखदायक छोड़गी १ जवप्रभुकहे कि सियविनमेरेउरमें विरहाग्नि प्रचंडपरेगी तुमअकेले उनको क्यों छाँडिआयो सो सुनि लषण प्रभुकेपदगहि पायँनपरि समुझायो अर्थात् वरवस महारानीजी मोको पठाये मेरादोष नहींहै इसीभांति शोच करत आय आश्रम शून्यदेखि करुणाते नयनउमड़े आंसुजल छायगयो २ करुणाते नेत्र उमड़े आँसुजल छायो विरहते विकल गिरि वन सर मही खोजत पर्वत वन तड़ाग भूमि इत्यादि सर्वत्र जानकीजीको ढूँढ़त फिरतेहैं आगेजाय देखे रुधिर रक्त टूटा धनु परयो देखि प्रभुकहत हेलषण यही बात नीकी नहींहै भाव अमंगलीक वस्तु देखानी ताफल भलानहीं है कछु अचाह सुनवे देखवे आई ३ । ३२ ॥

मू० । रामरामरसनारटै लख्योगीधपतिजाय । कहीकथासियहेतुगति रामनयनजलछाय १ रामनयनजलछाय गोदधरिवचनउचारे । परमारथतुमतात प्राणधनतृणकरिडारे २ तृणसमानप्राणनिदयो कोपरहितरणमहँकटै । जिन्योंभोग भोगौजगत रामरामरसनारटै ३ । ३३ ॥

टी० । जायगीधपति लख्यो आगेजाय रघुनाथजी देख्यो गीधराज जटायू घायलपरा रसनाजिह्वा सों श्रीरामराम रटिरहाहै ताने सियहेतुगति कही अर्थात् जानकीजीको रावण हरेलिहेजातरहे तिनके छोड़ावनेहेतु मैं दौरेउँ तव रावणने मेरी यहगति किया लैकै चलागया सो हाल सुनि जटायूको घायलदेखि अधिक करुणाभई ताते राम नयन जलछाय अधिक आँसुबहिचले १ रघुनाथजीके नेत्रनमें आंसुजल छायरहेउ गीधकोगोद

में धरि पुनः प्रभु वचन उचारे बोले हे तात तुमपरमारथ परस्वारथहेतु आपने प्राणरूपी धन तृणकरि डारे तिनुकासम त्यागि दिये २ यथाआपु आपने प्राणनिको तृणसम दैदियो ऐसा और दूसरा कोहै जो परारे हेतु रणमहँ कटै संग्राममें जूझै ताते हे तात जिऔ जगतभोग भोगौ दिव्य देहते जीवनराखि लोकमेंसवभांतिको सुखभोगकरौ कालरूप इच्छामरण रसनाकरिकै रामरामरटै भाव आनंदसहितभक्तिरीति भजनकरौ३। ३३॥

मू० ।दर्शलागिजीवनरहेउभागउदयरघुराय।ज्यहिबिरंचिशिवसे वहीं लियोगोदम्वहिंआय१ लियोगोदम्वहिंआयरामकहि प्राणगँवाये । भयोतुरतहरिरूपचारिभुजअस्त्रसुहाये २ अस्त्रसबैशिरमुकुटवर पीतांबरभूषणगहेउ । जोरिपाणिअ स्तुतिकरत दर्शलागिजीवनरहेउ ३ । ३४ ॥

टी०। जटायू बोला हेरघुराय आपुके दर्शलगि देखनेहेतु जीवनरहेउ अबतक जीवतरहेउँ आजु मेरी बड़ीभाग्य उदयभई ऐसापात्र मैं नहींरहौं काहेते ज्यहि बिरंचि शिवसेवहीं ब्रह्मा शिवादि जिनकी सेवामें लगेरहतेहैं सोई परात्पर परब्रह्म मूर्त्तिमान् आय मोको गोदमेंलियो इतिमेरी बड़ीभाग्य उदयभई १ सोई प्रभु मोको गोदलिये आय ऐसीमृत्यु किस को मिलिसक्तीहै इत्यादि कहि पुनः रामकहि प्राणगँवायो प्रभुकीगोदीमें रामरामकहतगीधराजप्राणत्यागिदियो पुनः तुरतहीऐसो हरिको दिव्यरूप भयो जाके चारिभुजा तिनमें शंख चक्र गदा पद्मादि अस्त्रसुहाये शोभित हैं २ चक्रादि सबैअस्त्र हाथनमें तथा शिरपर प्रकाशमान मुकुटवरश्रेष्ठ पीतांबर भूषणगहेउ माला कुंडल केयूरादि सब भूषण धारणकिहे इसी रूपते जटायू हाथजोरि प्रभुकी अस्तुतिकरत हेप्रभु आपुके दर्शलागि प्राण राखेरहेउँ ३ । ३४ ॥

मू० । परमधामगोगीधपतिक्रियाकीन्हश्रीराम । चलेबिरहअंकु रभयेबिपिनशावरीधाम १ बिपिनशावरीधामअर्घआसन सबसाजे । धूपदीपफलसुजलधरेरघुपतिकेकाजे २ सबस प्रेमपायँनपरीदर्शपायपावैनगति । रामतुम्हारोरूपलखिप रमधामगोगीधपति ३ । ३५ ॥

टी० । गीधपति जटायूतौ विमानपरचढ़ि परमधामकोगयो ताके देह

की क्रिया श्रीरघुनाथजी आपने हाथन कीन्हे पुनः किशोरीजीको हग्गा जानि वियोगजनित विरहअंकुरभये नवीन विरहउठी विपिन शावरीधाम वनमें आगेचले शवरीके घरकोगये १ वनविपे आपने घरमें शवरी प्रभुको आवतदेखि प्रणामकरि अर्घ आसनादि सवउपचार सजे अर्थात् आनन्द स्वागतपूंछि अर्घ पाद्य आचमन स्नान गंध दल फूलचढ़ाय धूप दीपादि करि मधुरफल भोजनदै पुनः रघुपतिके काजे पान आचमन हेतु सुंदर जल आनिधरे २ सव सप्रेम सहितप्रेम सव उपचारकरि पुनः पांयनपरि कहत दर्शपाय कोन गतिपावै काहेते राम तुम्हारो रूपलखि हेरघुनाथजी आपुको सुंदरस्वरूप देखिकै गीधपति जटायू परमधामकोगयो मुक्तिस्थानपायो इत्यादि स्तुतिकरी ३ । ३५ ॥

मू० । काठसाजिरचिकैचितासियसुधिकहीवहोरि । शवरीजारि सुरगतिगईक्रियाकरीप्रभुकोरि १ क्रियाकरीप्रभुकोरिचले वनदूनौभाई । मुनिगणमिलतअनेकदर्शअभिमतफलपाई २ पावहिअभिमतजीवजड़करहिंयोगज्यहिप्रभुनिता । साजिसाजिसुरगतिलहीकाठशावरीरचिचिता ३ । ३६ ॥

टी० । काठसाजि भूरईंधन एकत्रकरि ताको चितारचि वहोरि सिय सुधिकहि जानकीजी के मिलनेको उपाय वताय शवरी जरि सुरगतिगई चितापर बैठि शवरीदेह भस्मकरि पुनः दिव्यदेह है यथादेवनकी गति अर्थात् बिमान परचढ़ि परमधामको गई क्रियाकरी प्रभुकोरि कोरि कहे करोरिन बिधि विधानसहित शवरीकी मृतकक्रिया रघुनाथजी किहेउ १ करोरिनभाँति प्रभुक्रियाकरि पुनः दूनौभाई वनमेंआगेकोचले मार्ग जात समय मुनिनके गणअनेकन मिलतते प्रभुके दर्शते अभिमतमनोवांछित फलपावते हैं २ मुनिगणतौ सुकृती हैं तिनके पायवेकी कोनप्रशंसा है काहेते ज्यहिप्रभु नितजौने प्रभुकी प्राप्तिहेत योग क्रियाकरि मनइंद्रियशुद्धकरतेहैं सदाध्यान लगावते ते जो दर्शतेअभिमतपावै ताकी कोनप्रशंसा है प्रभुके दर्शपायेते पशुपक्षी आदिजड़जीव अभिमतपावते हैं अरुमुनिजनतौ योग क्रिया समाधि आदि साजिसाजि सुरगतिलही देवनकीसी गतिपाई बिमानपर चढ़िहरिधामको जाते हैं यथा काठचितारचि शवरी गई ३ । ३६ ॥

मू० । रामसियाखोजतगयेपंपासुभगतड़ाग । सुंदरजलतरुविहं

गमृगमुनिगणसदनसुबाग १ मुनिगणसदनसुबागकरत
जपतपमनलाई । देखिसरोवरमुदितकीनमज्जनरघुराई २
रघुराईमज्जनकरचोनारदमुनिआवतभये । तुलसिदाससु
रसुभगसररामसियाखोजतगये ३ । ३७ ॥

इतिश्रीगोसाईंतुलसीदासकृतेकुण्डलियारामायणेआरण्य
काण्डसमाप्तम् ॥

टी० । सिय खोजत रामसुभग पंपा तड़ागगये जानकी जीको ढूंढ़त संते श्रीरघुनाथजी सुंदरे पंपासर समीपगये कैसा सुभग तड़ागहै जामें स्वादिष्ट अमल शीतल इति सुन्दर जलभरा है ताके चहुंदिशि तरु आ-म्रादि अनेक वृक्ष लगेहैं तिनपर विहंग शुकसारिकादि पक्षी बैठे हैं अथवा चक्रवाक सारस हंसादि जल समीप बैठेहैं तथा मृगसमूह जलपानकरते हैं तथा सुंदरी वागे लगीहैं तहां मुनिगण सदन अनेकन आश्रम वनाये समूह मुनि वास किहेहैं १ जो वागनमें सदन बनाये मुनिगणहैं तेकरत जपतप मनलाई शुद्धमन लगाये मंत्र जप योग क्रिया तपस्यादि करते हैं ऐसा सरोवर उत्तम तालदेखि रघुराई मुदित मज्जनकीन लषणलाल सहित श्रीरघुनाथजी आनन्द मन सहित स्नान कीन्हे २ जब श्रीरघुनाथ जी मज्जनकरि बैठे ताहीसमय प्रभुके ढिग नारदमुनि आवत भये इत्या-दि रघुनाथजी जानकीजीको ढूंढ़त संते गोसाईंजी कहत सुर सुभग सर देवनको निर्माण किया हुआ सुन्दर जो पंपासर तहांको गये ३ । ३७ ॥

कुण्डलिया ॥ पाछेनेतिपुकारिश्रुति नितगावतगुणगाथ । विधिहरि शंकरशेषसुरनितनावतपदमाथ ॥ नितनावतपदमाथयोगिज्यहिध्यानल गावैं । शुकनारदसनकादिजासुगतिभेदनपावैं ॥ वैजनाथप्रणमामिकोटि रतिपतिछविआछे । करकमलनशरचापफिरतबनमृगकेपाछे १ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविर-
चितेकुण्डलिकारामायणप्रदीपिकाटीकायांआरण्यकाण्डसमाप्तम् ॥

अथकिष्किंधाकाण्डप्रारम्भ ॥

कुण्डलिया ॥

मू० । चलेविपिनलक्ष्मणसहितमिलेपवनसुतआय । विप्ररू
पपूछतभयोकोतुमकहौबुझाय १ कोतुमकहौबुझायविपि
नसुकुमारसलोने । नृपदशरथकेसुवनतासुआयसुतजि
भौने २ तजेउभवनआयेविपिननारिगईशोधनलहत ।
खोजतहमद्विजकवनतुम चलेविपिनलक्ष्मणसहित ३ । १ ॥

दो० । सियरघुवर पद उरधरे गुरुपदशिश नवाय ॥
किष्किंधा शुभ कांडको टीकारचौं बनाय १

टी० । पंपासरते उठि लक्ष्मण सहित विपिन वनमें आगे चले तहां सुग्रीव के पठायेहुये पवनसुवन हनुमान्जी आयमिले कौनभाँति विप्र रूपधरि पूछत भये तुमकोहौ बुझायकै कहौ भाव कौन वर्णाश्रम हौ कहांते आवतेहौ कहांको जाहुगे इत्यादि सबहाल समुझायकै कहौ १ काहेते बुझायकहौ कि सलोने सुन्दर सुकुमार शरीर विनपनहीं विपिन बनमें फिरतेहौ जहांपाषाणमय कठोर भूमि कांटा कंकर पहारतहांफिरते हौ इसहेतु पूछतेहैं आपुको कहौ इहां बनमें क्याकाम है इत्यादि सुनि रघुनाथजी बोले कि रामलक्ष्मण दोऊभाई नृपदशरथके सुवन अवधेश महाराज दशरथके पुत्रहैं तासु आयसु भौनेतजि ताही पिताकी आज्ञाते घरत्यागि इहां आयेहैं २ पिताकी आज्ञाते भवनतजे विपिन वनको आय पंचवटी में बास कीन्हे तहां हमारी नारि हरिगई ताको शोधन लहत वाको ढूंढ़त खबरि लीन चाहते हैं इत्यादि हमतौ पितु आज्ञाते लक्ष्मण सहित बिपिन वनको आये पुनः खोजत स्त्रीको ढूंढ़त फिरते हैं इत्यादि आपनातौ सबहाल हमकहिचुके पुनः हेद्विज तुमकवनहौ किसहेतु हम सों सबहालपूछते हौ सो कहौ ३ । १ ॥

मू० । लैसुग्रीवमिलाइयोप्रभुगुणमनअनुमानि । कहीकथास

बगररूपरनूपुरदयेबखानि १ नूपुरदयेबखानिरामलोचन भरिआये। विरहविकलप्रभुदेखिकीशबहुविधिसमुझाये२ समुझायेसुग्रीवअतिरामलषणसुखपाइयो । प्रभुभेंटेहनुमंतउरलैसुग्रीवमिलाइयो ३ । २ ॥

टी० । प्रभुगुण मनअनुमानिकै सुग्रीव मिलाइयो अद्भुतस्वरूपता तेजवंत शील सुलभ सुभाव इत्यादि गुणदेखि अनुमानकरि जानिलीन्हे कि भूभारहरणहेतु परब्रह्म अवतीर्णभये सोई रघुवंशनाथहैं ऐसाबिचारि प्रभुकोलैकै पर्वतपर जाय सुग्रीवसों मिलाये कौनभांति मिलाये परस्पर कथाकही जब हनुमान्‌जी दोऊ दिशिको हेतुकहि दृढ़प्रीति कराये तब दोऊजन आपुसमें आपनी आपनी कथाकहे कौनभांति नूपुरदये बखानि जाभांति जानकीजीको आकाशमार्गमें देखेरहैं सो सबहाल कहि सुग्रीव प्रभुको नूपुरदीन्हे भाव मैं रामराम किहेउँ तब ये आभूषण डारिगईं १ परवशता विलापादि सबहाल बखानि जब नूपुरदये तिनको चीन्हि अधिक करुणाभई ताते रामलोचन रघुनाथजी के नेत्र आंसुजलते भरि आये इतिविरह करिकै प्रभुकोविकलदेखि कीश सुग्रीव बहुत विधि वचन कहि समुझाये २ कैसे समुझाये हे प्रभु धीर्यराखिये सबभाँति उपाय करि जानकीजीको मिलावब इत्यादि जब सुग्रीव अत्यंत करि समुझाये तब लषण सहित रघुनाथजी सुखपायो मनमें संतोष कीन्हे इस भाँति जब स्वामीको चीन्हा हनुमंत प्रणाम कीन्हे तब प्रभु उरमें लगाय भेंटे तब हनुमान् लै सुग्रीवको मिलाये ३ । २ ॥

मू० । प्रभुबोलेकारणकवनवसतविपिनकपिराज । कथाकही सबबालिकीकोपिकहारघुराज १ कोपिकहारघुराजबालि एकहिशरमारौं । संपतिऋधितियसहिततोहिंकपितिलक सँवारौं २ तिलकसँवारौंकालिहनाहिंकिष्किंधानृपताभवन । तौनधनुषशरकरधरौंमित्रकार्यकारणकवन ३ । ३ ॥

टी० । सुग्रीव प्रति प्रभु बोले हेकपिराज कवनकारण ते विपिन बनमें बसतेहौ सो हालकहौ तब सुग्रीवने बालिकी सबकथाकही भावमायावी युद्धवैर को कारण सुनाये सो मित्रकोदुःख सुनि रघुराजकोपि कहादया वीरताते बालिपर क्रोधकरि आमर्ष बोले १ रघुराजकोपिकै क्या कहा

वालिको एकहि शर अर्थात् दूसरानहीं एकही बाणतें मारिहौं कित्तीभाँति नबची पुनः ताकी संपाति यथा राज्यकोपादियावत् ऐश्वर्य तथा ऋद्धि अन्नादि यावत् घरमें सामग्री पुनः ताकीतिय सहित दे सुग्रीव तोहिं कपि तिलक सँवारों वानरनकी राज्यको तिलकतोकोदेहौं २ अरु जो किष्किन्धा भवनमें नृपता तिलक काल्हिन सँवारों किष्किधापुरमें राजमंदिर विषे राज्याभिषेक जो ताको काल्हिन सँवारोंतो धनुशर करनधरों धनुष बाणहाथमें न धारण राखौं काहेते जो संकटमें सहायता न करनाछाड़ूतों कवन कारण मित्र करिये भाव मित्रकी अवश्य सहायकीजै ३ । ३ ॥

मू० । तबसुग्रीवदिखाइयोवालिमहाबलवीर । गर्जिनगरजान्योसबहिचल्योक्रोधिरणधीर १ चल्योक्रोधिरणधीरलरे पुनिदूनौभाई । शरणागतप्रणसमुझिबाणमारयोरघुराई २ मारयोबाणप्रमाणकरिगिरयोअवनिमुरझाइयो । रामरूप लोचनपुलकितबसुग्रीवदिखाइयो ३ । ४ ॥

टी० । जब रघुनाथजी निश्चय मारनेको कहा तब प्रभुको संगलेजाय महाबली वीर जो वालिताको दिखायो कौनभाँति गर्जिनगर जान्यो सबहि प्रभुको दूरि ठाढ़करि सुग्रीव किष्किंधाके निकटजायगर्जे सो सुनि नगरवासीजन सबहिन जान्यो कि सुग्रीवहै तब रणधीर क्रोधिचल्यो रण में धीर्यमान वालि सुग्रीवपर क्रोधकरि सन्मुख चल्यो १ सुग्रीवतो खड़े रहैं जबरणधीर वालि क्रोधकरि चल्यो तब दूनौभाई लरि मल्लयुद्ध ठाने लगा तब शरणागत रक्षक आपना प्रणसमुझि सुग्रीवको विकल देखि रघुनाथजी वालिके उरमें वाणमारयो २ कैसा प्रभु वाणमारे प्रमाणकरि सत्यसत्य प्राणघातक तिसबाणतेव्यथितवालि मुरझायकै अवनि मूर्च्छित ह्वै भूमिपै गिरयो पुनः रामरूप लोचन पुलकि यद्यपि मूर्च्छितह्वै भूमिपै गिरा परन्तु श्रीरघुनाथजीको श्यामसुन्दर स्वरूप धनुषधारी सन्मुखदेखि वालिके उरते जो प्रेम उमगा ताते सर्वांग पुलकि नेत्रन में आसुभरि आये इसभाँति प्रभुकोसंगले सुग्रीवने वालिकोदिखायो ३ । ४ ॥

मू० । श्यामरामछविउरधरीवाणीकहतकठोर । नरगतिहरि गतितजिदईसमप्रकाशसबठौर १ समप्रकाशसबठौररजग तअप्रियकछुनाहीं । जोअप्रियतबहोयसकलइकसंगवि

लाहीं २ संगरंगनाहिंचाहियेविधिपिपीलरचनाकरी। जय
तिहरेश्रीरामकहिश्यामरामछविउरधरी ३ । ५ ॥

टी० । श्यामसुंदर स्वरूप राम छवि उरधरी प्रीति पूर्वक उर अंतर में रघुनन्दनको ध्यान थिरराखि पुनः बालि मुखते कठोर बाणी कहत हेप्रभु नरगति धारण करि क्या हरिगति तजिदई अर्थात् हे परब्रह्म श्रीरघुवंशनाथ नरगति जो यह राजकुमार रूप धारणकरि क्या आपुने हरिगति आपने ऐश्वर्य रूपकी रीति त्याग करिदिया जो मनुष्यवत् सुग्रीव सों मित्रता करि ताके सहायक बनि बिनागुनाह मोको मारा यहतौ तुच्छ जीवनकी रीतिहै अरु आपुकीरीति तौ वेद इसभाँतिकहत कि समप्रकाश सब ठौर यथा यजुर्वेदेअध्याय ४० मंत्र ८ सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳ शुद्धमपापविद्धम् कविर्मनीषीपरिभूःस्वयम्भूर्याथातथ्यतोर्थान व्यदधाच्छाश्वतीभ्यःसमाभ्यः ॥ अर्थात् सर्वत्र अखंड सदा एकरस व्यापक प्रकाशमानहैं कम ज्यादह किसी ठौर नहीं हैं १ यथा सब ठौर सम प्रकाशमान तथा जगत्में अप्रिय कछुनाहीं जगत्में यावत् चराचरहैं तिन में कोऊजीव ईश्वरको अप्रियनहीं है सब एकरसप्रियहैं अर्थात् भूतमात्र पर कृपादृष्टिहै सबकी रक्षा राखते हैं पुनः जो तव तुमको संसार अप्रिय होय रक्षा न करौ तौ सकल ब्रह्माण्ड इकसंग बिलाई प्रलय काल ह्वै जाई २ काहेते कछु अप्रिय नहीं है विधि पिपील रचना करी विधि जो ब्रह्मा इत्यादि बड़े तथा पिपीलिका जो चींटी इत्यादि छोटे इत्यादि यावत्जीवहैं इनसबको रचनाकरी ताको संगरंगनचाहिये अर्थात् जिन प्रभु चराचरको उत्पन्नकिया ताको यह न चाहिये कि काहूको संगकरि मित्र बनै पुनः मित्रके प्रीति रंगमेंरंगेरहि वाकेशत्रु मित्रनको आपने शत्रु मित्र बनावै यह ईश्वरकीरीति नहीं है मनुष्यनकीरीतिहै जो आपु मोपरकिया है इत्यादिकहि श्रीरघुनाथजीके श्यामस्वरूपकीछवि उरमें ध्यानधरे पुनः जयतिहरे श्रीरामकहि हे हरि श्रीराम आपुकी जयहोय ऐसा कहि बालि तन त्यागकिया सो आगेकहत ३ । ५ ॥

मू० । प्राणगयेश्रीरामकहिनारिविकलपुरलोग । सुग्रीवहिआ
यसुदयोकरहुमृतककरयोग १ करहुमृतककरयोगलषण
सबकोसमुझायो। राजहेतुसुग्रीवअनुजसँगनगरपठायो २

नगरबुलायेद्विजसकलअंगदादिकपिबोधलहि । बालिशो चदूषणहरौप्राणगयेश्रीरामकहि ३ । ६ ॥

टी० । श्रीराम ऐसा कहि वालिके प्राण निसरिगये ताको मरणदेखि वालिकी नारि तारा तथा पुरके लोग इत्यादि सब शोकते विकलभये तब रघुनाथजी सुग्रीवको आयसुदियो कि मृतककरयोग वालिकी मृतकक्रिया दाह तिलांजलि पिंडदानादि करो योगको भाव सपिंडी १ यथा प्रभु सुग्रीवते कहे मृतकक्रिया करौ तथा लक्ष्मणजी यावत् पुरवासी रहे तिन सबको समुझाये जब मृतकक्रियाकरि सावकाशपाये तब सुग्रीवको राज्य देनेहेतु अनुज लक्ष्मणजीको संगकरि प्रभुसबको किष्किंधानगरको पठाये २ नगरमें जायकै लक्ष्मणजी द्विजसकल यावत् ब्राह्मणरहे तिनसबको बुलाये पुनः अंगद आदि कपि वानर मुखिया यावत्रहे तिनको बोधलहि समुझाय सबको सम्मतलैकै अधीरतामें धीर्यदिये कौनभाँति समुझाये श्रीरामकहि प्राणगये ताते वालि शोचदूषणहरौ रघुनाथजीके हाथ मृत्यु भई दूषण पाप नाशभये रामनामकहि प्राणनिसरे ताते परधाम गयो ताको कौनशोचहै ३ । ६ ॥

मू० । रामनामकहिनृपकरौतिलकसारिशिरताज । रामकृपानिधिजगतमेंबिरदगरीबनिवाज १ बिरदगरीबनिवाज कियोसुग्रीवसुखारी । गिरिबनबिकलबिहालबालिडरकंपितभारी २ कंपितडरनिरभयनहींजातदुसहज्वरडरजरचो । धामबामनृपग्रामकोरामनामकहिनृपकरचो ३ । ७ ॥

टी० । रामनामकहि लक्ष्मण सहित सब समाज रामनाम उच्चारण करत संते तिलकसारि शिरताज नृपकरयो सिंहासनपर बैठारि प्रथम लक्ष्मणजी तिलककीन्हे पछि सब तिलककीन्हे इसभाँति तारा समेत सुग्रीवको वानरनको शिरमौर सबते श्रेष्ठ नृपराजा बनाये ऐसे गरीब निवाज विरदवालेजगत्में रामकृपानिधिहैं तहाँ कृपागुणको लक्षण यहहै कि भूतमात्रको रक्षाकरिवेकोहमहींसमर्थहैं यथा भगवद्गुणदर्पणे ॥ रक्षणे सर्वभूतानामहमेवपरोविभुः । इतिसामर्थ्यसंधानंकृपासारपारमेश्वरी ॥ पुनः कैसहू गरीब शरण आवै ताको निवाजतेहैं परिपूर्ण ऐश्वर्यवंत करि देतेहैं इति गरीबनिवाजीको विरद बानाबाँधेहे हैं ताहीहेतु गरीब सुग्रीव को शरणदेखि ताको दुःख निवारणहेतु बल वीरताको अभिमानी देखि

वालिको मारे सुग्रीवको राजाबनाये तथा मरतबार वालि भी शुद्धशरण भया ताको दिव्य ऐश्वर्यदै आपनेधामको पठाये पुनः अंगदकी बाँहपकराय गया ताहीको युवराजपददिये तारा आरतह्वैशरणभई ताको विधवापन दुःख मिटावनेहेतु सुग्रीवकीपत्नीकरे ताहूपर राज्याभिषेकसमय इसी की गाँठिजोराय बड़ी महारानी पदका ऐश्वर्यदिये पुनः जो कहिये कि विना अपराध वालिको प्रभुमारे सोभी व्यर्थहै काहते वाकीस्त्री समुझाइसि सो न मानिसि प्रभु फूलमालदै पठाये सोभी न मानिसि इत्यादि आपनो बल वीरता इंद्रके आशीर्वादको अभिमानीरहा ताको मिटावने हेतु प्रभु वाणमारे परंतु जबशुद्धह्वै शरणभया तब प्रसिद्धकहेयथा। अचल करौं तनराखौं प्राना। तबमारना कहाँरहा परंतु उत्तम मृत्युजानि वालि आपही नहीं अंगीकारकिया तथा जो मानत्यागि पूर्वहीशरण आवता तौ क्यों मारते ताते वालि आपनेहाथै वाण चोटसहे पीछे आपनी खुशीते देहत्यागा तौ वालिको नहींमारे संदेहवृथाही करनाहै इति गरीबनिवाजी की वानावाला कृपानिधि जगमें रघुनाथैजी एकहैं दूसरा कोऊनहीं है १ कैसे विरद गरीब निवाजहैं कियो सुग्रीव सुखारी सुग्रीव ऐसे गरीबको परिपूर्ण सुखीकीन्हे कैसा सुग्रीव गरीबरहा बालिके डरकरिकै भारिकंपित अथवा भारीडर बालिकोरहा ताते कंपिततन विकल विहाल गिरि पर्वतन में बनमें भाग भाग फिरतरहा २ बालिके डरते ऐसाकंपितरहै जो किसी समय निर्भयनहीं डरबनैरहै ताते दुसह जो सहिनजाइ ऐसे मानसीज्वर करिकै डरजरयो छाती सदाजरै करतीरहै ताको ग्राम धाम नृप वाम सहितरामनाम कहिनृपकरयो ग्रामजोकिष्किन्धापुरतामेंधाम जो राजमंदिर में सिंहासनरहा तापर बैठारि पुनः नृपबाम जो राजपत्नी तारा त्यहि सहित कैसे राजाबनाये तहाँ आपु नहींगये लक्ष्मणको पठाये तेरघुनाथ जीको नामकहि प्रभुकीआज्ञा सबकोसुनायराज्याभिषेक करिदीन्हे ३। ७॥

मू०। राजनीतिकहिप्रभुरहेशैलप्रवर्षणआय। अनुजसहितसुंदरसदनराखेदेवबनाय १ राखेदेवबनायनिरखिवर्षाऋतुआई। घनघमंडनभघोरमनहुरविपरनिशिधाई २ निशिधाईरवि भजिगयेनीरबुंदबाणनगहे। तड़ितकृपाणसुइंद्रधनुराजनीतिकहिप्रभुरहे ३। ८॥

टी०। राज्याभिषेकभये पीछे सुग्रीवको निकटबुलाय शिक्षादीन्हे यथा

प्रजनको पुत्रवत् पाल्यो सुजनको सुख आततायिनको दंड देशकोश सेना सुभटनकी सँभार कीन्हेउ शत्रुपर साम दामादि जो चलै सो करना इत्यादि राजनीति कहि पुनः प्रभु अनुजसहित प्रवर्षणगैल पर्वतपर आये तहाँ देव इंद्रादि सुंदर सदन मंदिर वनायराखेरहे तामें वासकीन्हे तहां संदेहहै कि न चित्रकूटमें वनायराखे न पंचवटीमें वनायराखे इहाँ कौन कारण पूर्वही सदन वनायराखे तहाँ चित्रकूटमें आये तव चैतमास रहै पुनः पंचवटीआये तवौं चैतरहे तव वृक्षोंतर निर्वाह भये पीछे मंदिरौ बनिगया अरुयासमय में वर्षा ऋतुआई ताको निरखि अर्थात् विचार करि देखे कि वृक्षतरनहीं निर्वाह ह्वैसक्ता है इसहेतु प्रथमही गिरिमें गुहा वनायराखे तामें प्रभुवास करिवर्षा की सामग्री वर्णन करत किहे लखग देखिये वर्षाऋतुआये ते घनघमंड नभघोरमेघ घमंडि आकाश में भयंकर शब्दते गर्जते हैं अँध्यारी छायरही सो कैसे देखात मनहुँ रविसूर्यन पर निशिरात्रीधाई २ कैसे निशिधाई नीरबुंद वाणनिगहे अर्थात् आपना शत्रुजानि रातिसूर्यनपरधाई कौनभाँति जलबुंद रूपवाणन को गहे भाव जलवर्षनेके बुंदनहींहैं मनहुरात्री सूर्यनपरवाण प्रहारकरती है ताकीभय मानिरविभजिगये अर्थात् वादरमें नहींढके जनुरातिकी भयते सूर्य भागिगये पुनः तड़ित कृपाण विजुली चमकत सोई जनुतरवारि हैं पुनः इंद्रधनु उदय सोई जनु धनुष है इत्यादि अस्त्रधारण वीरताकरि रात्रीसूर्य शत्रु को परास्त किया इत्यादि राजनीति वार्ता प्रभुकहिरहे हैं लक्ष्मणजी सों भाव शत्रुपै ऐसेही चाहिये ३ । ८ ॥

मू० । करिमनोजडेराजगतसजिआयोकरिसैन । असितपीतसित घनअरुणतनिवितानसुखचैन १ तनिवितानसुखचैन तड़ितध्वजसुंदरराजै । निशिदिनघनघहरातमनहुअरुदुंदुभिबाजै २ दुंदुभिबाजैमोरपिकवकदादुरवंदीलगत । विरहवंतकारणसज्योकरिमनोजडेराजगत ३ । ९ ॥

टी० । मनोज कामदेव सैनासाजिकरि आयो जगत्में डेराकीन्हे अर्थात् वर्षाऋतुनहीं है विरहिनपर क्रोधकरि कामदेव सेनासाजि करिआयो मानों प्रसिद्ध जगमें डेराकीन्हेउ तहाँअसित जो श्याम पीतपियरे रंगके पुनः सितजो उज्ज्वल अरुण जोलाल रंग इत्यादि जो घनमेघ सोई बहुरंग के जनु बितान सामियाना तंबू आदितानै तामें सुखपूर्वक चैनकरि

हाहै १ यथासुखचैन हेतु वितानतने तथातड़ितध्वज सुंदर राजै ताड़ित
जुली जो चमकिरही सोई जनु जरतारी आदि के सुंदर अनेकन
नु ध्वजा शोभितहैं तथा निशिदिन घनघहरात रातिउदिन जो मेघगर्जत
ोई मनहुं वरदुंदुभी वाजेंबहुत उत्तम नगारादि बाजा बाजिरहेहैं २ यथा
नरव दुंदुभी से बाजत तथामोर मुरेला पिकजो कोकिला बक बगुला
ादुर जो मेढक इत्यादि जो बोलिरहे हैं तेवंदी लागत मानहुं वंदीजन
शगायरहे हैं इत्यादि विरहवंतनके दुःख देनेकारण सेनासज्यो ताते म-
ोज कामजगत् में डेराकरिरहे हैं ३ । ९ ॥

१० । सुरपतिकैगिरिगणग्रसेबुंदबाणझरिलाय । कहुँकहुँमारतब
ज्रशरघनगजशीशचढ़ाय १ घनगजशीशचढ़ायमोरहरव
लपुरआये । बाजैनौबतिजीतिकोकिलासुयशसुनाये २ सुय
शजनावबितानतनिबेलिविटपगृहगिरिबसे । मुद्रितकरिपा
पाणजड़सुरपतिकैगिरिगणग्रसे ३ । १० ॥

टी० । वर्षाऋतुहै कै सुरपति इंद्रगिरिगणग्रसे समूह पर्वतनको गाँसि
ीन्हे संदेह करत कि वर्षाऋतुआई किधौं सेनासाजि सक्रोधित इंद्रआइ
व पर्वतनको पक्षहीनकरिबे हेतु गाँसिलियो है तहाँवर्षे जलके बुंदनहीं
जनु बाणनकी झरिलगायेहैं पुनः घनगज शीशचढ़ाय कहुँ कहुँ मारत
ज्रशर जहाँ तहाँ गाजागिरती है ताकी उत्प्रेक्षा करत घनगज मेघसोई
ाथी ऐरावत हैं ताके शीशपरचढ़ेआप इंद्रकहुँकहुँ वज्रबाणमारते हैं १
था घनगज शिरचढ़िइंद्रआये तथामोर हरवलपुरआये पुरमंदिरनपरजो
यूर बैठे बोलि रहेहैं सो यथाइंद्रके हरवल अग्रणीय वीरपुरनको आये
ावजामें कोऊ पर्वतनको सहायक न होनेपावैतथामेघजो गर्जिरहे हैं सो
ानों जीते परनौबति आनंदबधाई बाजिरही है तहाँ जोकोकिल बोलि
हीहैं सोईवंदीजनहैं सुयश सुनाय रहे हैं २ यथाकोकिल सुयश जनावत
थातमाल आमादि विटपनपर जो बेलि पल्लवित फैलिरही हैं सोयथा
गिरि गृहबसे बरबस पर्वतनके घरबसिलियेतहाँ वितानतने सामियानादि
तथापापाण जड़मुद्रित करि अर्थात् पूर्वपर्वत सपक्ष उड़तेरहैं जबइंद्रने
खनाकाटि डारातब जड़ह्वै गये तथामुद्रित करि अर्थात् समूह जलभरि
येते सरितासर समीप पर्वतनके शिला बूड़िगये इति पापाणको मूँदि

जड़करि दिये इसभांति वर्षा है कैधौं सुरपति गिरिग्रस्यो पर्वतनको गांसेउं ३ । १० ॥

मू० । कैसमुद्रमहिपरचढ़चोमहिमुद्रितकरिदीन । सरसरिता जलदलपरेशरपंजरमहिकीन १ शरपंजरमहिकीनतड़ित बड़वागिनिमानो । बर्षतनभचढ़िवारित्रसितगिरिदिग्गज जानो २ दिग्गजकंपहिघनसदलनादव्वाददशदिशिवढ़्यो। कंपमानमहिगहिधरीकेसमुद्रमहिपरचढ़्यो ३ । ११ ॥

टी० । वर्षाऋतु आई कैधौं समुद्रकोपकरि महि पृथ्वीपर चढ़यांताते महि मुद्रितकीन पृथ्वीको जलते बोरिमूंदि दिया काहेते समूह बुंदनकी झरि नहींहै शर पंजरमहिकीन बाणन के समूह प्रहारमें पंजरकरि भूमि को ताके अंतरमें करि लिया पुनः सरजो तड़ाग सरिता जोनदी इत्यादि में जो समूह जलभरा है सो यथा समुद्रको दल परा है १ यथाबुंद सोई पृथ्वी को शरपंजरकीन तथा तड़ित बड़वागिनि मानों बिजुली जो चमकि रही सो मानों समुद्रमें की बड़वानलहै पुनः समुद्रमेघ रूपते नभ आकाशमें चढ़ि बारिजल वर्षत ताको देखि गिरिदिग्गज त्रसित गिरिजो पर्बत सो भूमि थाँभनेवाले दिशा गजहैं ते त्रसित नाम डराते हैं अर्थात् समुद्रको आकाशचाढ़ि वर्षतेदेखि पर्बतरूप दिग्गज डरतेहैं भाव अबहमारि थाँभीभूमि न थँभी इति जनुडरते हैं २ पर्वतनपर पवनलागे जोवृक्ष हालत सोतौ मानों दिग्गज कांपते हैं पुनः घनसदलनाद अर्थात् घन जो मेघ गर्जत तिनकोनाद आकाशते होत तथापवन लागे वृक्षनके दलपत्र खरखराते हैं सो दलनको नाद भूमिपरते होत इत्यादि यथा दोऊ दिशि के बरिनको वाद बिवाद दशहू दिशिमें बढ़योसर्वत्र अधिकवाद बढ़तजात पुनः किसीसमय जो भूमि हालि उठतीहै ताकीउत्प्रेक्षाकरत जनुमहिगहि धरी सो कंपित है अर्थात् महि जो पृथ्वी ताको समुद्रनेगहि पकरिकैधरी बँधुवा करि राखीहै सो डरतेकाँपि उठतीहै इत्यादि कैधौं समुद्रमहिभूमि पर कोपकरि चढ़यो ३ । ११ ॥

मू० । शरदभूपआयोमिलनधवलरूपद्युतिसाजि । कमलको कखंजनचतुरदूतउठेजगबाजि १ दूतउठेजगबाजिचन्द्र जनुछत्रसुहायो । सरिसरनिर्मलवारिपांवड़ेपायसनायो २

पावसदीन्होतिलकजगशरदराजराजतथलन । पावसग योप्रणामकरि शरदभूपञ्चायोमिलन ३ । १२ ॥

टी० । वर्षा पृथ्वीपर साँसति करत ताते दुःखदकहे अरु शरद सुखद हत वर्षाबीति गये शरद ऋतु कैसा शोभित होत यथा धवलद्युति रूप ाजि शरदभूप मिलनआयो धवलनाम उज्ज्वलद्युति नामप्रकाश अर्थात् ज्ज्वली प्रकाशते आपनारूप साजि सपेदै भूषण पोशाक पहिरि भूप जा जो शरदसो प्रीतिपूर्वक पृथ्वीके मिलने हेतुआयो ताते तड़ागनमें कमलफूले तथाकोक जो चक्रवाक ठौरठौर उड़ि रहेहैं तथाखंजन यगये ते कैसे शोभित होतेहैं यथा शरदराजके चतुर दूतहैं ते जगत् में जि उठे बोलि उठे भावजगत् भरेमें आपने राजाको हुक्म सुनायरहे १ यथादूत बाजिउठे तथा चंद्रजनु छत्रसुहायो जो पूर्णप्रकाश मान न्द्रमा आकाश में उदित है सोई जनुशरद राजके शीशपर श्वेतछत्र भित है पुनः सरिसर निर्मल वारिनदी तड़ागनमें जो जलअमल है या सो कैसा शोभित होताहै यथा पांवड़े पावसनायो बिछायो अर्थात् रद महाराजको आवतजानि पावस वर्षाने राहमें सफ़ेद बसनके पांवड़े छाय दिये इसीपर पांवधरि चलें २ काशादि फूलिरहे ते कैसे शोभित त यथा जगतिलक जगत्भरे को राज्याभिषेक पावसने शरदको दिये हीते सबथलन भूतल भरेमें शरदराज राजतशरद ऋतुकी राज्यसर्वत्र ाई इत्यादि जबशरदभूप पृथ्वीको मिलनहेतु आयो ताको प्रणामकरि वसगयो बिदाभयो ३ । १२ ॥

० । सीयशोधअबलीजियेजाहुजहाँकपिराज । खबरिबिसारी सुखसुपुरपायनारिधनराज१ पायनारिधनराजबालिथलतु म्हैंपठाऊं । करधरिकीनोसखाज्ञानदैमनसमुझाऊँ २ मन समुझायसमेतकपिआपगमनपुरकीजिये । वानरभालुपठा यकरिसियाशोधअबलीजिये ३ । १३ ॥

टी० । शरदऋतुआया सुग्रीव अबतक सुधि न लिये ताते रघुनाथजी ले हे लषण जहाँ कपिराज सुग्रीवहैं तहाँको तुमजाउ कौनहेतु सीय ध जानकीजीकी खबरि अब लीजिये पतालगाइये काहेतेजाउ सुग्रीव नारि सबराज्यधन पुर इत्यादि सुखपाय आपने भोगमेंपरा अरु हमारे र्यकी सुधि बिसारिदिया १ सुग्रीवते ऐसाकहिदेना कि नारि धन राज्य

पाय भूलिगये ताते वालि थल जहाँको वालिगया ताहीठौरको तुम्हैंपठा-ऊं भाव वालिवत् तुमको भी मारिहौं यह यद्यपि होती है परंतु करधरि बाँहपकरि सखाकीन्हेउ ताको मारनो उचित नहीं है इत्यादि ज्ञानदै मनको समुझावतहौं ताते सुग्रीव बचाहै २ ताते हेलषण आपु पुरगमन कीजिये किष्किंधानगरको जाइये मन समुझाय समेत कपि अर्थात् जो सुग्रीवको मन विपयमें परा विमुखहै ताको समुझाय मन शुद्धकरि तब कपि सुग्रीव समेत तुम एकमतिह्वै वानर भालु सबदिशि पठाय अब सीय शोध जानकीजीकी खबरि लीजिये कहाँपरहैं ३ । १३ ॥

मू० । लक्ष्मणचलेलिवायकै प्रीतिप्रबोधरिसाय । वानरभालुबु लायकै गयेजहांरघुराय १ गयेजहांरघुराय मिलेपाँयन कपिनाये। रघुपतिहँसिमृदुप्रकृतिपुलकिगहिकंठलगाये २ कंठलगायबुझायकपिबिनयकरीचितलायकै । वानरभालु बिशालभट लक्ष्मणचलेलिवायकै ३ । १४ ॥

टी० । लक्ष्मणजी किष्किंधाकोगये प्रथमरिसाय सानुकूलकीन्हे पुनः प्रीतिपूर्वक प्रबोधकरि समुझाय धीर्यदै मनथिरकीन्हे पुनः सुग्रीवको संगलैकै लक्ष्मणजी चले कौनभाँति सुग्रीवचले वानर भालु वुलाय तिनको संगलैकै चले जहाँ रघुनाथजीरहैं तहाँगये १ जब उहाँगये तब कपि सुग्रीव प्रभुके पाँयनको शीश नाये तब रघुनाथजी मिले कौनभाँति मृदु प्रकृति कोमल स्वभावते हँसि पुनः प्रेमते पुलकि सुग्रीवकोगहि रघुनाथ जी कंठमें लगाये २ कंठलगाय मिलिकै पुनः कपि वुझाय चित्त लगाय विनयकीन अर्थात् सुग्रीव आपनी भूलको हाल प्रसिद्ध कहिदिये भावमें पशुइतौ हौं पुनः पाँयनमें चित्तलगाय स्तुतिकीन्हे तब वानर भालु वि-शाल भट वानर ऋक्ष जे बडेभारी योधाहैं तिन्हैं लिवाय निकटबुलायकै लक्ष्मणजीकहे कि जानकीजीकीखबरिलेनेहेतु सबदिशनकोजाउ ३।१४॥

मू० । कपिलक्ष्मणसबसोंकहेउ सियसुधिखोजहुजाय। पाखदि वसबिनसुधिलिये हमहिंमिल्योजनिआय १ हमहिंमिल्यो जनिआय बहुरिअंगदहिबुलाये। तुममारुतसुतसाथ जाहुदक्षिणशिरनाये २ दक्षिणसियशोधहुसुभट भालुनील

नलसुखलह्यो । मुँदरीदैहनुमंतको प्रभुकपिलक्ष्मणसब कह्यो ३ । १५ ॥

टी० । लक्ष्मणसहित कपि सुग्रीव सब वानर ऋक्षनसोंकहे कि जाय सब दिशनमें सिय सुधि खोजहु जानकीजीकी खबरि पाइबेहेतु सर्वत्र ढूंढहु अरु पाखदिवस पंद्रहदिनमें सर्वत्र ढूंढि लौटिआयहु पुनः पंद्रह दिनबादि जो आयहु तौ खबरिलैकै आयहु पुनः बिना सुधि लिहे पंद्रह दिनके बादि जनि आय हमको मिल्यो १ प्राणघात दंडजानि हमैं जनि आयमिल्यो बहुरिअंगदहिबुलायो तिनसोंकहे कि तुम अरु मारुतसुतहनुमानजी दोऊ अन्य सुभटनको संगलै दक्षिणदिशिको जाउ सो सुनि अंगद शिरनाये तय्यारभये २ जब तय्यारभये तब सिखावनदेत हे सुभटहु दक्षिणदिशिमें जाय सियशोधहु जानकीजीको ढूंढहु इति सुनि भालु जामवंत नील नलादि वानर सुखलह्यो सुखपाये अहोभाग्य माने जब कपि सुग्रीव अरु लक्ष्मण सबहाल कहिचुके चलैपर तत्परभये तब प्रभु हनुमान्जीको मुँदरी दीन्हे हाल कहे ३ । १५ ॥

मू० । चलेसुभटव्यंकटविकट खोजतगिरिसरखोह । रामकाज लवलीनमन बिसरयोतनकरछोह १ बिसरयोतनकरछोह सघनवनजायभुलाने । तृषावन्तभेविकल बिनाजलसब अकुलाने २ अकुलानेहनुमंतलखि चल्योविवरपैठ्योसुभट। कथासुनाईशशिप्रभा चलेसुभटव्यंकटविकट३।१६॥

टी० । व्यंकट भयंकर विकट टेढे सुभट भालु वानरचले गिरि जो पर्वतनके खोह तथा सर जो तड़ाग इत्यादि सर्वत्र खोजत जानकीजीको ढूंढत फिरतेहैं रघुनाथजीको काजजानि लवलीनमन अर्थात् मनको जो लव सो रामकाजमें लीन अर्थात् चाह सहित लाग हैं ताते तनकर छोह देहकी मया बिसरिगई भाव भूख प्यास नहींगनते हैं १ तनकर छोह बिसरयो ताते ढूंढत सन्ते जाय सघन वनमें भुलायगये सीधीराह न मिलि सकी पुनः तृषावंत प्यास लागनेते विकलभये काहेते विनाजलपाये सब अकुलाने भाव कैसे प्राण रहिसकैंगे २ सबको अकुलाने जानि हनुमंत लखि पर्वतपर चढ़ि हनुमान्जी जलके पक्षी उड़ते देखि चल्यो तहाँसब सुभटन सहित विवरमें पैठे तहाँ जाय तड़ाय उपवनदेखे मंदिरमें शशि-

प्रभा जो स्वयंप्रभा स्त्री सबको सत्कारकरि आपनी सबकथा सुनाई इति व्यंकट विकट भट चले जातेहैं ३ । १६ ॥

मू० । जलफलखायप्रणामकरि त्यहिपठयेजलतीर । सोसप्रेम पहुंचीतहां लक्ष्मणऔरघुवीर १ औरघुकुलमणिवीर पठैब दरीबनदीन्ही । कपिसबसागरतीर सीयहितचिंताकीन्ही २ चिंताकीन्हीकपिनसब सम्पातीलखिकहतडरि । धन्यजटायूसुभटको जलफलखायप्रणामकरि ३ । १७ ॥

टी० । ताको प्रणामकरि आज्ञाते उपबनमें फलखाय जलपानकरि सबकपि पुनः स्वयंप्रभा ढिगआये त्यहिं आँखीमुँदाय समुद्र जलके तीर सबको पठायदिया सो सप्रेमसों स्वयंप्रभा प्रेमसहित तहाँ पहुँची जहाँ लषण सहित रघुनाथजीरहैं तहाँ जाइ प्रणाम प्रार्थनाकरि भक्तिवर पाया १ पुनः रघुकुलमणि रघुबीर स्वयंप्रभाको बदरीवनको पठैदीन्ही इहाँ कपिअंगदादि सब सागर समुद्रतीर सीयहित जानकीजीकी खबरि पावनेहित मनमें चिंताकीन्ही भावअवधिबीतिगई खबरि न पाया तौ अब क्याकरैं इत्यादि शोच वार्त्ता करतेरहैं २ सबकपि चिंताकरतहीरहे ताही समय गिरि गुहाते निसरि संपाति असहन वचन कहा भाव आजुमोको विधाताने आहारदिया सबको खाइजाइहौं ताकोलखि देखिकै डरसहित अंगद वचन कहत कि जटायू सुभटको धन्यहै जाने जानकीजीके छुडाव ने हेतु रावणसों युद्धकरि प्राण त्यागि राम कृपाते दिव्यरूप विमानचढ़ि परधामगया ताते वह धन्यहै अरु एक यह पक्षी ऐसादुष्टहै कि रामदूतन को खाइलीन चाहत इति जल फलखाय स्वयंप्रभाके प्रणामकरि चले सिंधुसमीप संपातिते इत्यादि वार्त्ताभई ३ । १७ ॥

मू० । सुनिसबकथाप्रणामकरि गयोमुदितसम्पाति । भयेपक्ष जलदीनशुचि कहीपक्षगतिभांति १ कहीपक्षगतिभांति धरहुधीरजसबभाई । पैहौसीतहितवाहिं पारसागरजोजाई २ सागरशतयोजनउलांघि प्रबलवीरजाइहिजोपरि । सोसिय पावहिसत्यसुनि कपिसबकथाप्रणामकरि ३ । १८ ॥

टी० । जटायूके मरणकी कथा सब सुनि रामदूत जानि कपिन को प्रणामकरि संपाति सिंधुतीरगयो मुदित मनते आनंदभयो काहेते पक्ष

भये वानरनके दर्शनपाय पक्षजामिआये तव शुचिजलदान जटायु को तिलांजलिदै शुचि शुद्धभयो पुनः कही पक्ष गति भाँति भाव सूर्यसमीप चलागयों तिनके तेजते पक्षजरिगये गिरिपस्यों सो चंद्रमामुनि ज्ञान दै कहे रामदूतनको देखि पंखजामिहैं सो आजु सत्यभया इतिजाभाँतिपक्षनकी गतिभई सो सब हालकहे १ पक्षगति भाँति कहिं समुझायो भाव तुम्हारे दर्शनते मेरेपंखजामे तथा स्वामीको भरोसाराखि हेभाई तुमसव धीर्य धरहु तुम्हारा कार्यहोई परंतु तुममें जवकोऊ सागर समुद्र के पार जाइहि तवहीं श्रीजानकीजी कोपैहौ २ जो प्रवलप्रकर्ष करिके बलीवीर शतयोजन सागर उलंघि पारजाइहि अर्थात् जो ऐसावली वीरहोइ जो सउयोजन समुद्रफाँदि पारजाइ सोलंकाविपे जानकीजी को पावहि इति सत्यसव कथासुनि कपिसव विचार करनेलगे अरुगीध प्रणामकरि गयो ३ । १८ ॥

मू० । गयोकहतयहगीधपतिकपिसवकरतबिचार। बहुरतसंशय जियकहैंअंगदजातोपार १ अंगदजातोपारकहतऋक्षेशबुढ़ाई।नलऔनीलसकोचजानकीकौनदिखाई २ कौनदिखाई जानकीपुनिप्रचारिकहऋक्षगति । कहासमुदहनुमंतत्वहिं गयोकहतयहगीधपति ३ । १९ ॥

इतिश्रीगोसांईतुलसीदासकृतेकुंडलिया
रामायणेकिष्किंधाकाण्डंसमाप्तम् ॥

टी० । जो सिंधुपारजाइ सोजानकीजी कै खवरिलावै यहकहत गीधपतिसंपातिगयो तवकपि अंगदादि सवविचार करत पारकौन जाइसकत तहाँ आपना वल सवहिन कहा परंतु पारजाने को किसीनेन कहा तहाँ अंगदतो सिंधुपारजातो परंतु वहुरत संशय जियकहै अर्थात् लौटतसमय मेरेजीमें संशय आवत भावन रघुनाथजी कछु कहे अरुन कछु चिह्नदीन्हे तौ क्या दिखाय जानकीजी सों भेंटकरि वार्ता करिहौं अरुकौने प्रभावते निशाचरों को जीतिके ऐहों यहसंशय भई १ ताहिसंशयते न जाइसके नातरु अंगद पारजाते अरु ऋक्षेश जामवंत आपनी वुढाई कहत अर्थात्

मेरे तरुणाई को बलरहा नहीं अब बूढ़ाभयों कैसे जाइसक्ताहों पुनः नल अरुनील सकोच आपनामें समुद्र पारजानेयोग्यबल न देखे तातेसकोच बश कछु न कहे तौ सबके संदेहभई किअत्र समाजमें को ऐसाहै जानकी दिखाई खबरि लैआई २ जानकी को देखने के कारण खबरि लावना है सो कौनखबरिलाइ जानकी दिखाई इतिसंदेह करि पुनः ऋक्षजामवंत प्रचारि गतिगह हनुमान्जी में जैसेवेग सोगतिचाल्त है ताको ललका- रिकहें किहेहनुमंत खहिं समुद कहा हे हनुमन् तुम्हारे बल वेगताके आगे इस समुद्रकी कौनगनती है सुगम नाँघिसक्तेहौ तौ तुमक्यों चुपबैठे हौ इतिजबसब हालकहि गीधपतिगयो तबसब वानर परस्पर इसप्रकार वार्ताकीन्हे जो पूर्वकहि आये हैं ३ । १९ ॥ कुंडलिया ॥ पावहिं ध्यान बिरंचिनहिं परब्रह्म निरुपाधि । शिवध्यावत ज्यहिनेमकरि योगिन अगम समाधि ॥ योगिन अगम समाधि निगम ज्यहिअंत न पावत । लोमशशु- क सनकादि शेष शारदगुण गावत ॥ गावत शास्त्रपुराण प्रवर्पण गिरिशुभ ठावहिं । बैजनाथ स्वइस्वामि कपिन सियशोध पठावहिं १ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथ बिरचितेकुंडलिकारामायणप्रदीपिकाटीकायांकिष्किंधाकाण्डंसम्पूर्णम् ॥

अथसुन्दरकाण्डप्रारम्भ ॥

कुण्डलिया ॥

मू० । भयोहेमगिरिकोशिखर सुनतऋक्षपतिवयन । चढ़्योतम
किभूधरअधरफरकिअरुणकरिनयन १ अरुणनयनभुज
दण्डमसकिभूधरजवचंप्यो । जलपतालकोकढ़्योशेषक
च्छपपरकंप्यो २ कंपिशेषशिरनमिगयोकूदिचल्योबलवंत
फिरि।मारिदुष्टगिरिपरसिपगभयोहेमगिरिकोशिखिरि३।१

दो० । सिय रघुवरपद उर धरे गुरुपद शीशनवाय ॥
बुधिवल सुन्दर काण्डको टीका रचौंबनाय १

टी० । ऋक्षपति वैन सुनत हेमगिरि शिखर सम भयो ऋक्षनकेपति
जामवंत तिनके वचनसुनतही आपने वलकी सुधि ह्वै आई ताते करुणा
सवमें देखि वीररस उदय भयो ताते हनुमान्जी कैसेभारी ऊँचे प्रकाश-
मानह्वैगये यथा सुमेरु गिरिको शिखरऊँचा कँगूरा पुनः तमकि भूधर
चढ़्यो वलकरि उचकि एकऊँचे पहाड़पर चढ़िगये पुनःअधरओष्ठ फरकि
उठे नयन अरुणकरि प्रथम पिंगलनेत्र रहे ते लालकरिलिये ये रौद्ररस
के अनुभाव हैं भाव क्रोध ह्वैआना अर्थात् सब कपिन में करुणा देखे ता
समय जामवंतके वचन प्रचारकविभावपाय शीघ्रकाज करिवेकी उत्साह
स्थायीभई ताते वीर रसके अनुभाव ते देह विकासमान भई पुनः कार्य्य
करिवे में राक्षसविघ्नकारी हैं तिनकी सुधि विभाव पाय क्रोध स्थायी
ते रौद्ररस के अनुभावते ओष्ठ फरकिउठे नेत्रलाल भये १ अरुणनयन
करि भुजदंड मसकि जवभूधर चप्यो अर्थात् भारी शरीर महावल
के भरे पुष्टभुजनसों तथा पांयनसों धरि दवायकै जव फांदे तव भूधर जो
पर्वत सो मसकि ठौर ठौर फाटि गयो अरु चप्यो पृथ्वीमें समाय गयो
ताते पाताल को जलकढ़्यो ऊपर निसरि आयो पुनः पृथ्वीथांभे जो क-
च्छपजीपर शेपर हैं ते काँपि उठे २ कैसे शेष कांपे शिर नमि गयो भूमि

सहित शेषको शिर नीचे को नय गयो फिरि बलवन्त हनुमानजी कूदिके आकाश मार्गचल्यो तहां सिंधुमें एकदुष्ट राक्षसी सिंहिकारहै सो पछाहीं गहिलिया ताको मारि पुनः गिरिपरासिसहिताने हेतु मैनाक गिरिसमुद्रमें उतराय आवातापर पांवधरि हेम गिरि को शिखरसम भयो भारी रूपते पुनः बेगसहित चले ३ । १ ॥

मू० । पटकिलंकिनीबामको पैठ्योसियहितबीर । लखीनपुरसिय घरघरन खोजिअमितरणधीर १ खोजिअमितरणधीर बि भीषणभेदबतायो । गयोबाटिकासीय तहांपुनिरावणआ यो २ रावणआयोदेखिकपितरुबैठोविश्रामको । कहेबचन रावणसुने पटकिलंकिनीबामको ३ । २ ॥

टी० । लंकिनी बामको पटकि सिय हित बीर पैठ्यो पुरमें पैठतहीं लंकापुरी स्त्रीरूपते रोका ताको मुष्टिकमारि पृथ्वीपै गिराय पुनः महाबीर जानकीजी के ढूंढ़बे हेतु लंका पुरीमें पैठे घरघरन खोजि रणधीर अमित भये पुरमें सियन लखी यद्यपि हनुमानजी रणमें धीर्यवान हैं परन्तु एक एक घर ढूंढतसंते अमित अर्थात् मनते हारिगये काहेते लंकापुरभर में जानकीजी कहौं न देखिपरीं १ जब पुरमें ढूंढ़ियके तब बिभीषण भेद बताये अर्थात् रामनामांकित द्वार तुलसीके वृंदहरि मंदिर इत्यादि देखि साधुजानि पहिचान करि पूछे तब बिभीषण भेद बताये अर्थात् पुर में नहीं हैं अशोक बाटिकाको जाउ जहां श्रीजानकीजी रहैं त्यहि अशोक-बाटिकाको गयो तहांकछु वार्त्ता न करनेपाये ताही समय रावण आयो २ जबरावणआयो ताको देखि कपि हनुमान्जी विश्राम को तरु अर्थात् जाकेतरे जानकीजीको विश्रामरहै त्यहिवृक्षपरबैठेपल्लवमें छिपे रावणके कहे बचननकोसुने इत्यादि लंकिनी बामको पटकि पुरमेंजाय ऐसेकार्य किहे ३।२ ॥

मू० । सियउत्तरताकोदयो गयोसदनमतिमंद । सियदुखलखिदै मुद्रिका देखीमारुतनंद १ देखीमारुतनंद जानकीकथासु नाई । मातुधरियमनधीर कह्योनिजमुखरघुराई २ रघुरा ईआवनचहत कीशकटकदलबलभयो । मृतसमानतेरोक टक सियउत्तरताकोदयो ३ । ३ ॥

टी० । जब रावण अनेक भयदायक अनीति वचनकहा ताको सिय उत्तरदयो रावणके जो वचनहैं तिनके प्रतिकूल कठोर वाणी ते जानकी जी जवाबदीन्हे तबसतिमंद रावण हारिमानि सदन आपने घरै चलोगयो तब सियदुखलखि मुद्रिकादै मारुतनंदलखी, जबअत्यंत दुखते अशोक वृक्षसों आगिमाँगे तबमुद्रिका डारिदीन्हे अरुप्रभु गुण सुनाय बुलायेपर आय प्रणामकरि कहे हेमातु मैं रामदूतहौं इतिमुद्रिकादै मारुतनंद हनुमान्जी निकटजाय देखी १ मारुतनंद निकटते विवर्ण दशाभी देखीपुनः जानकीजी आपनेदुःखकी कथासव सुनाई भावहमको एकपलक कल्प समानबीतत सोसुनि हनुमान्जी बोले हेमातु मनमें धीर धरिये काहेते रघुनाथजी निज आपने मुखते कह्यो है कि धीर्यराखि हैं २ काहेते धीर्य राखिये रघुनाथजी शीघ्रही इहाँ आवन चाहत पुनः कीश कटक बानरन कीसेना सोई समूहदल बलभये युद्धहेतु सहायकभये तिनसहित आयहैं सोसुनि हनुमान्जी को छोटारूप देखिसंदेह भई भाव ऐसे बानर निशाचरनसों कैसे युद्धकरिसकिहैं इसहेतु जानकीजी पूछतीभई हे सुतकटकतेरेही समान है इत्यादिता हनुमान्को जानकी उत्तर दियो अर्थात् तुम्हारेही समानछोटे तनवाले बानरनकी सेना है ३ । ३ ॥

मू० । रामप्रतापसँभारिके भयोहेमगिरिरूप । रघुवरकृपाविचारु तृण होयवज्रअनुरूप १ होयवज्रअनुरूप सर्पशिशुगरुड़हिमारे । तिमिरखायशशिरविहि मशकगिरिहेमउखारै २ मशकसुमेरुउखारही समुद्रपिपीलनिवारिके । जरोजगत खद्योतवव रामप्रतापसँभारिके ३ । ४ ॥

टी० । संदेहभरे किशोरीजीके वचन सुनि ताको निवारणहेतु हनुमान्जी श्रीरघुनाथजी को प्रताप उरमें सँभारि हेमगिरि रूपभयो आपना रूप सुमेरु गिरिसम ऊंचाभारी करिदेखाये आपना मानप्रौढ़ता निवारण हेतुरामप्रताप उरमें सँभारिलिये पुनःबोले हेमातु छोटातनं प्रबलअथवा बड़ातन बली इत्यादिन विचारु रघुवर कृपा विचारुजाके बलते तृणवज्र अनुरूप होय अर्थात् राक्षस यद्यपि भारीतनके बड़ेबली हैं परंतु रघुनाथ जीते विमुख तिनको कुछ कियानहोइगा तथावानर यद्यपि लघुतन अबलहैं परंतु इनपर रघुनाथजीकी कृपातौ है ताते रामप्रतापते देखीदेखा राक्षसों को नाशकरि देइँगे काहेते तिनुका महाकोमल सोऊ रामप्रताप

ते वज्रसम कठोर है सक्राहै १ यथा तृणवज्र अनुरूपहोय तथाप्रभुकीकृ-पाते सर्प शिशु साँपको छोटाबच्चा सो गरुड़को मारिसक्ताहै तथा तिमिर अंधकारसो रविशशिहिखाय प्रभुके प्रतापते अंधकार सूर्य अरुचंद्रमा को खायसक्ता है तथामशक हेमगिरिहि उखारै प्रभुके प्रतापते मसाचहै सु-मेरु गिरिको उखारि डारै २ यथातुच्छ मसा महाभारी सुमेरु पर्वत को उखारि संकततथा प्रभुके प्रतापते पिपील समुद्र निवारिकै समग्र जल पानकरि चींटी समुद्रको सूखाकरिसक्ती है तथा हे माता तवतुम्हारे राम प्रतापते खद्योत जगजरो जुगनूचहै तौ जगत् भरेको जरायदेवै भावयापु के स्वामी को प्रताप सबल है ३ । ४ ॥

मू० । बूड़िजायँखुरकुंभजो शेषडारिमहिभार । वारिखायबड़वा अनल शंभुचंद्रशिरडार १ शंभुचंद्रशिरडारिचारिमुखसृष्टिनशावै । गिरिसरसागरडारिधरणितजिधीरजधावै २ धीरजधरणीउरतजै जलहिमिलैगिलिद्वैरजौ । रामबाणखलनाबचै बूड़िजायँखुरकुंभजौ ३ । ५ ॥

टी० । पुनः हे माता कुंभजौ खुरबूड़िजायँ अर्थात् जे समुद्र पीगये ते कुंभज अगस्त्य ऋषिचहैं गौके खुरमें बूड़िजायँ पुनः जेसदा भूतल को शीशपर राखते है ते शेषचहैं महिभूमिको भारडारिदेवैं पुनः बडवा अनल समुद्रमें सदाजल को भस्म करत ताको वारिजलचहै खाय अर्थात् बुझाय डारै पुनः जाको सदाधारण किहेहै तिसचंद्रमाको शंभुचहैं शीशते उतारि भूमिपरडारिदेवैं १ यथाशंभु शिरते चंद्रडारि देवैं तथाजे चराचर को उ-पजावनेवाले चारिमुखजो ब्रह्मातेचहैंसृष्टिकोनशावैंनाशकरिदेवैं पुनःधीर्य किहेपृथ्वी चराचरको शीशपर राखेहैताकी प्रतिकूल गिरिजोपर्वत सरजो तडाग सागर जो समुद्र इत्यादिको डारि धरणि धीरजतजिधावै अर्थात् पर्वतादिको डारिदेवै तथा जौनेधीर्यते सदाथिररहतीहैतिसधीर्यको त्यागि धरणिजो पृथ्वी सो धावति फिरै २ यथा धरणी उरअंतरते धीर्यतजै तथा द्वैरजौजलहिमि गिलिलै धूरिकी द्वैकणचहैसबजल अरुपालाको गिलिलै लीलिलेवै अर्थात् द्वैरजकणेचहैं ब्रह्मांड भरेके जलपालाको शोषिलेवैं इत्यादि सहित कुंभजचहै गायखुरमें बूड़िमरैं इति सब आश्चर्य चहैहोवैं परन्तु रामबाण खल न बचै जापर रघुनाथजी बाणसाधैं वह दुष्ट किसी भाँति न बचिसकै ३ । ५ ॥

मू० । मातुदेहुआयसुमुदित लखौंबाटिकाजाय । सुंदरफललागे
बिटप भोजनकरौंअघाय १ भोजनकरौंअघाय जानकीउ
त्तरदीन्हो । सुतरखवारेप्रबल पवनपरवेशनकीन्हो २ पव
नशूरपरवेशनहिं लखिनसकहिंरविशशिउदित । कहकपि
यहभयतनकनहिं मातुदेहुआयसुमुदित ३ । ६ ॥

टी० । हनुमान्‌जी बोले कि हेमातु मेरे भूखलगी है ताते मुदित आ-
यसु देहु जाय बाटिका लखौं आनंदमनते आज्ञादीजिये तौ जाय इसबाग
में देखौं कौनभांति देखौं बिटपवृक्षनमें सुंदर फललगे हैं तिनको तूरि
अघायकै भोजनकरौं १ जब हनुमान्‌जी कहे कि बागमें जाय मैंअघायकै
भोजनकरौं तापर जानकीजी उत्तर जवावदीन्हो सुत रखवारे प्रबल हे
पुत्र इसबागमें प्रकर्ष करिकै बलीवीर रखावनेवाले हैं जिनकी भयते अन्य
जीवकी कोकहै जामें पवन परवेश न कीन्हो पैठि न सक्यो वेगते बयारि
नहीं जाइसकी है २ जिसबागमें पवन ऐसे बली शूरबीरकी प्रवेश नहीं
तथा रविजो सूर्य शशिजो चन्द्रमा येभी उदितभये पर लखिनसकहिं परि-
पूर्ण दृष्टिते देखिनहीं सक्तेहैं अर्थात् दलफल गिरिजानेकी भयते पवन
नहीं पैठत तथा पल्लव मुर्झाय जानेकी भयतेसूर्य अधिक तापनहींकरते
हैं तथापालाते मारिजानेकी भयते चन्द्रमा अधिक शीतनहीं करिसक्तेहैं
तिसबागमें तुम अकेलेजाय फलखाय पुनः कैसे कुशल सहित बचिसक-
हुगे सो सुनि कपिहनुमान् कहे कि हेमातु जोतुम मुदित आनन्द मनते
आयसुदेहु तौ यहराक्षसोंकी भय मोको तनकौ नहीं है मेरा क्याकरि
सक्ते हैं ३ । ६ ॥

मू० । करिप्रणामकूद्योसुभट लग्योफूलफलखाय । मूलचलावैस
मुदमहँ रक्षकपहुँचेजाय १ रक्षकपहुँचेजाय मर्दिमहिगर्द
मिलाये । पुरीपर्‌योअतिशोर अक्षरावणपठवाये २ अक्ष
वृक्षलैकपिहन्यो मेघनादआयोविकट । भिरेप्रबलरघुपति
सुमिरि करिप्रणामकूद्योसुभट ३ । ७ ॥

टी० । आज्ञापाय जानकीजीको प्रणामकरि पुनः सुभट हनुमान् बाग
में कूद्यो फूलफल खायलग्यो पुनः मूलजर सहित वृक्ष उचारि समुद्र
महँचलावैं फलखाते वृक्ष उचारते देखिजाय रक्षक पहुँचे १ जब रखवार

जाय निकट पहुँचे तिनहिं हनुमान् महिमर्दि भूमिपर मींजिमारि गर्दमें मिलाय दीन्हे जब बहुत मारेगये घायलजाय खबरिकीन्हे तब पुरीपरयो अतिशोर लंकापुरीमें अत्यंत हल्लामचा तब अक्षरावण पठवाये हनुमान् के पासको रावणने अक्षयकुमारको पठावा २ कपिवृक्षलै अक्षको हन्यो अक्षयकुमारको आवतदेखि कपिहनुमान्ने वृक्षप्रहारकरि वाको मारिडारे ताको मरण सुनि रावणके पठायेते विकट कठिनयोधा मेघनाद आयो ताकोदेखि रघुनाथजीको सुमिरि जानकीजीको प्रणामकरि पुनः सुभट उत्तमबीर हनुमान् कूद्यो तब प्रबलभिरे प्रकर्प करिकै बली दोऊ भिरे युद्धकरने लगे कोऊ किसीको जीति न सका ३ । ७ ॥

मू० । ब्रह्मबाणकपिसाधिकै धरिलैगयोबहोरि । रावणआगेकरि
दियो कहिकटुबचनकरोरि १ कहिकटुबचनकरोरिकहीरा
वणतबबानी । कोमर्कटइतकहां काहिबलफलकरहानी २
फलदलमूलविध्वंसिकरि रणकीन्होअवराधिकै । कहकपि
तवसुतछलकरयो ब्रह्मबाणकरसाधिकै ३ । ८ ॥

टी० । ब्रह्मबाण साधिकै बहोरि कपि धरिलैगयो जब किसीभांति न जीतिपाया तब मेघनादने ब्रह्मास्त्र संधानकियो ताकी महिमा विचारि हनुमान्जी ताकी चोट अंगीकारकरि मूर्च्छित ह्वैगिरे बहोरि कपिको धरि पुनः हनुमान्जीको नागफांसमें बांधि लङ्काको लैगयो करोरिन कटुबचन कहत संते लैकै रावणके आगे करिदियो १ तहाँ करोरिन प्रकारके अना-दर गारी निंदादि कटु बचन कहि पुनः सन्मुख बैठारि तब पुनः रावण बाणी कही कोमर्कट हेवानर तू कौनहै भाव क्या तेरा नामकहां तेआया है पुनः इत कहां इहांकौन हेतु आया है पुनः काहि बल फलकर हानि अर्थात् किसके बलते तू अभय ह्वै फल वृक्षादि तोरि हमारी हानि करि दिहे २ किस इष्टदेव को अवराधि पूजा जप तपादि करि वरदानादि वल किस देवतासों पाय तासों अभयह्वै फल दल मूल सहित विध्वंसि बागको नाशकरि पुनः बली बीरनसों रणयुद्धकीन्हे इतिकिसके बलतेसबकार्य्य कीन्हेंसो कहु इति रावण पूंछा तब कपिहनुमान् कहत हेरावण तव सुत तेरा पुत्र मेघनादने ब्रह्मबाणकर साधिकै हाथोंसों ब्रह्मास्त्र मारि मूर्च्छित भयेपर छलकिया भावमें चैतन्यनहींहोनेपायों नातरुनबांधिपावता ३।८॥

मू० । विधिहरिहरदिग्पालसब व्यालयक्षगंधर्व । पितृप्रेतपशुम

नुजजग सचराचरसुरसर्व १ सचराचरसुरसर्व गगनधर
णीगिरिघेरे । मैंतैंपुरपरिवार धामधनतियसुततेरे २ तिय
सुततेरेलोकसब भयेरहेपुनिहोहिंअब । तासुदूतज्यहिजग
सृज्यो विधिहरिहरदिग्पालसब ३ । ९ ॥

टी० । जो रावणने पूछा कि तू कोहै किसके बलतेअभयह्वै ऐसा उपद्रव किया तापर हनुमान् जी बोले कि विधि जे सृष्टि कर्त्ता हरि पालनकर्त्ता हर संहार कर्त्ता दिग्पाल इन्द्रादि सब दिशन के पति यावत् हैं ते सब तथा व्याल यथा शेष अनन्त वासुकि कर्कोटकादि नाग पाताल के पालनहारे पुनः यक्ष कुवेर की जाति गंधर्व तुंबरादि पितृ कश्यपादि प्रेत यमपुरमें यावत् हैं पशु कामधेनु आदि यावत् चतुष्पद हैं मनुज भूतलमें यावत् मनुष्यहैं तथा यावत् चर अचरहैं पुनः सुर देवता सर्व १ सचर अचर सुर सर्व तथा गगन जो आकाश धरणी जो भूमि गिरि सुमेरादि यावत् पर्वत हैं तिनको घेरे जो सातो समुद्रहैं इत्यादि यावत् सृष्टि रचना है इत्यादि जाकीमायाको स्थूलरूपहैतथासूक्ष्मरूप यथामैंमेरा तैं तेराइत्यादि जो पुर ग्रामादि परिवार बन्धु पौत्रादि धाम घरकी यावत् सामग्री धन मणि सोना चांदी आदि तिया स्त्री पुत्र इत्यादि यावत् तेरेहैं २ यथा तेरे तिया सुत अर्थात् स्त्री पुत्र धनादि को यथा तू आपना मानेहै तथा सब लोकके स्त्री पुत्रादिभये रहे पूर्व पुनि भविष्यमें होहिंगे तथा अबहैं इत्यादि विधिहरि हर दिग्पाल सबचराचरादिज्यहि जग सृज्योउत्पन्न कीन्हेउ तासु दूत में अर्थात् ब्रह्मा विष्णु शिवादि सब ब्रह्मांड जिनको उपजावा है ऐसे परब्रह्म सांकेतविहारी सोई रघुवंश में अवतीर्ण ह्वै पितु आज्ञा ते वनवास कीन्हें जिनकी स्त्री तुम हरि लायो तिन रघुनाथजी को मैं दूत हौं खबरि लेने हेतु इहां आयो हौं ३ । ९ ॥

मू० । अतिरिसपावकवारिकै तेलवस्त्रघृतबोरि । चढ्योअटारीक
नककी विधिशरकरतेतोरि १ विधिशरकरतेतोरिसकलपु
रदीन्हीआगी । क्षणमहँसबपुरवारिविभीषणभवननलागी
२ भवनभस्मभूषणभये समुदसुदर्पनिवारिकै । सियमणि
लैकूदतभयो अतिरिसपावकवारिकै ३ । १० ॥

टी० । नीतिमत दूतको मारना न चाहिये अरु अपराध बड़ाकिया इसहेतु,

रावण के रिस अत्यन्त है ताते तेल घृतसों वस्त्र वोरि लंगूरमें लपेटि पावक अग्नि सों वारिकै छोड़ि दिये तव विधिशर करते तोरि विधिशर जो ब्रह्मास्त्र वंधन रहा ताको करसों हाथन सों हनुमान् जी तोरि डारे पुनः कनक सोनेकी अटारी पर कूदि चढ्यो १ विधिशर ब्रह्मास्त्र हाथन सों तोरि जव अटारिन पर चढ्यो तव सकल पुर दीन्हीं आगी लंकापुर भरे में सर्वत्र आगि लगाय दीन्हे तव एक क्षणमें दशपलमें सव पुर वारि जराय दीन्हे एक विभीषण के घरमें आगि नहीं लागी और सव पुर वरि-गया २ भवन तौ वारिन गये जो मणिजटित भूषण रहे सो भी भस्म ह्वै गये पुनः सुदर्प समुद निवारिकै सुनाम सुन्दर दर्प कहीं अभिमान अर्थात् राक्षसन को दण्ड देने हेतु जो भारी करालरूप किहे तथा लंगूरमें जो प्रचण्ड अग्नि वरत रहै इत्यादि जो सुन्दर अभिमान रहा ताको समुद्र में निवारि मिटाय दीन्हें अर्थात् जल में पैठि अग्नि वुझाय डारे तथा भारी भयंकर रूप मिटाय छोटा रूप धरि लीन्हे इति समुद्र सुदर्प नि-वारिकै इत्यादि अत्यन्त रिसते हनुमान्जी पावक अग्नि ते लंका वारि पुनः सहिदानी हेतु जानकी जी सों चूड़ामणिलै पुनः समुद्र के इस पार आवने हेतु प्रणाम करि विदा ह्वै कूदत भयो ३ । १० ॥

मू० । करिप्रबोधसाथीसकल मधुवनकेफलखाय । हर्षिगहेप्रभुप
दकमल उरभेंटेरघुराय १ उरभेंटेरघुराय दीन्हमणिप्रभुहँ
सिलीन्ही । सियदुर्दशानिहारि पवनसुतप्रकटितकीन्ही २
प्रकटितकीन्हीसियदशा सुनतहालरघुपतिविकल । दिजय
करियसियआनिकै करिप्रबोधसाथीसकल ३ । ११ ॥

टी० । इसपारआय हनुमान्जी आपनेसाथी अंगदादि सकल वीरन को समुझाय प्रवोध कीन्हे भाव हम खवरिलै आये सव. धीर्य करो इनि कहिचले किष्किंधा समीपआय मधुवनके फलखाय सुग्रीवसहित प्रभुसंग पर जाय हर्षि प्रभुकेपद कमलगहे आनंदसहित साष्टांग प्रणामकीन्हे तव उरमेंलगाय रघुरायभेंटे १ उरछातीमें लगायभेंटि कुशलपूछि रघुनाथजी सवको वैठारि आपहूवैठे तवहनुमान्जी चूड़ामणिदीन्ह ताकोदेखि साँची खवरिजानि प्रभुहँसिकै हाथमें लैलीन्हे पुनः सियकी दुर्दशा जो लंकामें निहारिआयेहैं सो पवनसुत हनुमान्जी प्रकटित कीन्ही प्रसिद्ध कहि सुनाये २ हे महाराज शत्रु के वश कुवचननको सहन निशाचरिन की

साँसनिते दुर्बल मलिनवसन वृक्षतर बैठे बीतत इत्यादि दुःखदवशा जानकीजीकी जबहनुमान्‌जी प्रसिद्ध कहिसुनाये सोहालसुनि रघुनाथजी करुणाते विकलभये पुनः प्रबोध करि धीर्यधरि सुग्रीवादि सकल साथिन सों प्रभुकहे चलिये राक्षसनको विजयकरिये रावणादिकोमारि जानकीजी को पानिके दुःखमिटाइये ३ । ११ ॥

मू० । रामवचनकपिदलचल्यो दिग्गजअहिसकुचंत । भालुबली मर्कटसुभट यूथयूथबलवंत १ यूथयूथबलवंत अंतकोपा वहिलेखा । रामकटककोविभव रूपजानहिंजिनदेखा २ जिनदेखातेजानहीं नभअहिपुरभूतलहल्यो । समुदतीरडे रापरे रामवचनसुनिदलचल्यो ३ । १२ ॥

टी० । रघुनाथजीके वचन सुनतही कपि वानरनको समूहदल चल्यो जिनके भारते दिग्गज अहि सकुचंत भूमिको थाँभनेवाले दिशा गज हाथी तथा अहि शेषजी इत्यादि सकोचकरतेहैं भाव यह भार न थँभि सकैगो काहेते भालु जे ऋक्ष ते महाबली तथा मर्कट जे वानर ते सुभट बड़ेसुंदर बली योधाते यूथ यूथ सब बलवंतहैं १ एकजातिके असंख्यन एकत्र तिनको यूथकही ते यूथ यूथ बलवंत ऐसे समूहहैं जिनको लेखा गनतीकरि को अंतपावै भाव संख्या कोऊ नहीं पायसक्ताहै ताको अब कोऊ कैसेकहै काहेते रामकटकको विभवरूप रघुनाथजी की सेनाको ऐश्वर्यरूप सो जानै जो वासमयमें आपनी आँखिनते देखाहोय सो चहै किसीभाँति कहिसकै अब नहीं कहतेबनत २ जिन आँखिन देखाहोय ते वाको विभव जानै परंतु अब इतनी जानिये कि नभ स्वर्गलोक अहिपुर पाताल भूतल मृत्युलोकते सब हाल्यो अर्थात् सेनाके वेग तथा भारते तीनिहूंलोक हालिउठे इत्यादि श्रीरघुनाथजीके वचनसुनि वानरन को दल चल्यो जाय समुद्रकेतीर डेरापरे ३ । १२ ॥

मू० । वचनसुनतरावणकह्यो मंत्रीमित्रबुलाय । मंत्रकहौपूछत सबहि कह्योविभीषणआय १ कह्योविभीषणआय मंत्र मणिमानियमेरो । सीतहिसौंपहुजाय मिलहुरघुनाथसबेरो २ सुनिगुनिउठिलातनहत्यो मिलहिशत्रुकोउरदह्यो । च ल्योहृदयअनुमानकरि वचनसुनतरावणकह्यो ३ । १३ ॥

टी० । सिंधुपारसेनसहित रघुनंदन आयगयेइत्यादिदूतनते वचनसुनत रावण मंत्री मित्रनको निकट वुलाय वचनकह्यो कि मंत्रकहौ भाव शत्रु सेना निकट आयगई तासों क्या करना उचितहै सो विचारकरि मंत्र कहौ इत्यादि सवहिनसों पूछतैरहै ताही समयमें विभीषण आयकह्यो १ विभीषण आयक्याकह्यो मंत्र मणिमानिय मेरो हेमहाराज सबमंत्रन को शिरोमणि मेरावचन मानिये क्या मानिये कि रघुनाथको सबेरे मिलहु जाय सीतहि सौंपहु अर्थात् अवहीं सबेरहै विग्रह रात्री परिपूर्ण नहींभई ताते शुद्ध मनसों जाइ रघुनाथजीको मिलहु अरु विग्रहकी मूल जानकीजी तिनकोलैकै सौंपिदेहु तौ तुम्हारा सबभाँति कल्याणहै २ विभीषण के वचन सुनि उरदहयो पुनः गुनि उठि लातनहत्यो अरु कहयो कि तू जाय शत्रुको मिलहि अर्थात् रावणको सिद्धांत है कि मैं तामसहों भजन तौ ह्वै नहीं सक्ता है ताते प्रभु के हाथन प्राणतजि मुक्त होउँ इससिद्धांतके प्रतिकूल शुद्ध शरणागती उपदेश कियाइसहेतु विभीषणके बचन सुनतही रावणको हृदय क्रोधाग्नितेजरिउठा भावपात्र देखिताकी योग्य वस्तु धरना चाहिये मेरातामसी तनतामें शुद्धभक्ति कैसे ह्वैसक्ती ताते उपदेश उत्तम नहींहै इसकारण क्रोधकिया पुनः सबबात मनसे गुनि अर्थात् शुद्ध शरणागती योग्य विभीषण है सो भयवडरते सहज तौ जायगो नहीं तातेमैं अनादरकरि इसको खेदिपठावों तो भलीबातहै इति गुनि रावण उठि बिभीषणको लातनमारि पुनः कह्यो किशत्रुको तू मिलु जाइ भावप्रीतिभाव तेरा है तूजातेरी लोकहूपरलोकमें कुशल होइगी अरुमैं बैरभावतेहौं मेराकल्याण मरेपरहै इत्यादि वचनजब रावण कह्यो ताको सुनत विभीषण हृदयमें अनुमान करि भावप्रभुकी शरणेमें भलाहै इति बिचारि चल्यो ३ । १३ ॥

मू० । मनगलानिहरिहैंकवन चल्योताकिप्रभुपांय । दीनबंधुदाया हृदय लीन्हेतुरतबुलाय १ लीन्हेतुरतबुलाय तिलकपुनि निजकरसारयो । रावणपुरसबदियो मिल्योजबशीशउतारयो २ शीशउतारेशिवदयो तबपायेलंकाभवन । सोपुरधन पांयनपरत मनगलानिहरिहैंकवन ३ । १४ ॥

टी० । बराबरिको बंधु पुनः हितोपदेशदेतेमैं लातनमारयो इत्यादि जो मनमें ग्लानि है ताको सिवाय रघुनाथजी और दूसरा कौन है जो हरिहै

इति अनुमान करि प्रभुपाँयतकि रघुनाथजीके पदकमलनकी शरणागती में आपना कल्याणदेखि विभीपणचल्यो इहांआयेपर दीनवंधु दयाहृदय तुरतहिबुलायलीन्हेअर्थात् वंधुसमहित्तकरनेवालेदीनजनकेपुनःदयाहृदय मेंहै जिनके अर्थात् निर्हेतुदीननके दुखहरनेवाले श्रीरघुनाथजी विभीपण को आवन सुनतही तुरत आपने समीप को बुलायलीन्हे १ तुरतही बुलाय प्रणामकरते देखिहृदयमें लगाय मिलि कुशल पूछिसमीप बैठारे पुनः निजकर तिलकसारयो समुद्रते जलमँगाय रघुनाथजी आपने हाथ सों विभीपणके शीशमें राजसी तिलककरि दीन्हे पुनः रावणपुर सबदियो सो पुररावणकोकवमिल्योरहै जवशीशउतारयोशीशकाटिकाटिअनेकनवार शिवकेअर्थ हवनकरिदिये २ इसीभाँति अनेकनवार जब रावणशीशउतारे तापर शिवदियो तबलंकाभवनको विभव लंकापुरकी सब ऐश्वर्य रावण पायोरहै सो पुरधन पाँयनपरत सोई लंकापुरकी राज्यलंकापुरको सर्वस धन प्रणाम करत मात्रमें रघुनाथजी विभीपणको दैदीन्हे इत्यादि प्रभुको उदार स्वभाव विभीपण पूर्वहीं विचारि लिया कि बिनारघुनाथजी मेरे मनकी ग्लानिको हरिहै ३ । १४ ॥

मू० । सखानिकटबैठारिकै पूछीसागरपाय । केहिविधिउतरैकपि
कटक तेहिविधिकरियउपाय १ तेहिविधिकरियउपाय मंत्र
करिव्रततटकीन्हो । क्षुद्रनद्रवाहिंविशेषि तबहिंप्रभुधनुशर
लीन्हो २ धनुशरउरमारयोविकल मिल्योरत्नलैआयकै ।
पंथदेहिकपिकटककहँ सखानिकटबैठायकै ३ । १५ ॥

टी० । लंकाजानेकी राहकेबीचमें समुद्र मिल्यो विनाराको उतरेंकैसे आगे जायसक्ते हैं इति सागरपाय विभीपण सुग्रीव जामवंतादि सखाआपने निकट बैठारि प्रभुपूछी हे सखा कपिकटक वानरीसेना क्यहि विधि समुद्रके पारउतरै ताके हेतु जैसामंत्र कहौ तेहिविधिउपाय करिये १ जो कहौ ताही विधिकी उपायकरी इत्यादि जबप्रभु पूछे तबमंत्रकरि सबकी सलाहते सिंधुतट प्रभुव्रतकीन्हे अर्थात् राहमाँगने हेतु व्रतकीन्हे तीनि दिनप्रभुबैठे रहेतहाँ उत्तमहोय तौ विनती कीन्हे द्रवैमनपावैलै अर्थात् प्रसन्नहोइ अरु क्षुद्रजोनीचहै सोविनती कीन्हे विशेपि नद्रवै भावसाधारणचहै मानिजाय विनती कीन्हे निश्चयकरि नमानै काहेते जड़दंडदीन्हे शुद्धहोताहै यहविचारे तबहिं प्रभु धनुशर धनुप वाणहाथ में लीन्हों २

धनुष में शरबाण चढ़ाय उरमारयो बीचसमुद्र में मारयो ताकी अग्निते विकलरत्नलैआयकै मिल्यो कंचनथार में मणि मुक्तादि भरे भेंटहितनाथ में लीन्हे विप्ररूपते समुद्र आय प्रभुको मिल्यो तबसखासमसमीपालिंधु कोबैठारि प्रभुकहे कि कपिकटक उतरिबे कहँ पंथरास्ता देहि ३ । १५ ॥

मू० । नाथसुगममारगरच्यो जलमहिपावकपौन । विटपशैलसर जड़रचे इनकोसिखवतकौन १ इनकोसिखवतकौन करहुप्रभुएकउपाई । गिरिगणबाँधहिंसेतु नीलनलदूनहुँभाई २ दूनहुँभाईबांधिहैं शैलसकलमर्कटसच्यो । आपुप्रताप सहायमम नाथसुगममारगरच्यो ३ । १६ ॥

टी० । समुद्र बोला हे नाथ सुगम मार्ग आपही रचो है अर्थात् सुलभ सृष्टि उपजावने हेतु मार्ग आदि कारण पंचतत्त्व जड़करिआपही ने बनायाहै कौन पाँचतत्त्व कैसे जड़हैं यथा जल पावक जो अग्नि महि जो पृथ्वी पवन आकाश इत्यादि कारणते विटप जो वृक्ष शैल जो पर्वत सर तड़ाग समुद्रादि सब जड़रचे कौनभाँति जड़ यथा जलको जिसनारी में लै चलौ तहाँ तौ न जाय अरु स्वइच्छित पर्वत फोरिजात तथा पृथ्वी जहाँपरि खादि खोदौ सो तोपिजाइ स्वइच्छित गुम्भज भीटखुदि जातेहैं अग्नि बारेते सूखे ईंधनमें नहींबरत स्वइच्छित ओदा वनजराय-देत पवन जहाँ चाहौ तहाँ नहीं आवत अनचाहत मंदिरमें प्रवेश करि जात इत्यादि सबमें जड़ता आपहीकी बनाई है तिनको आपही चहौ सिखावो और कौन सिखाय सक्ता १ इनको कौन सिखावत भाव और के योग्य यहकाम नहींरहै आपुने मोको सिखावन दियो सोतौ उचितहै हे प्रभु अब मेरे कहते एक उपायकरहु कौनभाँति नील नल दोनों भाई लरिकाईमें मुनिते आशिषपायाहै इनके करपरते शिला जलमें नहींबूड़ते हैं ताते दोऊभाई गिरिगण पहाड़ समूह लैलै सेतु बाँधहिं २ नल नील दोनोंभाई सेतु बाँधिहैं तथा सकल मर्कट शैलसचौ अपर सबवानर पर्वत लैलै आय ढेर लगावैं तिनकोलै सेतुरचैं इसभाँति हे प्रभु आपुके प्रतापते अरु मम मेरीसहायताताते सेतुबँधिजाई हेनाथ श्रीरघुनाथजी यहिभाँति सुगम मार्ग रचौ सहजही कपिसेन पारउतरि जाने हेतु मोपर मार्ग रास्ता बनाय लीजिये यही सुगम उपायहै ३ । १६ ॥

मू० । सुनिसाँचेसागरवचन कपिपतिकीशबुलाय । धावहुगिरि

मू० । तरुआनिकै नलहिदेहुसुखपाय १ नलहिदेहुसुखपायधर हिंगिरिसागरमाहीं । सुनिआयसुकपिवृंदचलेचहुँदिशिभ्र मनाहीं २ भ्रमनहिंशिरचंगुलकरहिं कोटिकोटिगिरिधररि चनादेहिंआनिनलनीलकहँसुनिसांचेसागरवचन३।१७॥

इति सुन्दरकाण्ड समाप्तः ॥

टी० । सागर समुद्रके कहेहुये साँचेवचन सुनि प्रभुकी आज्ञाते कपिपति जो सुग्रीवते सब कीश बानरनको निकट बुलाय ऐसा कहते भये कि भूतलपर सबदिशिको धावहु गिरि जो पर्वत तरु जो भारीवृक्ष इत्यादि जहाँ पावहु तहाँते उखारि आनिकै सुखपाय आनंद सहित नलहिदेहु १ तुम सब आनंद सहित आनि नलकोदेहु पुनः नल नील दोऊभाई गिरि सागर माहीं धरहिं सेतुरचना हेतु गिरि जो पर्वत तिनकोलैलै समुद्रमें जोरते चलेजाहिं इत्यादि सुग्रीवको आयसु आज्ञा सुनि कपिवृंद वानर समूह चारिहू दिशिको निशंकचले राक्षसनकी कछुभ्रमनहीं मनमेंकरते हैं अथवा भारी पर्वत उठावतमें गुरुताकी भ्रमनहीं करतेहैं २ नेकहू भ्रम नहीं करतेहैं किसी पर्वतको शिरपर धरिलेतेहैं किसीकोचंगुलकरहिं हाथ हीसे गहिलेतेहैं इसीभाँति रचना तमासामात्रमें कोटिकोटिगिरिकरोरिन पर्वत वानरलोग आनिकै नल नीलकहँदेहिं इसभाँति सागरकेसाँचेवचन सुनिसेतु बाँधते हैं ३ । १७ ॥ कुंडलिया ॥ पाहि कहत संकट हरत जासु नाम भवसेत । अर्थ धर्म कामादिजग मुक्ति सुगम यशदेत ॥ मुक्ति सुगम यशदेत धामत्रयतापनशावत । रूप सुगुण अवगाहथाह विधि शंभुनपावत ॥ पावत पारन शास्त्र नेतिनितनिगमकहाहीं । वैजनाथ स्वइराहमाँगि प्रभु सागर पाहीं १ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविर चितकुण्डलिकारामायणप्रदीपकाटीकायांसुन्दरकाण्डसमाप्तम् ॥

अथ लंकाकाण्डप्रारम्भ ॥

कुंडलिया ॥

मू० । बांधिसेतुमारगभयो चलीविपुलकपिसयन । गर्जहिंमर्कट भालुसब आयेराजिवनयन १ आयेराजिवनयन मदोदरि बहुसमुझायो । मृतकनरावणसुनै कालकेहिमतिनभ्रमायो २ मतिलैअंगदपुरचल्यो शुभउपदेशनकोगयो । चेतुचेतु करिहेतुनिज बांधिसेतुमारगभयो ३ । १ ॥

टी० । समुद्रमें सेतुबँधि सुन्दर मार्ग रास्ताभयो तापर विपुल बड़ीभारी कपि वानरन की सेन चली तामें मर्कट जो वानर भालु जोऋक्ष इत्यादि संगमें गर्जत संते राजिव कमल नयन श्री रघुनाथ जी समुद्रपार आये सुबेल पर डेरा कीन्हे १ जब सुन्यो कि राजिवनयन इस पार आइगये तब मन्दोदरी आपने पति को बहुत भांति ते समुझायो कि तुम रघुनाथ जी सों न जीति सकौगे ताते कछु बिगरा नहीं है जानकी जी को लैके जाय मिलौ इत्यादि बहुत कहे परंतु मृतक मौत वशते रावण कछु न सुना काहेते काल केहिकी मति न भ्रमायोजब मृतक काल आवता है तब किसकी बुद्धि नहीं भ्रमित करि देता है भाव हितमें अनहित अहित में हितमानि लेता है २ इहां मतिलै अंगद पुरचल्यो सबकी सलाहलै प्रभु आज्ञा दिये ताते अंगद लंकापुरको चल्यो शुभ मंगलकारी उपदेश देने को रावण के पास गयो पुनः निज हेतु जिस काजको गयेहैं तिस आपने प्रयोजन साधने हेतु रावण प्रति अंगद बोले कि चेतु चेतु सेतुबांधि मारग भयो अर्थात् तेरा बड़ा रक्षक समुद्र रहै तामें सेतु बँधि सुगम रास्ता ह्वैगया आजु सेना उतरि आई ताते चेत करु आपना हित समुझि जानकी जी को दै प्रभु को मिलौ तौ कुशल नातौ सब मारि डारे जाहुगे ताते चेतु ३ । १ ॥

मू० । रुंडमुंडसागरपरैरामबाणपरचंड । मधुमुरबालिबिध्वंसि ज्यहि खरदूषणबलवंड १ खरदूषणबलवंड खंडिताडका सुबाहै । सागरसडरितभयो देखुमारीचकहांहै २ कहांक

हांतर्कसपर्‌यो बारबारउठिउच्चरैं । मिलौजायसियलायसँग रुंडमुंडसागरपरैं ३ । २ ॥

टी० । पुनः अंगद बोले हे रावण जो न चेतकरिहै तौ रघुनाथजीकेबाण ऐसे प्रचण्ड तेजवन्तहैं जिनकेलागेते तुम्हारे रुण्डते भिन्नह्वै मुण्ड उड़िकै सागर में परेंगे कैसे बाण प्रचण्ड हैं ज्यहि बाणनते मधु पूर्व दैत्य तथा मुर अरुवर्त्तमानमें वालि ऐसा वली पुनः खरदूषण ऐसे वलवंड तेजवन्त वली इत्यादि सबको विध्वंसि क्षणमात्रमें नाशकरि दीन्हे १ यथा खरदूषण बलवंड तथा ताडका सुबाहौ महाबलीरहे तिनहूंको खंडि एकहीएक बाणते प्राणघात कीन्हे पुनः सागर सडरितभयो जिनके बाणको प्रतापदेखि समुद्र डरायउठो विप्ररूपते आइमिल्यो पुनः जाको संगहीलैगयो तिस मारीचको देखु कहांहै भाव वाकोभी एकही बाणते मारे २ अब तेरे हेतु प्रभुके तरकसमें कहां कहां पर्‌योहै अर्थात् रावण कहां है कहां है इत्यादि शब्द बारंबार तरकसमें बाण उच्चारकरि उठते हैं भाव अब तेरे शोणित के प्यासते बाण तलमलाते हैं ताते जानकीजीको संगलैके जाय प्रभुको मिलौ नाहींतौ रुंडतेकटिकै तुम्हारे मुंड सागरमें उड़िकै परैंगे ३ । २ ॥

मू० । मैंरघुवरकोदूतहौं तूनिशिचरकुलराय । सेनसहितलागौ सुभट सकलउठावोपांय १ सकलउठावोपांय वचनहारेप्रणरोप्यो । शेषशीशमेंचोटभई अंगदजवकोप्यो २ अंगद पांवउखारियो कहरावणभटयूथहौं । हारेभटरावणउठ्यो मैंरघुवरकोदूतहौं ३ । ३ ॥

टी० । अनेकप्रति उत्तरहोत संते जब रावण प्रभुकी निंदाकिया तब कोपि अंगद हाथ पटके तब भूमिहाले ते रावणके मुकुटगिरे सो चारि अंगद उठाय प्रभुपासको फेंकिदिये तापर रावण सक्रोधित बोला हेसुभटौ इस बंदरको मारौ तापर अंगद बोले कि मैंतौ रघुनाथजीको दूतहौं अरु हे रावण तू निशाचर कुलभरेको राजा है भाव मेरीतेरी समता नहीं है परंतु निशाचरी सेना सहित यावत् सुभट बड़ेबड़े वली तुमहौ ते सकल लागौ मेरापांव उठावो १ काहेते सकल पांव उठावो वचनहारे प्रणरोप्यौ भाव मैं यह प्रणकिहे वचन कहताहौं जो मेरापांव उठायसकौ तौ सेन सहित रघुनाथजी हारिगये लौटिजायँ इति प्रणकरि अंगद जबकोप्यो

क्रोध सहित पाँवरोप्यो तवभूमि नीचे को दवी अत्यन्त भारते शेष के शीश में भारआयो ताते चोटभई शिर पिराय उठ्यो २ अंगद के वचन सुनि रावण कहत आपनी समाज में भटयूथहौ अत्यंत वली योधा झुंडन बैठेहौ ताते अंगदको पाँव उखारिये आव पाँवपकरि उठाय याको पटकिडारौ सोसुनि मेघनादादि वलीवीर उठावनेलगे किसीकोउठावा न उठिसका जबसबै भटवली योधाहारे छोड़ि छोड़ि अलग वैठे तवरावणउठा जब पाँवपकरनेलगा तब अंगदवोले कि मैं रघुवरको दूतहौं आवमेरे पद गहे तेरा बचाव नहीं है इसीभाँति रघुनाथजीके पदगहु तौ तेरे अपराध क्षमाकरैंगे वचिजाइ है ३ । ३ ॥

मू० । मेरुहल्योपगनहिंहल्योअस्तहल्योगिरिशृंग । उदयशैल
कंपितभयोमंदरहरागिरिभंग १ मंदरहरगिरिभंगसप्तपाता
लबिहाले । सप्तसमुद्रउच्छलतकमठदिग्गजादिशिचाले २
चालेदशकंधरबदनलंकसदनढहिढहिचल्यो । थकेजके
सबदनुजभटमेरुहल्योपगनहिंहल्यो ३ । ४ ॥

टी० । मेरुहल्यो पगनहिंहल्यो अर्थात् इधर अंगद पावँधरि दबाये उधर महाबली मेघनादादि उठावनेलगे दोऊ दिशिके जोरते सुमेरु पर्वत तकहालि उठ्यो अरु अंगदको पाँव न हाल्यो क्याक्या हाल्यो जहाँ सूर्य अस्तहोतेहैं त्यहिगिरि पर्वतके शृंगहाल्यो तथा जहाँ उदय होतेहैं सोऊ शैल पर्वत काँपि उठ्यो तथा मंदराचल अरु हर गिरि कैलास सो भी भंग टूटि फूटिगयो १ यथा मंदर हरागिरि भंगभयो तथा सप्तपाताल बिहाले पातालादि नीचेके सातौलोक विशेषिहाले अथवा तहाँके वासीविकल बिहालभये तथा सातौ समुद्रनकोजल ऊपरकोउछरत तथा कमठ कच्छप अरु भूमिथाँभनेवाले दिशागज सोभीचाले हालिडोलिगये २ दशकंधर बदनचाले रावणके मुख हालिउठे तथा लंक सदन ढहिढहिचल्यो लंका पुरी ऐसीहाली जाते मंदिर गिरिपरेपुनः दनुजभट राक्षस योधा उठावनमें थकिकै जकिगयो जड़वत् वैठि रहिगये इत्यादि मेरुहल्यो अंगदको पावँ नहींहल्यो ३ । ४ ॥

मू० । हारिगयेदलबलअसुरचल्योबालिसुतवीर । मुकुटधरेप्रभु
पाँयतर मिलेहर्षिरघुवीर १ मिलेहर्षिरघुवीरबालिसुतका

रणभाख्यो । गढ़घेरयोकरिमंत्र जहांलायकत्यहिराख्यो २ राखिवीरपुरभयदयो भयोलंकअतिप्रवलजुर । भयोयुद्ध क्रुद्धितसमर हारिगयेदलवलअसुर ३ । ५ ॥

टी० । असुरन को दल अनेकभाँति वलकरिकै हारिगयो पाँवनउठा तव वालिसुत अंगदवीर लंकाते चल्यो इहाँआय मुकुटधरे प्रभुपायँत्तर भावलंका जीतिवेको चिह्न सूचितकरि रावणके मुकुट प्रभुकेआगे भेंटधरि प्रणामकीन्हे तव हर्षसहितरघुनाथजीउठिकै अंगदकोउरमें लगायमिले १ हर्षिमिले पुनः रघुनाथजी निकट वैठारि हालपूँछे तववालिसुतअंगद विग्रहको कारणभाष्यो आववि‍ना मारिडारे जीवतरावण जानकीजी को नदेइगो इत्यादिसुनि मंत्रकरि सुग्रीव विभीषण जामवंतादि विचारपूर्वक वार्त्ताकरि चारिअनीकपिसेना वनाय एक एक मुखिया अग्रणीयकरि लंका गढ़घेरयो पुनः जो जिसद्वारपर युद्धकरिवेलायकरहे ताको तहें राखे २ इत्यादि द्वारनपर वीरनको राखि पुरभयदयोलंका पुरपर भय दायक आचरण करतेभये अर्थात् पर्वतादि चलावनेलगे तिनकोडारि लंकमें प्रवलज्वरभयो पुरवासी डरायउठे ताते सबके उरमें अत्यंत दाहभई तव रावणकी आज्ञाते राक्षसीसेना अस्त्रधारणकरि सन्मुखजुटे क्रुद्धितयुद्धभयो दोऊ दिशिके वीरक्रोधभरे युद्धकरतेरहे परंतु समरभूमिविषे असुरराक्षसी दल वलकरि हारिगये भागनेलगे ३ । ५ ॥

मू० । मेघनादयोधासुभट लक्ष्मणहन्योविचारि । भईमूरछाप्रभु लखे हनुमतलीनप्रचारि १ हनुमतलीनप्रचारि औषधीले नपठायो । दुष्टहन्योकपिवीच शैलशिरराखिसिधायो २ शैलशीशदेखतभरत तानिमारिशायकविकट । रामकहतभे टतकह्यो लषणघायपीड़ासुभट ३ । ६ ॥

टी० । लक्ष्मणको सुभटविचारि मेघनाद योधाहन्यो अर्थात् जवकिसी भाँति वाणविद्यामें सावकाश नपाया तव विचार कियाकि सवल सुभटहै मेरेप्राणलेने चाहत इतिविचारि मेघनादने ब्रह्माकीदीन्हीशक्ति लक्ष्मणजी केमारिसिताके लागेमूर्च्छाभई हनुमान्जी उठायलाये प्रभुलखेरघुनाथजी मूर्च्छित देखि हनुमत प्रचारिलीन निकटको वुलायलीन १ हनुमान्जी को निकटवुलाय पुनः औषधीलेनेहेत द्रोणागिरिपरकोपठाये तहाँवीचमें

दुष्टकालनेमि वाधकभयो मुनिवेषते विलमावचाहा ताको कपिहनुमान् हने मारे पुनः शैल शिररास्वि औषधी न चीन्हे पहारै उखारि शीशपर धरिधाये वड़े वेगते चले अवधपुर के ऊपरह्वै निसरे २ शीशपर शैलदेखत भरत बिकट शायक तानि मारिदिये शिरपर पहार लिहे वड़े वेगतेआवत देखि भरत जाने कोऊ राक्षस है इसभ्रमते धनुपतानि कठिन वाण मारिदिये ताके लागत रामराम कहिगिरे मूर्च्छित ह्वैगये जवजगायकैराम जन जानि भेंटनेलगे तबहनुमान्कहे किलपण सुभटके घावकी पीड़ा है भाव रावण जानकी हरे ताहेत युद्धहोतमें लक्ष्मण घायल मूर्च्छित हैं तिनके हेत मैं औषधी लिहेजातारहौं याको विस्तार गीतावलीके तिलक में हम लिखा है ३ । ६ ॥

मू० । अतिसनेहभेंट्योभरत कह्योकीशचढुबाण । बिलमहोहि मारगअगम पठवौंतोहिंप्रमाण १ पठवहुँतोहिंप्रमाण समुझिपुनिकहतकपीशा । तवप्रतापतेनाथ जाउँजहँप्रभुजगदीशा २ प्रभुजगदीशबिचारिकै द्वउपगधरिपायँनपरत । धन्यधन्यहनुमंतजग अतिसनेहभेंट्योभरत ३ । ७ ॥

टी० । सवहाल सुनिरामदूत जानि हनुमान्जी को अत्यंत सनेह सहितभरत भेंटे पुनः कह्यो कि हेकीश हनुमान् कपि मेरे वाणपर चढु काहेते बन पहार समुद्रादि मारग अगम हैं तहाँ चलतमें ताको विलंब होई अरुबाणपर बैठुतो प्रमाण सत्यसत्य जानु शीघ्रहीतोहिं प्रभुके पास को पठवौं भावमेरे बाणपरजात विलंबनलागी १ जवभरतजी कहेप्रमाण तोहिं पठवौं तबबाणपर चाढ़ि समुझिलिये किजो कहतेहैं तामें संदेहनहीं है यहबिचारि पुनः कपीश हनुमान् कहतभये हेनाथ आपुके प्रतापतेजहाँ जगदीश प्रभु श्रीरघुनाथजी हैं तहाँ शीघ्रही जाउँगो कृपादृष्टि आज्ञादीजे २ प्रभुजगदीश रघुनाथैजीकी तुल्य भरतको विचारिकै दोऊपगधरि हनुमान्पायँन परतभये तबभरत अत्यंत सनेहसहित मिले भेंटि बिदाकीन्हे पुनः भरत बोले कि जगत् बिषे हनुमान्जी धन्यतर धन्य हैं भाव ऐसा रामसेवक दूसरानहीं है ३ । ७ ॥

मू० । लक्ष्मणउठिठाढ़ेभयो कीन्होवैद्यउपाय । सुनिरावणसंशय भयो भ्राताजायजगाय १ भ्राताजायजगायकहेकारणसब

जेते । तेहिंतबकह्योनमनुजब्रह्मप्रभुकपिसुरतेते २ कपि सुररघुबरब्रह्महैं त्यहिविरोधकोनाहिंगयो । यहकहिरणमंड लगयो लक्ष्मणउठिठाढ़ेभयो ३ । ८ ॥

टी० । औषधीपाय वैद्य सुषेणने उपाय कीन्ही तबलक्ष्मणजी चैतन्य ह्वै उठिठाढ़े भये सो हालसुनि रावण के मनमें संशयभयो भावमेरीसेना तौ आधीनाश ह्वैगई उहाँ लक्ष्मण घायलौभयेपर पुनः निरुजह्वैगये यही शोचमें जायभ्राता आपने भाई कुम्भकर्णको सोवतसंते जगायो १ जाय भाई कुंभकर्ण को जगाय पुनः रावण जेते कारणभये रहैं ते सबकहे अर्थात् अवधेश पुत्र रामलक्ष्मणस्त्री सहित वनकोआये शूर्पणखाको कुरूप किया खरादि को मारे तिनकी स्त्री मैंहरिलायों तेबानरी सेनाले सिंधुमें सेतु बाँधिआयपुर घेरेहैं वहुत राक्षस मारेगये इत्यादि सुने तबत्यहि कुंभकर्ण ने कह्यो न मनुज रघुनंदन प्रभुमनुष्य नहीं हैं परब्रह्म अवतीर्णभयेहैं तथाकपि सुरतेते जेतेबानर हैं तेते सबदेवता हैं बानर तनधारण कीन्हे हैं २ हे रावण कपिसुर हैं रघुवर परब्रह्महैं त्यहिसों बिरोधकरि को नहिंगयो अर्थात् ताडका सुबाहु बिराध खरदूषण कबंध बालि इत्यादि विरोध करिको नहीं नाशभया तैसे तुमहू जाउगे असकहि कुंभकर्ण रण मंडल समरभूमिको गयो ताको देखि युद्धहेत लक्ष्मणजी उठिकै ठाढ़े भये ३ । ८ ॥

मू० । मारिदुष्टरणदलिमलेसुरदुंदुभीबजाय । लक्ष्मणकोआयसु दियोताततलंकपुरजाय १ तातलंकपुरमाहिंहतहुरावणसु तजाई । आयसुशिरधरि लषणहत्योदेवनदुखदाई २ दुख दायीमारेसकलरावणमनशोचतचले । जयजयजयरघुबंश मणिमारिदुष्टरणदलमले ३ । ९ ॥

टी० । कुंभकर्ण संग्राममें बहुते वानरनको मूर्च्छित करि दिया तब रघुनाथजी सन्मुखआय मारिवाणन दुष्टको दलिमले कुंभकर्णके अंगअंग काटिडारे ताको मरणदेखि सुर देवता दुंदुभी नगारा आदि बजाये पुनः विभीषणते हालपाये कि मेघनाद यज्ञ करताहै ताकेमारनेहेत प्रभुलक्ष्मण जीको आयसुदियो क्या आज्ञादिये हेतात तुमहनुमानादिबीरनको संगलै कै लंकाको जाउ १ किसहेत लंकापुरकोजाहु हेतात लंकामें जायरावण

सुतहतहु रावणकोपुत्र मेघनादयज्ञकरताहै ताकोमारहु सो प्रभुकोआयसु शिरधरि लक्ष्मणजी उहाँजाय युद्धकरि देवन दुखदायी हत्यो देवतनको दुखदेनहारा जो मेघनाद ताको रणमें मारे २ दुखदायी राक्षस सकल मारे अर्थात् कुंभकर्ण मेघनाद महोदर प्रहस्त इत्यादि यावत् मुखिया दुष्ट रहे तेसब मारेगये तिनकोदेखि देवता सब आनंदह्वै कहतेहैं कि जे प्रभु दुष्टनको मारि रणमें दलमले सबको नाशकीन्हे ऐसे रघुवंशमणिकी जय होय जयहोय जयहोय तथा सेनप सुभट बंधु पुत्रादि मारेगये तिन को शोच दुख पूर्वक विचार करत रावण समर भूमिको चलतभयो ३ । ९ ॥

मू० । रणरावणआतुरचल्योअसुरसैनदलसाथ । करतयुद्धदेवन डरतधरतशरासनहाथ १ धरतशरासनहाथचलतमहिदि ग्गजडोलैं। क्षुभितउदधिजलशृंगशैलखसिमहिधरबोलैं २ महिधरबोलैंअतिसभयरविमुद्रितसबथलहल्यो । भुजप्र चंडरणमंडियो रावणरणआतुरचल्यो ३ । १० ॥

टी० । असुर राक्षसनकी सेना सब बटोरि पुनः दलसाजि अर्थात् हाथी घोड़े रथ पैदरादिको व्यूहबाँधि ताको साथले रावण रणभूमि को आतुर वेगसहित चल्यो कैसाहै रावण धरत शरासनहाथ देवनडरत जा समय हाथमें धनुष धारणकिया तासमय किसीदेवतनको डरनहींमानता सबसों अभय युद्धकरत सबको परास्त करिदिया १ पुनः शरासन धनुष हाथमें धारणकरि चलत समय महिदिग्गज डोलैं अर्थात् मृत्युकाल तौ आयगयो परंतु तेज प्रताप पूर्ववत् बनाहै ताते हाथमें धनुष बाणले जा समय समर भूमिको चल्यो तासमय माहि जो पृथ्वी तथा दिशा गज इत्यादि सब हालिउठे ताते उदधिजल क्षुभित समुद्रको जल उछरनेलगा तथा शैल शृंग खसिपरे महिधर बोलैं अर्थात् जब अत्यंत पृथ्वीहाली तब पहारनके जे ऊँचेकँगूरारहे तेतौ फाटि फाटिपरे तथा जो भारी महिधर पर्वतहैं ते फाटे तामें घोरशब्द होनेलगा २ अथवा महिधर पृथ्वीको धरण हारे दिग्गज शेषादि ते अति सभयबोलैं अत्यंतडरमानि चिल्लानेलगे इत्यादि पृथ्वी सब थल द्वीप द्वीपांतर सर्वत्र हालिउठी पुनः धूरि ऐसी समूह उड़ी जाके आवरणते रवि मुद्रित सूर्य मूँदिगये इसभाँति रावण आतुर चल्यो आय प्रचंड भुजदंडन सों रणमंडियो दंडसमान पुष्ट प्रचंड तेज

प्रताप बलके भरे जो बीस भुजाहैं तिनकरिकै प्रभुके सन्मुख निशंकयुद्ध करने लगा ३ । १० ॥

मू० । श्रीरामरावणायुद्धकोकोकबिपावहिपार । शेषशारदानिगमबिधिशंकरमुनिअवतार १ शंकरमुनिअवतार कल्पकोटिनकहिहारैं । बलदलसमरप्रचंडमंदजेकहनबिचारैं २ कहनबिचारैंमतिकवनसबकहिहारेबुद्धको । तुलसिदाससोकिमिकहैरामरावणायुद्धको ३ । ११ ॥

टी० । श्रीरघुनाथजी सों रावण प्रति युद्धको जो चरितहै सो अपार समुद्रवत्है ताको वर्णनकरत संते को ऐसा कविहै जो पारपावहि काहेते अन्य कविनकी कौन गनती है शेष ऐसे कवीश्वर शारदा ऐसी विद्वत्ती निगम जो वेद विधि जो ब्रह्मा शंकर ऐसे समर्थ तथा मुनि अवतार अर्थात् वेदको अवतार वाल्मीकि भगवत्को आवेशावतार व्यास इत्यादिकनको परिपूर्ण कहनेकी गति नहीं है १ कैसे गति नहींहै जो शंकरादि देवता मुनिअवतार इत्यादि कल्प कोटिन करोरिनकल्पतक कहतसंते हारिजायँ तबहूंपार न पावहिं तौनेचरितमें जैसासमूह दोऊदिशिदलरहा दोऊदिशि केसुभटनमें जैसाबलरहा तथा जैसे प्रचंड समरभई ताको जेकहनविचारैं कि हमकहिकै पारहोयँगे इत्यादि जेबिचारैंते मतिमंदहैंयथा मसाआकाश की थाह लीनचाहे यथा खद्योत लोकको तमनाश कीनचाहे तैसेही निर्बुद्धीहैं जे रामचरित परिपूर्ण कहने को विचारकरैं २ काहेते मंदहैं कि जाको ब्रह्मा शिवादि सबकहिहारे पार नपायेतौ दूसरा कौन ऐसा बुध विद्वान् कविहै अरुकौन ऐसीमति है जो कहबेको विचारकरै सोई श्रीरामरावणके युद्धको अपार चरित सो तुलसीदास प्राकृत जीव कयहि बिधि ते कहै ३ । ११ ॥

मू० । प्रभुमारचोप्रभुह्वैगयोताकोबरणैकौन । बलपौरुषअरुबीरताजानतरबिशशिपौन १ जानतरबिशशिपौनबड़ोरणरावणकीन्हो । निजदलसमगतिताहिपरमपदपावनदीन्हों २ पावनपदलखिदेवसबपुष्पवृष्टिदुंदुभिदयो । कराहिंबिनयसादरसकलप्रभुमारचोप्रभुह्वैगयो ३ । १२ ॥

टी० । प्रभुरघुनाथजी रावण को मारचो सोऊ प्रभुह्वैगयो अर्थात् बद्ध

जीवकोटी तेमुक्तह्वै नित्यमुक्त जीवकोटीमें प्रभुकीसमान ह्वैगयो ऐसेअगम ऐश्वर्य चरितको कौनऐसा कविहै जो वर्णनकरै भाव यामें किसीकीगति नहींहै पुनःजबरावण वर्त्तमान रहातासमयको बलपौरुष वीरता इत्यादि रविशशि पवन जानते हैं अर्थात् कैसहू कठिन कामपरै ताको करिडार नेमें श्रमनआवै ताको बलकही यथा कौतुकही कैलास उठायलिया पुनः पौरुषकही पुरुषार्थ को भाव कैसहू दुर्घटकार्य प्रारंभकरै ताको बिनापूरा करिलिहे छाँडैन यथा सब लोकपाल दिग्पालन को स्वाधीन करि राखा पुनः कैसहू सुभट सन्मुख आवै यावत् मरिनजाय तावत् युद्धमें उत्साह बनीरहै ताको वीरताकही सो प्रभुकेसन्मुख प्रसिद्ध देखिये इतिबलपौरुष वीरताजैसे रावणमेंरहेहैं सो रविसूर्य ऐसेप्रतापवंतते जानतेहैं भाव रावणके प्रतापकेआगे सूर्यनकोप्रताप मंदपरिगयापुनः शशिचन्द्रमा ऐसे प्रकाशवंत तेजानते हैं भावरावणके यशप्रकाशके आगे चंद्रमन्दपरिगये पुनः पवन ऐसे बलवंत ते जानते हैं भावरावण के बलको देखि पवन अबल ह्वै गये १ काहेते रविशशि पवन जानतेहैं कि रावण सबसों बड़ोरणकीन्हो अथवा सबको तौ स्वाभाविकही जीतिस्वाधीन किहेरहा ताते सबजान- ते हैं रघुनाथजीके सन्मुख रावण बड़ोरणकिया ताहि रावणको प्रभुनिज दलसमगति पावनपरमपददीन्हो अर्थात्जोयुद्धकरै ताको शत्रुमानिदुखद गतिदेना उचित अरुयुद्ध समय जो आपनी सहायताकरै ताको मित्र मानि सुखदगति देना उचित सो नहीं जो युद्धकरि शत्रुरहै ताहूकोआ- पनीसेनासम शुभगति कियेकौनभाँति यथासुग्रीवादि यावत्वानरऋक्षसे नासहायकरहे तिनसबको प्रभु आपनेसाथै परधामको लैगये तथापरिवार सहित रावण को इसी समय पावन परधामकोप ठैदिये ऐसेकृपासिंधु हैं २पावन पदलखि रावणको परमपद पावत देखि देवतासब पुष्पवृष्टि दुंदुभिदयो प्रभुपर फूलनकी वर्षाकरि नगारा आदि बाजाबजाये पुनः सकल देवगण विनय करहिं अनेकभाँति स्तुति करि पुनः कृपासिंधु उदारताकी प्रशंसा करते हैं हे प्रभु आपु रावण को मारयो सोऊ प्रभु भयो ३ । १२ ॥

मू० । सियसंकटदूरीकरयोराजाविभीषणदीन । सत्यसुयशकपि
कोकह्योशपथसीयशुचिकीन१ शपथसीयशुचिकीनचढेपु
ष्पकरघुराई । कपिसियलषणसमेतचलेसुरजयतिसुनाई २

जयजयप्रभुखलदलदल्योसुरमुनिद्विजमहिदुखहरयो। अमरनागभूतलसुखीसियसंकटदूरीकरयो ३ । १३ ॥

टी०। सकुल रावणकोमारि जानकीजीको जो संकटरहासोतो दूरीकरयो मिटाइ न दीन्हे पुनः विभीषण दीनहै शरणआयो ताको प्रभु लंकाकी राज्यदीन तथा कपिको सत्य सुयशकहयो आपने मुखते प्रशंसाकरि सुग्रीवादि वानरनको सुंदरयश आपने चरितकेसाथ सत्यकरिदीन्हे पुनः शपथलै सियशुचिकीन अर्थात् लंकामेंरहेकोक्षोभरहा सो अग्निमेंप्रवेशकरायजानकीजी को पावनकीन्हे १ शपथलै जानकीजीको पावनकरिरघुनाथजी पुष्पक बिमानपर चढ़े कौनभाँति कपिसिय लषणसमेत सुग्रीव हनुमान् अंगदादि यावत् मुखियाबानर बिभीषण जामवंत जानकी जी लक्ष्मणजी इत्यादि समेत अयोध्याजीको चले तासमय सुरजयतिसुनाइ इंद्रादि देवताप्रभुकी जयजयकार सुनायरहेहैं २ कैसे सुनावते हैं कि जिन रावण ऐसे खलको दलदल्यो सबको नाशकरि देवता मुनि ब्राह्मण भूमि इत्यादि सबको दुखहरयो ताते अमर लोक स्वर्ग नागलोक पाताल भूतल मृत्युलोक इत्यादि सबसुखी भये अरुजानकीजी को संकटतौ दूरि न करयो सबको सुखभयो ३ । १३ ॥

मू०। पूजाशंकरकीकरीसेतुसियादरशाय । पंचबटीकुंभजाहिमिलिअत्रिआदिऋषिराय १ अत्रिआदिऋषिरायमिलेअनसूयहिजाई। आशिषआयसुपायचलेआगेरघुराई २ रघुराईआयेतहाँ चित्रकूटमंगलथरी। पैअन्हायमुनिगणमिले पूजाशंकरकीकरी ३ । १४ ॥

टी०। सेतु सियदरशाय लंकातेचलिआय समुद्रमें जो सेतु बँधायेरहैं सो प्रभु जानकीजी को देखाये तहाँ उतरि रामेश्वर शंकरकी पूजाकरी पुनः आगेचलि पंचवटीको आये तहाँ कुंभज अगस्त्य आदि ऋषिन को मिले पुनः ऋषिराय ऋषिनमें उत्तम अत्रिको मिले १ यथाअत्रि तथा उनकी पत्नी अनसूया को जायमिले तहाँ प्रणामकरि आशिष पाय बिदा माँगि आयसुपाय रघुनाथजी आगेको चले २ मंगलथरी मंगलकारी जो प्रथमप्रभुको आश्रम जहाँरहै तहाँ चित्रकूटमें रघुनाथजी आये पयस्विनी

नदी में अन्हाय अपर मुनिगणन को मिले पुनः शंकर महादेव की पूजा कीन्हे ३ । १४ ॥

मू० । आयसुपायोमुनिदयो चलेहर्षिश्रीराम । यमुनहिपूजिसप्रेममयप्रमुदितकीन्हप्रणाम १ कीन्हप्रयागप्रणामिलेमुनिगणप्रभुजाई । करिमज्जनसियसहितविप्रमान्यताबड़ाई २ मानबड़ाईपूजिकै पुनिविमानआतुरगयो । मिलेनिषादहिगंगतटआयसुपायोमुनिदयो ३ । १५ ॥

टी० । मुनिवाल्मीकि को दियो पुरगमनको आयसुपायो तातें हर्षिकै श्रीरघुनाथजी चले आय यमुनाजी को प्रेमसहित पूजाकीन्हे पुनः प्रेममय प्रमुदित मनते प्रेमानंद समेत प्रणामकरि चले १ आय प्रयाग को प्रणामकीन्हे पुनः प्रभुजाय भरद्वाजादि मुनि गणनकोमिले पुनः जानकीजी सहित प्रभु त्रिवेणीजी में मज्जनकीन्हे पुनः विप्रमान्यता ब्राह्मणन को मान नम्रतापूर्वक दानदीन्हे पुनः कृपाकरि बड़ाई ऊंचापदकरिदीन्हे २ प्रयाग वासन को मानबड़ाईदै पूजिकै पुनः आतुर शीघ्रही विमान गंग तट शृंगवेरपुरको गयो तहां निषादराजको जाइ मिले इत्यादि मुनि के दिये आयसुपाइ शृंगवेर पुरतक आये ३ । १५ ॥

मू० । कपिहनुमंतपठाइयो भरतकुशलतादेखि । आवतसियलक्ष्मणसहित यहतुमकहौविशेखि १ यहतुमकहौविशेषिप्रातउठिभरतनिहारौं । पुरवासिनपुनि मिलौंमातुकोशोचनिवारौं २ शोचनिवारौंअवधकोसवप्रकारसमुझाइयो । भरतप्रबोधनहेतप्रभु कपिहनुमंतपठाइयो ३ । १६ ॥

टी० । हनुमंत कपिको प्रभु अयोध्याजी को पठायो क्या कहिकै हे हनुमान् अयोध्याजीको तुमजाउ प्रथम भरतकी कुशलता मनतनकी प्रसन्नतादेखि पुनः तुमयहबात विशेषिकरिकै कहौजाय किजानकी लक्ष्मण सहित रघुनंदन आवते हैं १ पुनः तुमजाय यहौ विशेषि करिकै कहो कि प्रातउठि भरत निहारौं अर्थात् आजुरात्री हम निषादराजके यहां वासकरब प्रभात उठिजाय प्रथम भरतको भेंटब पुनः पुरवासिन को मिलौंगा पुनः मातुको शोच निवारौं कौशल्यादि मातनको मिलि तिनको वियोग दुखहरिहौं २ पाछे अवधको शोच निवारौं अर्थात् पुरको राज्याभिषेक

हमत्यागि आयेरहैं ताते पुरी उदासीनहै सो राज्याभिषेक अंगीकारकरि अयोध्यापुरी को दुखहरिहौं पूर्ण आनंदित करिहौं इत्यादि सबबातें करि पुनः भरत को सबभाँति समुझायो भावअब किसी भाँतिको शोच मनमें नराखिहैं इत्यादि कहिपुनः भरतजी को प्रबोधकरने हेत रघुनंदन प्रभुने हनुमंत कपिको अयोध्याजी को पूर्वही पठाये ३ । १६ ॥

मू० । पुनिनिषादउरलाइयो रघुपतिकरुणापुंज । लैआयेमंदिरपरमसुजलधोयपदकंज १ सुजलधोयपदकंजरुचिरआसनबैठार्यो । धूपदीपनैवेद्यफलफलअंकुरधार्यो २ अंकुरखायेप्रेमयुतरामबहुतसुखपाइयो । प्रातसमाजबिमानचढ़ि पुनिनिषादउरलाइयो ३ । १७ ॥

टी० । हनुमानको अयोध्याजीको पठै पुनः निषाद उरलाइयो शृंगवेरपुरको आये निषादराजआय प्रणामकिया ताको उठाय रघुनाथजी उर छातीमें लगाय मिले काहेते करुणापुंजहैं अर्थात् सेवकके दुखते आपु दुखितह्वै वाको दुख शीघ्रही निवारैं ताको करुणा कही तिस करुणागुण के पुंजसमूहभरेहैं इहाँ निषाद नीचजातिसमाजमें महाराजसोंमिलनेको संकोचकिया इति आरतदेखि करुणापुंज सबके सन्मुख निषादको उरमें लगायो इत्यादि भेंटि पुनः निषाद प्रभुकोपरमसुंदरमंदिरकोलैआयो पुनः सुंदर गंगाजललै प्रभुके पदकमल धोये १ सुजलपदकंज धोय पुनः रुचिर सुंदर आसनपर बैठारे धूप दीपादि पूजनकरि नैवेद्यहित सुंदर स्वादिष्ठ फूल फल अंकुरादि प्रभुके आगे धर्यो २ अंकुरफलादि प्रेमसहित खाये पुनः प्रभु बहुतभांतिको सुखपाये रातिभरि विश्रामकीन्हे प्रातपुनः निषादको उरमेंलाय बिदाभये समाजसहित विमानपर चढ़ि प्रभु अयोध्याजीको चलते भये ३ । १७ ॥

मू० । भरतदेखिहनुमंतजब कृशशरीरदुखदीन । जटाशीशमुनिव्रतधरम प्रेमपांवरीलीन १ प्रेमपांवरीलीन रामसियवदन उचारो । कुशआसनआसीन बसनभूषणतजिडारो २ भूषणतजिभजिनामप्रभु अवधिअंतदिनआहिअब । अहह मोहिंधिक्धिक्कहत भरतदेखिहनुमंतजब ३ । १८ ॥

टी० । जब हनुमान् भरतजीको देखे कौनी दशाते बैठेहैं कृश शरीर

दुखदीन रघुनंदनके वियोग दुखते दीनहैं ताते शरीर भी कृश दुर्बल ह्वरहा है शीशमें जटा रखाये ब्रह्मचर्यादि मुनिनकैसो व्रतकीन्हे पुनः धर्म क्या धारण कीन्हेहैं प्रेम पाँवरीलीन पाँवरी जो प्रभुकीखराऊं तिनमें प्रेमसहित मन लगाये हैं १ यथा अंतरको प्रेम प्रभुकी पाँवरीमें लीन तथा राम सिय वदन उचारे सीताराम इत्यादि नाम मुखते उच्चारण करिरहेहैं अरु राजसी वसन भूषणादि तजिडारे अर्थात् जरी कौशेय आदि जामा पाग दुशालादि वसनकिरीट कुंडलमालादि भूषण त्यागिदिये वल्कलादि वसन धारणकिहे कुशासनपर आसीन बैठेहैं २ इसीभाँति भूषणादितजि विराग वेषते प्रभुकोनाम भजतेहैं पुनः विचारतेहैं कि अब आजु प्रभुकेआवनेकी अवधि वादेको अंतदिन है अबहीं रघुनाथजी नहीं आये तौ अहह मोहिं बारंबार धिक्कार है भाव मेरे हेत रघुनंदन वनवासकीन्हे ताते मेराजन्म वृथाही भया अरु अब जीवन राखना भी वृथाहै इत्यादि प्रेमकी दशईं दशा भरत में आइ चुकीरहै जासमय तैसेही जाय हनुमानजी देखे आधारभये ३ । १८ ॥

मू० । सुनहुभरतहनुमतकही आयेलक्ष्मणराम । सियसमेतमंगलकुशल जीतिअसुरसंग्राम १ जीतिअसुरसंग्राम देवसब स्वथलबसाये । राजविभीषणदीन्ह सुयशनारदशिवगाये २ नारदशारदशंभुशुक प्रभुकीरतिपावनलही । सोप्रभुआवतअवधपुर सुनहुभरतहनुमतकही ३ । १९ ॥

टी० । प्रेमसिंधु वियोगमें बूडतेरहें ताहीसमय आधारभये कौनभाँति हनुमान् कहे कि हेभरत सुनिये सिय लक्ष्मणसमेत रघुनाथजीआये कौन भाँति असुर संग्रामजीति राक्षसी सेनासहित रावणको रणभूमिमें नाश करि आपु मंगल कुशलसहित आवतेहैं १ असुरनको संग्राममें जीतिपुनः देव सब स्वथल बसाये जे रावणकी भयते भागे फिरतेरहें ते इंद्र वरुण कुबेरादि सब देवतनको स्वथल आपना जो वास स्थानरहा तहां अभय करि सबको बसाये तथा विभीषणको लंकाकी राज्यदीन्हे इत्यादि प्रभुके बाहुबलकरिकै धर्म स्थापनकी प्रशंसा इत्यादि सुयश नारदादि मुनि शिव आदि देवतागाये रहे हैं २ तथाजो प्रभुकीरतिलही अर्थात् जो अस्तुति दानादि ते प्रशंसा होती है ताको कीरतिकही इहाँ राक्षसन कोमुक्तिदान देवतनको अभयदान ऋषिनको सन्मान इत्यादिकी प्रशंसा

जो पावनकीरति प्रभुपाये ताको नारदादि भक्त मुनि शारदादि कोबिद शंभुआदि देवता शुकदेवादि परमहंस इत्यादि सबगावते हैं इत्यादिकही पुनः हनुमंत कहते हे भरत सुनिये सोई रघुनाथजी अयोध्याजी को आवते हैं २ ॥ १९ ॥

मू० । सुनतभरतआनँदलह्योपर्मभावतीबात । चकितथकितसु
खसपनधौंकहतकोईसाक्षात १ कहतकोईसाक्षातभरतपुनि
नयनउघारे । पुनिहनुमतकहरामअवधआयेसुखभारे २
सुखभारेउठिभरतकरहियेभेंटिआनँदगह्यो । अश्रुपातगा
तनपुलकिसुनतभरतआनँदलह्यो ३ । २० ॥

टी० । पूर्व बियोगदुखते दुखीरहैं जब हनुमान्जी के बचनसुने तबभरत आनँद लह्यो आनंदपायो काहेते पर्मभावती बात अर्थात मनभाई बातसुने तहाँ पूर्व थकित रहैं जब मनभाई बातसुने तब चकितभये अर्थात् अत्यंत आरतरहैं जब अत्यंत सुखकी बातसुने तब आश्चर्य लिहे आनंदभया इसहेतु बिचारकरत कि यह सुख सपनेभया है किधौं कोई साक्षात्कहत १ पूर्वमहादुखते नेत्रमूंदेरहे जब निश्चयजाने कि कोऊ साक्षात् कहत है तबपुनः जब भरत नयनउघारे तब हनुमतपुनः कहे कि भारी सुख सहित रघुनाथजी अयोध्याजी को आये इत्यादि प्रसिद्ध बोधकरि हनुमान्जी प्रणामकीन्हे २ जब निश्चय प्रभुकोआवनजाने तब भारीसुखसहित भरतउठिकरहियेभेंटि आनँदगह्यो करहाथनसों हनुमान् को उठाय हियेमें लगाय भेंटे रामदूत चीन्हि सत्यप्रभुको आवनजाने ताते पूर्वको दुखत्यागि आनन्द को पुष्टपकरे कैसे आनँदगह्यो गातन पुलकि अश्रुपातप्रेम उमँगि सर्वांग पुलकितभये अर्थात् रोमांच कंठाव-रोध तथा नेत्रनते आंसुगिरनेलगे इसभाँति हनुमानके बचनसुनत भरत आनंद लह्यो पायो ३ । २० ॥

मू० । आयेयहसंदेशलैकहादेहुँत्वाहिंतात । यहिपटतरत्रयलोक्य
नहिंकहीअमृतसमबात १ कहीअमृतसमबातरामासियकु
शलाचिशेखी । लक्ष्मणसहितसुक्षेमअवधआवततुमदेखी २
आवतदेखिविशेषितुमकहहनुमंतसंदेशलै । मिलबहुरिक
पिकंठलगिआयेयहसंदेशलै ३ । २१ ॥

टी० । भरतजी बोले हेतात हनुमान् यह अमूल्य संदेशले तुमआये तौ त्वहिं कहादेउँ कुछनहींदैसकाहौं तेराजन्मभरिऋणीरहौंगो काहेतेतुम अमृत सम बातकही अर्थात् इसीक्षण मेरे प्राणजातेहैं सो तुम्हारे वचनरूप अमृत श्रवण द्वाराउरमें जातही जीवनरहिगया इसहेतु यद्दिपटतर यहि संदेशके योगदेनेवाली वस्तु तीनिहूलोकमें नहींहै तो क्यादेउँ १ कैसी अमृतसम बातकही श्रीरघुनंदन जनकनंदिनी की विशेषि कुशल पुनः लक्ष्मण सुक्षेम सहित अवधकहँ आवत इत्यादि तुम देखिकै आय कह्यो इहाँ द्रोणागिरि लैजात समय हनुमान्जी कहिगयेरहैं कि जानकी हरिलैगया रावणताके युद्धमें लक्ष्मण घायलहैं येदोऊ शंकारहि सोमिटि गई इसहेत कहत कि प्रभुको आगमन कहेउ सो सुखद पुनः जानकी कुशल सहित संगहैं यह विशेषि सुखदताहू में लक्ष्मणजी सुकरी क्षेमसहितआवत तिनको देखिआइ आगमनशुभसुनाय अपूर्वआनन्द दीन्हेउ २ कैसा आनंद दीन्हेउ हे हनुमंत इहाँ को विशेषि करि प्रभुआवत हैं सो देखि तुमआययह संदेश कैसाकहा यथा उत्तम प्रदेश लैके मोको दियाप्रदेश कही भेंट सामग्री को जो राजादि को दीन्ही जात ३ । २१ ॥

मू० । अवधआयप्रकटीसबैगुरुपुरजनसमुझाय । मातुकुशल आयेलषणसीयसहितरघुराय १ सीयसहितरघुरायसजहु मंगलपुरनारी । बंदनवारपताकचर्मचामरगजभारी २ गजभारीरथतुरंगसंगसाजिभरतमंगलतवै । चलेनगरबाहिरमिलनपुरशोभाप्रकटीसबै ३ । २२ ॥

टी० । हनुमान् जी सों सबहाल सुनि भरत अवधमें आयसबै प्रकटी सबहाल प्रसिद्धकहे कौनभाँतिगुरु पुरजनसमुझाय प्रथमगुरुवशिष्ठजीसों कहे पुनः पुरजननसों कुशलप्रसन्नतापूर्वक आवनेको सबहाल समुझाय कैकहे पुनः कौशल्यादि के पासजायकहे कि हेमातु लषण जानकी सहित रघुनाथजी कुशल पूर्वक आये १ सीय सहित रघुरायपुर को आये ताते पुरकी नारी बुलाय मंगल साजसजो पुनः सेवकन अरुमंत्रिन सों कहेकि आंगनमें द्वारनपर वंदनवार बाँधो मंदिरनपर पताका रचौ मृगचर्म चामरादि एकत्रकरि धरो तथाजे भारीगज बड़ेहाथी २ भारीगज तयारद अरु बाजी जोघोड़े इत्यादि सबमंगल साज साजिसो सबसंगलै तब भरतजी प्रभुको मिलनहेत नगरते बाहिरचले तबप्रभुको आवत जानि पुरशोभा

प्रकटी सबै अर्थात् वनगमन समय जो शोभा लोप ह्वैगईरहैं ताते अबतक उदासी रहै अबशोभा प्रसिद्ध भयेते पुरमांगलिक देखिपरा २ । २२ ॥

मू० । भरतसंगहनुमंतलैदेखतगगनविमान । नगरनारिनरदेखिकैउतरेकृपानिधान १ उतरेकृपानिधानमिलेगुरुप्रथमगोसाँईं । आशिषदेयसनेहकुशलपूछीमुनिराई २ मुनिराईप्रभुभेंटिकैभरतहृदयभगवंतलै । अतिसनेहपूरेमगनभरतसंगहनुमंतलै ३ । २३ ॥

टी० । हनुमान्‌जीको संगलै आगेजाय भरतजी गगनआकाशमें प्रभुको विमान देखते हैं पुरसमीप आय विमान भूमिपर उतर्‍यो तथानगर के नारि नर ठाढ़े देखिकै रघुनाथजी विमान परते उतरे काहेते कृपानिधान हैं अर्थात् भूतमात्र के रक्षाकरिबे को आपही को समर्थ मानना सोई कृपा गुण है यथा भगवद्गुणदर्पणे ॥ रक्षणेसर्वभूतानामहमेवपरोविभुः । इति सामर्थ्यसंधानं कृपासापारमेश्वरी ॥ इति कृपागुण के भरे स्थान हैं सो सबकी रुचि अनुरूप मिला चहते हैं ताते उतरिकै भूमिपरचले १ कृपा निधान विमानते उतरे पुनः गोसाईं सबको पालनहारे स्वामी रघुनंदन प्रथम गुरु बशिष्ठको प्रणाम करि मिले तबमुनिराय आशीर्वाददै पुनः सनेह सहित ललितप्रीति समेत रघुनंदनते कुशल पूछे प्रभुबोले आपु की दयाहमारी कुशल है २ मुनिराय बशिष्ठ को प्रभुभेंटिकै पुनः भगवंतऐश्वर्यवंत श्रीरघुनाथजी प्रणाम करते देखि भरत को उठायलैकै हृदयमें लगाय लिये तासमय अति सनेहते दोऊपूरेभरे तामें मगन अर्थात् प्रेमानंद मेंबूड़ेहैं इत्यादि हनुमान्‌कोसंगलै भरत प्रभुकोमिलनेहेत आगेगये३।२३॥

मू० । मिलेसकलपुरजनमुदितरामचरित्तयहकीन । सबजानतप्रथमैंमिलेहमकहंरामप्रबीन १ हमकहँरामप्रबीनऊँचमध्यमनरनारी । यथायोग्यमिलिसबहिबहुरिभेंटीमहतारी २ भेंटीमहतारीसबै प्रथमकैकयीपर्महित । बिरहबिथानाशीसकलमिलेसकलपुरजनमुदित ३ । २४ ॥

इति लङ्काकाण्डसमाप्तम् ॥

टी० । सकल पुरजनन को मुदित आनंद मन सहित मिले तासमय

श्रीरघुनाथजी यह चरितकीन कैसाचरितकीन अनेकरूप धरि सबकोसा-थही मिले इस कारण सबयहै जानत किराम प्रवीन रघुनंदन सुजान शिरोमणि हमकहँ प्रथमहि मिले १ रामप्रवीन हमको प्रथमै मिले ऐसा सबहिनजाना इसी भाँति नीच ऊंचमध्यम यावत् नरनारीरहैं तिन सबको यथायोग्य जासों जौनी भाँति मिलना उचितरहै तासों ताहीविधि सबहि मिलि बहुरि रघुनाथजी महतारिनकोमिले २ प्रथम परमहित अत्यंतप्री-तिसहित कैकेयीकोमिले पीछे कौशल्यादि सबै महतारिन को प्रणामकरि भेंटी इसी भाँति मुदित आनंदमन सहित प्रभुसकल पुरजननको मिले अरु बिरहकरिकै जो बिथारही सोसकल नाशी प्रीतिपूर्वक मिलि वियोग पीरको नाशकरि सबको आनंदित करिकै मंदिर को चले ३ । २४ ॥ कुंडलिया ॥ कीन्हे पितुआज्ञा मुदित केवट कीन सनाथ । शबरी गीधसु मुक्तकृत सुग्रीवहु कपिनाथ ॥ सुग्रीवहु कपिनाथ दुष्टहति धामपठाये । राज्य बिभीषण देय यानचढ़ि भवन सिधाये ॥ आये पुरकृतराज्य प्रजन को बहुसुखदीन्हे । बैजनाथ इमिनाथ लोक पावन यशकीन्हे १ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथविर-चितेकुंडलिकारामायणप्रदीपिकाटीकायांलंकाकांडसमाप्तम् ॥

अथउत्तरकाण्डप्रारम्भ ॥

कुण्डलिया ॥

मू०। रामअवधआयेकुशल घरघरमंगलसाज। पुरीभईअमरावती रामराज्यकेकाज १ रामराज्यकेकाज भरतसबसाज सजाई। सुरगंधर्वमुनीश सकलआयेसुरसाईं २ सुरसाईं मंगलसजे बजेअवधदुंदुभिविमल। बर्षिसुमनजयजयकहत रामअवधआयेकुशल ३। १॥

टी०। श्रीरघुनाथजी कुशलपूर्वक अयोध्याजीको आये तेही आनंद ते पुरजन घरघरमें मंगलसाज यथा चित्राम्र बंदनवार पताका कलश इत्यादि साजिरहे हैं तासमय कैसी दिव्यशोभा देखाती है जैसे रघुनंदन के राज्याभिषेकके काजहेत अयोध्यापुरी अमरावती भई अर्थात् मनुष्य सब देव देवी सम अरु पुरी इंद्रपुरीसम शोभितभई इहाँ माधुर्यलीलामें पुरी को अमरावती कहे १ काहेते पुरी अमरावतीभई राम राज्याभिषेक के काज हेत पुरीमें भरतजी ध्वजा पताकादि सबमंगलकेसाज सजाये ताते दिव्यपुरी देखातीहै सुर देवता गंधर्व तुंबुरादि मुनीश कश्यप अगस्त्य नारदादि पुनः सुरसाईं देवतनमें स्वामी यथा ब्रह्मा शिव इंद्र वरुण कुवेर सूर्य चंद्र अग्नि पवन यम इत्यादि सकलआये २ सुरसाईं जेआये ते भी मंगलसाजसजे संगमें लैआये ताते अवध विमल दुंदुभि वजे अयोध्याजीमें आनंद मांगलिक उत्तमशब्दते अनेक नगारादि वाजा वाजिरहे हैं पुनः सुमनफूल वर्षिकै जय जय कहत काहेते कुशलपूर्वक रघुनाथजी अयोध्याजी को आये इति पुरी अमरावती भई ३। १॥

मू०। शुभसिंहासनशुचिबन्यो रघुपतिबैठेआप। भूषणमणिगणजगमगत कोटिनभानुप्रताप १ कोटिनभानुप्रताप वेद धुनिविप्रउचारैं। छत्रचँवरधनुबाण दंडभरतादिकधारैं २

भरतादिकसुखमयमगन सियआईभूषणघन्यो। रामसिया शोभितभये शुभसिंहासनशुचिबन्यो ३ । २ ॥

टी० । शुभ मंगलमय सिंहासन शुचि पावन बन्योहै तापर आप श्री रघुनाथजी बैठे कौनभाँति बैठे जरीजरबक्त जामा पीताम्बरादि दिव्य बसन तथा किरीट कुंडल माला कंठा केयूर पहुँची मुद्रिका कांची इत्यादि जो भूषण धारणकिहे तिनमें मणिगण हीरा पन्ना मोती पिरोजा नीलम मरकत इत्यादि समूह मणि जगमगत प्रत्यंगदीप्ति है रहीहैं तिन करि कोटिन भानुप्रताप करोरिन सूर्यन कैसो प्रताप देखिपरत १ अंगमें कोटिन भानु कैसो प्रताप देखात अरु विप्र वेदधुनि उच्चरैं ब्राह्मण लोग मांगलिक वेद ऋचा पढ़िरहेहैं पुनः छत्र चमर व्यजन भरतादि मनुज धारण किहेहैं तथा धनुपत्राण दंडादि जो प्रभुके शस्त्रहैं तेविभीषण सुग्रीवादि सखा धारणकिहेहैं २ पुनः भरतादिक सब समाज सुखमय सर्वांग में आनंद परिपूर्ण तामें मगन बूडेहैं तासमय सिय आई भूषण घन्यो बहुत भूषण सर्वांगमें धारणकिहे जानकीजी आईं तब राम सिया शोभितभये मंगलमय पावन जो राजसिंहासन तापर जनकनंदिनी सहित रघुनंदन शोभितभये सिंहासन सहित तनकी शोभा प्रकाशमानहै ३ । २ ॥

मू० । प्रथमतिलकगुरुउच्चरयो विप्रनआयसुदीन। देवमुनिनजयउच्चरी दुंदुभिहनेनवीन १ दुंदुभिहनेनवीन सबहिंकरअस्तुतिठानी। मातनआरतिसाजि गीतगावहिंमृदुबानी २ मृदुबानीसुरमुनिसबै जयतिरामजयजयकरयो । बंदिवृंद बिरदावली प्रथमतिलकगुरुउच्चरयो ३ । ३ ॥

टी० । जब सिंहासनपर प्रभु आसीन भये तब प्रथम गुरु वशिष्ठजी अभिषेक ऋचा उच्चारणकरि प्रभुके माथमें तिलक करिदीन्हे पुनः अन्य ब्राह्मणनको आयसुदीन सब तिलक करनेलगे तब देवता मुनिन जय जयकार शब्द उच्चरी अरु नवीन दुंदुभिहने नईरीति अत्यंत उत्सवदर्शित शब्दते नगारादि बाजा उच्चगंभीर धुनिते बजाये १ बाहेर द्वारपर नवीन दुंदुभिहने प्रभुके सन्मुख सबहिन स्तुति ठानी विनती करनेलगे पुनः कौशल्यादि सब मातनि कंचनथारनमें माणिक दीप फूल फल दल रोचन मणि सोनादि आरती साजि मृदु कोमल बाणीते मंगलगीत गान करती

हैं २ पुनः सुर देवता सब अरु मुनिगण इत्यादि सबै मृदुवाणीते जयति राम जय जय कर्यो अर्थात् भूतमें रघुनंदनकी जयभई वर्त्तमानमें जय होतीहै तथा भविष्यमें जयहोयगी पुनः वेद वंदीरूपते विरदावली पतित पावनतादि बानाके समूह चरित बखानिरहेहैं इत्यादि तिलककरिकै सब ते प्रथम वशिष्ठजी स्तुति वचन उच्चारण कीन्हे ३ । ३ ॥

मू० । कह्निवशिष्ठप्रथमैवचनसबप्रकारसामर्थ । सुरपालेखलदल दलेद्विजमहिसज्जनअर्थ १ द्विजमहिसज्जनअर्थ भयेदशर थकेबारे । निगमसेतुप्रतिपालि सुयशजगमहँविस्तारे २ विस्तारेअद्भुतचरित पालयलयकृतपुनिरचन । जयजय नरअवधेशसुत कहबशिष्ठप्रथमैवचन ३ । ४ ॥

टी० । वशिष्ठजी प्रथमै क्या स्तुति बचनकहे हे महाराज यथाऐश्वर्य रूपतथा माधुर्यरूप आपुसब प्रकारते समर्थहौ अर्थात् शक्तिबल तेजवीर्य प्रतापादि जैसाआपुमेंहै तैसादूसरे किसीमें नहींहै कैसे समर्थ हौ माधुर्यमें सुरपाले खलदलदले खलदुखद जोरावण ताको दलराक्षसी सेनातेहिदल सहित खलरावणकोनाशकरिदेवतनकी रक्षाकीन्हेअभयकरि स्वबशबसाये सो केवल देवतनै के हेतनहीं द्विजमहि सज्जन अर्थ खलदल बिशेषिदले द्विज ब्राह्मणन के हेतयथा विश्वामित्रके हेत ताडका सुबाहु को मार्‍यो महिभूमिपर अत्यंतपाप को भाररहै सो उतार्‍यो तथा सज्जन यथा सुग्रीव विभीषण तथाअनेकन साधुमुनिनको संकट रहै तिनके सुखके अर्थ १ द्विजमही सज्जननको सुखी करनेअर्थ दशरथ के बारेभये जगत् के पिता सदास्वाधीन ते महाराज के पुत्र है पराधीन भये पुनः निगम सेतुप्रतिपालि निगमजो वेदताको सेतुजो लोकमें धर्मकी मर्यादाहै ताको परिपूर्ण पालन कीन्हे यथामाता पिताकी आज्ञाते हर्ष सहित राजत्यागि वनवास लीन्हे पुनः धर्म के बिरोधी यावत् रहे तिनको मारि सबकोशुद्ध धर्मपर आरूढ कीन्हेउ इत्यादि बाहुबलते वेदधर्मको स्थापित करि सुयश जगमहँ विस्तार्‍यो सुंदरउत्तम पावन यश जगत्भरेमें विस्तारकीन्हेउ फै- लायो २ पुनः अद्भुतचरित विस्तार्‍यो अर्थात् माधुर्यमें ऐश्वर्य मिश्रित जाको देखिसबके बिस्मय होतकाहेते जो राजकुमारबने मातापिता साधु ब्राह्मण तीर्थ देवादिको मानसत्य शौचतप दानादि धर्मपर आरूढ क्षत्री कुलरीतिपर आचरण इत्यादि शुद्धमाधुर्यहै पुनः ऐश्वर्यतेपालयलयकृत

पुनिरचंनपूर्व ब्रह्माण्डरचि पालनकरतेहौ समयआये प्रलयकरतेहौ समय पाय पुनः ब्रह्माण्ड रचनाकरतेहौ इतिशुद्ध ऐश्वर्यहै पुनः माधुर्यसे ऐश्वर्य मिश्रितसो अद्भुतचरितहै यथावालकेलिमें कौशल्या काकभुशुंडि कोभ्रमदे पुनःकोमल राजकुमारे वनेरहे मारीचको उडाय ताडका सुबाहुको तृणवत् नाशकीन्हे तथा अहल्याको पावनकरि शिवधनुदले परशुरामको मानभंग कीन्हे मनुष्यवत् स्त्री वियोगते विलाप करतेही जटायू को दिव्यरूपते परधामपठाये सिंधुतेमार्गमाँगत वाणवेगते प्रतापदेखायवुलाये पाषाणते सेतुबाँधे रावणको मारि आपुमें लीनकीन्हे देवनको अभय कीन्हे जय प्रसिद्ध ऐश्वर्य दर्शाय स्तुति कीन्हे ताही समय विभीषणते नियोग कीन्हे कि हमको शीघ्र जानेकी उपाय करु इति ऐश्वर्य माधुर्य मिश्रित अद्भुत चरित विस्तारयो ऐसे अवधेशसुत महाराज कुमारकी जयहोय जयहोय इत्यादि बचन वशिष्ठजी प्रथमही कहे ३। ४ ॥

मू०। कहिविधिसबहिसुनायकै रामचरित्रअपार। निगमशेषकवि करसकल कोजगजाननहार १ कोजगजाननहार असित अवतारविहारी। सुरसज्जनकेहेतकरतलीलावपुधारी २ लीलातनमंगलभवन खलदलिभुवनवसायकै। जगमंगल कारणकरण कहिविधिसबहिसुनायकै ३। ५ ॥

टी०। सबहि समाज भरेको सुनायकै विधिकहि ब्रह्माकहतेभये कि रघुनाथजीको चरित्र अपार समुद्रवत्है काहेते निगमादि यावत् सिद्धांत ग्रंथहैंशेषादियावत् कवीश्वरहैं शंकरादियावत्समर्थहैं इत्यादि सकलकरने वालेनमेंको जाननहार भाव रामचरित परिपूर्ण कोउनहींजानिसक्तहै १ जगत् विषे यावत् देहधारीहैं तिनमें राम चरितको जाननहारकोहै काहेते असित अवतार विहारी लोकोद्धार हेतु असंख्यन अवतार धारण करते तिनमें अनेक प्रकारको विहार अद्भुत लीला करते हैं तामें किसीकीबुद्धि नहीं कामकरिसक्ती है काहेते सुरसज्जनके हेतु वपुधारी लीलाकरत अर्थात् आपुतौ रूपरंग कारण रहित सदा एकरस अखंड आनंद सदा ज्ञान रूप हैं परंतु सुरजो देवता सज्जन जो हरिभक्त इत्यादि के सुखके अर्थ वपु देह धारण करिकै प्राकृतवत् अनेक भाँतिकी लीलाकरते हैं ताही को देखि सबकी बुद्धिभ्रमितह्वै जातीहै यथासती काकभुशुंडि गरुड इत्यादि २ सोई मंगल भवन जामें सब प्रकार के मंगल उत्सव परिपूर्ण भरे ऐसे

लीलातन राजकुमार रूपते खलदलि रावणादि दुष्टनको नाशकरिकै अभय भुवन बसाय सुरमुनि नरनागादि स्ववश बसायकै राजसिंहासन पर आसीनहौ ऐसेजग मंगल कारण करण जगत्में मंगल प्रसिद्ध उत्सव ताको कारण जो वेद धर्म ताके करन हार वेद धर्मके स्थापित करनेवाले हौ इत्यादि बचन सबको सुनाय ऐश्वर्य दर्शाय कै ब्रह्माकहे ३ । ५ ॥

मू० । उठिशंकरजयजयकहत रामस्वरूपतुम्हार । मंगलमय मूरतिमधुरसुमिरतसबदातार १ सुमिरतसबदातार लहत सुखसुंदरध्याये । गुणगणपावनगायतरतभवनिधिसुखपाये २ सुखपायेमुनिगणमनाहिं ज्ञानध्यानसोज्यहिचहत । रविकुलकमलदिनेशप्रभुउठिशंकरजयजयकहत ३ । ६ ॥

टी० । जब ब्रह्मा स्तुति करिभये तवशंकर उठि कहत कि महाराज की जयहोय जयहोय हे श्रीरघुनाथजी आपुको स्वरूप कैसा है मंगलमय मंगलानंद समूह तनमें परिपूर्ण भरेहैं काहेते मधुर मूरति सुमिरत सब दातार मधुर मूरति जो सुंदर राजकुमार स्वरूप सो कैसा सुलभ उदारहै किजाको सुमिरत मात्रही सबफल को देनहारा है भावजो मनोरथकरै सोई देतेहौ १ सुमिरतमात्र सब मनोरथ के देनहारहौ तथाध्याये सुंदर सुखलहत पावत अर्थात् जोसेवन पूजन दास्यतादिकरताहै सो सुंदरउत्तम लोकहू परलोकमें सब प्रकार को सुखपावताहै भाव किसी भाँतिकोदुःख काहूकी भयनहीं रहिजात २ पुनः सुखपाये आनंद सहित मुनिगण मनमें ज्ञान ध्यानकरि ज्यहि चहत अर्थात् देह व्यवहार त्यागि शुद्धआत्मरूपते ध्यानकरि ज्यहि परमात्मा परब्रह्म की प्राप्ति चाहत सोई प्रभु रविकुलकमल दिनेश रविसूर्य तिनका कुल यावत् सूर्यवंशी हैं ते कमल को वन हैं तिनको प्रफुल्लित कर्त्ता दिनेश सूर्यहौ ऐसे रघुनंदन प्रभुकी जयहोय जयहोय इत्यादि उठिकै शंकर कहते भये ३ । ६ ॥

मू० । सुरपतिकहतप्रणामकरि सुनहुरामसुरभूप । प्रतिअवतार अपारगुण वर्णतवेदअनूप १ वर्णतवेदअनूप दुष्टजनखंडनहारे । मनगोतनकोत्रासित रामतुमताहिपियारे २ ताहिपियारेतुमलगत बचेमोहमदनामकै । हमनिशिदिनविवयाविवशसुरपातिकहतप्रणामकै ३ । ७ ॥

टी० । सुरपतिइंद्र प्रभुको प्रणाम करि पुनः कहत हेराम सुरभूप सुनहु आपने रूपमें सबको रमावनहारे पुनः सुरजो ब्रह्मादिक तिनमें महाराजहौ मेरी बिनती सुनिये यावत्आपुके अवतारभये तिन प्रतिरूपा दया करुणा शील क्षमा सुलभ उदारतादि अपार गुण हैं जिनको अंत कोऊ नहीं पायसक्ताहै तिनगुणनको अनूपकरि वेदवर्णत जिनकी उपमा नहीं कहौंढूंढे मिलती है अर्थात् माधुर्य ऐश्वर्य जैसे गुण आपुमें हैं तैसे और किसी रूपमें नहीं हैं १ आपुको अनूप रूपकहि वेद वर्णत पुनः दुष्टजन खंडनहारेहौ दैत्य राक्षस वा कोऊ अधर्म अनीति पर चलता है ऐसे दुष्टजननको नाशकरनहारेहौ तथा सुजननको पालन करतेहौ पुनः हे राम जो मनगोतनको त्रासित ताहि तुमप्यारेहौ अर्थात् अंतरमें मनको त्रासदंड देते हैं भावजे समकरि मनादिकी वासनारोकि शुद्धकरतेहैं तथा मनको चंचल करनेवाली गोनामइंद्री यथा श्रवण नेत्ररसना नासिका त्वचा लिंगादि तिनको त्रासदेते हैं अर्थात् दमकरिकै इंद्रिनकी वृत्तिविषय ते रोकि देतेहैं पुनः सबतनको त्रासदेतेहैं अर्थात् तपस्याकरि पाप नशाय देहौको शुद्धकरतेहौ इत्यादि तनइन्द्रीमनकरिकै जेशुद्धहैं ऐसेजननको आपुप्रियहौ भावजे योग ज्ञानादिते शुद्धहैं तिन्हैं प्रियहौ २ अथवा जे आपुके नामके अवलंब करिकै मोहमदादि विकारनते बचतेहैं ऐसे भक्तजनजे हैं ताहितुम प्रियलागतेहौ ये दोऊ आचरण हममें नहींहैं काहेते हमानिशि दिन विषया विवश भावहमारा मनतन इन्द्रिय विशेषि विषयकेवशहैं ताते रातिउदिन देहै सुखभोगमेंपरेहैं तौ हम किसीभाँति आपुके सन्मुखहोने योग्यनहींहैं इत्यादि प्रणामकरि इंद्रकहत भावआपुकी शरणयोग्ययद्यपि हमनहींहैं परंतु बाल्मीकीयमें आपुको वचनहै यथा॥ सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिचयाचते।अभयंसर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतंमम॥ अर्थात्जो एकहू बार प्रणामकरि कहै कि मैं शरणहौं ताको सबभूतनते अभयकरि देत हौ इसबचनके भरोसे मैंभी प्रणाम करताहौं ३ ।७॥

मू० । रविअंजलिजोरेकहत रामसुनहुममबैन । कृपाकरियनिज
चरणरति निशिदिनराजिवनैन १ दीजियराजिवनयनतोष
बड़हृदयहमारे । जबतेममकुलजन्मरावरेनरतनधारे २
नरतनधरियशविस्तरयो चिरंजीवजोरीरहत । जयजयर
विकुलरविविमल रविअंजलिजोरेकहत ३ । ८ ॥

टी०। रविअंजलि सूर्य हाथजोरे कहत हे रघुनंदन मेरे बचन सुनहु राजिव कमलसम आपुके नयनकृपारसते परिपूर्णहैं तातेनिशिदिन निज चरणकीरति मोपरभी कृपाकरिये अर्थात्रातिउदिन आपुके पदकमलन में मेरीप्रीति लगीरहै यहवर कृपाकरि मोकोभी दीजिये १ हेराजिवनयन पदरति दीजिये काहेते जबते मम मेरे कुलमें रावरे आपुजन्मलै नरतन धारे मनुष्यरूपते अवतीर्णभये तबतेहमारे हृदयमें बड़ातोष संतोष है भाव लोकरीतिहै वेदते प्रमाण है कि जौने कुलमें कोऊउत्तमजीव जन्म लेत सो पितृनको नरकते निकारि सुगति करिदेता है अरुमेरे कुलमेंतौ आपु परब्रह्म अवतीर्णभयो ताते मोको बड़ा संतोषरहा आजुराजसिंहासनपरते मेरामनोरथ सफलकीजिये २ काहेते आज सफलकीजिये कि नरमनुष्यको तनधरि यश विस्तर्यो दुष्टनको मारि उत्तम धर्म स्थापित कीन्हेसोईसुंदरयश लोकमें फैलिरहाहै तातेयासमय निजभक्तिदानमोको भीदीजियेपुनः जोरी चिरंजीविरहत यामेंऐश्वर्यमाधुर्य मिश्रितआशीर्बादहै भावयह बरदानमाँगितौनहींसक्ताहौं परंतुउरकीअभिलाषप्रकटकरताहौंकि राजसिंहासनासीनयहजोश्रीरघुनंदन जनकनंदिनीकी जोरीहैसोचिरंजीवि बहुत कालतक ऐसही बनीरहत ऐसे रबिकुलकमल प्रकाशक अमलरबि श्रीरघुनाथजीकी जयहोयजयहोय इत्यादि हाथजोरे सूर्यकहते हैं ३।८॥

मू०। अनिलअनलधरविनयकरि खलखंडनतुमराम। राजआजत्रयपुरविशद राजहिजगअभिराम १ राजहिजगअभिरामसंतसज्जनसुखकारी। नरतनधनुधरिहाथहर्योधरणीअघभारी२ धरणीमंडनखंडिखलराजविराजतभुवनभरि। जयजयश्रीसीतारवनअनिलअनलधरविनयकरि३।९॥

टी०। अनिलजो पवन अनलजो अग्निधर जो पृथ्वी येतीनिहूविनय करि कहत खलखंडनतुम रामहे रघुनाथजी आपु दुष्टनको नाश करन हारेहौ पुनःआजु जगअभिराम जगत्भरेको आनंद देनहारा पुनः विशद उज्ज्वल त्रयपुरस्वर्ग भूपातालादि तीनिहू लोकनमें आपुको राजराजहि विराजमानहै भावदुष्टनको मारि तीनिहू लोकनके राजनको अभयकरि बसायो तेसब आपुके शरणहैं ताते सर्वत्र आजु आपहीको राजहै पुनः कोऊ प्रतिकूलनहीं सबकृपादृष्टि चाहते हैं ताते बिशदराज्यहै पुनःसबपर दयादृष्टिराखेहौ तातेजग अभिरामराज्यहै१ काहेते आपुकी राज्यजगअभि-

रामराजहि किसंत आत्मदर्शी सज्जनहरिभक्त इत्यादिकनको सुखकारी सबसुख देनहारेहौ पुनः नरमनुष्य तनधारणकरि हाथमें धनुषबाणधरि धारणकरि धरणीको भारी अघपाप हरयो अर्थात् रावणादि दुष्टन को मारि भूमिको बड़ा भारी पाप भार हरि लीन्हेउ २ खल खंडिनाशकरि धरणी मंडन पृथ्वी को भूपित कीन्हेउ आनंद दीन्हेउ ताते भुवननभरे में आजु आपुको राज विराजतहै ऐसे सीतारवन श्रीरघुनाथजीकी जय होय जयहोय इत्यादि पवन अरु अग्नि यथा धरणी विनतीकरतहैं ३ । ९ ॥

मू० । निगमविप्रतनकरिकहत रामसुनहुसुरईश । कोटिकोटियत्न
नकरत नहिंपावतयोगीश १ नहिंपावतयोगीश हृदयशंक
रपचिहारे । विधिसनकादिकनेम धर्मकरितुम्हेंनिहारे २
तुम्हेंनिहारतसुखलहैं तेकपिभालुहिकरगहैं । जयतिराम
लीलाअगम्म निगमविप्रतनकरिकहैं ३ । १० ॥

टी० । निगम वेद विप्रतनकरि कहत ब्रह्मादि सुरनके ईश्वर हेरघुनाथ जी सुनिये आपुकी प्राप्ती ऐसी अगमहै जाकेहेतु योगीश योगिनमें लेउत्तम ते यम नियम आसन प्रत्याहार प्राणायाम धारणा ध्यान समाधि इत्यादि कोटिन कोटि करोरिन यत्नकरि ढूँढ़तेहैं ताहूपर आपुको नहींपावतेहैं १ पुनः योगीश शंकर पचिहारे अनेकन युक्तिते श्रमकरि थकिगये सोऊ हृदय ध्यानमें नहीं पावत ताते सुलभ प्राप्तीहेत प्रेमसहित अंतरमें नाम जपत मुखसों सदा गुणगानकरत अरु नेत्रनसे लीलारूपके दर्शन करि तृप्तहोत तथा विधि जो ब्रह्मा सनकादि परमहंस इत्यादि भी नेम धर्म करि तुमहिं निहारे भाव ध्यानमें येभी नहींपाये जीवको धर्म भक्ति सेवक सेव्यभाव सो नियम सहित भक्ति धर्मकरि आपुको लीलारूप नेत्रन भरिदेखे २ तुमहिं निहारत सुखलहैं ध्यानमें निहारि किसीने आनंद ऐसी न पावा जाभाँति शिव ब्रह्मा सनकादिक इत्यादि सब आपुको लीलारूप देखत सन्ते परिपूर्ण सुखपावतेहैं ऐसे तौ आपु सबको अगम तेई सुलभ लोकोद्धार हेतु कैसे सुगम ह्वैगयो कि देव मुनि साधु मनुष्यन की को कहै कपि भालुहि करगहैं वानर ऋक्षनको हाथदेदेतहौ तेआपुको हाथपकरे संग संग फिरते हैं इत्यादि अगम जाको जानिबेको किसी में गति नहींहै ऐसी अगम लीला जाकी त्यहि श्रीरघुनाथजीकी जयहोय इत्यादि वेद ब्राह्मण तनकरि कहतेहैं ३ । १० ॥

मू० । शारदनारदजोरिकर विनयकरतचितलाय । अद्भुतचरित
तुम्हारप्रभु सुनियेश्रीरघुराय १ सुनियेश्रीरघुरायपितादश
रथसमनाहीं । तृणसमतनतजिदीनसुयशजाकोजगमाहीं
२ सुयशकियोज्यहिजन्मभरि गयोबिरहलैअमरघर । गीध
क्रियानिजकरकहैं शारदनारदजोरिकर ३ । ११ ॥

टी० । शारदा तथा नारदते दोऊकरहाथजोरि दीनतादर्शाय पुनः चित
लाय अंतस्थिरकरि विनयकरत हे श्रीरघुनाथजी प्रभु सुनिये आपुको च-
रित अद्भुतहै आश्चर्यमयी है १ क्या अद्भुत चरितहै हे श्रीरघुनाथजी
सुनिये यथा आपुके पिता श्रीदशरथ महाराज जैसेहैं तैसा दूसरा किसी
के पिता नहींहै काहेते जे आपुके वियोगते तृणसम तिनुका समान तन
ताजि प्राण निसारिदिये भाव आपुके दर्शमात्रते जीवन आधार राखेरहैं
पुनः सुयश जाको जगमाहीं जिनको सुयश जगमें सब गावतेहैं २ क्या
सब गावतेहैं ज्यहि दशरथ महाराज जन्मभरि सुयशकियो यावत् जीवत
रहे तावत् उत्तम उदार कर्मकरि उत्तम यश बिस्तारे पुनः बिरहलै अमर
घरगयो आपुके वियोगभयेपर समूह विरह ग्रहणकरि तनत्यागि देवलोक
को गये ऐसे पितुते अधिक मानि गीध जटायूकी क्रिया निजकर आपनेही
हाथन कीन्हेउ इति अधम उद्धार प्रीतिपालतादि आपुके अद्भुत चरित
हैं इतिशारद नारद हाथजोरि कहत ३ । ११ ॥

मू० । अस्तुतिकरिमुनिसुरगयेरामभरतबुलवाय । कपिपतिऋक्ष
विभीषणौ नलनीलहिअन्हवाय १ नलनीलहिअन्हवाय
भरतभूषणपहिराये । अंगदसहितसमाजरामसबनिकटबु
लाये २ सामनिकटबैठारिकै मधुरवचनबोलतभये । कपि
कीरतिप्रभुउच्चरत अस्तुतिकरिमुनिसुरगये ३ । १२ ॥

टी० । राज्याभिषेकभये पीछे सुर ब्रह्मादि मुनि नारदादि प्रभुकी स्तु-
ति करिकै बिदाह्वै चलेगये तब राम भरत बुलवाये इहां प्रेरणार्थक क्रिया
है भरतद्वारा रघुनाथजी सबसखनकोबुलवायेकौनसखा कपिपतिवानरन
के राजा सुग्रीव ऋक्ष जामवंत तथा नल नील इत्यादिकनको बुलाय
अन्हवाये १ नल नीलादि सब समाजभरेको अन्हवाय पुनः भरतजी सब
को बसन भूषण पहिराये तब अंगद सहित सब समाजको रघुनाथजी

अपने निकटको बुलाय बैठारे निकट बैठारिकै वानरन प्रति रघुनाथजी मधुर श्रवणरोचक वचन बोलतभये क्या बोलतभये कपिलोगनि प्रभु उच्चरत भाव नम्रता पूर्वक मेरी सेवकाई कीन्हे तथा सबसुख त्यागियुद्ध में मोको सहायता दीन्हेउ इत्यादि जब सुर मुनि प्रभुकी स्तुति करि चलेगये तब प्रभु वानरनकी.कीरतिकहनेलगे सो आगेप्रसिद्धहै ३ । १२ ॥

मू० । मुनिनायकयेनीलनलकीन्हेअद्भुतकर्म । शतयोजनसागर
बँध्योसेतुउपलगुरुधर्म १ सेतुउपलगुरुधर्मशीशरावण
केफारे । मंदिरसुवरणखंभकलशमहिधरवहुडारे २ महि
धरडारिसँघारिअरिरणमंडलहतिअसुरदल । महाबीरया
नैंतबलमुनिनायकयेनीलनल ३ । १३ ॥

टी० । वशिष्ठ प्रति रघुनाथजी कहत हे मुनिनायक येदोऊभाई नील नल अद्भुत आश्चर्यमय कर्मकीन्हे कैसा अद्भुत कर्म गुरु धर्म उपलगरोई जाको धर्म ऐसे.उपल जो पत्थर तिनकरिकै इनकेहाथ शतयोजन सागर में सेतु बांध्यो. अर्थात् जिनपत्थरनमें ऐसीगरोईहोत जेआपुबूडै औरहूको बोरिडारैं तिन पत्थरनते जलयानकी नाईं इनके हाथनके प्रभावते सो योजन चारिसै कोशतक समुद्रमें सेतुबँधिगयो ताहीपर सब सेना उतरि लंकाघेरी १ गुरुताहै जाको धर्म तिन उपल पत्थरनते सेतु बाँधि पुनः रावण ऐसाबली बीर ताके शीश फारिडारे तथा लंकापुरीमें खंभ कलश मंदिरादि सब सुवर्णों के रहैं तहाँ महिधर पर्वत बहुत डारे भाव पर्वतन डारिकै मंदिर तोरिडारे २ तैसेही महिधर पर्वत डारि भरि संघारि शत्रुन को नाश करिदीन्हे भाव इनके चलाये पर्वत जहांगिरे तहां शत्रुवद्दन दबि कै मरिगये पुनः रणमंडल जहाँ सन्मुख जुटिकै युद्धभया तहाँ भी असुर राक्षसनको दलकर चरण चपेटनसों हति मारिडारे ऐसे महाबली अनं-तबीर बीरताको बाना धारणकीन्हे हेमुनिनायक ये नल नीलहैं ३ । १३ ॥

मू० । मुनिनायककपिराजयेकरेहमारेकाज । वानरकोटिपठाइयो
सियशोधनशिरताज १ सियशोधनशिरताजकरचोरणमं
डलभारी । मंत्रतंत्रसबसुदृढ़सैनबलअबलबिचारी २ अ
बलबिचारीठौरजहँतहँबलदियेसमाजये । महाबली बुधि
वंतअतिमुनिनायककपिराजये ३ । १४ ॥

टी० । हे मुनिनायक ये कपिराज वानरनके राजा सुग्रीवहैं ये हमारे सबकाजकरे कौनभाँति पूर्व सियशोधन शिरताज जानकीजीके खोज करावनेमें मुखिया येईहैं काहेते सब दिशनको खोज हेतु कोटिन वानर पठाइदियो रहै थोरेहीकालमें शोधमँगाय लीन्हे १ यथा सिय शोधन में शिरताजहैं तथा करयो रणमंडल भारी वानरऋक्षनकी समूह सेनालैकै रावणको पुरघेरि बड़ाभारी संग्रामरचे पुनः मंत्र तंत्रनकी जो युक्तीहै सो सब सुदृढ़ सुंदरी प्रकार पुष्टकरि जानतहैं पुनः सेना बलीहै अथवा अबल है इत्यादिके बिचारी बिचारने वाले युद्ध ज्योतिषमें भी प्रवीणहैं २ कैसे जाना कि बल अबलके बिचारीहैं कि जहां ठौर अबल बिचारी तहां ये समाजको बलठौर बतायदिये यथा ब्रह्मयामले ॥ भून्यक्षरचतुर्गुणंतिथि वारेणसंयुताः । त्रिभिश्चैवहरेद्भागंशेषंभूमिशुभाशुभम्॥एकेचजीवताभूमिः द्वितीयेसमताभवेत् । तृतीयेचमृताभूमिः इत्युक्तंब्रह्मयामले ॥ इत्यादि विधि ते जहाँ अबल भूमिकामें सेनाठाढ़ि देखे तहाँते हटाय जहां बली भूमिदेखते रहैं तहाँ सेना ठाढ़िकरि युद्धकरावते रहैं ऐसे बुधिवंत पुनः महाबली हैं हे मुनिनायक अत्यंत चतुर महाबलवंत ऐसे ये वानरनके राजा सुग्रीव हैं ३ । १४ ॥

मू० । सुनहुबिभीषणबहुकियोमिल्योमोहिंतजिभाय । रावणअरु घननादकीदईमीचुदर्शाय १ दईमीचुदर्शायगदापुनिरावणमारयो । लक्ष्मणघायलभयेवैद्यकोनामउचारयो २ नामउचारयोशत्रुदलकरिउपायलक्ष्मणजियो । रामकहतमुनिराजसोंसुनहुबिभीषणबहुकियो ३ । १५ ॥

टी० । हे मुनिनायक सुनिये ये लंकेश बिभीषण हमारे बहुत कार्य कियो काहेते भायतजि बड़ेभाई रावणको त्यागि आयमोहिं मिल्यो पुनः युद्धसमय रावण को तथा मेघनाद की मीचु दर्शायदई अर्थात् रावण की नाभी में सुधाकुंड है ताके शोषिलीन्हे रावणमरी इति रावण की मृत्यु बताये तथा मेघनाद यज्ञकरता है ताको बिध्वंसि शीघ्रही मारौ नातरु सिद्धिभयेपर न मरी इति मेघनाद की मृत्यु बतायदिये १ दोउन की मृत्युदर्शायदीन्हे तथा युद्धसमय रावण ऐसेसबलबीरके सन्मुखजाय गदामारे पुनः जालमय मेघनाद शक्तिमारी लक्ष्मण घायल भये तब वैद्य को नाम उचारयो भावलंकामें सुखेण वैद्यहै २ कैसे नामउचारयो शत्रुदलमेंजहाँ

शत्रु रावण की सेनारहै लंकामें तहाँते वैद्य लेआवन की युक्ति बताय मँगाय लीन्हे ताकी उपाय कीन्हेते लक्ष्मण जिये इत्यादि मुनिराज व-शिष्ठसों रघुनाथजी कहत मुनिये येविभीषण हमारेबहुत कार्यकियो ३।१५

मू०। ऋक्षनाथबलदलमहारावणहत्योप्रचारि । मेघनादकोपाँ उधरिलंकगयोफटकारि १ लंकगयोफटकारिअसुरदलद लेसमाजन । सेतुबाँधिधरियूथहाथशिरधरिगिरिराजन २ शिरधरिगिरिरावणदलेसभयशत्रुरणनाहिंरहा । मुनिनाय कलायकसवैऋक्षनाथबलदलमहा ३ । १६ ॥

टी० । ये ऋक्षन के नाथ जामवंत हैं बलदल महा इनमें महाबल है तथा दल महासेनाभी बहुत है ये प्रचारि रावण हत्यो सन्मुख ललकारि रावणकी छातीमें लातमारे सो मूर्च्छित ह्वैगया ऐसेबलीहैं पुनः पाँउधरि मेघनाद को फटकारि दिये सो लंकागयो अर्थात् पदगहि पटके जब गरत न देखे तबफेंकिदिये सो जायलंकामें गिरा १ यथामेघनादको फटकारिदिये सो लंकागया तथा असुर दल समाजनदले झुंडकेझुंड राक्षसनकी सेना को नाशकरि दीन्हे पुनः यूथ इनको समूह दल सो गिरिराजन बड़े बड़े पर्वतन को हाथन पर तथा शिरपर धरिलाये तिनते सेतुबाँधिलीन्हे २ शिरधरि गिरि रावणदले शीशपर भारी पर्वत धरिले आय रावणके दारि रथादि दलिडारे शत्रुसभय रणनाहिं रहा शत्रुरावण सडरहै भागिगया इ-नकेसन्मुख भूमिमें ठाढ़न रहा इत्यादि हे मुनिनायक ये ऋक्ष जामवंत को दलभारी अरु आपु महाबली ताते सबै कार्य करिवेलायक हैं महिमा कहाँ तक करौं ३ । १६ ॥

मू०। येअंगदमुनिअतिबलीजिनरावणपुरजाय । मानज्ञानअ रिदलदल्योरोपिसभाधरिपाँय १ रोपिसभाधरिपाँयचरण धरिरावणरानी । सहिकठोरपुनिहत्योशीशदशचरणउठा नी २ चरणधरेकंपतअसुरसैनसमरअतिदलमली । रण विजयीशुभसुयशदायेअंगदमुनिअतिबली ३ । १७ ॥

टी० । हे मुनिवशिष्ठजी बालिके पुत्र ये अंगद अत्यंत करिके बली हैं काहेते इनको बल प्रसिद्धभया जिन पूर्वही रावणके पुर लंकामें जाय रावणकी सभामें धरि पायँरोपि अरिदलको मानज्ञान दल्यो बलको मान

बुद्धिको ज्ञान सबनाश करिदीन्हे अर्थात् रावण के सन्मुख बीचसभा भूमिपै धरि प्रणकरि पाँयरोंपि दिये ताको उठावतमें अनेक भाँति बुद्धि विचारकरि बलकरि मेघनादादि बड़े बली वीर सब हारिगये काहूको हलावा पाँउनहाला उठनेकी कौनकहै १ यथासभामें धरिपायँरोंपि जीति कै चलेआये तथा रावणके मन्दिरको निशंकचले गये दशशीश रावणके यज्ञकरत समय चरण हत्यो लातमारे तहूँ जबरावण न उठा तब पुनः रावणकी रानी मंदोदरीके केशधरि महि कठोरि बार पकरि भूमि पै घसीटि लायेते डरानी डरमानि चिल्लानी तब रावणयज्ञ त्यागि उठा इस भाँति यज्ञ विध्वंसकरि चलेआये २ पुनः जिनको देखत डरायकै असुर राक्षस कंपत चरणधरे पाँयन परतेरहे पुनः समरसेन अतिदल मली युद्ध समय राक्षसी सेना समूहको भूमिपै दलिमींजि मलिडारेऐसे रण में विजयी विशेषि जय पावनेवाले पुनः शुभ मंगलीक सुयशसदा देनहारहैं हे मुनिये अंगद अतिबली हैं ३।१७॥

मू०।येहनुमंतबिचारिमुनिप्रथममिलायेमोहि। कपिपतिपुनिद
लजोरिकैलैमुद्रिककरजोहि १ लैमुद्रिककरजोहिबीरलैसु
भटसिधायो। तृषितलगेसबमरणजायत्यहिसुजलपिआ
यो २ सुजलपिआयोसबहिकोसमुद्रतीररचिमंत्रपुनि। प
क्षतक्षसंपातिदैयेहनुमंतबिचारिमुनि ३।१८॥

टी०।हे मुनिविचारिये येहनुमंतहैं कपिपति सुग्रीवको मोहिं इनहीं प्रथम मिलायो पुनिवानरनको दलजोरि बटोरिकै सियशोध लेनेहेतु जब तयार ह्वै मेरेसन्मुख आये तिनको जोहि देखि कार्य करिबेयोग्यइनहिं विचारि सहिदानी हेतुमें मुद्रिका दीन्हेंउ ताको करलैहाथमेंलैकै १ सबमें जोहि इनको मुद्रिका दीन्हेंउ ताको येवीर हाथमेंलैकै अन्य सुभटनको संगलै सिधायो सिय शोधहेतु चलेकहीं विषमवनमें भूलिगयेतहाँ तृषित प्यासनके मारे सब मरनेलगे तब इनहीं ढूंढि सबको लैजाय सुंदर जल पिआयो२बिवरमें पैठि स्वयं प्रभाको मिलि तहां फल खवाय सब को सुंदर जल पिआये पुनः समुद्र तीरजाय मंत्ररचि परस्पर सलाह वार्ता करतसंते संपाति को तक्षकहे तुरतही पक्ष जमाय दीन्हें इत्यादिइनके आचरण विचारिये हे मुनि येहनुमंतहैं ३।१९॥

सू०।गयोउदधिपारैसुभटसाथीतटबैठाय।देखिसीयमणिहाथलै

बनउजारिफलखाय १ बनउजारिफलखायअसुरमारेभट भारी । करिउपायपुरलंककूदिघरघरपुरजारी २ जारिवारिपुनिवारिनिधिकूदिचल्योव्यंकटविकट । गर्जतघोरकठोरअतिगयोउदधिपारेसुभट ३ । १९ ॥

टी० । समुद्र तीर मंत्रकरि अंगदादि सबसाथिनको तट किनारे पर बैठारि सुभट हनुमान् फाँदिकै उदधि समुद्रके पारेगयो तहां जानकीजीको देखि भेटि वार्ताकरि तिनते चूडामणिले हाथमें करि पुनः फल खाय बन उजारि, बनके वृक्ष उखारि फेंकिदीन्हे १ यथा फलखाय बन उजारि दीन्हे तथाभारी भट असुरमारे अर्थात् जब रखवार जाइ खबरि कीन्हे तब अक्षय कुमारादि बडेभारी बलीराक्षसनको रावणपठाये तिनको भी नाशकरिदीन्हे पुनः उपायकरि अर्थात् मेघनाद के वश बंधनते चलेगये जब सतैलपटलपेटि लंगूरमें फूँकिदिये इत्यादि लंकपुरमें जाय उपाय करि अग्नि प्रचंड देखि कूदि अटारिन परचढ़ि घरघर प्रति आगि लगाय पुरभरि जराय दीन्हे २ पुरको जारि वारि पुनःवारिनिधि समुद्र में कूदि लंगूरकी अग्नि बुझाय पुनः चल्यो कौनरूपते व्यंकटकराल बिकटटेढ़े अर्थात् तीक्ष्ण करालरूपते घोरभयंकर कठोरशब्दते गर्जत अत्यंत बेगते सुभट पुनः उदधि पारेगयो इसपारआये सब को आनंददै संगले मेरेपास आय मणि दै खबरि सुनाये ३ । १९ ॥

मू० । सियमणिदैदललैचल्योदिग्गजदरकतअंग । पारजायघेरयोअरिहिदुर्गकियोपुरभंग १ दुर्गकियोपुरभंगसमरलक्ष्मणदुखपायो । द्रोणागिरिधरिशीशरयननभमारगधायो २ मारगधावतशरलग्योभरतकोपिउरथलदल्यो । लषणशोचउरमानिकैसियहितगिरिशिरलैचल्यो ३ । २० ॥

टी० । जानकीजीकी चूडामणि हमकोदै खबरि सुनाय पुनःभल्लवानरनको समूहदल लैकै जब लंकाको चले तिसभारते भू थाँभनेवाले दिशागजनके अंगदरकतरहे हैं सेतु बाँधि समुद्रके पारजाय अरिहि घेरयो पुरदुर्गभंग कियो अरिशत्रु रावणकोपुर घेरि दुर्गजो कोटताको तोरि फोरिडारे १ लंकापुर को दुर्ग भंगकिये पनः मेघनाद सों समरकरि शक्तिलागेते लक्ष्मण दुखपायो मूर्च्छित ह्वैगये तिनके हेतु द्रोणागिरि पर्वत

शीशपर धरि रयन नभमारग धायो रात्री विषे आकाशमार्ग वेग सहित चले २ आकाशमार्ग धावतै समय शरबाण लग्यो काहेते भरत क्रोधि उरथल दल्यो राक्षस जानिकै क्रोध सहित भरतछाती में बाणमारि दिये ताहू व्यथामें लषण शोचउरमानि भाव रातिनभरेमें औषधमिलैतौ प्राणबचैं नातरु भोरभये प्राणैनरहैंगे इतिलक्ष्मणजी को शोच उर अंतर में आनि पुनः विना लक्ष्मणजीके निरुजभये प्रभु युद्ध कैसे करैंगे तब जानकीजीकी विपति कैसे निवारण होइगी इति सियहित द्रोणागिरि शिरपर धरिलैकै पुनः वेग सहित चल्यो तुरतही लंकामेंपहुँचे ३। २०॥

मू०। कहँलौंगुणमुनिमैंकहौंकपिसमाजकेकाज । भरतलषणते प्रियसदाकपिनायकशिरताज १ कपिनायकशिरताजमि लेउठिसबहिबहोरी । बिदाकियेसन्मानिपरस्परप्रीतिनथो री २ प्रीतिनथोरीप्रभुकरीसबप्रणामकरिसुखलहो । बार बारयशप्रभुकहैंकहँलौंगुणमुनिमैंकहौं ३। २१॥

टी०। पुनः प्रभु बोले हे मुनि वशिष्ठजी सुग्रीवादि कपिनकीसमाज के कीन्हे यावत् उत्तम काजहैं तिनके गुणमैं कहाँलौंकहौं भाव असंख्यन हैं परंतु इतनी मुख्यबात कहतहौं कि कपिनायक बानरनमें यावत् स्वामी कहावतेहैं पुनः सबमें शिरताज जो सुग्रीवहैं इत्यादि सब भरत लषणते अधिक मोको सदा प्रियहैं १ अंगद नील नलादि यावत् कपिनायकहैं तिनमें शिरताज जो सुग्रीव जामवंत विभीषण इत्यादिकनको बिदाकरने हेतु प्रभु उठिकै पुनः सबहिनको मिले सन्मानि आदर सहित बिदाकीन्हे पुनः परस्पर प्रीति न थोरी सेवकसेव्यभावकी दोऊदिशिकीप्रीति अधिक है २ प्रभुथोरी प्रीति नहींकरी अर्थात् सेवक सखन के दिशिकीप्रीति तौ स्वाभाविकही है परंतु रघुनाथजी बहुत प्रीतिकीन्हे तब सुग्रीवादि सब समाज प्रभुको प्रणामकरि सुखलहो भाव आनंदपाय बिदाह्वैचले तबहूं वार वार सबको यश कहते हैं पुनः प्रभु कहत हे मुनिनायक कपिन के गुणमैं कहाँलौंकहौं यामें प्रीतिपालता कृतज्ञता गुणप्रभुको है ३। २१॥

मू०। रामराजराजतभयोगयोसकलदुखभागि । रोगशोकअप गतिमरणकालकर्मगुणत्यागि १ कालकर्मगुणत्यागिभई सतयुगकीकरणी । बारिदमनगतिबारिभईसुरभीसुरधर

णी २ सुरभीसुरधरणीभईकपटदंभपाखँडगयो । धर्मवि
वेकविचारनररामराजराजतभयो ३ । २२ ॥

टी० । रामराज राजतभयो जबते श्रीरघुनाथजी राजसिंहासनपर आसीनभये तबते तीनिहूँ तापादि सकल प्रकारके दुःख लोकते भागिगये कौन दुःख ज्वरातीसार शूल कुष्ठादि सबप्रकार के रोग पुनः शोक यथा हानि वियोग संकट वध बन्धनादि दुख पुनः अपगति यथा घोर नीचयोनिनको जाना प्रेत होना नरक जाना तथा अकालमरण पुनः जैसा कालआवत तैसी जीवकीबुद्धी ह्वैजात तथा कालपाय पूर्वके कर्म आपनाफल भोगकरावतेहैं तथा रज तम इत्यादि जो गुण अधिक होत ताही अनुकूल जीवको स्वभावहोत स्वभाव अनुकूल कर्म करत इत्यादि सब लोकत्यागि गये शुद्ध सतोगुणी जीव धर्मवंत हरिसनेही भये १ काल यथा युग संवत् अयन ऋतु मासपक्ष तिथिवार नक्षत्र योग करण लग्न मुहूर्त दंड पलादि जैसा कालहोत तैसाहीकार्यहोत कर्म दो एकशुभ यथा यज्ञ दान तप तीर्थ व्रत मंत्र जप पूजा पाठ संध्या तर्पण परोपकारादि दूसरे अशुभ यथा हिंसा चोरी परस्त्रीरत जुआँ परअपवाद परहानि इत्यादि तथा रजोगुणते कामी स्वभावतमोगुणते क्रोधस्वभाव इत्यादि सबत्यागि शुद्ध सतोगुणी निर्वासिक धर्मवंत रामसनेही सब जीवभये तानेलोक विषे सतयुगकी करणीभई कौनभाँति वारिद मेघमन गति मनोरथ अनु-कूल बारि जलदेतेहैं अर्थात् जब कृषीकार इच्छाकरतेहैं तबै मेघ जलवर्षि देतेहैं तथा धरणी पृथ्वी सुर सुरभी कामधेनु भई प्रजनके मनोरथ अनुकूल अन्नादि सब पदार्थनको देती है २ धरणी सुर सुरभी भई पुनः कपट छल चातुरी ते कार्य्य साधन तथा दम्भ झूठही वेष बनाय पुजावना तथा पाखंड वेदप्रातिकूल आचरण करना इत्यादि मिटिगये पुनः धर्म्म यथा धर्म्मशास्त्रे ॥ इज्याध्ययनदानानि तपःसत्यंधृतिःक्षमा । अक्षोभइतिमार्गोयं धर्म्मेश्चाष्टविधःस्मृतः ॥ पुनर्यथा ॥ पात्रेदानंमती रामे मातापित्रोर्निषेवनम् । शुद्धवाणीगवांग्रासःषड्विधोधर्मइत्यपि॥पुनः विबेक देहव्यवहार असत्यमानि आत्मरूप सत्यमानना पुनःविचारनीति पूर्बक कार्य करना इत्यादि सब नरकरते हैं जबते रघुनाथजी राजसिंहा-सनपर आसीनभये ३ । २२॥

मू० । कामक्रोधअघरोगसबमानमोहमदगर्व । दोषदुःखज्वरपी

रखलदारिद्दाहनसर्ब १ दारिद्दाहनसर्बबैरपरधनपरना
री । गेसुभायसबछूटिगईमतिपरअपकारी २ परउपकारी
लोगसुखभोगयोगमाहिप्रकटअब । गयेअमंगलकृतजगत
कामक्रोधअघरोगसर्ब ३ । २३ ॥

टी० । कामगण यथा मनुस्मृतौ॥मृगयाक्षादिवास्वप्नःपरिवादःस्त्रियो मदः।तौर्यत्रिकंवृथानाट्यं कामजोदशकोगणः ॥ पुनःक्रोधगणयथा॥ पैशून्यंसाहसंद्रोह ईर्ष्यासूयार्थदूषणं। वाग्दण्डञ्चपारुष्यं क्रोधजोपिगणोष्टकः पुनः अघहिंसादि यावत् पापकर्म रोग कुष्ठादि सबमान अपना को श्रेष्ठ मानना मोह अज्ञानता मदधन विद्याराज्य पाइहर्ष बढ़ावना गर्वऐश्वर्य बल वीरतादिते दूसरेको कछु न गनना दोष अनुचित हिंसायथा गो ब्राह्मणादि वधदुःख राजदंड प्रियबियोग हानिताडन ज्वर उदरादि पीरखल वृथादुःख देनेवाले राक्षसादि दरिद्रता सर्ब दाहन तीनिहुतापै १ दरिद्र सबतापै तथा परस्पर वैर तथा परधनहरणपरस्त्रीरतहोना इत्यादि सहज स्वभावते सबजनके छुटिगये तथा पर अपकारी परायहानि कर्त्ता मति गई २ सब विकार रहित शुद्ध स्वभावते लोग पर उपकारी पर स्वारथ रतभये ताते अबसुख भोग योगमहि पृथ्वीमें प्रकटभयो अर्थात्सर्ब प्रकार को सुख स्वाभाविकही लोगनको प्राप्तरहत काहेते कामक्रोध अघरोग सब इत्यादि अमंगल कृतकरने वाले सब मिटिगये ताते सदा मंगलै रहत ३ । २३ ॥

मू० । नेमप्रेमप्रकटेजगतदयाक्षमासंतोष । योगयज्ञजपतपसुप
थवेदसुमंगलपोष १ बेदसुमंगलपोषरहौपरमारथपूरी ।
परअघनिजकृतदुःकृतकुकृतदुस्तरभयदूरी २ दुस्तरभय
दूरीकरेरामतेजरबिजगमगत । कमलकोकसबधर्मबरनेम
प्रेमप्रकटेजगत ३ । २४ ॥

टी० । रघुनाथजीके प्रतापते जगमें नियम प्रेमक्षमा संतोषादि प्रकटे अर्थात् त्रिकाल स्नान सद्ग्रंथपाठ इत्यादि निश्चय धर्म कर्मकरना सो नियमहै पुनः रघुनन्दनकी प्रीतिउरमें उमगि पुलकावली कंठारोधनेत्रन में आँसुभरि आवना इतिप्रेम पुनः बिनास्वारथ परदुख हरना ताकोदया कही अर्थात् जीवनकी रक्षा पुनः कैसहू अपराध करि सन्मुख आवै ताहू

को कछु नकहना ताको क्षमाकही पुनः जो कुछ स्वाभाविक लाभहोइ तामें तुष्टहोना ताको संतोषकही इत्यादि जगत्जननमें स्वाभाविकहोते हैं पुनः यमादि अष्टांगयोग अश्वमेध गोमेधराजसूय इत्यादि यज्ञविधिवत् मंत्रजपजलशयनपंचाग्निआदि तपस्याइत्यादि वेदसुमंगल पोषक प्रवेद में जो पुष्टधर्म मंगलानंदकारी सुमार्ग है ताहीपर सबचलतेहैं १ वेदविषे मंगलकारी पुष्टधर्म परमार्थ परलोक साधनमार्ग सो मृरिरहयो सबलोग इसीमार्गपरचलतेहैं ताते परअघ परारेपापदेखि दर्पगाये सोभीलागिजाते हैं पुनः निजकृत आपनेकिये दुष्कृत जो पाप इत्यादि जो कुकृतकुकर्म जो दुःखोकरि नतरिये ऐसोदुस्तर भयडर इत्यादि सबदूरि भये भावपापकर्म होतहीनहींहै २यहकाहेतेभई सो कहत रामतेज रविजगमगत रघुनन्दनको तेजरूप सूर्य सदाएकरस प्रकाशमान रहत सोई दुस्तरभय दूरिकरे दुःखो करि जो न तरिजाय ऐसीदुस्तर भयरूप रात्रीको नाशकरिदीन्हे भाव रघु-नंदन को प्रतापरूप सूर्य उदयभयेते अधर्म अनीतिरूप रात्री मिटी नीति धर्म रूप दिनभया ताते वर उत्तम धर्म सब कमलसम प्रफुल्लितभये तथा कोक चक्रवाक सम नेम प्रेम जगमें प्रकटे एकत्रभये ३ । २४ ॥

सू० । एकरामगुणगायबोयहकलिकर्मनऔर । ताततुलसीदास केमंत्रयहैशिरमौर १ मंत्रयहैशिरमौररामशुचिकीरतिगा ऊँ । साधनउत्तमजानिसुमतिनिजमनहिदृढ़ाऊँ २ मनहि दृढ़ाऊँमंत्रयहजिहिप्रसादसुखपायबो । शुकनारदकोसी खयहएकरामगुणगायबो ३ । २५ ॥

टी० । रामगुण गायबो यहएककर्म कलिमें है और नहीं अर्थात् श्रीर-घुनाथजीके गुणानुवादनको सदागावना कलियुगमें सुगमजीवके कल्याण हेत एक यही उत्तमकर्महै ताते सदा प्रभुगुण गान करिये इसकी नेमा योग जप तपादि और कर्मनहीं हैसक्ते हैं यथा विष्णुपुराणे॥ ध्यायन्कृते यजन्य ज्ञैस्त्रेतायांद्वापरेर्चयन्।यदाप्नोतितदाप्नोतिकलौश्रीनामकीर्तनात्॥इत्यादि विचारि ताते तुलसीदास के मते सब साधनको शिरमौर एकयहै मंत्र है १ क्या यहै शिरमौरहै राम शुचि श्रीरघुनाथजीकी पावन कीरति सोई सदा गाऊँ काहेते जप तप योग विराग यज्ञ विवेकादि यावत् उत्तम सा-धनहैं तिनै सबते उत्तमः यह साधन जानि सुमति निज आपने मनहिं दृढ़ाऊँ पुष्टकरावतहौं अर्थात् मनमें पुष्टविश्वास राखि सुंदरि बुद्धि और-

घुनंदनकी कीरति गानमें लगावतहौं २ काहेते यही मंत्र मनमें दृढावत हौं पुष्ट विश्वास राखतहौं जिहिके प्रसादते लोक परलोकादिको सुखपा- यबो पाइहौं पुनः रघुनंदनके गुणानुवादको गायबो शुकदेव तथा नारदकी भी यही सिखावनहै भाव पराभक्तिके अधिकारी शुकदेव तथा प्रेमा भक्ति के अधिकारी नारद दोउनके बचन भागवतमें प्रसिद्धहैं यथा दशमे शुक- वाक्यं। मर्त्यस्तयानुसवमेधितयामुकुंद श्रीमत्कथाश्रवणकीर्त्तनचिंतयेति ॥ तद्धामदुस्तरकृतांतजवापवर्गं ग्रामाद्वनंक्षितिभुजोपिययुर्यदर्थाः ॥ सप्तमे नारदवाक्यं॥श्रवणंकीर्तनंचास्य स्मरणंमहतांगतेःसेवेज्यावंदनंदास्यंसख्य मात्मनिवेदनं ॥ इत्यादि दोऊ महात्मनको सिखावनमानि श्रीरामगुण गान मैं पुष्टकरि पकरयों ३ । २५ ॥

मू० । एकराममुखनामधृतध्यानरामकोरूप । रामचरितगावतप रमधर्मपवित्रअनूप १ धर्मपवित्रअनूपकरियजबलौंजग जीजै । रसनारसकरिचरितसरितनिशिबासरपीजै २ नि शिबासरअमतजिभजैतुलसिदासयहशुभसुकृत । कामधे नुकलिकल्पतरुएकराममुखनामधृत ३ । २६ ॥

इतिश्रीगोसांईतुलसीदासकृतकुंडलियारामायणेउत्तर काण्डंसमाप्तम् ॥

टी० । कौनभाँति चरित गानकरिये सो कहत मुखएक राममाम धृत धारणकरि अर्थात् मुखमें कंठविषे एकछोटी जिह्वाहै त्यहिकरिकै सदाएक रामनाम उच्चारण करतरहिये पुनः ध्यान रामकोरूप नाभस्थानकमल बिषे श्रीरघुनाथजी के रूपको ध्यानराखिये अर्थात् इंद्रियमनादिकी वृत्ति एकत्रकरि रूप अवलोकनमें सदा लगायेरहिये ताके थिर राखने रक्षाहेतु सदा श्रीरघुनाथजीको चरित गावत रहिये यही पवित्र अनूप धर्म है १ पवित्र याते कहे कि हरिचरित गानरहित साधारण धर्मपर आरूढ होते इंद्रियनकी विषय वासनादि अपावनता बनीरहत कौनभाँति किरजोगुण ते कामी स्वभाव तमोगुणते क्रोधी स्वभाव पुनः कराल कालके प्रभावते अधिक स्वभाव कुटिल ह्वैजात तबहूं कुसंग अधिकताको पाय असत्कर्म

प्रियलागत तब काम क्रोध लोभ मद मात्सर्य प्रचंडपरि मनेन्द्रिनको स्वाधीनकरि देह सुखके व्यापारमें लगायेरहत तब जो जीव परमार्थो पर आरूढहोत तौ इंद्री विषयवशते ध्यान भजनमें मन एकरस थिरनहीं रहत सोई जोमनेन्द्रिनमें विकारआवत यही अपावनताहे यह विचारि जब श्रीरामचरित गानमें लगारहै तब सब इंद्री रानकी वृत्ति बटुरि उसी में लगीरहत पुनः प्रभुके गुण विचारि प्रेम आवत तब मनादि थिरह्वै जात इत्यादि सहायतात्ते नाम स्मरणरूपको ध्यान थिररहत इति पावनता है पुनः यह जो दास्यताधर्महै ताकीसमान उत्तम दूसरा धर्म नहींहै यथा हारीते।दास्यमेवपरंधर्मंदास्यमेवपरंहितम्।दास्येनेवभवेन्मुक्तिरन्यथानिरयंभवेत्॥ तस्माद्दास्यंपरांभक्तिमालंव्यकृपसत्तम।नित्यंनैमित्तिकंनर्वंकुर्व्यात्प्रीत्यैहरेःसदा॥तस्यस्वरूपंरूपञ्चगुणांश्चापिविभूतयः।ज्ञात्वासम्यग्देहिष्णुंयावज्जीवमतन्द्रितः॥तमेवमनसाध्यायेद्वाचासंकीर्तयेत्प्रभुम्।जपञ्जुहुयाद्भक्तोतद्वानेकविलक्षणः॥पुनःशिवसंहितायां॥सर्वेभ्योविष्णुभक्तेभ्योरामभक्तोविशिष्यते।रामादन्यःपरोध्येयोनास्तीतिजगतांप्रभुः॥ तस्माद्रामस्यवेभक्तास्तेनमस्याः शुभार्थिभिः॥ इति सर्वोपरिउत्तम रामदास्यताधर्म जाकी उपमा योग्य दूसरा नहीं ताते अनूपहै इति पवित्र अनूप धर्म है ताको तबलौं कीजिये जबलौं जगमें जीजे अर्थात् जगमें यावत् जीवन रहै तबतक यही आचरणमें लगेरहिये कौनभाँति रामचरित रूप सरित जो नदी ताको रस प्रेमरूप जल ताको रसना जिह्वा करिकै निशिवासर पीजे रातिउ दिन गानकीजिये अर्थात् प्रेमसहित जिह्वाकरिकै रामचरित गान कीनकरिये २ तुलसिदास यह शुभ सुकृत श्रमतजि निशिवासरभजे अर्थात् मुखते रामचरितको गान कंठमें नामस्मरण हृदयमें ध्यान यहजो शुभ मंगलकारी सुकृतिहै ताही रीतिपर आरूढ ह्वै अरु योग तपस्यादि परिश्रम त्यागि रातिउदिन रघुनाथजीको भजतहौं काहते एक रामनाम मुखमें धारण करना यह कलियुग विषे कामधेनु कल्पवृक्ष समान मन वांछित फल देनहाराहै यहलोक शीक्षात्मक आपनासिद्धांतकहे ३।२६॥

कुं० । कीन्हे गुरुजनको स्ववश करि अस्तुति सन्मान । बाणन सों जीते बली दीनन दैदै दान ॥ दीनन दैदै दान सत्य सों धर्मिन जीते । पावन तप व्रत धारि मान मुनि मनकृत रीते ॥ रीते कन जग दुष्ट नाग नर सुर सुखदीन्हे । वैजनाथ रघुनंदलोक पावन यश कीन्हे १ भूख न म्वहिं कउजानही नहीं जक्तकर मान । मानरहित सन्मानऊ मानव देव

समान ॥ मानव देवसमान मानसर हरियश सेवन । बन घर सरिस अचाह चाह करि मिलत सबैजन ॥ वैजनाथ तजि आश असन बाहन पट भूषण । पण पण सबहि उदास दास रघुबंश विभूषण २ ॥

दो० । ऊनविंश सयतालिसो शुभ सम्वत गुरुवार ॥
फाल्गुणसितदशमीतिथौ रामकृपासोंपार ३

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथ
विरचितेकुंडलिकारामायणप्रदीपकाटीकायां
उत्तरकाण्ड समाप्तम् ॥

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपी
जनवरी सन् १८९२ ई० ॥

के समझने और भक्तिपक्ष के वढ़ानेके लिये श्रुति पुराण और अन्य आचार्योंके श्लोकों से विभूपित करके अति सुन्दर मनोहर बनादिया कोई सन्देह अब तुलसीकृत रामायणकी पुस्तक में इस टीकाके देखने से रह नहींगया ऐसा विचित्र और विस्तृतटीका आजतक रामायणमें नहींहुआ है अवलोकन करनेसे अतीवानन्द होगा ॥

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण

पूरे सातोकाण्ड अयोध्या पाठशालाके तृतीयाध्यापक पण्डित महेशदत्त कृतभापा- यहवही पण्डितजी महाराजहैं जिन्होंने पहिले देवीभागवत और विष्णुपुराणका उल्था कियाहै दोभागोंमें यथातथ्य सुगमरीति से परिपूर्ण श्लोकके अनुसार हुआहै कोई शब्दभी छूटने नहीपाया और श्लोकके जानने के लिये अंकभी लगादिये कि भ्रम न पड़े अक्षर टैप के बहुत पुष्ट डवलपैका अबके दूसरी वार वड़ी होशियारी से छापीगई है ॥

(रामायण टीका शुकदेवकृत किताबनुमा तथा पत्रानुमा)

यह टीकाकार मैनपुरीके रहनेवालेहैं इस अक्षरार्थ और प्रति चौपाई दोहेवार टीकामें उल्थकने रामायणके हरएक पदको स्पष्ट करके ठेठखड़ी बोलीमें रचनाकर और हरएक चौपाई दोहेके अर्थके अन्तमें समझने के लिये अंक लगादिये, स्थान२पर पुराण और अन्य मुनियोंके श्लोकों से विभूपितकिया ऐसा उत्तम टीकाहै कि आजतक देखा नहींगया और इस की सांची किताबनुमा व पत्रानुमा दोप्रकारकी है ॥

तुलसीकृत रामायण मूल टीका बैजनाथ कृत ॥

इसका अत्युत्तम व चित्र विचित्र तिलक ढेहवा मानपूरके नम्बरदार श्रीकूर्मवंशी बैजनाथजीने कियाहै -इसके सिवाय और भी बहुतसे तिलक रामायण के देखने में आते हैं परन्तु इसमें अधिक अत्युत्तमता यहहै कि यावत् सरल व कठिन २ स्थल हैं प्रत्येक का सारांश अर्थ पुराण, शास्त्र, वेदान्त, स्मृति, धर्मशास्त्रादि के दृष्टान्त देकर ऐसा सरल करदिया है कि जिसके अवलोकन करने से बिन पढ़ेही रामायण का आशय अच्छे प्रकार भासित होजाता है ऐसा सुगम तिलक रामायण का आजतक कहीं देखने में नहीं आया— आशाहै कि जो विद्वज्जन दृष्टिगोचर करेंगे वे प्रसन्नता पूर्वक ग्रहणकरेंगे और ग्रंथकर्त्ता तथा यंत्रालयाध्यक्ष को धन्यवाद देंगे ॥

तुलसीदासकृत गीतावली ॥

इसका भी तिलक रामायण की रीतिपर उक्त महाशय ने किय
कोई पद ऐसा नहीं है जिसका अर्थ तिलक देखने से अच्छे प्रकार
सित न होजावे ॥

तुलसीदासकृत कवितावली रामायण ॥

इसका भी तिलक उक्त महाशय ने निज भक्त्युद्गारता से नि
कियाहै इस तिलक में अधिकतर उत्तमता यह है कि अल्प भाषामा:
जाननेवाले पुरुष भी इस तिलक के द्वारा सातोंकाण्ड रामायण
आशय अच्छे प्रकार समझ सक्ते हैं ॥

तुलसीदासकृत सतसई ॥

एक तो उन महात्माहीं को सहस्रशः धन्यबादहै जिन्होंने इस ग्रं
रचना की है कि यावत् योग ज्ञान वैराग्य ब्रह्मोपासनादि रीतें हैं स
उपदेश यथावत् ऐसे कथित किये हैं कि जिनके अवलोकन करनेह
संसारी पुरुषों के हृदयका अज्ञानरूपी अन्धकार दूर होजाता है– त
श्चात् तिलककार श्री वैजनाथजी को भी धन्य है कि जिन्होंने प्र
दोहा का आशय प्रातःकाल के कमलवत् बिकसित करदिया है जि
अवलोकन करने से किंचित् शंका रही नहीं सक्ती–देखने योग्य है।

रामायण छंदावली ॥

यह पुस्तक संक्षेपतासे छंदों में श्रीमहात्मा तुलसीदास जी की ब
हुई है इसपर अत्युत्तम तिलक उक्त महाशय श्रीवैजनाथजी ने किय

रामायण बरवै ॥

तुलसी कृत सातों रामायणों में से एक यह भी रामायण है जो
बरवा छंदमें कही गई है इसका भी तिलक उन्हीं महाशय ने कि॥

रामायण बरवै ॥